

विश्व काव्य की रूपरेखा

विश्वकाव्य की रूपरेखा

सुमिका

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक एम ए, पी-एच डी



अपोलो पब्लिकेशन

जयपुर

विश्वकाव्य की रूपरेखा

भूमिका

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक एम ए, पी-एच डी



अपोलो पब्लिकेशन

जयपुर



प्रकाशक
प्रमोदो पब्लिकेशन
जयपुर

प्रकाशक जन
मतोदा वर्मा
द्वारा
सम्पादित

प्रथम सत्यावस्था १९६५

मूल्य
१२ १० मात्र

मुद्रक
आय सत्यावस्था प्रेस लि०, अजमेर
इन्क प्रेस प्रिन्टिंग अजमेर

भूमिका

प्रथम महायुद्ध के विश्व के रंगमंच पर अनेकानेक अप्रत्याशित परिवर्तन हुए। विज्ञान के आविष्कारों ने नयी यौनिक सम्यता को स्थापित किया जिसकी छाया ससार में धीरे धीरे व्याप्त होती गई। यह भ्रममूल तथ्य भी उसी समय प्रचारित हुआ कि मशीन मानव से बढ़कर है—मशीन में नई सम्यता का जन्म देने की शक्ति है। लेकिन मशीन अभी मनुष्य से बड़ी नहीं हो सकती। शायद इसीलिए मशीनी तहजीब के साथ बोद्धिबुद्धि का प्रभाव साहित्य और दान पर मिला रूप में पड़ा। बुद्धि ने मनुष्य मनुष्य को दूर तक दखने के लिए विवश किया और तर्कनीति या कल्पनातात् स मुक्त करने में योग दिया। फलतः साहित्य के क्षेत्र में कुछ ऐसे परिवर्तन पहले योरोप में और बाद में विश्व के सभी देशों में हुए जिन्हें साधारण मायुका कोटि या परम्परावादी भलीभाँति समझ नहीं सका। काव्य के क्षेत्र में नयी कविता का जन्म इन्हीं परिस्थितियों में हुआ समझना चाहिए। नयी कविता के जन्म की कहानी दुहराने का प्रश्न मैं शुरू नहीं करना चाहता। अब वह कहानी पुरानी हो गई है। लेकिन मैं नयी कविता के भुगबोध नूतन भास्वाबोध तथा मानववाद की ओर इस संग्रह के भूमिका के सन्तर्भ में पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ।

नयी कविता के प्रथम समय में प्रयाग स्तर पर जो सृष्टि हुई उसमें बुद्धिमान की प्रधानता के साथ सामान्य या अधिकतर के प्रति जिस रूपात्मक तत्व को प्रथम दिया गया वह चोखाने वाला था। नयी कविता के कवि ने किसी रहस्यवाद का अपनी रचना में स्थान न देकर उस प्रक्रिया को विकृत किया जो उसका जीवन में व्याप्त है। मानव होने के नाते उसने मानव की मर्याद एवं स्पष्ट समस्याओं को स्वीकार करने में सकोश नहीं किया। उसने यह अनुभव किया कि वह जो कुछ कविता के माध्यम से कहें वह पाठक की चेतना में समाया रहे। जिस प्रकार अभी जैन दर्शन में स्याद्वाद को स्थान देकर जैनार्थों ने समस्याओं को बहुमुखी बनाया था वैसे ही नये कवि ने आपन विचार को अन्तिम न मानकर विचार वैविध्य को अपना करने में तत्परता दिखाई। स्याद्वाद का स्थापना का आदेश इसमें मिल रहा होगा किन्तु समन्वय की एक नयी प्रणाली उसमें सबसे पहले संज्ञित हुई। नयी कविता की भास्वा किसी सिद्धान्तहीन समन्वय में नहीं है यही उसकी दृढ़ता का सूचक है किन्तु इन तत्वों को सामान्य मायुका पाठक ने ग्रहण नहीं किया जिस रूप में नयी कविता में उभरे थे। महाकाव्य सङ्काव्य या गीत काव्य के प्रमी पाठक के साथ स्पष्ट भावचित्रों या क्षणानुक्षणियों के चित्रण का उसने महत्व नहीं हो सका जितना रूढ़ काव्य उसी की रचनाओं में

का दा। मर्णा की भी शुभमा होती है—जैसी ही जैसी माने की ज़रूर।
बचन की दृष्टि में माने और मान में धातु न मान है श्रिवा भेद नहीं। मर्णा
में विवाग रगन मान की नया कविता क मुक्त माहुर्य के संकोच धूम्य प्रयोग
में रसमन का दृष्टिमापर होना स्वाभाविक ही है।

मदी कविता न धपन विवाग में त्रिग स्वरूप भावना का उत्तरोत्तर ग्रहण किया
बहु है मानवताका १ भावना। धर तक विविध को वाक्य में प्रयुक्त किया जाना
का-नय कवि ने साधारण को मरोपेन पूवक ग्रहण किया और सामान्य जन
जीवन को धारणा का विषय बनाया। त्रिग धारणा का विषयन कहकर निरूपित
किया गया है उमम कृत्रिम और धारणित विषय का स्थाप ही सर्वप्रथम है।
साधनधानी मंगुनि का व्यक्ति विरोध के पीछे मनवासी बनी चली धा रही थी
पूरा बुनीका क माय छोड़ दी गई। दूगरे गणों में नयी कविता में जनजीवन
ही नया धातु स्थापक तथा उत्तर मानवतावादी दृष्टिकोण को पूरी सामर्थ्य से
वर्णित करने का प्रयास किया गया। मदी कविता न अपने वाक्य धारों से
अपना प्रतिपक्ष ही धारित नहीं किया साथ ही साथ विज्ञान और वाक्य का
एकवचन भी कर लिया। इन सामग्री को अनुपुन का एक साहित्यिक
मानना समझना चाहिए।

यह कहना मदी दृष्टि में मदी कविता क माय भावना करना है कि वह
पुरातन युद्धों के महान धारणा क विषयन तथा परम्परा के विस्तारन में ही
ज म लनी छोड़ पनपनी है। वाक्य का ही महान धारितु प्र एक कलात्मक दृष्टि का
मूल आधारन जीवन के प्रति स्वस्थ और गणारमक मरिन् उल्लस करना है।
धारणा क विषयन म हा धरि कविता का प्रथम मना है ता निर्माण और त्रिग
किया क विग किम मरुन ने मधुम की धारणा होगी। धरि जीवन म ही
विवाग प्रक धारणा रान भीक मगाव नहीं है ता कला और कलात्मक
मरुन म धरि क्या जाना? धरि धारणा क विषयन का वाक्य का मूल प्रेरक
धरि मानना नर को और धारणा धारित करना है। समसामयिक वाक्य धारणी
न न धरि न म व क मपान का वाक्य है। इन वाक्य ने धरिधरिन माहुर
का धारणित धारणा नया धारणा। कल्पनाका का धारणे का सुविधाविन
धरि न दृष्टिकोण होगा है। यह प्रथम साधारण न होकर निरूपन ही धरिधारण
मह व का है। इन धारण के पीछे साधारण धरुन के धारण का धरिधरि करने
की धरुन। धरुन प्रेरक बनी धरुन है। धरिधरिन धारणित तथा धरिधारण
का धरुन १ म धरि कविता ने परम्परागत धरिधरिन का धरिधरि भी धरुन में धरुन
है। धरि धरि धरिधरिन धरुन इन कविता में धरुन है जो पीछे धरि धरुन

की तरह बोझिल होता जा रहा है। केवल सीक पीटन वाले नये कवि सा इसे स्वीकार कर रहे हैं किन्तु प्रबुद्ध कवियों को इसकी पीड़ा सहने लगी है।

नयी कविता का गिल्फ अब व्याख्येय नहीं रह गया है। पिछले दो दशक में हिन्दी की नयी कविता में इस शिल्प को जिस रूप में ग्रहण किया गया है वह सुपरिचित सा प्रतीत होन लगा है। गिल्फ के खोल में कुछ अकवि भी नयी कविता के क्षेत्र में उतर आये हैं। उनके पास न ता काव्य का कथ्य है और न भाव का वैभव। किन्तु गिल्फ की नकल से इसी तरह कर रहे हैं जैसे सोन का पानी फेर कर नक्सी आभूषण बनाये जाते हैं। भुंके लगता है प्रत्येक युग में ऐसे अकवियों का प्रारम्भ में जमघट रहता है। ज्या ज्यो पाठक का काव्य बोध गंभीर होता जाता है ऐसे कवि छँटे जाते हैं और काल कवलित होकर समाप्त हो जाते हैं। हिन्दी की नयी कविता के क्षेत्र में मौड़ करने वालों में से बहुतों को यही गति होनी है। अंग्रेजी में इलियट की कृतियों की नकल करने वाले प्रारम्भ में स्वतः पैदा हो गये थे किन्तु दान सन कविता के पुष्ट होते ही उनका अवसान हो गया।

प्रस्तुत संकलन नये काव्य के नमूनों का संग्रह है। मैं इसे आदरा काव्य का संग्रह जानबूझ कर नहीं कहता किन्तु नमूने के बोध से सम्पूर्ण के बोध की इच्छा जागृत होती है। मैं अंग्रेजी को छोड़ कर किसी विदेशी भाषा से परिचित नहीं हूँ किन्तु इस संकलन के माध्यम से योरोप अमेरिका कनाडा, न्यूजीलैंड आस्ट्रेलिया अफ्रीका ईजिप्ट, टर्की जापान लंका इंडोनेशिया वियतनाम आदि चार दर्जन देशों की नई कविता के नमूने देखने का सुयोग मिला। मैंने अनुभव किया कि भाषा का बाह्य तो पृथक्-पृथक् है किन्तु मान-वात्मा के स्पन्दन में सर्वत्र समता है। सत्य का स्फोट भाव की एकता को छिन्न भिन्न नहीं करता। सुदूर देशों में फैले हुए मानव की चेतना सुख-दुख हर्ष-विषाद राग-द्वेष की अनुभूति में एकसी है। ज्या-ज्यो आप इन कविताओं के समक्ष बैठेंगे त्या-र्यों मरे इस कथन की प्रमाणिकता पुष्ट होकर आपके सामने प्रकट होती जायेगी। आज की नयी कविता में युगबोध का स्वर सबसे ऊँचा है। सामयिक जीवन चेतना सभी देशों के कवि समान रूप से व्यञ्जित करत हैं योद्धकता का परिवेग फैल रहा है योधी कल्पना और कृत्रिम भावुकता मर रही है। जन जीवन में से कविता उसी प्रकार फूट रही है जम सद्य जाती हुई सर्वत्र भूमि में से झरूर।

इस संकलन के अनुवादों के विषय में कुछ भी कहने का मैं अधिकारी नहीं हूँ। अनुवाद का माध्यम काव्यान्वय के लिए तृतीय पक्षी का माध्यम माना जाता है। अनुवाद कितना भी फेसकुल क्यों न हो-मूल का समर्थ नहीं हो सकता। किन्तु चार दर्जन विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना भी संभव नहीं है अतः अनुवाद ही माध्यम है। सत्प्रास का हास्यिक अभिनयन करता है और उन नवयुवकों को बधाई देता है जिन्होंने पहली बार विनयकविता को हमारे लिए सुलभ बनाया है।

विषय-प्रवेश

विश्व कविता

जनाम

विश्व की नयी कविता

विश्व-साहित्य का प्रारम्भ कविनाश्रित होकर हुआ है। क्या भी कविनाश्रित होगा ? सम्भवतः युग की विश्व कविता न स्वयं की कविनाश्रित-विश्वनाश्रित और नए कोणा के समीप प्रतिष्ठित बन लिया है। हमस यत्र युग की एकांगी सम्मति कविता की अविध्य सम्भावनाया से स्वयं की पूर्ण रूप से काट नहा पा रही है और यह मानव हित में अक्षय है। औद्योगिक दृष्टि में बीनाश्रित मानव भाव सम्पदा का घनी घा मन्त्रानि युग का मानव समावेश हमस विपर्यय है। कविता सदैव से युग मागत रहा है आगत युग की सम्भावनाया के साथ। आज की कविता पर भी यह सिद्धान्त लागू होता है जहाँ वह चलन हुए युग मन्त्रों के कारण विघटित जीवन मूल्य आश्रित मय घनव्यस्तता घमुरता तथा अन्तर्विरोधों एवं मानव की ललहा हुई मन स्थितियाँ (जिनमें कुछ ठाँव यौनव्यवस्था अश्रित मन्त्र भी सम्मिलित हैं) का सम्पूर्ण ईमानदारी के साथ अभिव्यक्ति दे रही है वहाँ अभिव्यक्त साहित्यिक गिल्फण्ड एवं जीवन-आपत्तियों के अनन्त घुँघल और स्पष्ट सबत भी दे रही है। यद्यपि नयी कविता द्वारा हम स्वभाव के कार्य सम्पादन से कुछ मुजुग साहित्यकारों का-जा विघटित होत हुए का निमित्त और जीवनगत मूल्य के प्रति सबत नहीं है जिन्हें युगवाद की पीडा नहीं घाँसती, जो व्यनीत युग के सुख-स्वप्ना के घनी हैं—एतराज हुआ है।

आज की कविता जिस बिन्दु पर है वहाँ तक हम पहुँचने में अनन्त युग आगमों का लौपना पड़ा है। काव्य इतिहास न काल पमार में प्रस्तुत युग में नकर बतमान युग की घन सम्मति अस्तुति तक की ऐतिहासिकता का पूर्ण रूप में अन्त से अनुभव है। फिर भी यह कहने में बाध संभाव नहीं कि आज की कविता न युग-बोध बहने में व्यतीत युगीन कविता से कहीं अधिक ईमानदार बरती है।

विश्व-कविता के क्षेत्र में रचनानाग की बहादुरी दस्तक देवदत्त नृत्ति ममासका की रातों की नौद हराम हा गयी है। व रात्रनौत्तियों का अन्त कविता साहित्य क्षेत्र में भी यात्रनावद्ध काय करना चाहत है। घर्षण के दो से अधिक निराशा प्रसाद पल दोली कीटन आदि नहीं हान कविता।

इस बात का भूत जात है कि छायावाणी युग में बौद्ध भर भर का लहने नील
 लिखन ये । त्रिगुणकार उस युग में उगलिया के धरना पर गिनन योग्य रचनाकार
 हो स्वयं को बाध्य दान में उज्जागर कर पाय ध उमी प्रकार मयी कविता का
 प्रपञ्चपर और अरिपक्व रचनाकार स्वयं ही समय की धार द्वारा पेंक दिए
 आयेगे । (यदि मंथना में दो चार साथ बढ़ जायें तो क्या बह का बात है ?)
 हो । कुछ समय अवश्य लगता । किन्तु बुजुर्ग समीक्षकों में यह विचार करने का
 लिए न तो पीय है और पाठ्य पुस्तक का गृहण में अत्यधिक व्यस्त रहने का
 कारण न ही समय । ऐतिहासिक बाण में प्रबुद्ध कुछ बुजुर्गों ने—जो ऐतिहासिक
 नेता हान के साथ साथ साहित्यिक नेता भी हैं जो विज्ञान साहित्य में राजनानि
 केन्द्राकर नानागरी प्रारम्भ कर दी है और इनके बल पर प्रतिष्ठित भी हुआ है
 है—यह माया मक सपना प्रारम्भ कर दिया है कि यह कविता का युग नहीं है
 कम से कम छात्र जन जो कविता लिखें जो रही है वह उस युग का उपयुक्त
 नहीं है । एक साक्षात् कविता समझने की उम्मीद का आय ?

हो विश्व युग मानव और प्रायः अतिरिक्तानी विन्नन जावन का कहना
 (बिना धर्मों में गिरता हुआ) स्वयं वैज्ञानिक प्रगति अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिक
 साहित्यिक गहरों धातुनिक युग की प्रभावशाली दन है । इन सभी में छात्रक
 विश्व मानव का अन्तः स्पर्श पर प्रभावित किया है । कविता पूर्ण विपुल
 मानवीय अनुभूति है धन इस गह में अन्तः सामा में अत्यधिक प्रभावित हुई
 है । छात्र की मानव समस्याओं में एक रूप में प्रबुद्ध राष्ट्रों की समसम तक अभी
 ही है । मग न युग का सांख्यिक न मानव का पतु बना दिया है जीवन की
 सांख्यिक ने उगम ऊँच और धु न भर दी है इनके चलन इसमें कृष्ण जन्म
 न पृथ्वी है । कहने का अर्थ है यह है कि छात्र वैज्ञानिक बौद्ध और
 धौदात्मिक ज्ञान पर भी अनुभव धन आन्तरिक व्यक्तित्व गहन में प्रमत्त
 है । परिचितियों के आकाश और दैनिक समस्याओं में छात्र के मानव का इनका
 ताकत है कि यह अन्तः सामा की वास्तव में अन्तर्धर्म का स्पर्श है । कहना
 चाहिए कि जीवन ज्ञान का समस्याओं में आकाश का प्रति उगम तीनों धरति
 जगुल कर दी है ।

छात्र का कविता का रूप में विश्व-साहित्य में कदाचित् यह प्रथम धरति
 है जहाँ विश्व कवि एक ही अनुभूति स्वर को एक ही रीति और निम्न के
 साध्य में अभिव्यक्ति है । है विश्व-साहित्य में अन्तः पूर्ण अभी भी ऐसा
 धरति नहीं है । छात्र का अन्तः विश्व युग देना की कविता का रूप और
 निम्न एक ही समय में एक मा रहा है । धरति में अन्तः सामा स्पर्श
 की कविता है । है अनुभूति हुआ था अन्तः कवि का यह साध्य समानि की

प्रतिम गति में था। ध्यान की कविता ने विश्व-साहित्य में निहाल को इस साईं को पाया है।

ध्यात्र की विश्व कविता का मूल ब्रह्म मानव का ध्यानार्थक दृष्ट चित्रण ध्यात्वा धनाय्या का दृष्ट और चित्र ध्यात्वा धनया धनाय्या का गृह्यबोध—है।

निरन्तर जन्मि हाना ईद्वितीयो घोर युग बोध न ध्यात्र की कविता के ब्रह्म और गित्य का जलिल बना दिया है किन्तु मन्त्र यह धर्म नहीं निदा जाना चाहिए कि दूर घोर खण्डित जीवन बोध का कविता भी खण्डित होगी यदि ऐसा होगा तो वह रचनाकार की काव्यसमता की अपरिपक्वता का ही साधक बरामती। मिमिक्ष के सावित्र न पौष्टिक इमत्र क पृष्ठ ११७ पर यह कथन उद्धृत किया है जो हमारे उपमुक्त ध्यात्वा का समर्थन करता है—

निरन्तर पचासा हाती हुई सम्प्रताप अनुसूच कविता में पञ्चोदा मूर्तिविधान का होना 'याद मगत हाता जो युग इस नय विचार समूह इन्धिय बाध दगा उसक अनुसूच साधम के साथ नया मूर्तिविधान प्रस्तुत करना हाता लेकिन इस ठक में यह परिणाम हर्षित नहीं निकलता कि मन्त्र सम्प्रता का सही उत्तर भक्त कविता है। कविता के विषया की भक्तता का समर्थन की जान हो सकती है किन्तु जब वह कविता के रूप में अभिव्यक्ति पाए तब उस सम्पूर्ण काव्य उपलब्धि' हाना चाहिए। ध्यात्र की विश्व कविता में खण्डित उपलब्धि भी पर्यति है। इस खण्डित उपलब्धि का समाप्ति काव्य में धनविधारी तत्त्वों का बनाव दगा। द्वितीय प्रयोगवाद की पर्याप्त कविता भक्त' की इस लिए भी उस 'मीमांसा' बुझना पडा।

विश्व-साहित्य का सम्प्रति युग में लिखी जाने वाली कविता रुढ़ियों की विराधिता है। बहु वृत्तिकारों के वैयक्तिक अनुसूतियों के माध्यम में अभिन्न उपमान प्रतीकों जीवित विम्बों से विश्व साहित्य का समझ बना रही है। इस कविता ने किमा वा' विचार को ठसक बाद'व में स्वीकार न करके महत्त्व मन्त्र के रूप में स्वीकार किया है इसलिए निम्नलिखित विश्व की इस जागरूक कविता की तस्वीर का किमा वा' विषय' के चौखट में नहीं बांधा जा सकता। इस में जन मानसो परम साहित्यिक मित्रा को ध्यात्रा और निरागा दाना हो दृष्ट है जो कविता का किमा वा' विषय का चर्मा लगाकर देखन के आग है या जो कविता का देखना' हो सब समझ करत हैं जब कि उस पर उनके 'वा' को छाप लगी हो। बहरहास।

प्रयोगवादी कविता ध्वज रहित या ध्वजध्वज कविता भी। प्रयोगवादी मित्रों ने नयी का ही ध्वज मान लिया था, सच तो यह है कि इन निम्नलिखित मित्रों का ध्वज स्पष्ट हो नहीं पा। प्रयोग' किमा या किन्हीं महती सम्भावनाओं

के लिए बिदा जाता है। ध्येय-सम्भावना से बच कर 'प्रयोग' का कोई महत्व ही नहीं है योंही हा जस कि बिना मिट्टी के बीज का। ध्येयछूटने के कारण ही 'प्रयोगवादी' कविता युसझड़ी व समान नुछ' समय के लिए ही घपनी धामा ियाकर समान हा व' या उमन महनी सम्भावनाओं स युक्त नयो कविता व लिए स्वयं का एक गमण्य ध्य व रूप म समर्पित कर िया। हिन्दी म धाज भी कुछ युतुर्त घपने महन धध्यमन व सस पर नया कविता और प्रयोगवाद का एक समझन का भ्रम पास हुए हैं।

धाज की विन्व कविता म वृत्तिमत्ता का प्रभाव है इसका कारण धाज का रचनाकार कविता का मनार्जन की छद' न मानकर जीवन की गम्भीर उपस्थि मानता है। इस कविता पर बिम्बवाद प्रभाववा' छादि का भी प्रभाव पटा है किन्तु यह प्रभाव उगवा मित्र भर है स्वामी नहीं।

नयो कविता का रस मानदण्डों के नाप' सेना न' कविता की परिवर्तनता तक से अनभिज्ञता प्रक' करता है। परिष्कृत युग-वाप के कारण रस गूजन कविता का ध्यम नहीं रह गया है। धाज के धमुरा'न घनास्वापुक्त और नीरस जीवन म 'रस की खान ग'ओं स बनी हुई लगती है। फिर भी य' रस की मानसिक अनुभूति या विपुल मानवीय अनुभूति तब फसा िया जाम जैसा कि हिन्दी व मुधय समीपव डा० नगद्व स्वीकार भी करता है तब कोई भी कविता-नर्त यह है कि वह कविता हा कवविता नहीं-रस की खोज ही म इस ही धाजवादी (कयकि कविता सुसन युल मानवीय अनुभूति ही है) मय कवि का तब रसविशेष व लिए व्यवसाय न'। उसर धाजन म धाजन पर भी -नयो कविता रसवादी कविता हागी। तब रस का अनिवार्यता या अनिवार्यता का प्रन ही समाप्त हो आदता। इसकी धावदकता मात्र कवविता को घमन करने व निर पहाती। यह मही है कि रस का एल घर्तकार लय और मुक्त छाि म सम्बन्ध नहीं है। म धा' ता ि'य प्रयोग' मर है जिसे कोई भी कवि नयो िन्य प्रयोग म ७ गुर कर नकार भी सकता है। विमर्श : १५५ या १५६ ही न' का यह कना कन मही है कि ह' व'य ि'य रस ता हा सकता है काय की धदिधन उपस्थि म नहीं कय कि उ'न'य एक नि'यन प'गिया है न' नहीं।

विन को नो कविता निवहता क किता समाय है या कि नो निवहता के किता सधात होना चाहिए ? य' कू' गू'न घन है विन पर विधा के नि' न'य धावात हा गवता है। केविन एक धाव रबीकार कानी पहाती कि विन को नो कविता और उगवा युग कयोउ कविता और उगद ५ ग निवह ही कही क'पक ध'भा १६ है। य' धावाधायिनी घनर

स्तरों पर चित्रकला की साम्यकधारिणी जैसी हो है। वहीं-वही नयी कविता ने चित्रकला का मध्यम म इना समहार लिया है कि उसकी समूह मानेनिकता विलक्षण परब स्थितिया स उठकर अनुभूति परब हागई है। वि-व-कविता के मूलों विधान की समूलता ने वि-व-साहित्य-ग्रन्थ म एन पृष्ठ-समाप्त की जोडा है जिम धनीन मुषोन कविताएँ जाहन म समसय रहें और सम तब जिमक वृद्धन की निरन्तर प्रतीक्षा थी। समून कविया में टी० एम० इलियट का नाम लिया जाता रहा है। इस सदर्न म अधिक मही नाम डसन टामस तथा गजानन माधव मुक्तिबाघ क है।

हिन्दी म नयी कविता की जड़ निरासा म थी। निरासा की घनक कविताओं की ताजगी छुपुरमुत्ता में ध्यम्य की कडवाहू तथा घनक कविताया म सच्चे समार्य का परब नयी कविता की पृष्ठ भूमि क रूप म निरासा म विद्यमान थी। नयी-कविता की ताजगी समाय का बाद मुक्त सा-का चित्रण महजना मानि वृद्ध को विद्यमानों है (दूसरा विपणनाया क साथ) जो नयी कविता का व्यजोत मुषीन कविता म पृषक कर उमका स्वतन्त्र अस्तित्व धापित जाती है जीवन की कटुता और अन्तर्गर्भाय साधनपन न नय कवि का ध्यम्य कात क निण बाध्य कर लिया है। आत्र का कविता म कर्णाधिन ध्यायामकता गुणात्मक और साधनात्मक रूप म सम तब क साहित्य म सर्वाधिक है। वि गा म नयी कविता क अक्षुर (मात्र अक्षुर) साफार्ग और त्रिन्ना कारवियर म मिलने हैं। टी० एस० इलियट न अपन एक निबन्ध में इन दाना कविया की चर्चा की है। उन्हें अपन समय क किसी मा र्थोजो कवि की अपेक्षा म 'फिजिकल' कविया क समाय माना है। रक्षा और माहन्ड भी इस गृहला क कवि है। एडमंड विममन न मन्नामी असाधक रनताप का उन्मुख किया है। इस आसाधक न इलियट पर गानिए क प्रभाव का विवेचन किया है। नया कविता का स्वरूप मात्र त्रिन समों और सम्मों का सवर प्रकृ हा रहा है उस देखते हुए निश्चित रूप स कहा जा सकना है कि टी० एस० इलियट मा अब पीछे छुट्र जा रहे हैं (छूट गल है।)

आत्र की वि-व कविता म समसास्त्र परब नैतिकता का निष्पामित कर लिया गया है। आत्र यह मानव की पुत्र बुठा और सौनवर्जनामा की उदात्त रूप में चित्रित करने म समन हा रही है। टूटन मूमुबोध अन्तर्गम धरुण म भी इ च बना रहना जीने के लिए जेत जान वार जावन का विवशता धानिक जीवन स ऊव रुटियों क प्रति विद्राह आस्था घनासपासया हृष्टि ध्यति क अन्तर जगत ने प्रति सै-सरहोन आदरमया हृष्टि अनुभूति का अमिध्यति देने की ईमानदारी नयी अतना क प्रति अट्ट आस्था सम सम्यता स मय, नय

गम्भार बोदिक बोला स स्थिति चित्तन बहवा और तीसा छन्द नय प्रतीक
नय दिग्ग्य धारणा का सर्वमाय प्रतीक मूर्त्य मीन्य बाध के बदल हुए धायाम
गुत्रन प्रप्रिया का तटस्थता धारि एमी गिर्य और विषयगत उपलब्धिया है
जो धाज की दिन-बदिना म उपलब्ध है। बरदा और धनित्व हीनता म
भयभीत धाज व मानव व निष्प्रदक दारण का महत्व है। दारण को उसके
गम्भीरत्व म जीन की सलब म मन म है। इस मन स्थिति को बहन
बहन बानी नयी बदिना म दारण सत्य का गहना नय बदि की ईमानदारी का
गहून है।

धारण के दूर दगा म नयी बदिना के पगधर दूर रचनाकारों न रुझिया
क प्रति बिना की दूर लगे धनि की कि मानव धनुमनिया को मानव स्वर पर
धनुमन न बन वतु स्वर पर धनुमन बनना प्रारम्भ कर लिया। गत वर्षों म
एनकाण्टर म इस प्रकार का दूर बदिना प्रकाशित हुई है। हिन्दी म
प्रयोगवाणी बदिना क जाक (सब नयी बदिना क भी जनक) न
इस संज्ञा म कुछ लगा धनुमन बिया— मैं ही हूँ वह पराजान्त
गिरिमाता मृता।

इसी तर्ज पर दूर दूर नया न मुद बंट म स्वर मिलाया—
घरती धाकपिन करती

धपनी जहनाया का
म धाका प्रका म मुनका मने दने
मरल मोत मृता की।

मनुष्य का धाज की समस्यता ने धाकपिन गहरा दिया है यह मैं
पाम निवेदन कर चुका हूँ। प्रणि एन स्वामी की धनित्वता ने मनु पर
गाहन के निष्प्रद बाध कर दिया है। विन्नु मृता की मी मनु बामना बान
बान बदिना का मनु धाकपिन मरु है। जमन बदि दिग्ग्य की बदिनाया
म मनुष्य का गहना धाकपिन मरु है। विन्नु उगम मनु स्वर्ग का स्वयं पदा है।
रिन्ध वर स्वोकार बरना या कि प्रदक मनु स्वयं म मनु को धाज हुए है।
मनु जो धाकपिन का उगम मरु है। रिन्ध ने धाज मर मनु की धारापता
का। उगम धाकपिन का धाकपिन उगम मर या बिन्ध म उग बीन का
या मनु को हा धाकपिन पर धाकपिन होना। रिन्ध न गमी धाकपिन
बाज पर भी धाकपिन कि धाकपिन क धनुमन म रिन्धना लाभ उठाना जागद
गठना बाह्य। धाकपिन परममम बदिना मरु ही धाकपिन है रिन्धना धाकपिन

के लिए परमात्मा । जीवन का भागन हुआ हम यह स्मरण रखना चाहिए कि हम परमात्मा की इन्द्रिया रूप में काम कर रहे हैं ।—

परमात्मा यदि मैं मर जाऊँ तो तुम क्या करोगे
मैं तुम्हारा पौन का पात्र हूँ
यदि वह टूट गया तो क्या होगा ।”

जीवन की कठुनाभा और परिवर्तन ग्राह्य एवं यथाय कठिनाइयाँ के (धार्मिक विवरण का प्रसमानता प्राप्ति) ने और कविता में जहाँ एक प्रकार समाज में उत्पन्न विह्वलनाओं के प्रति उत्साह व्यक्त है वहाँ कम सम्पत्ति से उत्पन्न जीवन की अनिश्चितता के कारण मृत्यु बोध भी उभरा है । बोट कवि प्रायः की सघनपोल पीढ़ा के प्रतिनिधि कवियों में से हैं । अमरीका में इन बोट कविता की नाम पट्टिका पर्याप्त सम्बन्धी है इनमें जिससबग कार्मो गार्डन, रॉबिन, डेनजो लिबर्टी, एडवर्ड डान फिलिप लैम मिशिया पोन्ट आरसावास्को कनय काच क्लिफ ह्वालन गिलबर्ट मारगिना गैरी स्नाइडर माइकल मैक क्लार रा लॉय जोन्स डविड मेट जेन आन्सन प्रोस जैक करएक मिचाल होराविज एड्रियन मिचेल मार्टिन सेमूर स्मिथ सी० एच० सिमन प्राप्ति प्रमुख कवि हैं । समकालीन अमरीकी काव्य के प्रतिष्ठित कवि तथा आलाचक पाल करोल न गवर्मीन रिव्यू (अंक १६ जुलाई अगस्त ६१ ६२) में जिससबग के विषय में लिखा है सम सामयिक अमरीकी काव्य साहित्य में जिससबग एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने तीस वर्ष की आयु में वह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त की जो अपने जीवन काल में राबर्ट फ्रास्ट की मिली थी । यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा केवल उनकी पुस्तिका के मुपटिन पाठक समुदाय तथा जन-साधारण द्वारा नियमित क्रम तक ही सीमित नहीं है बल्कि फ्रास्ट की ही भाँति उन्होंने अपने समय के उन सभी 'एकेडेमिक' आलाचक तक का अपना ध्यान आकृष्ट किया है जो हाउस को पढ़कर कभी विस्मय हाँ उठ थे । "फ्रास्ट के बाद के दूसरे अमरीकी कवि हैं जिनकी 'हाउस' जैसी प्रोजेक्सी तथा प्रखर काव्य पुस्तक की ८० ००० प्रतियाँ एक साथ हाथा-हाथ बिक जाती हैं वे पहले अमरीकी कवि हैं जो उनकी माउण्टेन कॉलेज भाई प्रोवा तथा हारवर्ड विश्वविद्यालय की विशाल गैलरिया में शान्त भाव से बैठे हुए दो-दो हजार काव्य प्रेमियों को अपने 'प्रोजेक्सी' वक्तृत्व दुर्लभ और प्रभावपूर्ण काव्य पाठ सारण भरम मात्र मुग्ध कर देते हैं तीस वर्ष की आयु में ही वे पद्य के उस अग्रम स्तर पर पहुँच गए हैं जब हर योग्य बोद्धि अमरीका में आकर सबसे पहले जिससबग से भेंट करने की इच्छा व्यक्त करता है ।”

गम्भार योद्धि कौलों से स्थिति चिन्तन करवा और भीसा छद्म, नये प्रतीक नये विस्मय आस्था का गर्वभाव प्रतीक मूर्त्य मी-र्य काय के बदल हुए आवास मुक्तन प्रक्रिया को तटस्थता आनि लेमी गिरा और विषमगत उपलब्धिमा है जो आज की दिग्ग-कविता में उपमन्त्र है। अगस्त और अस्तिता हीनता में मयभीन आत्र के मानव के लिए प्रदत्त दाता का महत्व है। दाता को उसने सम्पूर्णतः म जीवन की सखत अन्वये मन म है। इस मन स्थिति को वहन करने वाला नयी कविता में दाता सम्य की गहना नये कवि की ईमानदारी का मन्त्र है।

याग के कृत्य देना में नयी कविता के पक्षपर कुछ स्थानाचारों ने रुद्धि के प्रति विनाश की कृष्ण एमी धनि की बि मानव अनुभूतिमा की मानव स्तर पर अनुभव न कर पानु स्तर पर अनुभव करने का प्रारम्भ कर लिया। गत वर्षों में 'एनकाउन्टर' में इस प्रकार की कृत्य कविताओं प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में प्रयोगवादी कविता के जनक (यह नयी कविता के भी जनक) न हन मन्त्र में कुछ नया प्रामुख्य दिया— मैं ही हूँ वह पराजित विरिधिता कृता।

इसी तर्ज पर कुछ दूसरे छुट भेजा न मुट बंट म स्वर मिलाया—

घरनी आवापि करनी

अपनी जहनामा का

म आवाग प्रवाग न मुक्तकी मग्ने दने

मान मोत कृत की।

मनुष्य का आत्र की कमजोरता ने घषिक गहना दिया है यह मैं गहन निवेदन कर सका हूँ। अनिष्टा स्वार्थ की अनिश्चितता ने मनु पर मोचन के लिए बाध्य कर दिया है। किन्तु कृत की सो मनु कामना करने वाले कविता का मन्त्रा घषिक मन्त्र है। अर्धन कवि गिरे की कविताओं में मनुष्यत्व दर्शित होता है किन्तु उभय मनु स्वीकृति का स्वल्प पक्ष है। रिक्त मर मोक्षार करना या कि प्रत्यक्ष मनुष्य स्वयं में मनु को पाव हुए है। मनु ही आवन का अन्वय पक्ष है। रिक्त ने मनु भर मनु की धारापना की। गहक जीवन का अज्ञाना उद्भव यह या कि स्वयं में उग भीत्र को पावन रहा आ मनु आत्मन पर अङ्कित हुआ। रिक्त ॥ गमो मनुष्य पर मनु को हा घषातता का किन्तु उभय ईगा^२ महादवापि की धनि हन कर पर भी कम नि कि आवन के अनुभव म विनता साथ उदात्ता आगद उदात्ता का^३ हूँ। अ वावा परमाणु के निरुद्धनी ही आवापद है विना मोक्षमा

क सिए परमात्मा । जीवन का भागत हुए हम यह स्मरण रखना चाहिए कि हम परमात्मा की इद्रिया क रूप म काम कर रहे हैं ।—

‘परमात्मा जनि में मर आऊँ ता तुम क्या कराय
मैं तुम्हारा पीन का पात्र हूँ
यनि वह दूट गया ता क्या होगा ।’

जीवन को बहुतनाया घोरे परिवर्ण दबाव एवं यथाय कठिनाइयाँ क (धार्मिक विवरण का असमानता घाति) ने बोट कविया म जर्नी एक भार समाज में उत्पन्न विहम्बनाघाँ के प्रति तीखा व्यंग्य है वही कम सम्भता ॥ उत्पन्न जीवन का घनिष्ठितता क कारण मृयु बाध भी उमरा है । बोट कवि घान की सघपगोन पीडो क प्रतिनिधि कविया में स हैं । अमरीका म इन बोट कविया की नाम पट्टिका पर्याप्त लम्बी है इनम जिसबग कायो गार्ड, डंकन, इनजो सिवर्गोव एडवड डान फिलिप लम मिशिया पीटर आरसावास्की कनय काच फिलिप ह्वालन गिलबट सारेग्ना गैरी स्नाइडर माइकल मर क्लार रा लाय जोन्स डविड मंट जेन घान्सन फ्रील जैक करएक मिक्वानल होराविज एड्रियन मिचल माटिन समूर स्मिथ सी० एच० सिमन घाति प्रमुख कवि हैं । समकालीन अमरीकी काव्य क प्रतिष्ठित कवि तथा आसाचक पास कैरोल न एवरपीन रिब्लू (भंडू १६ जुलाई अगस्त ६१ ६२) म जिसवर्ग क विषय म लिखा है सम सामयिक अमरीकी काव्य साहित्य म जिसबग एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने तीम वष की आयु म वह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त की जो अपने जीवन काल म राबट फास्ट का मिली थी । यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा केवल उनकी पुस्तका क सुपठित पाठक समुदाय तथा जन-साधारण द्वारा नियमित क्रम तक हा सोमिन नहीं है बल्कि फास्ट की ही भाति उहोंने अपने समय क उन सभी एक्डेमिक’ आलाचका तक का अपना धान आकृष्ट किया है जो हाउस का पठकर कमी विधुग्ध हा उठ थे । फास्ट क नाम व दूसरे अमरीकी कवि हैं जिनकी हाउस’ जैसी आजस्वी तथा प्रसर काव्य पुस्तक की ८० ००० प्रतियाँ एक साथ हाया-हाय बिक जाती हैं वे पहले अमरीकी कवि हैं जो ब्लक भाउप्पेन कॉनेज भाइ घोवा तथा हारवड विश्वविद्यालय की विद्यास गैलरिया म घान्त भाव स बठे हुए दो-दो हजार काव्य प्रमिया को अपने आजस्वी वक्तृत्व दुमान्त और प्रमविप्यु’ काव्य पाठ स क्षण भरम मात्र मुग्ध कर देते हैं बीतीस वर्ष की आयु में हो व यद्य क उस चमक दिखर पर पहुँच गए है जब हर योग्यीय धौदिक अमरीका में आकर सबसे पहले जिसवर्ग से भेंट करन की इच्छा व्यक्त करता है ।”

यमः स्वप्ना और यात्रिक जगत् के विद्रूप के प्रति ऐलिन त्रिगर्भ की
 कविता में तीसरा कथक खोदिकता मानव के प्रति आदर और मानवीय दृष्टि के
 प्रति गहज गहानुभूति हैं। सामयिक यथाय की विह्वलता का गहरा चटुषोप
 एवं मानव जीवन एक गोली का मूसल भर है का सर्वज्ञ त्रिगर्भ की कविता
 में अभिव्यक्त हुआ है—

मर्यक्य साम्यप्रियता के अनन्त समकालिक
 स्पाकार के आभास जो गमती से प्रकट होकर
 मुझ मही के मूर्धनापूर्ण चेतना प्रेमा में
 दूक गल है
 दूक्य के दम होतो गम्य लिख म गुम
 हान दूक— दवा का चिह्न जो चक्कर गाकर
 आंग के आचार का नामन टहल जाता है—
 मुझे आंग मारता है और हम मुन हो जाते हैं ।'

मनु मानव चेतना की अनिवार्य नियति है त्रिगर्भ के दिन चटुषोपार्थ में मुत्ते
 दूक मही खोद कविता में हम बाप का जीवा है। जैक बेरएव ने सारे व्यक्तित्व
 प्रमाण के साथ दिया बताया है जो बच में सड़ता है और बीड़ उग
 साते हैं

जमन कवि करतोम्य के भी मनुष्य का स्वीकारता है दूक ग ही में
 भीन के लक्ष प्रतीक का मुन है ।'

पौर आदरर्षी जगत्-त्रिगर्भ आरिग मिलिषाम्य आदि दक्ष कविता में
 भी मनुष्य की चही तीव्रता है जमन उसकी वाच्य-नियति दूक में म म
 प्रमाण है—

मूर्ध में आरम्भ हुआ है भीन'
 जब एक पित्र मता गल हम पुत्र म'
 एक म गा दिया
 बि—मूर्ध में दिया है गया है ।'

कमानिवा का मनुष्यक कविता में भी मनुष्यक अभिव्यक्ति पा रहा है जीवन
 का काल कयो का मुकाए द रहा है। कवि मनुष्यक की दम मर्मांक पीड़ा
 में विह्वल प्रण है। विश्व के माध्यम में कवि जीन बाबाविवा की वाच्य
 दमिता में दक्ष काय और अजिब काय बम मका है—

त्रिगर्भ का मूर्ध का घर चिन्मात्र और भीन का
 न मियो दक्ष जमने दक्ष ।'

मार्ग दूक्य के दक्षक करती है कि यह बिब के मूर्धन दूक एक हो

वग के लिए न होता तो वह इस जवानों में न मरता।' स्पनिग कविता में भी मृत्युबोध को विश्व की समकालीन कविता की भाँति ही अभिव्यक्ति मिल रही है। रफाएल भातर्नो का कुछ काव्य पंक्तियाँ इस सन्ध में पर्याप्त होंगी।

अंधे बन कर मृत्यु के साथ चलन

.. ..

अपनी मौत से मिलते हैं।'

मेक्सिकन कवि आन्गावियो पॉन्ड मृत्यु प्रक्रिया की धार संकेत करते हैं—

“और दिल की घड़कना के पुल पर हम मौत

और दृश्यता को पहुँचन तक छोड़ते रहते हैं।’

सामयिक मयारों की धुन को—जो मूल रूप से अद्ययुगान मानव की निरन्तर मृत्यु की धोर धकन रही है—बलुवियन कवि इसत रिवररी ने अनुभव किया है वह युग के विनाशक चहर से भला भाँति परिचित है—

‘मर छोठ इस युग की प्रशंसा करने को अभिमान है

घोमा ध्वनिया और सहारों का यह युग

~~~~~

कितनी धीमी है बोध की यह प्रतिक्रिया।’

जीवन की अनेक विह्वलनाओं का आत्मसात करते हुए अन्ततोगत्वा रचनाकार का ध्यान ‘मृत्युबोध’ पर केन्द्रित हो जाता है और इसमें एक अप्रत्याशित रूप से आनेवाले मृत्यु के किसी भी क्षण की कल्पना कर सहम उठता है। पेरू का कवि सेजार् चतञ्जो विश्व जीवन की मृत्यु के जबड़े में फँसा अनुभव करता है—

‘जब सारी दुनिया तुम्हारे सामने आ गिरना

तब मौत की खाली आँखें मिट्टी के दो पास बन

उस आखिरी तौर पर जीव लेंगी।’

मृत्युबोध अनस्तित्व होत्र और प्रतिक्षण त्रिजीविषा शुद्ध मानव की हास प्रहिया का अनुभव करने से उपजता है। सम्प्रति युग का मानव प्रतिक्षण समाप्त होने की आशंका से सिहरता रहता है। इन्वेडोर के कवि जार्ज कररा अद्राप्ते ने इस अनुभूति की सम्पूर्ण प्रक्रिया में गहरा है—

“और हर मिनट दीवारें ढहने के

विजली गिरने के

इन्तजार में त्रिस्तता हूँ

स्वर्ग से न जान कब नोक्स आयाय

तर्तमे की उठान में मौत का घमक।

ग्रन्थियों से पूर्ण युद्ध-मुख ससार ( मृत्यु की भाँति हो प्रतिक्षण के युद्धभाव ) ने कवि के भावन दान-गत बोध को ऐसा भाषात पहुँचाया है कि उसे प्राणी मात्र में ही नहीं प्रकृति तक भी मृत्यु-मुखता के दर्शन होते हैं । मृत्यु के एक कवि जूनिओ डेराय सीमिंग की सघन कविता में यह बोध अविश्वस्यता पा सका है । विषय विधान के कारण उसकी प्रपञ्चीयता और अधिक बढ़ गई है । कवि की मृत्यु जीवन की खरम परिणति हान के कारण क्षुब्धानुमा भी लगती है । पथाय की कटुता की खपेना यन् मृत्यु उसे अभिराम लग तो आश्चर्य क्या—

‘मृत्यु-मुख सध्या एक पदत पर मुक्तो है

.. ..

गाँव के सामने रात बीम से मुस्कराती है

द्वंद्व चेतना लिए क्षुब्धानुमा भीत सी ।”

अर्जेंटाइन के कवि मोसोनारो की ‘मृत्यु कितनी भयंकर है का बोध हाता है । ब्राजील के कवि मानुअल बादेरा पूर्ण मृत्यु की आर्वासा करते हैं । किसी के कवि बिसेते हुई दोबो नारी के आँखों तक में मृत्यु दर्शन करते हैं—

भीत का अण्डा उसके भीतों पर सहारा रहा था ।’

कनाडियन कवि विलिस डेव ‘टूटे हुए’ शीघ्र कविता में मृत्युबोध की अविश्वस्यता देता है—

अपने आश्रयण के प्रति खुद जिम्मेदार

हम उनकी परम्परा और अपनी मृत्यु मिसी है ।

मृत्युबोध विद्वत्कवि का परम्पराओं के विघटन में जीवन मृत्यु के स्वतन्त्र में, आस्थाओं के टूटने तथा जीवन के उलटाव में अनुभव होता है । मृत्युबोध के कवि पीटरस्लेड भी मृत्युबोध से आन्दोलित हुए हैं—

“अमी-अमी जहाँ जिनगी बह रहा थी

वहाँ अब मात्र के बिगड़ों जैसा बर्फ का ढेर है ।”

अस्ट्रेलियन कवि जूडिथ राइट भी मृत्युबोध की तीव्रता को आत्मसात किए हुए हैं । ये कवि हम सबको मृत्यु की सेनाओं से घिरा हुआ अनुभव करता है सम्पूर्ण परिवेश मृत्युबोध का संदेश वाहक है अतः कवि धारण सत्य को भोगने की बात करता है उसने मृत्यु के खरखों की आहट सुनती है—

हमार आरों धोर अब मृत्यु की सेनाएँ लड़ी हैं

उसके कर्म पास घाते जा रहे हैं

पथराते हृदय पर अपने गर्म हाथों का ताता दास दो

और मुझे कुछ देर और निभार रह सन दो

झंघेरे मे दूढ़ बर मुझे अपने से बाँध लो  
 न्योबि मगाबों की बाली भूमिकाएँ बनने लगी हैं  
 घोर हमारे चारों घोर सब प्रेमियों के चारों घोर  
 मोत का घेरा जगहता भा रहा है ।'

मास्ट्रोलियन कवि जेम्स क्वैट अपनी प्रसिद्ध कविता 'मृत्यु बोध' में इसी बोध को जीता है—

“मैंने हवा व लिफाफे को भर दिया  
 भयकर संगेनों से तटस्थ घाकाग को  
 मैंने छुरा भोंक दिया जिसमें स तुम्हारे माम दर्शक  
 जीवन को ल जाते हैं अनिग्रह तक ।’

इंडोनेशिया के कवि डब्ल्यू० एस० रेन्डा की कविता में भी 'मृत्युबोध' को स्पष्टि मिली है। टर्की के कवि सी० टरासी ने 'मृत्योपरान्त शीर्षक से एक कविता लिखी है। गुजराती कवि अब्दुल करीम शेख खण्ड खण्ड हुई जिन्दगी से भाजिज आकर मृत्यु की कामना करता है—

मृत्यु—मुझे उसकी अत्यधिक आवश्यकता है  
 लाभो  
 मैं रात दिन नङ्गाब ओढ़ मटकता हूँ  
 फिर भी वह नहीं मिलती नहीं ।’

पंजाबी कवि कृष्ण अद्यान्त मृत्यु सम्भावना से अद्यान्त है—

“ये पतिव्रत की प्रतीक मेरी पत्नी  
 चौद जसे बच्चा सहित  
 यदि किसी दिन अनायास मृत्यु की गोद में लो जाय ।’

आज की कविता में बिम्ब का प्रत्यक्ष कवि किसी न किसी रूप में 'मृत्यु बोध' का अनुभव करता ही है। हिन्दी के नये कवि में भी मृत्युबोध काफी गहरा है। सुरेन्द्र कवि क 'गीत से सदभ दे दूँ' कविता संग्रह में 'मृत्यु बोध' कविता इसी परिप्रदय को ही उपलब्धि है—

जैसा कि मैं निवेदन कर चुका हूँ कि मृत्यु बोध से आत्मान्त होना भी सत्य महत्व को स्वीकार करने के अनिवार्य कारणों में से एक है। जीवन की अनिश्चितता ने उनके पैर उखाड़ दिए हैं वे सत्य के सारे मुख को एक बारगी निचोड़ लेना चाहते हैं। व्यवस्थित जीवन और विद्वत् म नित्यप्रति होने वाले परिवर्तन ने मानव अस्तित्व में एक प्रकार की अस्थिरता ला दी है। आज की कविता से पूर्व छायावादियों ने सत्य की अवस्था को नहीं पहचाना था वे व्यवस्थित जीवन और तरल भावबोध के हमारे थे। उनमें या तो प्रेम पीड़ा थी या दुःख



दास का धीरे धीरे दुखाकर भ्रानन्द लेने की प्रवृत्ति थी। परिवेश गत यथाथ कटुता से उनका सावका नहीं पठा या दूसरे शब्दों में वे कोमल भावनाओं के धनी थे। आज के युग ने मनुष्य को ठीक इसके विपरीत जीने को बाध्य कर दिया है। उसे घुटन ऊब और विवशनाओं एवं उसके हुए जीवन में एक भी सुखद क्षण प्राप्त होता है तो वह उस क्षण का पूर्णता में जीने को साक्षित हो जाता है। स्वतन्त्रता के लिए निरन्तर संघर्ष करती हुई अफ्रीकी साम्यिक कविता चेतना-कोणों ॥ विश्व की प्रबुद्ध कविता का समानान्तर न होने पर भी क्षण-सत्य और उसके महत्व की सच्ची पकड़ से युक्त है। कवि जैक कोप की काव्य पंक्तियाँ क्षण-सत्य-ग्रहण की स्थिति की उजागर करती हैं—

छादसीय सरिता पर अभी वर्षों से टकराते क्षणों को  
पहचानो और तुम वायु कृसुम—जड़हीन पुष्पा को  
गंध सिंच पास पौधों में खोजते आया।'

पञ्चादी मयी कविता में भी क्षणान्त-सौन्दर्य अभिव्यक्ति पा रहा है।  
कवि स्वर्ण की दुग्ध कविता से कुछ पंक्तियाँ इस सन्ध में  
उद्धृत हैं—

माह  
ये क्षण—

समय के कोमल पलों से उतार कर बाँध लू।

विश्व कविता में एकाकीपन की पीड़ा का बोध मृत्युबोध के चलते ही उभरा है। असहाय जीवन का भार बाह्य मानव भीड़ में भी स्वयं को निरान्त प्रवेला अनुभव करता है। बदलते हुए मानदण्डों ने उसे खमस्त समास्याओं से झुझने के लिए प्रवेला छोड़ दिया है। एकाकीपन मानवीय कुष्ठरोगों के अनेक कारणों में से एक है। यात्रिक युग को इस देन से मनुष्य भीतर ही भीतर दूध गया है वह युग की यात्रिकता और जीवन की यात्रिकता—एक रसता—की जिसवर्ग की कविता में अनुभवता है—

मैं फिर मरी वापस आ गया हूँ—यात्रिक  
भ्रम की अनुमति अपने झूठ भाग्य पर लौट  
पाई है—दुःख विषय संगीत के साथ—  
मैं छाड़ देता हूँ।

प्रसिद्ध रूसी कवि पास्तरनक की कविता में एकाकीपन का तीव्र बोध एवं जीवन की भार विवशता की प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। कुछ पंक्तियाँ समुद्धृत हैं—

मैं प्रवेला हूँ

सब दूदा जा रहा है

दिनगो म घसना मीनन म घसना नहीं है ।'

एकाकीपन को मर्दव्यापन अनुभूति विन्व-कविता म इस छोर स सेकर उस छोर तक समाहित है । एकाकीपन का बोध भविसको के कवि सुई करदूदा की कविता बहुत पहल का वस्तु म जीवन के भावपक भसल भार क साथ स्पष्ट हुआ है ।—

निजन क किसी कोने म

भरने अपना तिर भपन हाया म लिए

प्रतिहसक प्रत का तरह

तुम यह साच-साच कर रात रहोग कि

जिन्वगो कितनो खूबमूरत यो धीर कितना व्यय ।'

भरीकी कवि इन्द्रिज जोकर को कविता 'मैं नहीं चाहता इसी सन्म की उपलब्धि है ।

उपयुक्त एकाकीपन का बोध मृत्युबोध यात्रिकता, परिवेश गत जीवन पीडा तथा अन्तविराधा क इस युग में कवि व्यंग्य-मृष्टि करने के लिए बाध्य है । प्रत्येक कवि जीवन की बड़बाहुट को व्यंग्य की तल्ला म भूस जाना चाहता है । वह समाज पर व्यंग्य करता है हृदियों और परम्पराओं पर व्यंग्य करता है कभी-कभी स्वयं पर भी व्यंग्य करने लगता है । गत युगीन मान्यताया क प्रति उसके अन्त करण में विद्रोह है इन मान्यताओं की रक्षक और भाज के कवियों की उपलब्धि को नकारने वाली युग बोध से पिछड़ी पीढ़ी नय कवि के मार्ग म बाधक बनती है । एही स्थिति में वह यदि इन परम्परावादिया और नए आयाया का मुह बनाकर देखने वालों के प्रति व्यंग्य निवेदन' न कर तो उसकी स्वयं की स्थिति व्यंग्य का विद्रूप बनकर रह जाय । समाज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार भाषिक विषमता और उसके बड़ा का अनुभव करता हुआ मसाया का कवि ईतियाग हाग एक व्यंग्य मृष्टि करता है—

इसलिए म सोचता हू कि ग्टायर हान पर

मैं राजनीति में हिस्सा लू गा

या कोई व्यापार कर लू गा, कथाकि सरकारी नौकर

कभी जल्दा भरीर नहीं हो सकता ।'

सम्प्रति युग का रचनाकार विमंगताओं क कारण असतोष का अनुभव कर रहा है इस युग को यदि भय और असतोष का युग कहा जायतो एक बड़ी सीमा तक सही होगा । बीट कवि पास बर्लकवन ने असतोष की अभिव्यक्ति दी है ।

दंत का धीरे धीरे दुखाकर आनन्द सेने की प्रवृत्ति थी। परिवेश गत यथार्थ कटुता से उनका साबका नहीं पड़ा था दूसरे गन्दों में वे कोमल भावनाओं के धनी थे। आज के युग ने मनुष्य को ठीक इसके विपरीत जीने को बाध्य कर दिया है उसे घुटन ऊब और विवशताओं एवं उसमें हुए जीवन में एक भी सुखद क्षण प्राप्त होता है तो वह उस क्षण को पूर्णता में जीने को सलायित हो जाता है। स्वतंत्रता के लिए निरन्तर सघर्ष करती हुई अपनी सामयिक कविता चेतना-कोणों से विश्व की प्रबुद्ध कविता के समानान्तर में होने पर भी क्षण-सत्य और उसके महत्व की सच्ची पकड़ से युक्त है। कवि जैक कोप की काव्य पंक्तियाँ क्षण-सत्य-ग्रहण की स्थिति की उजागर करती हैं—

छारदीय सरिता पर जमी बर्फ से टकराते क्षणों को  
पहचानो और तुम वायु कुसुम—अडहीन पुष्पों को  
गंध सिंच घास पौधा में खोजते आभा।'

पञ्जाबी नयी कविता में भी क्षणनाय-सौन्दर्य अभिव्यक्ति पा रहा है।  
कवि स्वर्ण की युग्म कविता से कुछ पंक्तियाँ इस सदर्भ में  
उद्धृत हैं—

माह  
मे क्षण—

समय के कोमल पलों से उतार कर बाँध लू।

विश्व कविता में एकाकीपन की पीड़ा का बोध मृत्युबोध के चलते ही उभरा है। असहाय जीवन का भार बाह्य मानव भीड़ में भी स्वयं को नितास्त भवेत्ता अनुभव करता है। बसते हुए मानदण्डों ने उसे समस्त समास्याओं से छूटने के लिए भवेत्ता छोड़ दिया है। एकाकीपन मानवीय कुष्ठाभा के अनेक कारणों में से एक है। यात्रिक युग की इस देन से मनुष्य भीतर ही भीतर दूढ़ गया है वह युग की यात्रिकता और जीवन की यात्रिकता—एक रसता—को जिसवर्ग की कविता में अनुभवता है—

मैं फिर यही वापस आ गया हूँ—यात्रिक  
भ्रम की अनुभूति अपने मूढ़ भाग्य पर सौट  
मार्द है—दुद्र विषय संश्लेष के साथ—  
मैं छोड़ देता हूँ।

प्रसिद्ध स्त्री कवि पास्टरनक की कविता में एकाकीपन का तीव्र बोध एवं जीवन की भार विवशता की प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। कुछ पंक्तियाँ समुद्रभूत हैं—

मैं भवेत्ता हूँ

सब हुआ जा रहा है

हिन्दी में खलना मीनन म भसना नहीं है ।'

एकाकीपन की सर्वव्यापी अनुभूति विषय-कविता में इस छोर से सहर उस छोर तक समाहित है। एकाकीपन का बोध भविसवी के कवि सुई करनूत की कविता बहुत पहले का वसत में जीवन के भावपन प्रसह्य भार के साथ स्पष्ट हुआ है ।—

निर्जन क किसी कोन में

अकल अपना सिर अपन हुआ म लिए

प्रतिहसक प्रन की तरह

तुम यह साध-सोच कर रोत रहोगे कि

जिन्ही कितनी सुवमूरत यो और कितनी व्यथ ।'

अकीकी कवि इन्द्रिह जोकर की कविता 'मैं नहीं चाहता' इसी सदर्म की उपलब्धि है।

उपयुक्त एकाकीपन का बोध मृत्युबोध, या निरुत्ता, परिवेष्ट गत जीवन पीड़ा तथा अन्तविरोधा के इस युग में कवि व्यंग्य-मृष्टि करने के लिए बाध्य है। प्रत्येक कवि जीवन की कड़वाहट को व्यंग्य की तस्वीर में झूल जाना चाहता है। वह समाज पर व्यंग्य करता है रुढ़ियाँ और परम्परावादी पर व्यंग्य करता है कमी-कमी स्वयं पर भी व्यंग्य करने लगता है। गत युगीन मान्यताओं के प्रति उसके अन्त करण में विद्रोह है इन मान्यताओं की रक्षक और भाज के कविता की उपलब्धि की नकारने वाली युग बोध से पिछड़ी पीढ़ी नये कवि के मार्ग में बाधक बनती है। ऐसी स्थिति में वह यदि इन परम्परावादियों और नए आयामों का मुँह बनाकर देखने वाला के प्रति व्यंग्य निवेदन' न कर तो उसकी स्वयं की स्थिति व्यंग्य का विद्रूप बनकर रह जाय। समाज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार भाँवक विषमता और उसके कष्टों का अनुभव करता हुआ मलाया का कवि ईतियांग हांग एक व्यंग्य सृष्टि करता है—

इसलिए मैं सोचता हूँ कि रिटायर होन पर

मैं राजनीति में हिस्सा लूँगा

या कोई व्यापार कर लूँगा, क्योंकि सरकारी नौकर

कभी जल्दी भरीर नहीं हो सकता ।''

सम्प्रति युग का रचनाकार विवशताओं के कारण असंतोष का अनुभव कर रहा है इस युग की यत्नि भय और असंतोष का युग कहा जायता एक बड़ी सीमा तक सही होगा। बीट कवि पाल जर्नकबर्न ने असंतोष का अभिव्यक्ति दी है।

‘मेरे अस्तोप की छाड़ी बर रेखाए  
मेड़ के इधर उधर मेंढरा रहो हूँ  
सुस्त अद्व चेतन अद्व मस्त  
मन को मित्रों से मर रहा हूँ ।’

ऐड्रियन मिचल की कविता मध्यम उपलब्धि देखी जा सकती है ।

विश्व-कविता म नयी चेतना के प्रति अटूट आस्था नये कवियों के ( टूटे हुए होने पर भी ) विश्वास की प्रतीक है । नयी कविता की नयी चेतना के प्रतीक रूप सूर्य का प्रयोग सगमग विश्व के समस्त कवियों में मिलता है । किसी किसी कवि ने सूर्य को ( अस्त होते हुए सूर्य को ) पुरानी परम्परा और आस्था का प्रतीक भी माना है । भाष की सार्वभौमिक काव्य चेतना का प्रतीक सूर्य विभिन्न राष्ट्रीय विभक्त झूझण्ड को चेतना कोलों में परस्पर जोड़ता है । कविता के माध्यम से विश्व-मानव की यह एकता राजनतिक हलबंदियों का पर्याप्त खार होन पर भी विश्व-मानव की एकता की सूचक है साथ ही विश्व-हृदय के एकता और समान बोध का प्रमाण है । उपमान रूप में भी इस युग की कविता म सूर्य का प्रयोग बहुत अधिक हुआ है । यह सूर्य-प्रयोग बहुत अछो में बहुप्रयुक्त चर्चा की प्रतिक्रिया स्वरूप भी हुआ है । विश्व-कविता में स्थान-स्थान पर निराशा परक कोलों में भी युग समसामयों पर चिन्तन हुआ है । सूर्य का चेतना-के प्रतीक रूप में तथा उपमान के रूप में अत्यधिक प्रयोग की एक रूपता अब से पहले विश्व-काव्य में नहीं देखी जा सकती । सामान्य रूप में सूर्य नयी चेतना की दहकती बिम्ब प्रतीकगत अभिव्यक्ति है । सूर्य-धूप भी चेतना की बिम्बमयी सरल उपलब्धि है साथ ही वह काव्य प्रक्रिया के अनेक पक्षों का उत्पादन करती है ।

इस कवि गैरिट आराटेबैंग अपनी सूर्य कविता म बचनहीन नयी कविता के संकेत देता है—

हमारे रक्त कोला से उठकर “ओ वसन्त सूर्य  
मरे म पूर दीटना है बचन मुक्त ।’

बनाडा का कवि क० बी हर्ज नयी चेतना के प्रति ‘एन्जिक’ पुरानी पीढ़ी-को स्वयं को मन्त्रकार मानती रही है—के प्रति पैगम्बर नहीं हा कविता म उनकी चेतना को मृत होता हुआ सूर्य बताता है । नयी चेतना सूर्य को मन्त्रकारों ने झुठलाया किन्तु युग-बोध से कटे हुए ये मन्त्रकार अपने अस्त होते सूर्य के सद्गामी होंगे उन्हें हथिनार बासन पड़ने । कुछ मन्त्रकारों ने यह

बायें धारम्भ भी कर दिया है । मशी पाड़ा का रखना'मक' आश्रित इस बविता  
में सकल प्रभिव्यक्ति पा सका है नये प्रताकों और बिम्बों व भाष्यम से—

“ये समन

जिनकी सावें उत्तर चुकी है

पुपचाप धपने जसाए जान का इन्तजार कर रहे हैं

उनके पात्र भड़ा ने उपहास व गा उ से भरपूर है

जो मृत्यु के बलान्त की हारत म धीर तेजी स भाषने लगती है

सात रंग के उस गमोच पर

जो मन्दिर के वन तोरणा से

चक्रसने सूरज तक बिछता है

गर दृष्टा न बन शान्त मे वै

सूरज को दखा

बढ़ती हुई नासिमा जैसा

पूजत आसमान में

बहु तुम्हारे नर्तन पर

स्तुतिपौ नहों पा सका

भेड़ सासुप तुम

सांड स हिंसा प्रिय

सूर्य पर गुरोत्रि

और ज्यादा बच्चों छोदने से बच कर

जब बहु सास मेने को दखा

तब बिगा की आग में से जिल्मी की कामना प्रबन्ध

करती भड़ को

पैगम्बर ने उत्तर देना भी उचित नही समझा

तुम पैगम्बर नहीं

एक आत्मी ही हो एस देश के

जहाँ के साथ भेड़ें हैं । सच्चा संत

तुम्हारी तरह जवान

नहीं बसा सकता । वह

धेधेरे आसमान में घुर्ने की एक सहर

देखकर ही

धपने हथियार रख देगा

और मृत सूर्य के उब के समान छुट ना लट जा'गा

भलजीरिया का कवि धन्तुल बहाने असबयाती 'जगमगाओ ओ सूर्य कह कर नये बाप का आह्वान करता है। मन्त्रकारा द्वारा बिद्ध घायल सूर्य जीवन की धमिनकुण्ड सा जलाता है।'

थी मुरेन्द्र वे 'बीन से सदर्म दे दूँ' कविता संग्रह की 'सूर्यस्त्रिया कविता में मन्त्रकारा के 'चेतना सूर्य' विषयक नकार' को व्यक्त किया है

पल्ल सटके बका ने  
 ठूँठ रखा पर बठे  
 मुँह बाए  
 भीचक सूर्य दसा  
 गदनें मुकासो  
 सूरज की नकारा।'

दक्षिण अफ्रीका के कवि गार्डनर के सृजन के लिए खुले हाथों पर सृजन स्वीकृति स्वरूप सूर्य बुम्बन प्रकित करता है—

'यहाँ सूर्य का समतल आसोक पहले बिखरता है  
 निष्कपट बुलु हुई किरणें  
 आँखों भीर चेहरे पर मुक आती हैं  
 मरे सीतल खुले हाथा को घूमती हैं।'

मे कवि अपने जीवन के प्रत्येक क्रिया क्षण को नये बोध से आलाकित करने के लिए विह्वल है— मेरे उन्मुक्त प्रवाहों पर सूरज सुख में या दुख में आश्चर्य बोध या बुम्बना म प्योति दे।'

बैरेवियन कवि ए० जे० सिमर अपने रक्त की प्रत्येक बूंद को, त्वचा के प्रत्येक रोम की चेतना सूर्य से प्रकाशित अनुभव करता है—

सूर्य आज मेरी हड्डियों में गहरा जा चुका है  
 सूर्य मेरे रक्त में मेरी त्वचा के नीचे रोधना बह रही है  
 सूर्य शक्ति का ध्वज है जो धु धलाते सिंगारे पर  
 बरस रहा है।

अपार्थ जमी कविता का संकेत यही कवि सूर्य प्रतीक के माध्यम से देता है—

यह रुम्मना सूर्य में अपनी सौह किरणों के बल  
 नदी की बोध से उत्पन्न की है।'

एक दूताग बैरेवियन कवि सैमुएल सेलवा मन्त्रकारों के सूर्य को पराजित करने की बात कहता है—

मूर्त्य !

मगी पीठ पीछे सीमे निपोरत मैं तुम्हें कधों से  
खून म नृका दिया घन जगलों की भादिया खोष'  
मूर्जीतण्ड की कविता में भी मूर्त्य का उपयुक्त सम्भ म हो स्वीकारा गया  
है ! नयी चतना के सम्मुख खण्डित मानकार पानी का धामकयन कवि गीहन  
चैलिस की इन काव्य पंक्तियों म प्रकट हुआ है—

‘मैं जा अब तक एक दम मोघा तना हुआ खनता था  
तेह्रों की वास की तरह फुल गया हूँ  
कमे विन्नाम कर कि मैं सह नू ना प्रचंड घातप  
मूय का साक्षात्कार कर लूँगा  
अपनी रँगती हुई परछाईयाँ नहीं दखूँगा ।  
अनुभव करूँगा कि अन्वण्डित हूँ ।’  
कैरेविया का कवि मार्टिन कार्टर पुरानी पीढ़ी के मूर्त्य का हार का देख  
पा रहा है—

मूय ने बही जल्दी हार मान ली है उस समय में  
जहाँ जय होती है वहाँ ।  
कोरिया का कवि को-बॉन रचनाकारों की नयी पीढ़ी को मूय चेतना प्राप्त  
कर नय बोध की प्राप्ति के लिए सदेव देता है—  
आज रात समुद्र के गम में मूर्त्य टकराता फिरेगा  
बकास का हाथ में ठठाए  
उसकी रोगनी में बटोरे मोतिया की तरह  
--- -- -- -- --  
और तुम समुद्र ! पूरे जीवन में होगे तब एक और

ज्वार उत्पन्न करना  
इस सपपरीत युग में जहाँ एक और मानव परिस्थितियों के दबाव से—  
विवश होकर आस्थाहीन हो रहा है वहाँ दूसरी और इस दबाव से अस्तित्व  
बनाए रखने के लिए प्रेरणा ग्रहण कर नयी आस्था के अकुर स्वर्ग में मजो  
रहा है । इस के अतिरिक्त कवि आनाहोमोर मायकोव्स्की ने इस नयी अनुचित  
होती हुई जिजीविषा पंक्ति को नए धाठों म पड़ा है—

‘नहीं एक मछली के पंखों म मैंने  
नए धाठा की धाकानाएँ पड़ी ।  
रचनाकारों का एक वर्ग ऐसा भी है जो सम्प्रति युग का—परिवर्तित सवेना  
को कट नहीं पा रहा है वहीं गुनुमुग की तरह गल-बोध के रत में मुह गढ़ाकर



नयी आवाजों' के प्रति चघिर बना हुआ है। यूगोस्ताविया के रचनाकार वेस्नापम्न इस स्थिति की ओर संकेत करते हैं—

आरों ओर लाग चल फिर रहे हैं  
पर मैं अपना मुह नहीं मोड़नी  
क्याकि मैं पुराने तुफानों की आवाजों में  
हूँ ही हूँ ही हूँ।'

यदि विघटित होते हुए जीवन मूल्यों और यथार्थ की विद्वम्बना को सहन करता हुआ मानव भीतर में आस्थावान और भविष्य के प्रति विश्वास से पूर्ण रहे तो अंततोगत्वा वह सफल होगा। अफ्रीकी कवि जैबकोप का इस पर विश्वास पूर्ण है—

'रैत के सहरोले टीले  
छायाकुल हो खींचते हैं मेरे पद चिन्हा पर  
यदि मैं उग्रत सत्रातु बरखा मेंलों की तरह मृत्यु करूँ  
तो क्या मैं स्वयं में अलख पुष्पा का नहा बांध लूँगा।

'पूज्योत्तम' कवि चार्ल्स बदा मानता है कि विघटित होते हुए जीवन मूल्यों युग विश्रुत खलन एवं मानव की कटु आराजक मन स्थितियाँ ही 'नए गीत की आँसू देंगी' अद्ययुति से ही रूपाकृति जन्म लगे।

संस्कार पीढ़ी का संवेदन मोघरा हो गया है

वह नए युग के अन्तविरोधों की सही प्रतिक्रिया कह पाए में प्रायः असफल हो रहा है। पण्डित का कवि इससे विवेकरी कितनी घीघी है वह बाध की प्रति—'त्रिपा' कह कर इसी परिस्थिति से अद्ययुति कराना चाहता है। बनावट का कवि एक दिवसीय पुरानी कविताओं को नष्ट करने का आह्वान करने के रूप में पुराने धारहीन बोध से पुरानी रूढ़ियों से मुक्त होना चाहता है—

आज

पुरानी कविताएँ नष्ट करने का दिन है  
माएत से पहन ही उन्हें नष्ट कर दें।'

करविषा का कवि यह स्वीकार करता है कि हर युग में मठाधीनो द्वारा कुछ सीमाएँ निर्धारित की जाती रहती हैं किन्तु नयी पीढ़ी ने उन्हें हमला ही तोड़ा है यह ऐतिहासिक तथ्य सत्य रहा है इसलिए यदि आज 'युगना बोध और उसके संरक्षक' बोधों पर रह रहे हैं दूर रह रहे हैं तो इसमें जीवन और विनाश करने की आवश्यकता नहीं उन्हें अपनी स्थिति पर संतोष करना चाहिए।

५५० ए० कीलीमाज की कविता में इस सत्य को साक्षी मिला है—

विनाशो सत्ता ही है परम्परा के विरोधी

“ “ “ प्रेमम्बर पान्नी धीर राजा सग-

सीमाले स्थापन रहू धीर ब दृढ़ता रहें ।”

एक सीमित परिधि में रहने वाली उन्नी कविता में भी नया बाप धीर नयी भावना जन्म ले रही है। उन्नी का कवि 'मर कर मार के मृत हो जाते हुए अपने अनाद की कल्पना से दृढ़ता पा रहा है।

नया घटना के साथ नयी कविता में नया कथ्य धीर विषयों के प्रति नया दृष्टिकोण भी स्पष्ट हुआ है। सादृश्या, सहनता और बोद्धि भूक्तव्य एही मान है। हमने कवि जयार्थी हजानोव उपमान कविता में नए कथ्य की धार इंगित करता है—

‘शाप’ इसी तथ्य का कुछ उपमान हो,

कि मैं हवा में भाँस ल रहा हूँ

कि मेरा धीवर बोट बायीं तरफ

सूर्यास्त की रागना में नहा रहा है

धीर दावों तरफ सितारों में डूबा जा रहा है ।”

अज्ञेयता का कवि जार्ज मुई बारेबोज कुटा, धाँसा धीर पेड़ पत्तियों की दोस्ती में जीवन बिताता खूबमूरत समझता है ।’

प्रम विषयक दृष्टिकोण भी नयी कविता में बदल हुए कोणों से देखा जा रहा है। उसके प्रेम स्वीकरण में बोद्धि भूक्तव्य और एक पंचा-पंची सी तटस्थता है इस निस्संगता के कारण प्रेमानुभूति अधिक यथाप स्थिति पर भा गई है अति भावुकता और गालपन में उस निजात मिल रही रही है। स्वच्छन्दतावादी प्रमहृष्टि नयी कविता में प्रायः बंद चुकी है। नयी कविता के कवियों का एक बर्ण वासनाहीन प्रम की मान्यता नहीं देता, कहा-कहो वासनामयता नयी कविता में अति तक पहुँच गई है यह उसका स्वस्थ पक्ष नहीं है। किन्तु वासना-हान प्रेम की स्थिति यथाप के विरुद्ध है और नया यथार्थ की भूमि से दूर नहीं रहना चाहता। प्रम की स्वच्छन्दतावादी कल्पना की परिधि से निकाल कर उस नैसर्गिक रूप में अनुभव करने का श्रय भाव की विषयकविता को है। प्रम का अगहरी रूप वासना के मार्ग से ही जाता है अतः वासनाहान होकर प्रम की अन्तिम परिवर्तना का प्राप्त नहीं किया जा सकता। न्यूजोनल का कवि मोरिस हुमन अपनी कविता में बन्दे हुए कोण से प्रेम पर विचार करता है—

‘जहाँ अरो वासना है

निश्चय ही वहाँ मेरा प्रेम भा है

जहाँ अत्यधिक प्रेम है वहाँ वासना भी है ।”

प्रेम का एक स्वरूप यह भी है जहाँ कवि सम्पूर्णतः वासनात्मक सामे में होने पर भी जीवन सघन को न भूखने के कारण वासना को सम्पूर्णतः भी नहीं पाता। युग-स्वाभाव ने मानव को यहाँ तक नपुंसक बना दिया है। जगत्ता के कवि विनय मजुमदार का कविता में इस बोध का स्पष्टता मिली है—

आगृत वासना की स्थिति में भी  
नहीं देख पाता हूँ किसे हुए कसे हुए फूल ।’

निमित्त इजिप्स आज की ईमानदारी और यथार्थ परक प्रेम अनुभूतिक वासना से परे नहीं मानता—

‘प्यार करने वालों के बीच ज्ञान का आदान प्रदान होता है  
होगा यह बात समयानुसूल नहीं है ।’

मन्त्रकार समीक्षका ने नयी कविता में अभिव्यक्ति पाई जाने वाली वासना और कुंठा की जिनकी निंदा की जा सकती थी की है और इसी आधार पर उन्होंने नयी कविता की उपलब्धियों को सम्पूर्णतः नकारा भी है। वासना का परिणाम मानव है यदि वासना निरा है तब मानव भी निरा होगा। कदाचित्त इस प्रश्न का उत्तर मन्त्रकार पीढ़ी के पास नहीं है। काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त वासना की आलोचना कराने वाले मन्त्रकार समीक्षक वासना प्रसूत मानव को परम पवित्र मानते हैं यह अन्तर्विरोध है यह उनकी समीक्षा का द्वैध है इसी द्वैध बुझि से क्या वे कविता का सही मूल्यांकन कर सकते हैं? आज की विद्व-कविता दो विरोधी कोणों पर सृजित हो रही है। बीट कवि पाल ब्लैक बन—

घोतल धारदीय प्रकाश  
( पृथ्वी घूमती रहती है )  
सांयकाल के क्रोलो को  
भर रहा है मैं अनेसा  
विस्तर पर बठा हूँ ।

सैसे अत्यन्त व्यक्ति पादो पीडाकागक बोध को भीता है तो इतराएल का कवि बर्नाड काव्य युद्ध विमोषिका को सम्भावना में समाप्त हो जाने वाले विद्व के लिए शान्ति बम चाहता है जिससे ‘निर्घा गुलाबों’ से डक जाए। यह समष्टिवान्नी चिन्तन नयी कविता का दूसरा धार है।

—सुरेन्द्र उपाध्याय

आलोचनात्मक विवेचन

## सकेतिका

|                       |                      |    |
|-----------------------|----------------------|----|
| सामयिक वगला कविता     | सुरेन्द्र उपाध्याय   | १  |
| हिन्दा की नयी कविता   |                      | १३ |
| उपलब्धि अपन्था        |                      | २४ |
| उदू का नयी कविता      | राही मामूम रजा       | ३५ |
| आधुनिक मराठा कविता    | चन्द्रकान्त देवतासे  | ४१ |
| एक विहगावलोकन         | रघुबीर चौधरी         | ४६ |
| वर्तमान गुजराती कविता |                      |    |
| आधुनिक पंजाबी कविता   | शांति देव            | ५६ |
| की प्रवृत्तियाँ       |                      |    |
| भारतीय अंग्रेजी कविता | पी० लाल              | ५८ |
| अनुलक्ष               | एन० चन्द्रशेखरन नायर | ६० |
| आधुनिक मलयालम कविता   | मलिक मोहम्मद         | ६६ |
| आधुनिक तमिल कविता     | गुरुनाथ जोशी         | ७२ |
| कन्नड में नयी कविता   | विनीत चन्द्र नायक    | ७५ |
| समसामयिक उडिया कविता  | अमरेन्द्र चतुर्वेदी  |    |
| आधुनिक तेलुगु कविता   |                      |    |

# सामयिक वगला कविता

नयी पुरानी दीदी और नय पुरान युग बाध का संघर्ष विश्व की अनक भाषाओं की तरह वगला भाषा में भी चला है ।

रवीन्द्र ने साहित्य की अनक विधाओं में लिखा । कुल मिलाकर रवीन्द्रनाथ के व्यक्तित्व में युगीन कृतिकारों की आकृति सदा आभासित किया । आभासित इस अर्थ में कि युगीन कृतिकारों का रवीन्द्र का जीवित रहन सर (भाव तक भी) उचित मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है । यह सत्य व्याख्या की अपेक्षा नहीं रखता कि रवीन्द्र का किसी भी कृतिकार में पूर्ण अनुसरण नहीं किया यदि किया भी तो वह पूर्ण सफल नहीं हो सका । यही कारण है कि रवीन्द्र का 'रवीन्द्रियन' रूप में परिवर्ती कृतिकारों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा ।

रवीन्द्र का समय में ही रवीन्द्र की रचनाशक्तिओं से सबसे मुक्त विविध शक्ति में कृतिय रचनाकार प्रतिभा का साथ स्वतंत्र और संगत मृदुल कर रहे थे । अन्तर्गतीय व्याप्ति मिल जाने का कारण रवीन्द्रनाथ का समकालीनों का सम्यक मूल्यांकन नहीं हो सका ।

काबो नजरल इस्लाम का काव्य में जाने-अनजान में ही नहीं, रवीन्द्र प्रभाव (चाहे जिस रूप में हो) से मुक्ति प्राप्ति अभियान का प्रारम्भ हो जाता है । नजरल विद्रोह के कवि हैं कुछ कुछ वैसा ही जिन कि हिन्दी का निराला किन्तु इस अन्तर के साथ कि निराला का अपना एक जीवन दान का नजरल का सुनिश्चित जीवन दान नहीं है । उनका विद्रोह की क्या परिणति है कदाचित्त हमसे वे पूछत भिन्न नहीं है ।

बंगला का आधुनिकतम काव्य बुद्धदेव बसु में उसी तरह आरम्भ होता है जैसे हिन्दी में प्रज्ञेय से । और बुद्धदेव से लेकर शक्ति चट्टोपाध्याय तथा संगीपन तक नय बाध और नय गिल्फ का अनक रूप सदा सम्प्रपण हैं । बुद्धदेव बसु में यथाय का गम्भीर पकड़ और बौद्धिकता का प्रमत्त मित्र में प्रतिष्ठित रूप में सामाजिक मतार्थ का साथ रामकि सिद्धम जीवनानुशास में प्रवृत्ति और जीवन का सम्यक ऐन्द्रियिक बोध और फिर बाद का नय कविता में कुप्ता कुप्ता धृणा पलायन गिन्गहानता की पराकाष्ठा (सासनीर से नय बीट कविता-शक्ति चट्टोपाध्याय और संगीपन में) बैंगला कविता की यह पूरी यात्रा यथाय की जमीन पर हुई है, कही दृष्टि कामरेडियन है या कही अपरिचित सशस्त्र का प्रभाव ।

सामयिक बैंगला कविता में यथार्थ की सच्ची पकड़ है । 'रवीन्द्रियन' बापवोय और गीतापन नहीं है । इसमें सबका एक तासी बौद्धिकता है जो माननात्मकता

को महा तक स्वीकार करती है जितनी को अपेक्षा है। रचनाकार यथार्थ मूर्ति का पकड़ कर ही कल्पना का सहयोग स्वीकार करता है। उसकी कल्पना निर्वाध और जीवन मुक्त नहीं है। मोहितसास इस तथ्य को समझ पाये हैं—“बैंगला साहित्य में अब तक मुख्यतः भाववाद का ही बीजबोधा रहा, बकिम की कल्पना में एक बड़े घादस का भाव है। रवीन्द्रनाथ की कल्पना में वस्तु तथा भाव की एक समन्वय चेष्टा है और जिनका हम भारतीय उपन्यासकारों में सर्वाधिक प्रगतिशील तथा श्रान्तिकारी समझते हैं वे भी विश्लेषण करने पर वस्तुवादी नहीं पाये जाते। बकिम चन्द्र की कल्पना में वास्तविकता एक भाषा के रूप में नहीं थी, उनकी कल्पना थी सम्पूर्ण निरंकुश और बेरोकटोक। रवीन्द्रनाथ की कल्पना में वास्तविकता और रूपान्तरित होगई है। मानो वास्तविकता की वास्तविकता ही लुप्त होगई है। भारतचन्द्र की कल्पना में वास्तविकता का समस्या जटिल हो चुका है वास्तविकता के लिए एक प्रबल भाव की सृष्टि हुई है। इस त्रिभाषा से साम्य बैंगला साहित्य का वस्तुवाद खरम हो गया है। इसका भाव जो साहित्य होगा उसमें वास्तविकता के साथ वास्तविक रूप से निबटना पड़गा। मोहित सास ने यद्यपि यह बात उपन्यासों के यथार्थ के लिए कही है तथापि यह अपनी सम्पूर्ण अभिव्यक्तियों के साथ नहीं जेतना स वृत्त की कविता पर संपूर्णतः लागू होती है। सम्प्रति युग के नये स्वीकार की कविता में यथार्थ की सही स्थिति होने के कारण मानव को (बाह्य और आन्तरिक दोनों रूपों में) समुचित ध्यान मिलता है और उसके परिवेश के लिए उज्ज्वल भाव भी। इस कविता में आधारहीन धारणाओं को नहीं पाला जा रहा है। ये धारणा रचनाकार के दायित्वबोध का उस सीमा तक नहीं समर्थन पाते हैं जिस सीमा तक आकर वायवीय नहीं होनाते। बैंगला कविता का यथार्थ किसी विचार के लिए न होकर बादमुक्त यथार्थ है। यथार्थ विचार के कारण हिन्दी की नयी कविता की तरह बंगला सामयिक कविता पर भी गत युगबोध के प्रहरी आलोचकों ने अनेक तरह से आक्षेप किए हैं। “कहा जाता है कि अति आधुनिक साहित्य छान साहित्य है प्राचीन साहित्य रामायण है ठा यह कामायण है। अति आधुनिक कविता का कामोद्दीपक तथा शरीर की पूजा करने वाली कल्पित वास्तवता भी कहा गया है। मैं समझता हूँ यह बिल्कुल झूठा और अनुनियामक साधन है। हाँ जिन बातों को अब तक हमारा समाज के नातिवाद साहित्यका ने केवल अस्वीकार करके ही उड़ा देना चाहा था और जिसका जतोजा हमारे सामने बराबर आता रहना था उनकी अति आधुनिक साहित्य ने सबके सामने लाकर रख दिया है। यही हमारे कुतुर्गों के विकट दुर्नीति है। अति आधुनिक साहित्य का कुछ बगलसो समासाधिका ने “आधुनिक साहित्य सुससज्जित साहित्य

कहा है इस आशय का उत्तर यह है कि भक्ति प्राच्युनिष भवन गुप्तस्थान को हमारा प्राधान्य कर रसोत्थान से अधिक साधु सुधरा रखते हैं।

विद्वत् का कोई भी विषय अज्ञेय नहीं है—न हा हा सकता है। कृतिकार की प्रणयिनी को लेकर यह ध्यान दृष्टाया जा सकता है। किन्तु प्रणयिनी अज्ञेय नहीं है। सबसे यह या तो परिष्कृत हो सकता है या फिर मंदा। अन्तर यानप्रस्थ और अन्त्यास अवस्था को पट्टे टूटे कृति समीक्षक काम आसना 'रति' अथवा इन जैसे ही हमारे गानों को देख-सुन कर ही मड़क उठते हैं। शब्द के स्फूर्तत्व को ही पकड़ कर उलझना वही ठक बुद्धि संगत है। शब्द की अभिव्यक्ति नये बोधप्रणय में कितनी अलस है—इसी कारण नये रचनाकार का यह दृष्ट नहीं है—यह स्पष्ट हो चुका है। यदि रचनाकार सम्पूर्ण रूप से काम परक प्रतीक से अभिन्नव आध्यात्मिक संकेत देता है स्फूर्तत्व और मांसलता भी हम अल्प सम्मोहों को महामहो भूमि पर उतार सकते हैं यह कवि के प्रणय कौशल और उच्च आशय पर निर्भर करता है।

बगला का सामयिक कविता पर बन्धु शिल्पी नयी कविता पर भी यह आरोप लगाया जाता है कि वह अस्पष्ट है। कविता को एक स्तर तक स्पष्ट होना ही चाहिए। प्रश्न उठ सकता है कि क्या यह अस्पष्टता छायावादी कविता की यह अस्पष्टता तो नहीं है (छायावादी कविता अब अस्पष्ट नहीं रह गई है।) जिस कभी मध्यकालीन और निचली युगीन आध्यात्मिक पीढ़ी ने देखा था। शिल्पी के रातिवास में पूछिए काल की कविताएं' कहकर बगल की कविता को भी अस्पष्ट माना गया था कम से कम बैसा संकेत तो किया गया था किन्तु अब काल की कविता भी अस्पष्ट नहीं रह गई है। बतौर नमून के सन् १९२६ के आसपास के विनासभारत के किसी एक मंत्री बनारसदास चतुर्वेदी ने प्रसाद की आकाशवाणी' कहाना का निरुद्देश्य और सर्वथा अस्पष्ट बताया था। आज पाठक के लिए उक्त कहानी कितना अस्पष्ट है?

सामयिक बगला कविता ने प्राधान्य सन्धियों और अन्त्यास युगा के संसार को विघ्न निघ्न कर दिया है। वह तब भूमिमांस तक उड़ आई है जहाँ प्राचीन संस्कारों को न केवल टस सगे है बल्कि उन्हें टूट जाना पड़ा है। अनेक स्थलों पर ऐसा भा हुआ है कि कविता काव्य की पटरी से नीचे भी उतर गई है किन्तु यह सम्भव भी है और स्वाभाविक भी। 'मन्द विश्वास' ने इस तथ्य का हृदयभंग किया है यह जो साहित्य है उसमें सम्भव है कृत्रिम्य हों रहें। युग युगान्तर के भयान को एक निमेष तादन भय है। कृष्टता दूरेगा। सीमित संस्कार



के संकीर्ण दायरे में शान्ति भी है श्रुतला भी, किन्तु वहाँ जीवन की वह चवसता नहीं और मुक्ति का आनन्द कहाँ ?'

बुद्धदेव वसु प्रेमीन्द्र मित्र अचिन्त्यकृमारमन गुप्त अति आधुनिक कविता के ज्यो माने जाते रहे हैं। जीवनानन्ददास एक अति महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं बगला की सामयिक कविता में। इस श्रुतला में और भी अनेक नाम हैं—बहुत नहीं लेकिन कम भी नहीं। बगला की सामयिक कविता नाम विरोध में जीवन्त है समूह रूप में भी और व्यक्ति द्वारा रूप में भी। द्वारा प्रमुख है किन्तु छंद भी।

नये युगबोध का प्रहरी बगला कवि मृत्यु जीवन की अस्तित्व निरूपित है इस आनन्दता है अपने नगण्य व्यक्तित्व को भी आनन्दता है, किन्तु फिर भी उसमें एक पूर्णता का भाव है एकाकीपन का ऐसा बोझ है जिसे वह कविता में स्पष्ट कर देना चाहता है

बुद्धदेव वसु की 'घर किछु नहीं साधा' कविता में उपयुक्त युग अन्तर्द्वन्द्व और दुविधा व्यक्त हुई है—

“नील आवाग के नीचे मेरी स्तुति का गान मुखरित नहीं होगा

मृत्यु का कड़वा कास बूट मेरा घर में भाग्य है

मैं आनन्दता हूँ इसीसे ही सबी की कोई सप्तदशी भरी कविता को

बाँधनी स्नात जगत् के नीचे नहीं पड़ेगी

तुमको जो मैंने सब भगा है—मर्म में प्राणों में मन में पाया था

“यहाँ बात मैं आकाश भरणी घास को तथा समुद्र के कान में कहना चाहता हूँ।

इस परिपूर्णता का बोझ मुझसे झकसे झकसे नहीं ढोया जाता

इसलिए हजारों में अपने की लावा गानों में बाँटना चाहता हूँ।’

अचिन्त्यकृमारमन गुप्त के प्राणों में युगान्तर की मृत्यु को निरा मूर्च्छित है। लेकिन फिर भी उनके बोध में आस्था और समष्टिपीड़ा की व्यक्ति रूप में अनुभवने की नैमीयमूल चेतना भी है—

अपनी आत्मा में कगेहों अनुप्या के अर्थ को बाद सुन पाता हूँ

मूर्धन्य व हृदय में कीनती भूल है

मरी आत्मा जानती है

एक कीड़ों के होने का अस्पष्टतम चेतना

मुझे दुखी करती है

घास की समा में मरी प्राण हरा हो जाता है

मर प्राणा में विश्व वेदना का छत्ता है।”

सम्यक् होन हुए जीवन और दृष्टि की परिवेष्टित क्षमता को सामयिक  
बौद्धता कविता में स्थान मिल रहा है। सधन दृष्टि और मित्रता प्रमत्त मित्र की  
कविता महासागर के नामदान रूप में स्पष्ट हुआ है—

‘महासागर के नामहीन कूल पर अभागों के बन्दर में  
दुनियाँ के कितने ही दूर जहाजों की मोड़ है  
जो मास डाँठ-डाँठे दूर गए हैं  
जिनके मस्तूलों के घुरे उड़ गए हैं  
जिनके पास चीन की धाय से जल गए हैं  
उन सब जहाजों का यह धायय मोड़ है।”

सामयिक बौद्धता कविता में जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन हो  
रहा है। व्यतीत युग-विषय चित्रण से यह कविता बहुत धाय बढ़ी है। जहाँ इस  
कविता में सामान्य विषयों और सामान्य चित्रण-शैलियों को पीछे छोड़ा है वहाँ  
नगण्य उपकरण से लेकर महान विषयों तक के प्रति सज्ज और सव्या  
बौद्धिक एवं नवीन दृष्टि साध ही कुछ सगत्कता-भाषामा का सहार एवं  
अधिकारिक आग्रह कुछ जिज्ञासा का स्वीकार है। कल्पना का उपयोग जीवन  
स्थितियाँ से कटकर अर्थार्थ से परे स्वीकार करना नय बगला कृतिकारों को  
अभीष्ट नहीं है। इसलिए सर्वत्र अभिव्यक्ति में जीवनता बनी हुई है। विषय  
विस्तार कोण से कुछदम मनु ने प्रवेश मित्र की कविता के विषय में लिखा है,  
किन्तु यह वस्तु इसी भाषा के साथ सम्पूर्ण बगला कविता पर लागू होता  
है। उनकी कविता दुनियाँ की छोटी से छोटी चीज से लेकर मनुष्य के आत्म  
विधाता के अरुणप्रान्त तक विस्तृत है। पुराने अलवार भाषा के मकान से  
लेकर सीमाहीन आकाश में दूरत हुए यह उपग्रहों तक उनकी गतिविधि है  
मनुष्य की व्यर्थताहीनता तथा दुःखता के सम्बन्ध में गहरी खतना ही उनके  
काव्य का मूलमूल है। मनुष्य के घर में उसका दबता होता है किन्तु अन्तर्गतों के  
सघाव से जाव हाता है कि दबता कहीं नहीं है।

इन गिन कवियों में आजीव धारणादृष्ट, दुःख सर्वनामों के ठाएँ बुद्धिपूर्ण  
मन्यो में गस्त शिष्य के माध्यम से अभिव्यक्ति पा रही है। बुद्धिपूर्ण मन्यो  
में इसलिये कहना पड़ रहा है कि उनकी अभिव्यक्ति वहाँ मजबूत हुई नहीं है।  
विषय की स्पष्टता तो सम्भव था सकती है किन्तु प्रेरण की स्पष्टता अथवा  
मोड़पन अहमियत देने की बातें हैं? कविता साधा अभिव्यक्ति नहीं उससे  
अध्यात्मकता अथवा साविकता ही विषय हानी चाहिये।

सुनील गर्गोपाध्याय की कविता में अनक स्थलों पर हम उपलब्धि का अभाव है कथ्य व अश्लेष-बुरे हुनो से मरोकार न होकर अभिव्यजना से सरोबार होना चाहिये । सुनील की कविता अनक स्थलों पर असबार की सबर जैसी हो जाती है—

मर्द के साथ सोन और खाना पकाने के मिठा

सार बाम औरतें जानती हैं

मगर सारे बाम वसत जानती हैं ४०

कविता तर्क नहीं है कही छूटते हुए तर्कों को गहवान की सावतिवता है । कविता में सहजता अपेक्षित किंतु सहज है इसीलिए उसे असाधारण भी होना चाहिए और असाधारण होते हुए भी सहज । गगता की अधिकता सामयिक कविता ऐसी हा है किन्तु फिर भी सुनील मुखोपध्याय स्वयं की कविता में सीखा व्यंग्य समाज को कुत्सा को खण्ड-खण्ड कर देने वाली सबल आवाज जर्जर अवस्था के प्रति प्ररणास्पद त्रोध लिए हुए हैं जो यथार्थ चित्रण के साथ साथ प्रतीकारमकता एवं विश्वात्मकता के सहयोग से अमविष्णु बन सका है फिर भी उसमें एक सहजता और सोचामन है ।

वर्तमान युग की कटुता और अस्थिरता ने अस्तित्व के भवारारम्भ भाव को ही अधिक पुष्ट किया है । व्यक्ति की प्रतिक्षण की स्थितियों में डूब गया हुआ है । इस दुःख अवस्था गहरी जिदगी का जीवन की विवक्षता उसे अन्तरगतम क्षणों में भी एवतान नहीं होने देती । परिपक्व वासना क्षणों में भी वह मंदम अमुरता और जीवन की पेचीदगी का कारण पूरा सम्पृक्त नहीं हा वाता । विनय मजुमदार की पहली कविता में यह मन स्थिति मुखर हा सकी है —

आगत वासना की स्थिति में भी नहीं देख वाता हैं

विकस हुए वसे हुए फूल

क्या देख मानती ? ४१

समय और क्षण का पानी की पर्त की तरह मुट्टिया से छरक जाना स्तसित होता हुआ जीवन और उस पर समय की चोट और कण मन स्थितिया इन सब तक पहुंचने के लिए युग ने मनुष्य को विवश किया है । शक्ति चट्टोपध्याय की 'गुप्तधर' कविता में उन बाध का प्रबट होना पडा है —

जैसे सिद्धियां टूट जायगी इतनी तजी ये मुझे धारिण में भरकर

गर्म सलासा से दाग कर मरी छाती बार-बार

बपा गया समय और अब प्रतिक्षण

धपे हुए पागल घाट की तरह पम्बाप

हर सिद्धका के मोष पम्पर पर मजनी रहनी है ४२

घोर चको मुई उगास वेद्याघा के प्रति एवान्तमोह मुक्त में ।  
साधता या बीमार सिर्फ देह है मन नहीं घोर जगत् यही है मन  
नहीं । धो गो हो ।”

प्रेम जैसे कोमल व्यापार य भी बगला कवि बोद्धि हो उठा है । प्रेम  
के चरम क्षण य भा वह सामाजिक बंधन का न तोट पान वाली अपनी  
विवशता भोगता है । भागता इसलिए भी है कि उसमें उसे समाजगत एक  
स्वस्थ पक्ष दिखाई देता है । मानस राय चौधरा न इस कविता में अभिव्यक्त  
किया है—

“तुम्हारा शरीर एकलुप्त हो रह गया ।  
सिर्फ मरी य उमलिया भरे पत्ता सी सूख गई  
और कुछ नहीं हो सका गम धँधरे में और कुछ  
नहीं हो सका । चुरा नहीं हुआ — क्या तुम्हारी बाँहें सवाल बन  
गई थी ? क्या ?  
दूसरा की जीभ का स्वाद हम नहीं बनें  
महा बनें दूसरा का बात भीत ।”

अजित रस की कविताओं में एक विधायक प्रकार की साधनिकता ( सर्वश्रम नहीं )  
का पुट है । न प्रेम को यथार्थ क धरातल पर स्वीकार न करके जन्म मरण के  
परे की वस्तु मानते हैं अथवा कहा जाय कि जीवन और मृत्यु की संघिवेला  
में प्रेम प्राप्ति को बाध करत है । यदि प्रेम प्राप्त करना है तो जन्म-मरण से  
ऊपर उठना होगा । फिर भी सम्भव है कि प्रेम तत्त्व न भी प्राप्त हो और उसके  
लिए निरन्तर मटकना पड़े ।

सुभाष मुखापाध्याय की कविता में भी प्रेमगत उपलब्धिवा है किन्तु उनका प्रेम  
सामान्य राति और सामान्य स्थिति का प्रेम है । ( अजितरस जैसी किंचित  
रवीन्द्रियन साधनिकता नहीं है ) किन्तु फिर भी किञ्चित् या सामान्य में भा  
अलग तरह से सामान्य और गौरवमय । कुछ सविशेष संश्रमों में ही सुभाष का  
सौन्दर्य और प्रमगत उपलब्धिवा होता है जिनमें कहा निस्सन्देह वासना  
स्तर भी बने ही रहते हैं चाहे जितने भीन और चाह जितने सूक्ष्म । किन्तु यह  
वासनागत अभिव्यक्ति सविशेष है किंचित् बोद्धिक किंचित् सदस्य, सबया  
काव्योचित ।

जीवनानन्ददास में धगधा की सामयिक कविता अपने सम्पूर्ण गौरव के साथ  
जायन्त हो उठी है । वे परम्पराधा से हटकर लिखने में अत्यन्त सफल रह हैं ।  
शुद्धेश्वर बसु का कथन है कि जीवनानन्द जिह्वा तरीके से अपने घ्राण में  
समाए हुए हैं । वे परम्परा के स्वदेश को जगाकर एक एस किन्नरी के देश को

अपनाते हैं जिसमें वे ही वे हैं। उनकी दुनिया उसमें हुई छायाओं तथा टेढ़े मेढ़े जलाशयों जैसा उत्सू चमकादड़ चाँदनी छिन्के हुए जगसा म फुदकते हुए हिरणों प्रभात तथा अंधकार क्षण को तरह ठंडी मध्य कन्याभा धीरे महान भीठे समुद्र की दुनिया है। ऐसे नयी चेतना के बाह्य जीवनानन्द न पर्याप्त प्रेम कविताएँ लिखी हैं। 'वनसता सेन' उनकी अत्यंत प्रसिद्ध प्रेम कविता है जिसने रुचि सम्पन्न लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। 'आकाशलोना' कविता में उनका प्रेमविषयक दृष्टिकोण समझा जा सकता है—

सुरजना वहाँ पर तुम मत आओ  
उस युवक के साथ बतकही न करो  
सीट आओ है सुरजना  
नक्षत्र की रुपहली भरी रात में  
सीट आओ इस मदान में तरंगों में  
सीट आओ मेरे हृदय में ।  
दूर से दूर—धीरे दूर  
युवक के साथ तुम और न आओ  
उसके साथ कैसें भावें ? उसके साथ ?  
आकाश की आड़ में, आकाश में  
मिट्टी की तरह हो तुम आज  
उसका प्रेम पास होकर उगता है ।  
सुरजना ।  
तुम्हारा हृदय आज पास है  
वातास के ऊपर वातास  
और आकाश के ऊपर आकाश है ।

विमलचन्द्र घोष का 'सावित्री' नाम से एक काव्य ग्रंथ प्रकाशित हुआ उसके तिस्रांशमा नामक भाग में प्रेमविषयक दृष्टि का परिचय मिलता है। यद्यपि यह कविता गनसोन्मय धीरे प्रेमबाध से पर्याप्त हटकर नहीं लिखी गई है किन्तु फिर भी उसमें वहाँ वही नवीनता है और यथायथुमि का भी कवि जहाँ-तहाँ पूना खसता है।

अरुण कुमार सरकार भी आ प्रेमकाण्ड खोजता है। टूटते हुए वर्तमान जीवन में अभाव ही अभाव है यदि वही कुछ एसा है जिस संघर्ष के परे भागा जा सकता है तो वह है प्रेम और भ्रूयु—

इस अगहन में नहीं कोई आनन्द है

कलकत्ते की संध्या घुए से घूसर मन म

जो सान्त्वना है तो इसनी कि तुम हो और मृत्यु है ।'

जीवन की विह्वलनाओं से थोटा साया हुआ मनुष्य वर्तमान युग की सम्यता और उसकी औपचारिकता से किसी स्तर पर ऊंच घुका है । परिणामस्वरूप वह जीवन क्षेत्र में कुछ नया चाहता है कुछ परिचित । सौंदर्य के गहरी मुखाटे उस श्रम आकर्षित नहीं करते । वह कुछ ऐसा चाहता है जो इसी देश की उपज है । जिसमें एक अनमदपन है जो सहज है स्वाभाविक है साथ ही एक सुलपन का बाध । मगलाधरण चट्टोपाध्याय की यह दृष्टि है किन्तु सम्पूर्ण नवीनता के साथ साथ नहीं ।

बैंगला की सामयिक कविता में यद्यपि प्रेम विषयक दृष्टिकरण व्यतीत प्रेम स्वीकार से पर्याप्त स्तरों पर भिन्न है फिर भी यह कहने और स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि वह स्वयं का प्रेम और सौंदर्य कोणा की दृष्टि से व्यतीत बाध से पूर्णतः मुक्त नहीं कर पाई है । उसमें कहीं गीतापन और एक स्वरगत बीमार सा सम्पृक्ति है ।

इस कविता में प्रकृति चित्रण कोणा में भी परिवर्तन हुआ है वह स्वाभाविक भी है । बुद्धदेव बसु ने जीवनानन्द के माध्यम से यह बात किंचित स्पष्ट की है एक श्रम में सभी कवि प्रकृति के कवि होते हैं, पर जीवनानन्द एक विनय श्रम में ही ऐसे हैं । वह प्रकृति में—भौतिक प्रकृति में—और उसके कुछ विनय पहलुओं में डूब हुए हैं । वे प्रकृति पूजक हैं पर किसी भी श्रम में अपलातूनवादी या वेदान्ती नहीं हैं बल्कि वे प्राक सम्यता के युग के एक ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रकृति की वस्तुओं से इन्द्रिया की संतुष्ट पर प्रेम रखते हैं और ऐसा वह पूर्णता के बिना प्रतीक या नमूने के रूप में नहीं करते बल्कि वह उनसे जो वह है उसी होने के लिए प्रेम करते हैं । वे कबल देखने से संतुष्ट न रहकर प्रकृति को स्पष्ट और गन्ध की उलझी हुई जंगली वृत्तियाँ के माध्यम से प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं । उन्हें चिड़िया के पंरा की गन्ध से तथा जिस पानी में चावल भरी घोसा गया है उससे प्रेम है और वे चाहते हैं कि वे किसी महान दयामय तृण माता के गहर मोठे गर्भ से घास के रूप में उत्पन्न हों । उन्हें अब महा तक कि किमभूतनिमाकार वस्तु से प्रेम है । पर वे जिस वातावरण को उत्पन्न करते हैं वह किसी प्रकार अपाधिक नहीं है और न उससे किसी प्रकार भय उत्पन्न होता है ।'

मृजन ॥ निम्न ही वर्तमान युग की कटुता और शर्ष खण्डित व्यक्तित्व एक सगमगत भावना में भी सहयोग किया है । व्यंग्य मृजन एक प्रकार से तल्ली और कटुता को सही निष्ठा में अभिव्यक्ति देता है । जीवनानन्ददास में भी व्यंग्य

पर्याप्त प्रबल शिल्प और सहजता के साथ प्रकट हुआ है। पुरानी पोड़ी को उनका हस-हस कर उत्तर देना 'आहूँ मणिता' कविता में अभिव्यक्ति पाता है। कविता में व्यंग्यगत उपलब्धि केवल हिन्दी या बंगला की नयी कविता में ही नहीं है बल्कि विश्व कविता में इस प्रकार की उपलब्धि है और बढ़त है। बँगला के सभी नये कविता में व्यंग्य-सृजनगत उपलब्धि प्राप्त है। विमल चन्द घोष सुकान्त भाट्टाचार्य मुनील दत्त गुमाप भुवोपाध्याय विनयमजुमदार अरुणकुमार सरकार जगन्नाथ चक्रवर्ती तथा इन जैसे ही दूसरे कविता में व्यंग्य सृजन किया है बल्कि कहना चाहिए कि ऐसा करना पडा है। सम्प्रति युग असतोष अनिश्चय प्रथम उत्सर्जन का युग है। आलोचनमय पागलपन इस युग को देन है। हम पहुँचना चाहते हैं पहुँच गये हैं किन्तु फिर भी नहीं पहुँच पाये हैं यह पहुँच कर न पहुँचने की स्थिति युग का भटकाव है निश्चय भटकना गन्तव्य की अनिश्चितता एवं अस्पष्टता है। व्यक्ति उत्सर्जनों से सुलभना चाहता है और सुलभन में और अधिक उत्सर्जना करता जाता है। बँगला कविता के अत्यन्त सजग और युग बोध की सही ठहरी को (चाहे वह किसी दिशा में ही क्यों न हो) पकड़ने वाले कवि जीवनानन्ददास अकेले तो नहीं किन्तु अकेले में प्रमुखतम कवि हैं। उनकी कविताएँ रचना प्रक्रिया विमल प्रतीक और शिल्प के कारण सामयिक बंगला कविता में विशिष्ट स्थान रखती हैं। जीवनानन्ददास की सम्पूर्ण कविता का एक सामूहिक प्रभाव होता है एक प्रमुख सम्मेलन होता है जो स्वयं में अनन्त संज्ञित लिए रहता है साथ ही पृथक् पृथक् पंक्तियाँ भी अनन्त अलग सदर्थ संकेत देती हैं। कविता में सम्पूर्ण कविता और उस की पृथक्-पृथक् पंक्तियाँ के माध्यम से लुहरी प्रसंगत उपलब्धियाँ काव्य पद्धति के स्तर पर दे पाना बड़ा टेढ़ा काम है और इस टेढ़े काम में बँगला सामयिक कविता में अत्यन्त सफल कवि जीवनानन्ददास हैं। सर्वथा भौतिक वैज्ञानिक युग बोध सम्प्रणाली में समय प्रतीक विमल उपमान और उनमें सर्वत्र एक सरी बौद्धिकता युग की मन स्थिति सीखी किन्तु स्पृहणीय एटपटाट उत्सर्जन के अनन्त उत्सर्जन हुए स्तर और उन सबमें अनन्त उत्सर्जने में अत्यन्त मँड्रे मँड्राये डग से जीवनानन्ददास की कविता में उभरते हैं। यथार्थ बल्कि प्रति यथार्थ को कटुता न व्यक्ति में अच्छी उत्पन्न करती है। यह ठहरी व्यक्ति को बिगड़ी स्तर पर पनायन करने के लिए विवश करती है तो बही स्वयं मुरास और अभिराम उपकरणों के प्रति एक अवज्ञा भाव भी जागृत करती है। क्योंकि य उपकरण जावन के बहुत यथार्थ से कहीं भी मेल नहीं खाते बल्कि एक विरोध स्थापित करती हैं और अधिक विनियमित कर जाते हैं। जीवनानन्ददास कविता से युग की इस मन स्थिति को साकार करते हैं।

हे समय ग्रन्थि ह मूय, ह मास निशोष की कोयल  
हे स्मृति हे हिम वायु मुझे भला क्या जगाना चाहती हा ?”

जोदनानन्द की कविता में पार्श्व जान वाली अनास्था युग अनास्था है किन्तु जोदना न-न की अनास्था का एक घटक पक्ष यह भी है कि यह अनास्था आस्थागत प्रेरणाएँ भी होती है। अनास्थाबोध विद्यता अमपलता आन्ति स ही अम पाता है। सम्प्रतियुग म न्न उपलब्धियों का प्राप्त करने के लिए संघर्ष की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि इन्हें न पान के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस अनास्था गत बाध न कुछ सामयिक बाला कविता म पलायन वृत्ति को भी उकसाया है। व समस्या का सामना न करके समस्याओं का भुला देना चाहते हैं कहना चाहिए कि समस्याओं के न हाने का धोखा स्वयं को देना चाहते हैं। वह अनास्थागत बाध मिथ्य हो प्रसन्नोप नहीं है किन्तु जीवन में है इसलिए काव्य में उसका प्रकाशन सचचा प्रतीतिकर भी नहीं कहा जा सकता। असुरण कुमार सरकार ‘नींद’ नामक कविता में इस बाध का आश्रय है।

नित्य की अनास्था से टूटत हुए और अनस्तित्व हात हुए जीवन ने व्यक्ति मन में आक्रांश भर दिया है। जब प्रतीक्षारत व्यक्ति को सम्भावित अनागत से साक्षात्कार नहीं हो पाता तब उसका मन म अनस्तित्व की गोंठ और अधिक कस जाती है और यह अम निरन्तर अक्षत रहन के कारण वह पूरा जीवन विमुख हो उठता है। नयेरा यह की कविताओं में अनेक स्थान पर जीवन असफलताओं और अनस्तित्व वाली दृष्टि ( बिना किसी उपलब्धि के ) अनामा का अना जोला है—

ता क्या अबकी बार पाना ही में नाम लिखकर

अस दना होगा ? ता मैंने फिर क्या पाया ? ता मैं क्या हुमा ?

विन्-मुद्रा के पदवात सत विक्षत मानव और उसका मन स्थितिया एक बाह्य जीवन म चला आता हुमा अम। व्यक्ति का बाह्य और आन्तरिक दयनीय हाता जा रहा है। मगर जीवन स हाकर गाँव परिवस तक सर्वत्र निपनता मृत्यु अभाव और रोगा के चहरी म मुदमुख सहज ही देखा जा सकता है। सामयिक अंगला कवि इस अनास्था से दूट रहा है। जगन्नाथ अन्नवर्ती का कविता इस तथ्य की गवाह है—

आज भी वही टूटा हुआ बाबा सासा खेत मिट्टी तिसना हुमा  
छप्पर और कितने तिन ?

एसा मासूम होता है जैसे इस सारे ससार के सार आँगन के एक निदय  
कविस्तान विद्या हुमा है।’



पर्याप्त मूल्य शिल्प और सहजता के साथ प्रकट हुआ है। पुरानी पीढ़ी को उनका  
हम-हंस कर उत्तर देना भारूक मण्डिता' कविता में अनिवार्यता पाता है।  
कविता में व्यंग्यगत उपलब्धि केवल हिंदी या बंगला की नयी कविता में ही  
नहीं है बल्कि विश्व कविता में इस प्रकार की उपलब्धि है और बहुत है।  
बंगला के सभी नये कवियों में व्यंग्य मृज्जनगत उपलब्धि प्राप्त है। विमल चंद  
घोष मुकान्त भाट्टाचार्य मुनीस दत्त सुभाष मुखापाध्याय विनयमजुमदार  
भरल्लुमार सरकार जगन्नाथ चक्रवर्ती तथा इन जैसे ही दूसरे कवियों ने व्यंग्य  
मृज्जन किया है बल्कि कहना चाहिए कि ऐसा करना पड़ा है।  
सम्प्रति युग अतत्त्व अनिश्चय अथवा उत्सर्जन का युग है। आलोचनमय  
पागलपन इस युग की देन है। हम पहुँचना चाहते हैं पहुँच गये हैं किन्तु फिर  
भी नहीं पहुँच पाये हैं यह पहुँच कर न पहुँचने की स्थिति युग का भटकाना है  
निःसंदेह भटकना मूल्य की अनिवार्यता एवं प्रस्पष्टता है। व्यक्ति उसमें से  
मुलझना चाहता है और मुलझन में और अधिक उत्सर्जन चला जाता है।  
बंगला कविता के अत्यन्त सजग और युग बोध की सही ताली को (चाहे वह  
बिभी बिना बिना में ही क्यों न हो) पकड़न वाल कवि जीवनानन्ददास  
अकेले तो नहीं किन्तु अकेला में प्रमुखतम कवि हैं। उनकी कविताएँ रचना  
प्रक्रिया बिम्ब प्रतीक और शिल्प के कारण सामयिक बंगला कविता में  
विशिष्ट स्थान रखती हैं। जीवनानन्ददास की सम्पूर्ण कविता का एक सामूहिक  
प्रभाव होता है एक प्रमुख सदम होता है जो स्वयं से अनेक संकेत लिए रहता  
है साथ ही पृथक् पृथक् पक्षों में अनेक अलग-अलग सन्तर्भ संकेत देती हैं। कविता में  
सम्पूर्ण कविता और उस की पृथक्-पृथक् पक्षों के माध्यम से दुहरी अमंगल उप  
लब्धियाँ काव्य पद्धति के स्तर पर दे पाना बड़ा काम है और इस टेढ़े काम  
में बंगला नामयिक कविता में सबसे सफल कवि जीवनानन्ददास हैं। गर्वना  
भौतिक बर्णनिक युग बोध सम्प्रदाय में समय प्रतीक बिम्ब उपमान और  
उनमें सर्वत्र एक सरी बौद्धिकता युग की मन स्थिति ठीकी किन्तु  
स्पृहरणीय छटपटाहट उत्सर्जन का अनेक उत्सर्जन हुए स्तर और उन सबमें अनेक  
उसके मृज्जन अत्यन्त में बँधे हुए हैं जो जीवनानन्ददास का कविता में उभरते हैं।  
यथार्थ बल्कि अति यथार्थ की कटुता ने व्यक्ति में तत्सुी उत्पन्न करदी है। यह  
तत्सुी व्यक्ति का बिना स्तरों पर पलायन करने के लिए विवश करती है तो बही  
स्वयं गुरील और अभिराम उपकरणों के प्रति एक अवज्ञा भाव भी जागृत करती  
है। क्योंकि ये उपकरण जीवन के कटु यथार्थ से कहीं भी मेल नहीं खान बल्कि एक  
विरोध साकार यथार्थ की विद्वाना को और अधिक बिभूषित कर जाते हैं।  
जीवनानन्ददास का कविता में युग की इस मन स्थिति को साकार करते हैं।

हे समय ग्रिय ह मूय, हे माष निगोध को कयित  
हे स्मृति हे हिम वायु मुझे मला क्यों जगाना चाहती हो ?”

जीवनानन्द की कविता में पात्र जान वासी अनाम्या युग-अनास्था है किन्तु जीवना-  
नन्द को 'अनाम्या' का एक अर्थ पता यह था है कि यह अनाम्या आस्थागत  
प्रेरणायें भी होती हैं। अनाम्याबाध विरहिता अमरफलता आदि स ही अम पाता  
है। सम्प्रति युग में इन उपनयिका का प्राम करने के लिए मधुप की आवश्यकता  
नहीं पड़ता बल्कि इन्हें न पान के लिए संघष करना पड़ता है। इस अनाम्या  
गत बोध न कुछ मामयिक अन्ता कवियों का पलायन कृति का भी उदाहरण  
है। वे समस्याका का सामना न करके समस्याओं का भुला देना चाहते  
हैं कहना चाहिए कि समस्याओं को न हाने का योद्धा स्वयं को देना चाहते हैं।  
यह अनास्थागत बाध निश्चय ही प्रांसनीय नहीं है, किन्तु जीवन में है इसलिए  
काव्य में उसका प्रवागन सर्वथा अप्रोतिबद्ध भी नहीं कहा जा सकता।  
अन्तरण कुमार सरकार 'नौद' नामक कविता में इस बाध से आशान्त है।

नित्य की घटनाओं में डूबे हुए और अनस्तित्व हाथ हुए जीवन में व्यक्ति मन में  
आक्रोश भर लिया है। जब प्रतीक्षारत व्यक्ति का सम्भावित अनागत से  
सामाकार नहीं हो पाता तब उसका मन में अनस्तित्व की गोंठ और अधिक  
कस जाती है और यह अम निरन्तर भ्रमन रहने के कारण वह पूणतः जीवन  
विमुख हो उठता है। नये शब्द की कविनामा में अनेक व्यक्ता पर  
आवन अमरफलताओं और अनस्तित्व हुआ है (विना किसी उपनयिक के)  
उबाना का लक्षा जोका है—

ता क्या अबकी बार पानी हा में नाम लिखकर

बस देना होगा ? ता मैं कि क्या पाया / ता मैं क्या हुआ ?

विश्व-मुद्रा के पदचक्र क्षण विक्षत मानव और उसका मन स्थितियों एवं बाह्य  
जीवन में चला आता हुआ क्रम। व्यक्ति का बाह्य और आन्तरिक दोनों ही भाग  
जा रहा है। नगर जीवन में हाकर गाव परिवर्तन सब निधनता मृत्यु  
अभाव और रोगों के चक्र में मुदमुख सहज हो भेजा जा सकता है। सामयिक  
वैगता कवि इस व्यापक में डूब रहा है। जगन्नाथ अश्वरथी का कविता इस लक्ष्य  
की गवाह है—

‘मात्र यो वही टूटा हुआ बाढा खासा खेत मिटा डिक्का हुआ  
छप्पर और किन्नर निन ?

ऐसा मामूली होता है जस इस सार ससार के सार अन्त के एक ही  
कविस्तान बिछा हुआ है।’

बैंगला सामयिक कविता में कुछ कवितार्थों को 'कामरुद्दियन' कविताएँ कहो गई हैं अत्यन्त कलात्मक ढंग की सफस कविताएँ हैं। मुकान्त भट्टाचार्य की छाहपत्र तथा इस जैसा ऐसी ही सफस कवितार्थें हैं। छाहपत्र कविता एक घोर प्रतीकात्मक और रूपक के सहार कभी काल का सौन्दर्य दख पाती है तो दूसरी ओर इसी प्रतीक से वह नयी चेतना और उसका लिए मर मिटने के इतिहास के सफल सौन्दर्य का भी उद्घाटन करता है।

सामयिक बैंगला कविता पर हिन्दी की अपेक्षा पश्चिमी प्रभाव कभी अधिक है। बिष्णु दे की कविता पर टी० एस० इलियट तथा एडगर पाउण्ड का प्रभाव स्पष्ट ही देखा जा सकता है। बिष्णु दे की कविताएँ सिल्प का ममूना माना जा सकती हैं। अमल-दुर्गास गुप्त रीतिवत् कोण से बिष्णु दे की कविता की श्रद्धा स्वीकारते हैं किन्तु उसमें हृदय को आन्दोलित कर सकने की क्षमता का न होना मानते हैं। बिष्णु दे की कविता पर लगाया हुआ यह आरोप एक प्रकार से बिष्णु दे को कविता की विरूपता ही है क्योंकि हृदय को द्रवीभूत करना अथवा हृदय का पिघला देने वाला प्रतिमान व्यतीत युग-बोध की कविता के लिए ही उपयुक्त है।

वैज्ञानिक युग का मानव जब बड़ बड़ यांत्रिक मृज्जन अथवा विशालकाय निर्माण के सम्मुख खड़ा होता है। (वे यद्यपि मनुष्य द्वारा ही निर्मित हैं) तो उसमें अज्ञान ही हीनता का बोध आने लगता है। यदि रचनाकार इस बोध को प्रकाशन देता है तो इस पर 'भृकुटि बस्य मुद्रित' होने की आवश्यकता नहीं। इससे तो सामूहिक स्वास्थ्य ही सुधरता है 'वस्तिक हीनबाध' को वाणी देकर वह व्यक्ति को सामान्य (नामस) बनाने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित कर रहा है।

वर्जित दूर बाध के अतिरिक्त बैंगला सामयिक कविता में आन्ध्यागत चेतना भी गहर रही है—पूरी घाति के साथ सम्पूर्ण नया मृज्जन पेचीदा घुटन अब मृत्यु विवशता और अभावा को जीता हुआ उपयुक्त आस्थागत बोध तक पहुँचने में यात्रा है यह यात्रा जितनी अलप्य और पेचीदा है। इस व्यतीत बोध सम्पादक समागत सामग्रि युग बोध को न जीने का कारण नहीं समझ पा रहे हैं।

नये बगला रचनाकार वैज्ञानिकता और तटस्थ रचना प्रश्रिया की ओर बढ़ रहे हैं अपने सम्पूर्ण दायित्व के साथ। काव्यापकरण के प्रत्येक कोण से बगला सामयिक कविता बगला साहित्य का धरक उपलब्धियाँ सौंप रही है।

—सुरेन्द्र उपाध्याय



# हिन्दी की नई कविता •

## उपलब्धि अपेक्षा



जीवन माना के साथ साहित्यिक प्रतिमान भी परिवर्तित होते रहे हैं, नए प्रश्न उठाए गए हैं उनके उत्तरों की पीठ पर पुनः नए प्रश्न उठ खड़े हुए हैं अपने आप प्रश्न कर्त्ता तो निमित्त मात्र रहा है—युगबोध का अन्तर्भाव। प्रश्न उत्तर प्रश्न-क्रम में कितनी ही धुरीहीनता की होन' घुरिया घिस चुकी हैं। साहित्यकार हाथिए पर' न लिख कर हाथिया छोड़ कर सिधने लगे हैं। किसी समय के 'उगत झरुर' बृक्ष ही नहीं डास-छास तथा पत्र भाँडकर हूँ ठ रह गए हैं। 'रोगन हाया की दस्तकें' स्याह होने लगी हैं। नयी कविता को जिन गड्ढे फुट इच्छों से नापा गया है या नापा जा रहा है उहाँ गड्ढे फुट, इच्छा स नई कहानी' की भी नापने का आयास किया गया है। सम्पूर्ण जल प्रवाह को एक ही तुलावे से निकासने की दृष्टि अनेकत्व भ एकत्व वाली मार तीय विचारधारा से सहज ही एतिहासिक समायन पा जाती है अर्थात् आचार्यों को यह सुविधा प्राप्त है।

हर नय आन्वोलन की तरह नयी कविता को भी उतार-चढ़ावा से भाग पूरा करना पड़ा है—अन्धे बुरे दिन देखने पड़े हैं पहाड़ा की ऐक-बैँची पगडिडियाँ भ निकल कर वह समतल भूमि पर आ गई है जहाँ उसका बेग उसका गहराई उपलक्षण विस्तार और संकुचन बिना अटकलपच्चिया व भूत्यांकित किया जा सकता है। कतिपय समीक्षक प्रवर अपनी भौह-गाँठों का संकुचन पूणत नयी कविता के पक्ष में अभी तक नहीं खोल पाए हैं किन्तु धीरे-धीरे उनकी जमात भ दरार पड़ने लगी है यह नई कविता के लिए शुभ संकेत है साथ ही समीक्षक प्रवर सम्प्रणायक के लिए भी। कारण इस कोण से वे युग बोध के समा नान्तर बने रहेंगे पिछड़ेंगे नहीं। यह सब नई कविता की अपनी उपलब्धिया का परिणाम है। अतः नयी कविता ने अपना पृथक् और अलग व्यक्तित्व खड़ा कर लिया है यह सध्य स्पष्टि की अपेक्षा नहीं रखता।

नयी कविता के साहित्य में आविर्भाव से पूर्व दो-नो विश्व-युद्ध हो चुके हैं विज्ञान की उपति बढ़ता हुआ जीवन स्तर, मध्य वर्ग की जटिल समस्याएँ नैतिक मानों का ह्रास आर्थिक विषमता आध्यात्मिक के साधनों एवं व्यापारिक समझौतों द्वारा विश्वराष्ट्रा का परस्पर सम्बन्ध तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मान्यताओं

से परिचय एव प्रभाव इन समस्त उपलब्धियां ने जाने अनजाने विश्व-मानव-मानस को प्रभावित किया है अतएव उसका युगबोध अपने पूनवर्ती सहायत्रियां से जटिल ( नितान्त भिन्न प्रकार का ) हो गया है । विश्व-साहित्य क इतिहास में कदाचित् यह प्रथम अवसर है जब जागरूक विद्व मानव युगबोध को वैयक्तिकता के माध्यम से एक ही काव्य पद्धति से सम्प्रपण्य रहा है । नई कविता द्वायावादी कविता की तरह विदेशों में सी वर्ष पहले विकसित होकर भारतवर्ष में नहीं उपजो है ।

भगवती बाबू ने अपने सद्य प्रकाशित कविता संग्रह ( सद्यता मान प्रकाशन में कविताया में नहीं ) की भूमिका में गर्वोक्ति की है कि नई कविता लिखना नितान्त आसान है व एक साध पच्चीस-तीस नई कविताएँ लिख सकते हैं । पहाड़ के नीचे आने से पूर्व ऊँट को अपनी ऊँचाई का भ्रम बना हुआ रहता है यह उसने हक में अच्छा ही है अथवा होन ग्रन्थि से ग्रसित हो कर न जाने क्या कर बैठे । बच्चन आदि पिछले छेमे के कवियों ने 'त्रिभुवि' तथा चार छेमे चौंसठ छूटे आदि कविता संग्रहों में नयी कविता की 'तर्ज' पर लिखने का अपनी ओर से भरसक प्रयत्न किया है किन्तु वे कितनी नई कविता हैं, उनमें कितना नया युगबोध एव सम्प्रपण्य की सद्यता है ?

यह सच है कि नयी कविता के क्षेत्र में कुछ कृतिकार ( सम्बोधन की कौसी विद्वन्मत्ता है ) मान 'पग' में पड़ कर कविता ( प्रकविता ) लिख रहे हैं । वे अच्छा खाना खाने की तरह अच्छा बपटा पहनने की तरह ही कविता लिखना समझते हैं दायित्व और प्रतिभा दोनों का ही उनमें अभाव है पगनेकुल आलोचक ( या पाठक ने ही जिनका आलोचक बना लिया है ) उनके कृतित्व को नयी कविता के कथ्य सम्प्रपण्य बोध से अनुशासित करते हैं जिसका परिणाम सामान्य पाठक के मन में नयी कविता की प्रति विरोधी धारणा का सृजन है । पाठक नयी कविता पढ़ते समय पूर्वसम्य परिणामगत पूर्वाग्रह में प्रसिद्ध हो कर नई कविता का उचित मूल्यांकन नहीं कर पाता, इस कार्य में श्रद्धा आचार्यों की समीक्षा दृष्टि उसे निरन्तर मार्गदर्शन करती रहती है । कुछ जागरूक कृतिकारों ने भी कविता-सृजन के दीर्घ काम में पर्याप्त कृपा लिखी है इस बात को भी हम स्वीकार कर लेना चाहिए, किन्तु यह उनकी अपरिपक्व एव उथली उपलब्धियां हैं जो उन्हीं के व्यक्तित्व पर कालिक अधिकार पातला है साथ ही उनका यह कृतित्व नयी कविता का धूम और स्वस्थ पथ नहीं है इसमें ह्रासो ग्मुता जीवन दर्शन को पशु चित्त में डालकर घड़वादी उपलब्धि प्रस्तुत करना ही उनका ध्येय रहा है जो सच्चे मधाय का प्रतिनिधित्व नहीं करता । कतिपय समीक्षक प्रवर ऐसे हुए अथवा इस जैसे हो कृतित्व को जांच-पड़ताल करके नई

कविता को खण्डित जीवन दशनगत एवं फगनगत उपसन्धि सिद्ध कर देने हैं।  
 प्रवसर जो मिलता है, मोके स साम उठाना हो चाहिए।

फगन' वाली बात किसी समय छायावाद के लिए भी कहो जाती थी। फगन' का महत्व कम से कम कोण स तो जाना जा सकता है यह नवागत 'फगन के लिए स्वयं को उदारतापूर्वक समर्पित कर देती है। हमारे ऋषि भाचार्यों में नयी कविता के संदभ म फगन परक उदारता भी दृष्टिगोचर नहीं होती।

नयी कविता ने ऋषि भाचार्यों के आलोचना ग्रंथों म प्रवर्णित छायावादी कवियों के अन्तः स सतत प्रवाहित धारणा का क्षण्डन किया है अथवा यह कहना अधिक समीचीन होगा कि उस सीमा को तोड़ा है उससे आगे बढ़ी है। छायावादी कवि सणा से सणा को घूल मिलाकर यानी व्यवस्थित भावेगमुक्त अनुभूति धारा ही काव्य कव्य बना सके इस कारण व्यवस्थित अनुभूति धारा से पृथक् कटा हुआ सण अनुभूत अपने सम्पूर्णत्व में उनका संवेद्य नहीं बन सका बूद धारा से कट कर भी धारा को इकाई है और स्वयं में महान है यह बात तब उनकी समझ म न आ सकी। आती भी कसे। इसका कारण उनका व्यवस्थित धारागत जीवन भी हो सकता है। अनुभूति-आवेग को उन्होंने गीतों म गहा किन्तु आवेग का आदि और अन्त भी होता है और कभी-कभी अनुभूति आवेग बन ही नहीं पातो उसका आदि और अन्त एक घुबलक क साथ ही स्पष्ट होकर रह जाता है। इस सण-अनुभूति की परती का नये कवि ने तोड़ा है किन्तु इसम छायावादी अनुभूति-समर्थक ऋषि भाचार्यों की भीहा म वही द्विवे दीयुगीन गठिं उभरी है जिनकी कभी उन्होंने कटुतम आलोचना की थी। व्यवस्थित अनुभूति धारा को जोना स्वयं में महत्वपूर्ण बात हो सकती है और है भी। नया कवि भी अपने युग बोध क साथ समत्व म इसे जी रहा है किन्तु पृथक् खण्डित सण सत्य को काव्य स्तर पर गह पाना अपने आप म कठिन और महत्वपूर्ण दोना ही है। विस्तार म स विस्तार के एकल बिन्दु को गह पाना सण की सार्थकता को उजागर करना है।

नये कवि ने कविता की पठन-क्रिया को भी क्रान्तिकारी अभिनव आयाम सौपा है जिसका योगदान कविता के अविष्य निमित्त काव्यशास्त्र मे स्थाई रूप से होगा। नयी कविता 'युग गृह' ढन गएर रघुराई अल्पकाल चौपाई पद्धति से या दोहा छप्पय मवया गीतिका अथवा रोसा उत्साहा प्राप्ति की तरह नहीं पढ़ी जा सकती। पठन क्रिया के लिए भी सम्प्रति युग बोध अपेक्षित है। नयी कविता ने पूरवर्ती काव्य गायन-पठन पद्धति से भिन्नत्व स्पष्ट कर अपनी सय और गति की पृथक् परिपाटी म स्थापित कर लिया है। इससे भी

व्याख्या प्रस्तुत है— पत्नी पर बीठी बिडिया उठती है इसलिय पत्नी बाँपती है और थोड़ी देर में वापिस स्थिर हो जाती है। यह सुना घोर देखा गया है कि बिडिया के टहनी या घास पर बैठकर उठ जाने जाने से लम्बक खाने के कारण टहनी बाँप जाती है। बिडिया को पत्नी पर बैठती बतलाकर व्याख्याकार ने भूय कविता पर एक घोर कविता कर दी है। 'कनुप्रिया' को नयी कविता की प्रतिनिधि कृति मानकर उसकी उपसन्धियों का विवेचन किया गया है जबकि 'कनुप्रिया' कविता तो दूर परिप्लव गद्यकाव्य का महा है। ऐसे कविता को जो सल्लभ ने प्रतिनिधि नये कवियों में सम्मिलित कर लिया है जिनके तीन-तीन सयह प्रकाशित हो चुके हैं फिर भी उसका कोई अकिन्त्य सामने नहीं पाया है साथ ही एक पुरानी कवयत्री को नयी कवयत्री मान लिया गया है, य कुछ नमूने हैं जिनके आधार पर अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राध्यापक वर्ग में नयी कविता किस रूप में समझी गई है ( या समझी जा रही है )।

बिम्ब को काव्योपलब्धि का आधुनिक मान स्वीकार करने वालों में हजरत ऐजरा पाव्ड का नाम बहुत अचित रहा है जिनकी वास्था थी— *It is better to present one image in a life time than to produce Voluminous works*

बिम्ब में ताजगी सघनता एवम् उसका उत्प्रेरक होना आवश्यक है बिम्ब उपमा प्रतीक, वाक्य दृष्ट-अभिव्यक्ति वैचित्र्य आदि से निर्मित होता है ( हो सकता है )। सादृश्य भूलक अनुकारा में रूपक बिम्ब के सर्वाधिक समीप पड़ता है किन्तु बिम्ब क्षेत्र रूपक से अधिक विस्तृत है। पदवाच्य काव्य विचारक की डॉ स्मूइस ने बिम्ब में अनुभूति का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर दिया है। बिम्ब एक सीमा तक अव्यय रूप निर्मित करता है अमरा अनुभूति से सङ्गृहीत प्राप्त कर उससे एक तान हो जाता है। रूपक में प्रस्तुत अप्रस्तुत का बोध अपनी सम्पूर्ण अर्थ-वृत्ता सहित अनुभूति के अन्तिम घोर तक या अभिव्यक्ति के अन्तिम बिन्दु तक बना रहता है। बिम्ब प्रस्तुत को अमरा विस्मृत करना हुआ अन्तर्नागम्य अनुभूति पिच्छ हो जाता है।

कविता में बिम्ब विषयक यह धारणा रखना कि वह स्वयं में ही अपना एक दृष्ट है ( जसा कि कुछ कृतिकारों की धारणा है ) निराला भूल हागो। बिम्ब स्वयम् को निर्दिष्ट करने मात्र का सत्य लेकर नहीं चलता वह मृदम जन्ति अनुभूति प्रत्यय को प्राप्त बनाने के लिये सहायक होकर जाता है। बिम्ब को साध्य समझने वालों को डॉ स्मूइस द्वारा अपने महत्वपूर्ण प्रत्यय— *The Poetic Image* में दिया हुआ निम्नलिखित बकनव्य सपरामर्श रूप में ग्रहण

कर सेना चाहिये—Image does not image itself ' यपितु वह तो किसी  
 बोध अभिव्यक्ति का निमित्त मात्र है ।

नयी कविता में विभिन्न प्रकार के चिन्मों के साथ साथ चिन्म तथा चिन्म प्रतीका  
 का विशेष महत्व है यह नयी कविता की गौरवमयी उपलब्धि है जो पूर्ववर्ती  
 काव्य धाराओं में इस विविध के साथ उद्भूत नहीं हुई । 'सभी बिलकुल अभी'  
 कविता संग्रह के कवि कदारनाथ सिंह का संग्रह चिन्म की ही कविता निकल  
 मान लेने का है— 'एक आधुनिक कवि की धृष्टता की परीक्षा उसके द्वारा  
 आविष्कृत चिन्म के आधार पर ही की जा सकती है मैं चिन्म निर्माण की  
 प्रक्रिया पर इसलिए जोर दे रहा हूँ कि आज काव्य के मूल्यांकन का प्रतिमान  
 संपन्न वही मान लिया गया' । यह चिन्म के प्रति आत्यन्तिक मोह है । 'धूप  
 के घात' कविता संग्रह की सज्ज कविता 'झकझनी' में वायु उद्भूतित चटुल  
 सहृदय का मन्दिर चिन्म गिरिजाकुमार मायुर की चिन्म पकड़ के प्रति पाठक  
 को आस्थावान बनाता है—

गप धोटे पर चढ़ी  
 दुलही बसो धाती हवा  
 टाप हल्के पड़े जल में  
 गोत लहरें उद्वल आए ।

समोरे के कविता संग्रह कुछ और कविताएँ" (सम एनप्रदर पोइमस बाने  
 सर्वजो स्ट्राइन मे ) तथा अन्य कविताएँ कसई गुलाब धामे हुए हैं 'गीली  
 मुलायम लटें' पूरा आसमान का आसमान' 'राग' आदि में चिन्म की सफल  
 अभिव्यक्ति हुई है । कदाचिन्म सज्जित चिन्म भी समोरे की कविता में आत्यधिक  
 है, स्पष्ट सज्जित चिन्मों की कुछ कविता के लिए साधक नहीं बाधक मानता  
 है कारण काव्यात्मक लक्ष्य का केन्द्रीय सूत्र वह नहीं बन पाता । सज्जित  
 चिन्मों की पुष्कल उपलब्धि प्रयोगवादी, कविता में सम्प्राप्त है । प्रयोगवादी  
 कविता का विकास एकबारगी रुक गया इसके अनेक कारणों में से प्रति प्रमुख  
 कारण उसकी सज्जित चिन्म उपलब्धि है जिससे किसी स्वर पर कविता जटिल  
 और दुर्बोध हो जाती है ।

जैसा कि निवेदन कर चुका हूँ कि नयी कविता का चिन्म प्रतीक उसकी अपनी  
 उपलब्धि है मात्र लिपि विषयक ही नहीं रचना-प्रक्रिया में भी । वर्टनर रसेल  
 ने An enquiry into meaning and truth के पृष्ठ २ पर लिखा है  
 Images infect as symbols just as words do सचिन्म प्रतीक और

१ संसद सत्रक—पृष्ठ १८३



बिम्ब में अन्तर है, वही अन्तर जो चित्र धीरे बिम्ब में है। बिम्ब वस्तु का प्रस्तुतीकरण है जिसका रचना प्रक्रिया से गहरा संबंध है प्रतीक वस्तु विचार का प्रतिनिधि है। प्रतीक बिम्ब अज्ञेय की कविता में आत्मानुकूल उपलब्धि है, चन्द्रमा के लिए प्रतीक बिम्ब इसी परिप्रेक्ष्य की उपलब्धि माना जायगा। यह बात दूसरी है कि उसमें शिल्प-कलात्मक गुणित है—

मूत्र सिंचित मलिका के वृक्ष में  
नील टीलों पर मध्या  
मत्तग्रीव धैर्य धन गन्हा

‘कौन से संदर्भ दे दूँ’ कविता संग्रह की ‘वशाख शाम’ शीर्षक कविता में चन्द्रमा के लिए प्रतीक बिम्ब किंचित अधिक सुगन्धित बन गया है—

‘नि राख  
रात में—  
पूरा वेले में  
भर कर दूध  
शुपके से  
सिरहाने रख दिया’

शब्द बिम्ब उपलब्धि में कृतिकारा की उपयुक्त शब्द-प्रयुक्ति की जागरूकता का परिचय तो मिलता ही है साथ ही शिल्प-गठन की महती उपलब्धि उन्नत बना यास प्राप्त हो जाती है। निम्नोद्धृत कविता में ‘बस’ शब्द एक विरहूत बिम्ब का भाँड़े हुए है यदि इस शब्द—बिम्ब के स्थान पर कोई दूसरा शब्द रख लिया जाय अथवा उस शब्द को निष्क्रिय कर दिया जाय तो संपूर्ण बिम्ब बिखर जायगा—

पतीला में उसीकी  
गंध बगुछा  
बस बरघर गार  
गलियाँ दे तलब—’

नयी कविता की प्रयोगवादी कविता समझने-समझाने का अथ प्रयत्न अभी तक चल रहा है उसकी उपलब्धियाँ प्रयोगवादी कविता की उपलब्धियाँ मानी जाकर एकदोरी और प्रतिवादी आलोचना का विषय बन रहा है—‘कठिनाई यह है कि पाठकों का नई कविता में न रस मिलता है, न आनन्द न उसमें उह सोन्दर्य के दर्शन होने हैं। कथा यह कहना उचित होगा कि प्रयोगवादी कविता में मूलतः जीवन की सत्कोटि है उसका रचयिताया व लिए जीवन निस्मार है, इसलिये

निन्द्य हाकर ये रोते सिमकने हैं उह मुँर की अपेक्षा धीमत्स रस की अपेक्षा नीरसता आनन्द की अपेक्षा धुन तथा बोध अनुबोध की अपेक्षा अशोध और दुर्बोध शब्दास से ही अधिक प्रेम है यदि ऐसा न होता तो नीरसता कुछ अहवा लयहीन धेतुकी रचनाओं की इनकी बकासत करने की जरूरत न पड़ती । रामविलास जी के इस गहन चिन्तन खण्ड से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि ये युगबोध स पिछड़े साहित्यिक मानक से ही नयी कविता का 'नाप' ले रहे हैं । प्रयोगवादी और नयी कविता की एक समझने की झूठ तो उन्होंने भी की ही है । नरेन्द्र दामा द्वारा सगाय गये कस-मशीन नारे उन्हें कविता प्रतीत होते हैं या फिर उपदेवक की टोपी लगाकर दूसरों को भाषण देने के रोग से पीड़ित पड़ी जाल अहरी कविता गद्य के कवि श्री अनन्त का निम्न वक्तव्य उन्हें श्रेष्ठ काव्य उपलब्धि प्रतीत होगा—

आ घुटन की खाह में बाहर निकल  
मौल क धिर नीर पर कुमकुम धरा  
देख कितनी छविमयी है दूध बसना  
किम कदर है रूप गया यह धरा ।

दूध बसना रूप गया धरा' का महत्वपूर्ण उपदेश अनन्त जी की मौलिक उपलब्धि है नयी कविता का कोई कवि ऐसा करने में सफल नहीं हो पाया है ? नयी कविता की प्रारम्भिक रचनाओं में विवृत कुछ भी यौन वर्जनाएँ अहं और वक्तव्यों से साक्षात्कार होता है इस प्रकार की उपलब्धियाँ प्रथमतः उसकी प्रारम्भिक उपलब्धियाँ हैं जिनको आधार बनाकर उसका सम्पूर्ण स्वरूप विलेपण नहीं किया जा सकता कारण—ये उपलब्धियाँ उसके परिपक्व स्वरूप का बोध करने में असमर्थ हैं द्वितीयतः उपयुक्त प्रवृत्तियों की साहित्यिक कथ्य बनाने में नये कवि की अनुभूति-ईमानदारी पर संदेह करना अनुचित होगा नये कवि की अनुभूति-ईमानदारी को स्वीकार करने में समीक्षका की हेटी नहीं होगी । नयी कविता न स्वयं को छायावादी कविता की भाँति अनावश्यक रूप से सजाया नहीं है और न ही प्रगतिवादी कविता की तरह स्वयं को 'खुरदरा बनाया है । उसका गिल्फबोध अनुभूत का सहगामी है ।

मानव के प्रति गहरी आदर भावना नयी कविता का प्रमुख दशन आधार है । प्रथम बार कविता क्षेत्र में मानव के भीतर' को सर्वांगत' बाणी देने का स्तुत्य प्रयास नयी कविता ने किया है । सहस्रमैकान्त वर्मा मानव के भीतर स्थित मानव को सधुमानव' की सत्ता देते हैं । यह इसारत छायावादी आलोचनात्मक दृष्टावली स्पृष्ट के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह के आधार पर गढ़ी गई है, 'लघु

१ भाषा और शोध पृ० २१३ ११७

राज्य की नीनता के धर्म में रुढ़ है अतः इस संज्ञा में छायावादी उपयुक्त साम्प्रदायिकता जैसी गमिमा भी नहीं है। अधिक बुद्धिसंगत होगा यदि इसको साम्प्रदायिक मानव कहा जाय तो।

नयी कविता न धर्म राजनीति द्विवेदीयुगीन नैतिकता उपदेश-संसार से मुक्त होकर प्रथम बार साहित्यिक अनुभूति-सच्चाई से मानवीय कुंठा यह वैयक्तिकता योन वजना आदि को मानव का साम्प्रदायिक सर्वाधिक सत्य होने के कारण काव्य सचय बनाया है।

नयी कविता में नये के प्रति आत्यंतिक मोह होने के कारण कही-कही कविता वैचित्र्य और चमत्कार की परिधि में सिमटकर रह गई है। इस प्रकार की उपसर्ग्य नयी कविता की मानात्मक रूप में अति न्यून उपसर्ग्य है। वैचित्र्य आदि महारीपन गम्भीर उपसर्ग्य रूप में समाहत न होने के कारण धर्म धर्म कूच कर रहा है।

विषय-वैचित्र्य के साथ नयी कविता में विषयों की एकरमता भी पर्याप्त मात्रा में देखी जा सकती है। विषयगत एकरमता के कारण कही-कहा शिल्प में भी एकरमता आ जाती है जिससे कवियों के व्यक्त व्यक्तित्व का भास कम हो जाता है बिना कृतिवार के नाम के कविता के शिल्प सधनुमान लगाना कठिन हो जाता है कि किस कृतिवार की रचना है किन्तु यह दो तीन शेष की उपसर्ग्य सिद्ध कर रही है कि कृतिवार का शिल्प और भाष में अपना व्यक्तित्व उभर रहा है।

सूर्य घुप रात घाम नीम ( उपमान आदि के रूप में ) बसत आदि विषय लगभग सभी कवियों के वर्ण्य रहे हैं। 'घुप' और 'घाम' पर सर्वाधिक कविताएँ लिखी गई हैं। भारतीय सात गीत वर्ण में घाम दो मन स्थितियाँ तथा घाम एक पक्षी सड़की विषय एकरमता के सन्दर्भ में देखी जा सकती है। 'घाम' स्वयं में एकाकी बोध का प्रतीक बिम्ब है भारतीय की निम्नोद्भूत कविता में यह बोध विद्यमान है।

घाम—

एक सफर में पक्षी हुई सड़की-सी  
भाई और मेरे पास बैठ गई।

गिरिजा कुमार माथुर की कविता संग्रह में भी घाम पर अनेक कविताएँ मिल जायेंगी 'घुप के घन' और 'गिलापक्ष' समकाल में उपसर्ग्य सत्य साक्षात् जायता है। 'घुप के घन' में घाम की 'घुप' तथा 'घोषनास' कविताएँ इस परिश्रेय की ही उपसर्ग्य हैं। नैशनलीसिंह की घामों के घेरे हैं सबेरे दयाल की मुवह से घाम तक धन्य के कविता संग्रह अन्तर्गत से लेकर 'भागन के पार डार' तक में घाम पर अनेक कविताएँ सम्मिलित हैं साथ ही घुप और बसत पर भी। घाम पर व्यापक सर्वाधिक कविताएँ घाम पर लिखी हैं। जिस प्रकार घाम घुप बोध का एकाकी सवेदन का बिम्ब प्रतीक

है उसी प्रकार मूल नयी चेतना का नीम जीवन की कड़वाहट, स्थापन, तित्ता भाषा का प्रतीक रूप है 'रात टूटने निराग व्यक्तित्व और आस्था का प्रतीक बनकर अभिव्यक्ति पाती रही है। 'धूप भी नयी चेतना की प्रताक प्रतिनिधि है साथ ही विम्वारमक अभिव्यक्तियों का अधिक अनुकूल भी। 'धूप' का विम्वारम प्रस्तुतीकरण नयी कविता की सौधा और तरल दन है।

नयी कविता में व्यंग पर्याप्त मुखर हुआ है, पूर्ववर्ती काव्यधारणा से तुलनात्मक रूप में इन वैभव का भाषात्मक और गुणात्मक अन्तर स्पष्ट है। जटिल जीवन का तित्ता ने नयी कविता का सगमग प्रत्यक कवि की व्यंग करने के लिये बाध्य कर दिया है। युग की कड़वाहट और आलोचन को बाणी देने के लिये व्यंग पद्धति ने नयी कविता को गतिशाली बनाया है। व्यंग और वक्तव्य में एक बढ़ते भीनी दीवार होती है। कृतिकार व्यंग की मसीहा होने से बचाये रहे अथवा व्यंग वक्तव्य बन जाय।

नय कवि न कविता को मनोरञ्जन का साधन नहीं माना है यही कारण है कि नयी कविता में बोद्धिकता का पर्याप्त समावेश हुआ गया है। कहीं-कहीं अत्यधिक बोद्धिकता होने का कारण नया कविता गद्यात्मक भी हो जाती है यह उसकी प्रासनीय उपलब्धि नहीं मानी जा सकती। कवि को संतुलन रखना आवश्यक है इस कोण का समावेश तथाकथित कृतिकारों को नयी कविता का नाम पर गद्य लिखने का गुम्फव बनायास ही प्राप्त हो जाता है और कविता में नीरसता दुर्लभा और खुरदरापन बिना प्रयत्न किये ही पा जाना है। अतिविचारोन्मत्तता भा कविता को गद्यपरक बना लेती है। अतिव्यक्तिक प्रतीकों का स्वीकार करने के कारण भी कविता अनिश्चित रूप में बोधित हो जाती है।

युग-बोध के बदलते हुए स्तर अपने अनुकूल भाषा प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं अतः संवेदन स्तर में व्याप्ति होने पर भाषा की भी करवट बदलनी पड़ती है। नयी कवि के सम्मुख भी भाषा की प्रबल समस्या है। तीसरा सतक सम्पादक ने नयी कविता की नयी भाषा की समस्या को हृदयगत किया है—

नयी कविता की प्रयोगशीलता पहला भाषाभाषा से सम्बन्ध रखता है निःसंदेह जिसे अब नयी कविता की संज्ञा दी जाती है वह भाषा प्रयोगशीलता को वाद की सीमा तक नहीं ले गई है—बल्कि ऐसा करने की अनुचित भी मानती रही है प्रत्येक शब्द का प्रत्येक समय उपभोक्ता उस भाषा संस्कार देता है नय कवि की उपलब्धि और दन की कमोटी इसी आधार पर होनी चाहिए जिन्होंने पाठ को कुछ नहीं लिया है वे सोक पीटने वाले से अधिक कुछ नहीं हैं उसे ही जो लोक वह (यहाँ वे पाठ होना चाहिए या) पीट रहे हैं वह अधिक पुरानी न हो।" पाठ का नय 'संस्कार तथा नये

‘संदर्भ’ सद्यता को साथ देने में कृतिकार का प्रतिभा की परख हो जाती है। गिरिजा कुमार माथुर वेदांगनाथ सिंह स्वयं अग्रज रामेश्वर आदि इस परिपार्श्व में कार्य कर रहे हैं। शब्द नया देना स्वयं में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसका समादर होना ही चाहिए। भाषा विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किन्तु शब्द को नया संस्कार देने की ही नये कवि की उपलब्धि बसोटी मान ली जाय ऐसा साबना भारी भूल होगी। शब्द को ‘नया संस्कार देने से’ कहा अधिक महत्वपूर्ण है कविता का नया शब्द देना इस उद्यम की उपेक्षा समक-सम्पादक कदाचित् इसलिये कर गया है कि उसने अपने कविता संग्रह आगन के पार द्वार में नये शब्द में देकर मात्र बाण भट्ट की आत्मकथा को शब्दावली का ही पिछपेपण किया है।

नया कविता का भाषा का नया शब्द देने का महत्वपूर्ण कार्य गिरिजा कुमार माथुर न किया है किन्तु गिता पंख चमकीले के परिशिष्ट में यीश पञ्चोत्त शब्दों की तालिका प्रस्तुत करके जिसमें अधिकांश शब्द ऐसे हैं जिनका सरकार की परिभाषिक शब्द निर्मात्री समिति ने निर्माण किया है और जिनका डा. रामविलास गर्मा ने आलोचना की है उनके आधार पर स्वयं की नयी शब्द प्रयुक्ति के लिए आवश्यक घोषित करना अधिक सोमनीय नहीं है। नयी कविता भाषा का ऐसे बिंदु पर आधारित खड़ी हुई है जहाँ से कई मार्ग फटते हैं। रामेश्वर बुद्ध और कविताएँ की भूमिका में भाषा के हिन्दी-उर्दू मिश्रित स्वरूप पर बल देत हैं। उर्दू मिश्रित हिन्दी नयी कविता की भाषा स्वीकार नहीं की जा सकती वह हमारे जीवन-समीप बोध को सम्प्रणय देने में समर्थ नहीं हो सकती। बुद्ध कवि अंशु जी आदि के शब्दों को नयी कविता की भाषा में प्रयुक्त कर कही सन्तोष और अभिमान का अनुभव करते हैं कि वे कदाचित् भाषा को नयी दिशा दे रहे हैं। उनके सन्तोष अनुभव करने के इस व्यक्तिगत अधिकार का कौन चीन सकता है।

जीवन-समीप सविन को सम्प्रणय देने के लिए जीवन-समीप भाषा को ही स्वीकार करना पड़गा। हमारे जीवन में हमारी ही मृमि की उपज इतने शब्द पल रहे हैं कि यदि उनकी समर्थ हार्मों से पोषण मिले सम्यक् दाय प्राप्त हो तो हम बिन्धी भाषा का शब्द-करण बहन न करना पड़।

नयी कविता का अनेक रचनाकार शब्दों का अध्ययन करने में सिद्धहस्त हैं इससे में ता कविता का ही बुद्ध भला होता है और न ही भाषा का। कविता में उपयुक्त शब्द प्रयुक्ति का विशेष महत्व है रेभो दे गूरमों ने भी उपयुक्त शब्द प्रयोग पर पर्याप्त बल दिया है। उपयुक्त आरक्षणाधिक भाषा में काव्यवस्तु का सीधा विम्बात्मक सम्प्रणय कवि-मुक्तता की चोतक स्वीकार किया जाता रहा है।

शब्दों का परम्परा निहित छलका उतार कर उसे मद्यता से आवृत करने की भी आवश्यकता है उस नये संदर्भ और नये मान सोपन पड़ेगे। भारतो में इस कार्य ध्यान दिया है उसमें नये शब्द नये हैं किन्तु शब्दों का अध्ययन भी उसने दिया है। बुद्ध पुराने शब्दों का प्रति उसका मोह क्यों का त्याग बना हुआ है। सान गीत वर्ष की अधिकांश कविताओं में ‘जादू शब्द’ का प्रयोग हुआ है जो निरान्य पिमा पिटा पुराना शब्द है किन्तु सही छोटा आधुनिक युग-बोध-सम्प्रणय में मध्या भसमर्थ।

कृष्ट कवि शब्द प्रयोग करने के लिए बोध योजना करते हैं। हमसे नयी कविता की भाषा समस्या मुलभोगी नहीं अपितु उत्पन्ने की हो अधिक सम्भावना है। शब्द तो साधन हैं उन्हें साध्य स्वीकार करना कविता-क्षेत्र में अपराध ही है। शब्दों को नई धर्मवत्ता यथार्थ की धूल में से शब्द-मोतिर्णों को खोज निकालना उपयुक्त अवसर पर कवि की रचनात्मक प्रतिभा और परस्पर पर आधारित है।

नयी कविता की पूर्ववर्ती धाराशा ने अभी तक सच्चे यथार्थ की वाणी नहीं दी थी। (साम्यवादी आलोचकों का कथन है कि यथार्थ का दीनार प्रगतिवादी कृति कार की हो शामिल हुआ है) प्रगतिवाद ने यथार्थ को कथ्य बनाने का प्रयत्न किया था किन्तु केवल उतने ही यथार्थ को जो उसके बाद का हित साधक हो सकता था उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति अधिक खुरदरी और बाग्यित थी। नयी कविता ने यथाय ग्रहण करने में ऐसे किसी भाग्य को ध्यान में नहीं रखा। नयी कविता में वर्णित यथाय अधिक सजीव अधिक उन्नत अधिक काव्योपलब्धिपरक है।

नयी कविता ने अपनी उपलब्धियों से हिन्दी साहित्य को नए छन्द नयी भाषा नया शिल्प नया काव्य शक्ति नया बोध विम्व एवं रचना-प्रक्रिया-गत आयाम दिए हैं। प्रयोगवादी ने अपने वादत्व छोड़कर स्वयं को नयी कविता की समर्पित कर नयी कविताओं की उपलब्धिया को सँवारा ही है।

(सुरेन्द्र उपाध्याय)

●●●

## उर्दू की नयी कविता

●

चूँकि यह लेख उर्दू की नयी कविता के विषय में है इसलिए मैं सिर्फ नयी कविता और नए कवियों के विषय में ही बात करूँगा। सन् १८५७ की हार के बाद जब भारत में राष्ट्रीय संघर्ष का युग आरम्भ हुआ, तो एक नयी कविता पैदा हुई। यह कविता भीर और गालिब की कविता से काफी अलग है। भीर हाली से बँफ़ी भाड़मी तक फैली हुई है। यह राष्ट्रीय संघर्ष की कविता है। उस जैसे हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप बदलता गया जैसे-जैसे ही इस कविता

‘संभ’ सद्यता के साथ देन में इतिहास की प्रतिभा को परख हो जाती है। गिरिजा कुमार माथुर केदारनाथ सिंह स्वयं भ्रमण शमनेर आदि इस परिपाम में कार्य कर रहे हैं। शब्द नया देना स्वयं में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसका समादर होता ही चाहिए। भाषा विकास में हमकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किन्तु शब्द को नया संस्कार देने को ही नये कवि की उपलब्धि कसौटी मान ली जाय ऐसा साधना भारी भूल होगी। शब्द को नया संस्कार देने से कहां अधिक महत्वपूर्ण है कविता को नये शब्द देना इस सत्य की उपेक्षा सतत-सम्पादक कदाचित् इसलिये कर गया है कि उसने अपने कविता सपह ‘भागन के पाग दार में नये शब्द में देकर मात्र बाण भट्ट की भाष्यकथा को शम्भाली का ही पिछेपेण किया है।

नयी कविता की भाषा को नये शब्द देन का महत्वपूर्ण कार्य गिरिजाकुमार माथुर ने किया है किन्तु शिला पल्लव ‘बमकील’ के परिशिष्ट में बीस पच्चीस शब्दों की शान्तिवा प्रस्तुत करके जिसमें अधिकांश शब्द ऐसे हैं जिनका सरकार की परिभाषिक शब्द निर्मात्री समिति ने निर्माण किया है और जिनकी डा. रामविलास शर्मा ने आलोचना की है उनमें भाषा पर स्वयं को नयी शब्द प्रयुक्त के लिए जागरूक घोषित करना अधिक शोभनीय नहीं है। नयी कविता भाषा के एस बिंदु पर आकार लड़ी हुई है जहाँ से कई मार्ग फटते हैं। ‘शमनेर कुछ और कविताएँ’ की भूमिका में भाषा के हिन्दी उद्गम मिश्रित स्वरूप पर ध्यान देते हैं। उद्गम मिश्रित हिन्दी नयी कविता की भाषा स्वीकार नहीं की जा सकती वह हमारे जीवन-समीप बोध को सम्प्रेषण देने में समर्थ नहीं हो सकती। कुछ कवि अग्रजों आदि के शब्दों को नयी कविता की भाषा में प्रयुक्त कर बड़ी सन्तोष और अभिमान का अनुभव करते हैं कि वे कदाचित् भाषा को नयी दिशा दे रहे हैं। उनके सन्तोष अनुभव करने के इस व्यक्तिगत अधिकार को कौन छीन सकता है।

जीवन-समीप संवेदन को सम्प्रेषण देने के लिए जीवन समीप भाषा को ही स्वीकार करना पड़गा। हमारे जीवन में हमारी ही भूमि की उपज इतने शब्द पल रहे हैं कि यदि उनकी समर्थ हाथों से पोषण मिल सत्यक दाय प्राप्त हो तो हम विदेशी भाषा का शब्द-क्षरण महन न करना पड़े।

नयी कविता के अनेक रचनाकार शब्दों का अध्ययन करने में सिद्धहस्त हैं इससे न तो कविता का ही कुछ भला होता है और न ही भाषा का। कविता में उपयुक्त शब्द प्रयुक्ति का विशेष महत्व है रेमी दे शूरमा ने भी उपयुक्त शब्द प्रयोग पर धारणात्मक ध्यान दिया है। उपयुक्त और सन्तोषित भाषा में काव्यवस्तु का सीधा विस्मयक सम्प्रेषण कवि-कृतात्मता को शीतक स्वीकार किया जाता रहा है।

शब्दों का परम्परा निर्हित छिन्नक उतार कर उसे मरुता से भावित करने की भी आवश्यकता है उस नये शब्दों और नये मान सौंपन पड़ेंगे। भारत ने इस धार ध्यान दिया है, उसने नये शब्द दिए हैं किन्तु शब्दों का अध्ययन भी उसने किया है। कुछ पुराने शब्दों के प्रति उसका मोह ज्यों का रहा बना हुआ है ‘मान गीत वर्य’ की अधिकांश कविताओं में ‘जादू शब्दों का प्रयोग हुआ है जो निरान्त पिमा पिटा पुराना शब्द है विस्तृत खाटा आयुनिग मुग-बाध-सम्प्रेषण में नये धार प्रसमर्प।

कृष्ट कवि शब्द प्रयोग करने के लिए शोध योजना करते हैं। इससे नयी कविता की भाषा-समस्या मुलभूत नही। अपितु उत्पत्ति की हो अधिक सम्भावना है। शब्द तो साधन हैं उन्हें साध्य स्वीकार करना कविता-क्षेत्र में अपराध हो है। शब्दों को नई अर्थवत्ता यथार्थ की धृस में से शब्द-मोतिर्गों को खोज निकालना उपयुक्त अवसर पर कवि की रचनात्मक प्रतिभा और परस्पर पर आधारित है।

नयी कविता की पूर्ववर्ती धाराओं ने अभी तक सच्चे यथार्थ को धारण नहीं दी थी। (साम्यवादी आलोचकों का कथन है कि यथार्थ का दीर्घ प्रगतिवादी कृति कार को ही हासिल हुआ है) प्रगतिवाद ने यथार्थ को कथ्य बनाने का प्रयत्न किया था किन्तु कबल उत्तन ही यथार्थ को जो उसके बाह्य का हित साधक हो सकता था उसकी यथायथ अभिव्यक्ति अधिक सुन्दरी और वाताश्रित थी। नयी कविता ने यथायथ ग्रहण करने में ऐसे किसी आग्रह को ध्यान में नहीं रखा। नयी कविता में वर्णित यथायथ अर्थिक सजीव अधिक उन्नत अधिक काव्योपलब्धिपरक है।

नयी कविता ने अपनी उपलब्धियों से हिन्दी साहित्य को नए छन्द नयी भाषा नया शिल्प नया काव्य शास्त्र नया शोध विम्ब एवं रचना प्रक्रिया-गत आयाम दिए हैं। प्रयोगवादी ने अपने बादम्ब छोड़कर स्वयं को नयी कविता को समर्पित कर नयी कविताओं की उपलब्धिया का संवारा हो है।

(सुरेन्द्र उपाध्याय)

●●●

## उर्दू की नयी कविता



चूंकि यह लेख उर्दू की नयी कविता के विषय में है, इसलिए मैं विद्वत् कविता और नए कवियों के विषय में ही बात करूंगा। सन् १-२७ को हुए ४८२ जब भारत में राष्ट्रीय संघर्ष का युग आरम्भ हुआ, तो एक नया कविता-चक्र गूँझा। यह कविता मोर और शक्ति की कविता के बने हुए हैं। इन हाली से कज़ी आज़मी तक फनी हुई है। यह उर्दू कविता के नए चक्रों में से एक है। जब ज़से हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का घर बन गया तो कविता के नए चक्रों में से एक है।



का रूप भी बल्लभा रहा है। परन्तु इसका बुनियादी ढाँचा नहीं बल्ला। हाली, इकबाल चकबस्त मुख्य जहानाबानी दुर्गासहाय बिम्बिल व सरदार जाफरी क्रोम की भलग-भलग परिभाषा जकर करत हैं परन्तु पुकारते हैं क्रोम की ही। इसीलिए मैं इस कविता को एक ही सिंसिथिक की कड़ी मानता हूँ। सन् १९३० में जब पुणे स्वराज्य का नारा लगाया गया तो सन् १९३६ में साहित्य में प्रगतिशील आन्दोलन संगठित रूप से आरम्भ हुआ। यानी बुनियादी तौर पर यह राष्ट्रीय कविता का युग था।

सन् १९३६ के साहित्यिक विद्रोह ने दो रूप धारण किए। एक मानसवादी बनावत हुई। इस विद्रोह ने व्यक्ति को नहीं देखा केवल समाज को देखा और उसी को इकाई माना। इस विद्रोह का फलस्वरूप बहुत प्राणवान और सक्त साहित्य पैदा हुआ किन्तु यह एकतरफा साहित्य भी है। इस प्रगतिशील साहित्य में व्यक्ति नजर नहीं आता इसीलिए समाज की तस्वीर भी बहुत साफ नहीं मिली। दूसरी बनावत मोराजी और राशिद आदि ने की। इस कविता ने समाज की जगता कर केवल व्यक्ति को देखा और उसे ही इकाई ही माना। केवल सबसे का मोड़ना बिछोना बनाकर धर्म और नीतिशता पर हमला किया। चूँकि यह कविता समाज से बिलकुल कटी हुई थी इसीलिए यह व्यक्ति को भी नहीं समझ पाई। व्यक्ति तो समाज के सम्मेलन में ही समझा जा सकता है।

सचिन् जब मैं आजा हुआ, तो पूरा वातावरण ही बदल गया। और अब जो नया कविता पैदा हुई वह मानसवानों प्रगतिशील कविता से भी जरा भलग है और मोराजी को धायरी में भी। यह नयी कविता व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध की कविता है। इसमें जिल्गी का इकाई माना है। इस जिल्गी में व्यक्ति और समाज दोनों सम्मेलित हैं। आज का नया कवि टॉपिकल (Topical) कवितायें नहीं लिख रहा है। अर्थात् राजनीति अब बस न रहकर घरीर का एक अंग बन गई है। अब के देवन वाल उस नहीं देख पा रहे हैं। और आज का कवि उस अकेलेपन और सगाट को समझने का प्रयत्न कर रहा है जिसे औपान्धिक प्रगति के साथ धाकर उस हर तरफ से जकड़ लिया है। अब उसको आवाज भी ऊँची नहीं है। क्योंकि अब वह पूरी नीम से बाध नहीं कर रहा है व्यक्ति-व्यक्ति को सम्मेलित कर रहा है। इसीलिए उन्हीं की नयी कविता का योग्य भी बिलकुल बल्ल गया है और दयावली भी। किसी भीद से बात करने के लिए तो शूबानार बाज्यों की आवश्यकता होती है किन्तु किसी व्यक्ति से बात करते समय बल्ल और सतकडे दोनों का प्रयोग नहीं किया जाता।

संगीत और सज्जावली के साथ-साथ इस नयी कविता का सैण्डरसेप ( Land Scape ) भी बदल गया है । अब पाँसियाँ नहीं हैं कि कोई साहिर यह कहे

उफुक्रा से साथ उफुक्र फाँसियाँ के झूले हैं ।

और न अब वे बँदखाने हो हैं जिनमें घठवर जाफरी को यह कहना पड़े

भावलों के चेहरो पर  
मुफतिसी बरसती है ।

अब वह सहारा भी नहीं है जो घर छोड़कर मिलता है । अब तो घोराने बाहरों तक घाते हैं । अब दीवारों के जंगल उग आये हैं । आदमी अपने बाहर में भी भजनबी है और अपने घर में मेहमान बना हुआ है । बाहरों का जिक्र अब भी होता है परन्तु अब बाहर बदल गये हैं । यह वह बाहर नहीं है जिसका नाम दिल्ली था और मीर का दिल बन गया था—कि दिल उजड़ता था तो मीर दिल्ली को याद कर लिया करते थे

दिल की घोरानी का क्या मजकूर हो  
ये नगर सी मर्तवा सूटा गया ।

अब तो बाहर ऐसे हैं कि दिल उजड़ता देखते हैं तो घाँवें फेर लेते हैं और अगर घाँवें चार हो भी जाती हैं तो जिंठाई से मुस्कराने लगते हैं । नयी कविता इसी हल ही तनहाई और इसी सफाई की कविता है । राष्ट्रीय कविता का कवि काल कोन्ट्री में भी भक्तीला नहीं था । आज का कवि अपने घर में भी भक्तीला है । इसलिए आज की कविता दरवाजा, दरवाजा घोरान सलिया, भजनबी सहका और वेदर्द बाहरों की कविता है ।

चूँकि यह सैण्डरसेप नया है और यह सज्जावली नयी है इसलिए हमारे भालो तक इस कविता से दूरे दूरे नज़र आ रहे हैं । हमारे पास इस नयी कविता को जीवन और खड़े-खोले में फूक करने के साधन भी नहीं हैं ।

यही एक बात और कहना चाहूँ यह कहना तो बहुत आसान है कि हर जमाने में अच्छा और बुरा साहित्य पैदा होता है परन्तु इसका कारण है कि कभी २ अपने जमाने की ठुकराई हुई कविता, किसी और जमाने की अच्छी कविता बन जाती है । मैं इससे यह नतीजा निकालता हूँ कि हर युग में चार प्रकार की सामग्री पैदा होती है

(१) सिलिज (२) रेगिस्तान (३) बयान करना ।

(१) गतिहीन अच्छी कविता (Static Good Poetry) (२) परिवर्तनशील अच्छी कविता (३) बुरी कविता तथा (४) गतिशील बुरी कविता (Dynamic Bad Poetry) ।

उद्गम गतिहीन अच्छे कविता की मिसाल नासिब और जीक हैं। ये अपने जमाने के अच्छे कवि थे परन्तु गतिहीन थे और समय परिवर्तनशील होता है। यह इन्हें छोड़कर भागे बड़ गया और ये वहीं रहे। और परिवर्तनशील अच्छे कवि हैं। य कस भी अच्छे थे और भाज भी अच्छे कवि हैं। रगोन और जान साहब स्थायी रूप में बुरे कवि हैं, ये कस भी बुरे थे और भाज भी। नजीर अकबराबादी और गामिब की कविता गतिशील बुरी कविता की मिसाल है यह कल बुरी थी भाज अच्छी है। जीक के समय में यही फँसला ठीक था कि वह गामिब से अच्छे शायर हैं। लेकिन भाज का फँसला उतना ही ठीक है—कि गामिब जीक से बड़े शायर हैं। बात स्पष्ट है। कविता की अच्छाई और बुराई का कोई अटल कानून नहीं होता। इसलिए यह जिसकुल असम्भव नहीं है कि उद्गम की जिस नयी कविता पर भाज हम नाक मँड बड़ा रहे हैं वह कल अच्छी कविता की मिसाल बन सकती है। जीक और सरदार जाफरी भाज स्टैटिक अच्छे कवि की मिसाल है। य लोग इस युग के नासिब और जीक हैं। हम उन का मान करते हैं। पिराज और अस्तर-उस ईमान गतिशील बुरे कवि की मिसाल हैं। ये लोग राष्ट्रीय संघर्ष के समय में अच्छे कवि नहीं थे क्योंकि ये कमल स्वरों के कवि हैं। लखिन भाज ये लोग नव कविता पर प्रभाव डाल रहे हैं।

परन्तु भाज की नयी कविता की बात करते समय एक बात ध्यान में रखना जरूरी है। उद्गम पंजाबी और बंगाली का नया साहित्य दूसरी भाषाभाषा के साहित्य से अलग है। ये तीनों भाषाएँ अब दो देशों का भाषाएँ हैं। भरा ब्यास है कि उद्गम की नयी कविता की भाँति बंगाली और पंजाबी की नयी कविता भी दो हिस्सों में बँटी हुई दिखाई दे रही होगी। उद्गम तो यहो हुआ है। हिन्दुस्तानी उद्गम की नयी कविता पाकिस्तानी उद्गम की नयी कविता से अलग है।

हिन्दुस्तानी उद्गम की नयी कविता मुगलनयी भी है, और ग़ज़लामिनी भी। इस का बड़ी-बड़ी हैरान भाँति धबरा धबरा कर हर तरफ देव रही है। परन्तु इस के कच्चा पर २ हजार वर्ष की सम्यता का बोझ भी है। इसलिए यह बोझ हियाँ नहीं भर सकती। पाकिस्तान की नयी कविता के कच्चा पर यह बोझ नहीं है। क्योंकि उसके पास अपनी जाई परम्परा नहीं है। वह तो परम्पराओं की तलाश में है। बूँकि पाकिस्तान के पास जाई इतिहास नहीं है इसलिए

इस्लाम धोर अमरीका की टकर में इस्लाम हार रहा है और अमरीका जीत रहा है। और वहाँ एक असौम्यवशनी कमजुरी तथा शुरदुरी कविता का जा रही है। वहाँ का नया कवि कविता की अक्याई और शुराई के विषय में सोच कर अपने आपका हसना नही करता। वह तो केवल चीता देने की जिश में रहता है। य 'टेढ़ा कविता' पाकिस्तान की सारी नयी कविता न सही परन्तु वहाँ की नयी कविता पर य 'टेढ़ा' छाप बहुत गहरी है।

पर मुझे तो जिस बात ने एक तरह की खुशी दी वह यह है कि पाकिस्तान हिन्दू और सिखों की बनी बुरी तरह महमूम कर रहा है। अम्बूब लॉ कुछ कहे-परन्तु अगर लाहोर का कोई मुसलमान कवि सन् १९६२ में 'काली पूजा' लिखेगा और अगर प्रसिद्ध साहित्यिक मासिक अरब सताप हर महीने पुरानी उड़ू के नाम पर कबीर नानक, और मोरा की कवितायें छापेगा और उन्हें अपना किरा (घरोहर) कहेगा वहाँ का नया साहित्य में हिन्ने-सम्बत व शम्मा की उद्दि हागी और धायर दोहे लिखेंगे तथा हिन्दू देवमाता ॥ मिम्बल लेंगे तो मैं मही कहुंगा कि अम्बूबलॉ का यह सयाल पलत है कि रावी का किनारा और अशम का पानी हिन्दू और सिखों को मूल गया है। वहाँ का नया साहित्य तो यह बता रहा है कि हम अब हिन्दू और सिखा को बहुत माद सता रही है-और साहित्य झूठ नहीं बोलता है साहब।

पाकिस्तान का नयी कविता के विषय में एक बात और कहनी है। वह पूरे आन्मी की तलाश में है। सलीम अहमद ने एक सेल में लिखा है- औरत की तरह धायरी भी पूरा आन्मी मांगती है। जैसे कविता क कबल दो हा रूप है या ता वह अमपनी है या बेन्मा।

हिन्दुस्तानी उड़ू की नयी कविता के सामने आये-पूरे आदमी का सवाल नहीं है। योकि हम कविता का न पली समझने हैं और न देखना। यहाँ की कहानी ही दूसरी है। आबादी के बाद यहाँ परम्परागमा की वे जजोरें पहनने की जो चाहन लगा था जिन्हें प्रगतिशील आन्दोलन न छोड़ दिया था। इसलिए कविता न पलन कर माजी (मूत) की ओर देखा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि कविता माजो की ओर मुट गई। परन्तु स्वतन्त्रता माजी की याद अकर करती है। इस लिए इस नयी कविता ने एक बार फिर पुरान कवियों क साथ साथ पुराने फार्म का भी हाथ लगाया। मोर और सौदा फिर पढ़ जाने लगे। गुजलें तो फिर गुजलें हो हैं। य नया कवि कशोदें असनबियाँ और सहर-आ-शोब लिखन लगे। गुबल ने ताँवा और मजदूम जैसे काजिरी को मुसलमान बना दिया। ताँवा तो अब

सिर्फ़ ग़ज़नें ही लिखते हैं। मक़दूम भी अब घड़ाघड़ ग़ज़ले लिख रहे हैं। और हम सो यह है कि ग़ज़ल का जादू सरदार जाफ़री के सर पर चढ़कर बोल रहा है। जा मंशारी, जो ग़ज़ल के विशद छिड़ने वाले सय्याम के प्रसिद्ध योद्धा थे वे आज हताशा की ग़ज़ल से हार मानकर बैठे नज़र आ रहे हैं। परन्तु मयी कविता का मुनियानी फॉर्म फोवस है। इन कविया में विमल कृष्ण और मोहम्मद अली जैमे लोग भी हैं जिनकी कविता पाकिस्तानी मातूम होती है। शायद यही कारण है कि इनकी कविनाएँ पाकिस्तानी रिसालों में ही छपती हैं। और जब हिन्दुस्तान का कोई रिसाला नयी कविता का विशेषांक निकालता है तो उस में इन लोगों की कविताएँ स्थान नहीं पाती हैं।

आजकल वहीद अख़्तर, सलोमुरमान आज़मी बसराज कोमल बैलाग़ माहिर घहाव जाफ़री भार पाशी, विश्वनाथ रई हसन नईम बाज़ी सलीम मजहर इमाम निगा फाज़ली अजीज़ तमझाई शफ़ोक़ फ़तिमा दोरा सहरयार, अममस अज़मली मोहम्मद अली ताज़ साज़ तमज़नत अजीज़ बैंगी अमीर भारती धलीर बद्र भानि नए तनुवें कर रहे हैं। ये प्रयोग फॉर्म की दुनिया में भी हो रहे हैं और कॉण्ट्रैक्ट की दुनिया में भी।

फॉर्म के प्रिलिसिस में मैं दो प्रयोगों का जिक्र खासतौर से करना चाहता हूँ। एक मजहर इमाम की आज़ाद ग़ज़ल का तनुबई है। इन्होंने प्री-वर्स में ग़ज़ल लिखने की कोशिश की है—

‘दूधने बोले वो तिनने का सहारा थाप है  
हक़ तूफ़ा है किनारा थाप है।’

परन्तु ये एब ही आज़ाद ग़ज़ल लिखकर रह गया।

दूसरा महत्वपूर्ण प्रयोग अजीज़ तमझाई का है। उन्होंने उद्गू में छपने सॉनेट का एब मज़हू प्रकाशित कराया है। सॉनेट पहले भी लिखे गये हैं परन्तु उद्गू के अमीरी कवि न इतने सॉनेट नहीं लिखे हैं कि उनकी एब क़िताब तैयार हो पाये।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि यह कविता आपण नहीं देती है इसलिए अब कोई बसराज कामस बिछावियों पर अपनी कविता लिख रहा है सो वह जोर मसी जावानी को तरह एब एमा थापण नहीं देता जो उन्होंने बिछान क बारे में दिया था या जिस सहज में असो सरदार जाफ़री ने एगिया को जगाया था। कि कामस कहता है—देविछार्थी—

‘एगो होने पर पर जावर सो जावेंगे

पड़े-गुगने बिस्तार से उगने वाल रंगी स्वादा में रा जावेंगे।’

अब हमी जगह पाकिस्तान के एहसन महमद 'अक' की कविता का एक प्रसंग देस लोबिद ताकि लण्डस्क्प वाली बान साफ हो जाय—

सल्ल की नजरों से बचने के लिए  
 शहर से दूर निबल भाय ये —  
 यक बयक नूर में एक नूर का धारा फूटा  
 उसन घबरा के कहा—  
 भायो छुप जायें अंधेर में —

हम उजाल में मुहब्बत भी नहा कर सकते ।'

'अक' की इस नज़्म का सापेक्ष 'डरपोक' है । परन्तु मुझे शोषक से अधिक इस कविता के शहर में दिलचस्पी है । यह वह शहर नहीं है जिसके विषय में मोर ने कहा था—

'निल भी गोया एक दिल्ली शहर है'

यह एक औद्योगिक नगर है । हमारे यही भोड़-भाड़ है तिल रखन की जगह तो मिल जाती है परन्तु दिल रखन की जगह नहीं मिलती है । इसलिए मैं कहता हूँ लण्डस्क्प बदल गया है । अब कलिय पात्रेक पातिमा धारा के पास नगर में बसें—

सागुपता घाम में मैं जब जड़े नहूँ फूँ  
 न जाने किसलिए पगढँदिया का तबत हूँ ।

मोर वह देखिय मोहम्मद अलबी अपनी सिढकी खोल रहे हैं—

सिढकी से जब घर में घुप उतरसी है  
 सरदी से मु'माय बन्न सिल बट्ट है ।'

यह भाषा नयी है । इसका संगीत भी नया है और लण्डस्क्प भी नया है । हिन्दुस्तानी ढंग का नयी कविता पाकिस्तान की नयी कविता की तरह किसी ऐसे कमर में बन्न नहीं है जो हवा की मुलाकात से काँप जाता है । यहाँ के बेहोद अस्तर जानवासा' मिखते हैं—

गृहे<sup>१</sup> स्मृतनिक के शहर तमदुन<sup>२</sup> का एक बनबारा  
 दास<sup>३</sup> ये असना<sup>४</sup> और कुमुबखाना का भारी पुस्तारा<sup>५</sup>  
 इसका भी बनबास मिला है चौन्ह साल या सोनह साल ।'

यह धनञ्जय राम से ज्यादा प्रेमसा है क्योंकि इसने साथ न इसकी सीता है श्रीर  
न सदमल । भक्त जनहार्द का यही दर्द इस नयी कविता का विषय है । इसलिए  
दोरा कहती है—

मूखी घास पे चिनगारी ही पड़े तो कुछ हंगामा हो '

जनहार्द का दर्द दोना देगों में एकसा है—

उज्जाड़ शहर पड़ा है 'बस' बसो पुपपाप ।'

असलम प्रसारो का एक दोर मुनिये—

'इस नगरी में हर बेहरे पर

जनहार्द की गर्ज पड़ी है ।

यही दर्द पाकिस्तान में जाहिद कार की उबान से यूँ बोलता है—

किन शब्दों में बात कहूँ मैं लोगो

किन शब्दों को समझोगे तुम बोलो

ऐसा न हो तुम जनहा और मैं जनहा रह जाऊँ '

और फिर प्रतिष्ठा के वन से किसी हिन्दुस्तानी शहरपार की आवाज आती है—

'पुकारते हैं किसी अजनबी मसीहा को -- ।'

शहरपार क्योंकि किसी बन्द कमरे में नहीं है, इसलिए उसके लिए—

'खुशी का लमहा दहक उठा है

शूफ'र घासा पर सर उठाये

पिछा की बातों पर हँस रहे हैं ।

बहार गुलशन से बन्द कमरों के पासले पर खड़ी हुई है ।'

बहार का यही विश्वास हिन्दुस्तानी उलू की नयी कविता की पाकिस्तान की  
नयी कविता से अलग करता है ।

मुझे यह नयी कविता बहुत पसन्द नहीं है परन्तु मैं इसे बुरा नहीं कहता । मुझे  
नही मालूम कि यह अच्छी है या बुरी । मैं अभी केवल इतना ही कह सकता हूँ कि  
इसका गीत शायद सभी शब्दों की बैठक और इस लैण्डस्केप में एक नयापन  
है । अभी इस परजने की कसौटी नहीं बनी है । इसीलिए अभी मैं सिर्फ यह  
कहना चाहता हूँ कि शायद यह नयी कविता गतिशील सराब कविता  
( Dynamic bad Poetry ) है ।

भय मुनिय शहरवार की एक कविता । शीघ्र है 'मत्ता का अपमान'—

उम्मीदों के लिये जसाये  
भव स इस मन्दिर में  
जिसकी दीवारें हैं रेत के ऊपर  
कलन है जिस पर नाकामी का  
मजबूरी का लमहा-लमहा  
महत्त्व का तिलक लगाये  
यान के बुत पूज रहा है ।'

नये कवि के इस व्यक्तित्व को यह प्रश्न परेशान कर रहा है—

खाली हाथ अगर हम पहुँचे  
अपने वचन  
तो सोंग कहेंगे  
खाली हाथ चले आये हो—  
जाओ-जाओ  
वापस जाओ ।' (शहरवार)

यानी यह नया कवि खाली हाथ वापस जाने से डरता है और अभी तक इनके हाथ खाली हैं । अभी इसकी झोली में उस हीसले के सिवाय और कुछ नहीं है जिसे याना पर लेकर निकसा था । परन्तु यह भी कम महत्व की बात नहीं है कि वह हिम्मत नहीं हार रहा है । अगर वह हिम्मत हार गया होता तो या तो जज्बी की तरह चुप हो गया होता या बामिक की तरह धामसी करन से लोबा कर चुका होता यर्तावा की तरह गजलें लिख लिखकर जिन्दगी के बाकी दिन गुजार देता । मुझे यह नयी कविता राष्ट्रीय कविता में अधिक साहस-सम्पन्न नजर आती है । यह शक्य है मगर हिम्मत नहीं हार रही है । बार बार कहती है—

माजी का भाईना मैंने तोड़ दिया है  
माजी का भाईना मैंने घत्त के पत्थर से टकराकर तोड़ लिया है ।  
उसके तेज नुकीले टुकड़े मैंने  
यादों के इस गाँव के बाहर  
भामू के तालाब में जाकर फेंक दिये हैं ।  
भव में तेज नुकीले टुकड़े  
भरे भुस्तकबिल्ल के तलुवों में न छुँगें ।'

●

(अमीर भारद्वाज)



‘स्वावों की दोबार से उतरो  
 धाघो धसो  
 दुनिया की देखें । ( शहरमार )

●

‘धसो कि धाज सितारों की चौर कर धायें,  
 कोई यह कह न सके धादमी से कुछ न हुआ  
 गमे जमाना जिस धाप भीत कहते हैं  
 हमें यह भीत न भिस्तो सो भर गये होते ।

● ( मोहम्मद अली ताज )

धारी सपेरन काहू तू नित छेड़े राग नये ।  
 सेरे धीन के कारण मेरे सपने रुठ गये ।

● ( ताज सई )

दुस की बंजर धरती हमने सीधी है जब राये ।  
 दिन की जलन सखी देखी है गर रात की धाँसू बोये ।  
 हमने अपने धार के दाघ को रोगन दित म रक्सा—  
 तुमने अपने दुस के धब्बे गवाजल से बोये ।’

● ( सज्जाद नाज़र रिजवी )

धुँचे हो बेकरारे नसीमे रुहर नहीं  
 काँटे भी चाहते हैं ठण्डी हवा धसैं ।

● ( सागर महुनी )

मे नयी बविता की धन्द मितालें हैं । देखिये इस विषय पर कई किताबें मिसने  
 की जलरत हैं । मैं इसे एक सेस में कैसे समझूँ — और धत म मुनिने मेरा  
 एक धेर—

ध्यासी रातें भी काटी हैं दिन धो धुजारे उत्सफन के  
 जेठ से हमने हार न धानी, धर न गये हम सावन के ।

( राही मासूम रजा )

●●●

# आधुनिक मराठी कविता

## एक विहगावलोकन



आधुनिक मराठी कविता के जनक केगवसुग (१८६६-१९०५) के तुतारी-नाद ने मराठी कविता को दीगवकास हो म बिद्रोह और विश्व भावना के विस्तृत भाव पटल पर प्रस्तुत किया था। धाम्नों कोण सत्तारीचे बोल नवा गिपाई और तुतारी जसी कविताएँ आत्म-नरोक्षण मानव प्रतिष्ठा और विश्वजनों भावनाओं में प्रोतप्रोत थी। विकास के प्रथम सोपान ही में मराठी कविता में प्रकृति प्रेम-सौन्दर्य, मानव-समाज और राष्ट्र विश्व की विविध भाव-सरणियों का ऐसा मिसा-जुला रूप व्यक्त हुआ कि सम्पूर्ण विकास में आज तक काव्य प्रवाह को किसी एक विशिष्ट भाव-युग क चौखटे म विमाजित नहीं किया जा सकता। मारायण वामन तिलक कवि विनायक कवि बी० दत्त गोविन्दाग्रज बालकवि और भास्कर रामचन्द्र ताम्बे आदि कविना ने आधुनिक मराठी कविता के मंगलाचरण को बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों म विकास की दिगाएँ प्रदान कीं। कवि विनायक न धपनी राष्ट्रीय कविताभा द्वारा देव और समाज की विषम-स्थितियों को भोजपूर्ण वाणो म व्यक्त किया। बाल कवि क काव्य मे प्रकृति और सौन्दर्य की सुकुमार व्यञ्जना हुई। भास्कर रामचन्द्र ताम्बे न प्रेम और शृंगार की भावभूमि पर मराठी भावगीत परम्परा का प्रारम्भ किया। गोविन्दाग्रज की कविता म विषमता और निराशा ( प्रेम और मृत्यु ) की घारा का सूत्रपात हुआ। भावभूमि की व्यापकता का अनुमान इसी बात स लगाया जा सकता है कि प्रारम्भिक विकास के इस चरण म हमें पारिवारिक विषयों की सामान्य संवेदनाओं की भावपूर्ण व्यञ्जना ओ दृष्टिगोचर होती है। कविता के विकास का द्वितीय सोपान कवि विनायक 'बाल कवि' और ताम्बे की समग्र 'राष्ट्रीय प्रकृतिपरक' एवं शृंगार भावगीत परम्परा को सूक्ष्म अनुभूतियों और लाक्षणिक व्यञ्जनाओं न धरातल पर प्रतिष्ठापित करता है। -

सन् १९२० क पत्रधातु रवि किरण मण्डल की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इस मण्डल ने कविता को जनप्रिय बनाने की दिशा म महत्त्वपूर्ण कार्य

‘भ्यावो भी दीवार से सतरो  
 भाग्यो बसो  
 दुनिया का देखें । ( बाहरपार )

●

बसो कि धाज सितारों का सेर नर धार्ये,  
 कोई यह कह न सके आदमा स कुछ न हुआ  
 गये जमाना जिसे धाप मौत बहते है  
 हमें यह मौत न मिसता सा भर गये हात ।

● ( मोहम्मद अली ताज )

झोरी सपेरन बाहे तू नित छेड़ें राग नये ।  
 तेरे बीन के कारण भर सपने रुठ गये ।

● ( ताज सईद )

दुख की बंजर धरती हमने सीधी है जब रोय ।  
 दिन को फसल खड़ी देखी है गर रात को धामू बोये ।  
 हमने अपने प्यार क बाग को रोगन विस में रक्खा—  
 तुमने अपने दुख के धन्ने गगाजल से बोये ।’

● ( सज्जाद बाकुर रिजवी )

गु ये ही बेकरारे नसीबे सहर नहीं  
 फाँटे भी चाहते हैं ठण्डी हवा बनें ।

● ( सागर महुदी )

ये नयी कविता की चन्द मिसालें हैं । देखिये इस विषय पर कई कितारों लिखने  
 की जरूरत है । मैं इसे एक सेख न जैसे समेटू और अत न सुनिये मेरा  
 एक दोर—

प्यासी रातें भी जाटो हैं दिन भी गुजारे उसभन के  
 जेठ से हमने हार न मानी पर न गये हम सावन के ।

( राही मासूम रजा )

●●●

# आधुनिक मराठी कविता

## एक विहगावलोकन

आधुनिक मराठी कविता क जनक केगवसुन ( १८६६ १९०५ ) क तुनारीनाद मे मराठी कविता का संगकाल हो म विद्रोह और विन्व भावना क विन्मृत भाव परल पर प्रस्तुत किया था । आम्ही कोण मसारीच बाल नवा गिपाई और तुनारी जैमा कविताएँ धारम-परौचण मानव-प्रतिष्ठा और विन्वजनान भावनाओं स प्राप्तोत थीं । विकास क प्रथम सोपान हो मे मराठी कविता मे प्रकृति प्रम-सौन्दर्य मानव-समाज और राष्ट्र-विन्व का विविध भाव-सरणियों का ऐसा मिला-जुना रूप व्यक्त हुआ कि सम्पूर्ण विकास मे आज तक काव्य प्रवाह को किसी एक किण्व भाव-युग क सीखटे मे विभाजित नही किया जा सकता । नारायण वामन तिलक, कवि विनायक कवि को० दत्त गोविन्दाग्रज, बालकवि और भास्कर रामचन्द्र साम्ब आदि कवियों न आधुनिक मराठी कविता के संगसाचरण को सीखवीं सनी के प्रथम दो दशकों मे विकास की दिगाएँ प्रदान कीं । कवि विनायक न अपनी राष्ट्रीय कविताओं द्वारा देश और समाज की विषम-स्थितियों को आजपुण आणी मे व्यक्त किया । बाल कवि क काव्य मे प्रकृति और सौन्दर्य की मुकुमार व्यञ्जना हुई । भास्कर रामचन्द्र साम्ब न प्रथम और शृ गार की भावभूमि पर मराठा भावपीत परम्परा का प्रारम्भ किया । गोविन्दाग्रज की कविता मे विषमता और निराशा ( प्रथ और मत्यु' ) की धारा का मूत्रपात हुआ । भावभूमि की व्यापकता का अनुमान इस बात स लगाया जा सकता है कि प्रारम्भिक विकास क इस चरण मे हमें पारिवारिक विषयों की सामान्य संवेदनाओं की भावपूर्ण व्यञ्जना भी हृदिगोचर होती है । कविता के विकास का तृतीय सोपान कवि विनायक बाल कवि और ताम्बे की क्रमशः राष्ट्रीय, प्रकृतिपरक एवं शृ गार भावगीत परम्परा की सूक्ष्म अनुवृत्तियाँ और तात्कालिक व्यञ्जनाओं के धरातल पर प्रतिष्ठापित करता है ।

सन् १९३० क पदवान् रवि-किरण मण्डल की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण घटना है । इस मण्डल न कविता का जनप्रिय बनाने की दिशा मे महत्त्वपूर्ण कार्य

निया। मशवम गिरीष प्रहसाद केगव घने भवानीर्षक पण्डित मुमुमाग्र,  
 धोरकर धोर माधव ज्युसियन द्वितीय सोपान क प्रमुल रचनाकार है। इन  
 रचनाकारों में ताम्बे और कवि विनायक की परम्परा का समानान्तर विकास  
 दृष्टिगोचर होता है। प्रहसाद केगव घने न भ्याम्य काव्य की सृष्टि की धोर  
 माधव ज्युसियन में उमर लम्पाम का अनुवाद तथा उबू छन्दा का प्रयोग किया।  
 इस प्रकार मराठी कविता १९४५ तक प्रवृत्ति प्रेम-सौन्दर्य और राष्ट्रीय तथा  
 आन्तिकारी भावधारामों से अनुप्राणित विकसित होती रही।

हिन्दी कविता की तरह छायावाद रहस्यवाद प्रगतिवाद और प्रयोगवाद आदि  
 वासक्रम से विभजन करने का प्रयत्न मराठी कविता का विकास प्रवाह में  
 नहीं है। इसका यह भाग्य नहीं कि इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ मराठी कविता में  
 नहीं रही। जगन्नाथदास रत्नाकर स सेकर पन्त निरासा और माखनलाल  
 खतुबेदा बचन आदि हिन्दी कवियों का अनुरूप बेंसी हो भावधारामों का कवि इस  
 विवेक्य अवधि में हुए हैं। अद्यतन काव्य प्रवाह के प्रथम चरण में अनिल  
 (भाताराम रावजी देशपाण्डे) और मडेंकर का सृजन-मोह अत्यधिक  
 महत्वपूर्ण है।

आधुनिक मराठी कविता की सामाजिक चेतना का आधार और जीवननिष्ठ  
 समस्याओं की सामान्य चर्चन अनिल की कविताओं में दी। वर्तमान जीवन  
 भाग्य की आत्मसात् करने और प्रभावोत्पादन अभिव्यक्ति में मुक्त छन्द की  
 सामर्थ्य उठाने की सिद्ध की। अनिल के साथ ही बा० ना० देशपाण्डे का नाम  
 भी मुक्तछन्द का सद्गम में भुलाया नहीं जा सकता। केगवमुन की मानव निष्ठा  
 और आगावादी भावना नये छन्दों में अनिल की रचनाओं में स्पन्दित हुई।  
 अनिल की यह प्रगतिशील चेतना किसी वाद-विशेष की पक्षधर न होकर व्यापक  
 मानव संवेदना पर आधारित है। यही मानवतावादी स्वर और गहरी  
 आस्था अनिल को अत्यन्त सशक्त कवि और दृष्टा के रूप में प्रस्तुत करती है।  
 मयी पीढ़ी के लक्षण कवि अनिल स प्रभावित हैं।

मडेंकर मराठी नयी कविता के प्रवर्धक हैं। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं का सग्रह  
 चिदिगम (१९३९) में गोविन्दाग्रज की परम्परा में आता है। इन रचनाओं में  
 निराश हृदय की कछु छ्यजना मिलती है किन्तु इसी वर्ष द्वितीय महायुद्ध  
 प्रारम्भ हुआ और मजसुगीन सम्यता के आतावरण में मानवता का स्त्रोत्र सूखने  
 से सगे। मडेंकर ने आधुनिक परिवर्तित जीवन-परिस्थिति में मानव मूल्यों के विषय  
 में और जीवन निष्ठाओं के रखरखाव को अनुभूत किया। उनकी कविताओं में

मदाप बोद्धिकता और जटिलता का समावेश होता गया। १६४७ में उनका 'काहों-कविता' नामक संग्रह प्रकाशित हुआ। यही संग्रह सर्व-काव्य का प्रथम उदाहरण है। बम्बई महानगरी में मर्डेकर ने यज्ञ-मन्त्रता का परिवेष्ट में मानवीय सम्बन्धों की वचना देखी और इस सबकी कवि-मन पर हुई प्रतिक्रिया ने धृष्ट, निराशा और जुगुप्सा की भावना को जन्म दिया

जगायची पण सकनी घाह ।

मगायची पण सकनी घाहे ।

( जीवित रहने और मर्ग दोनो ही पर प्रतिवच है ) महमूद करते हुए कवि ने जन-सामान्य का जीवन और मरण को इस प्रकार देखा

गन्धि विचार विस्तृत जगल

पिपात मल उचकी दज्ज ।

( प्रसङ्ग गरीब लोग जिला में जीत हैं और बनारस में हिबकी से प्राण छीड़ दत हैं ) दूसरे संग्रह ( आणखी काहों कविता १६५१ ) में कवि और अधिक विचार प्रधान सूत्र और सोप हो गया

जसि पाप्याची नजर फिरावी

धनासलीच्या उरावरुनी

ह्या सारयांची मेकदवृत्ती

बावरत ससि जगण्यामधुनी

अपरिचित के वनस्पता पर से

जस दुष्ट की निपाहें फिरती हैं

वैन हा इन सब लोगों की कायरता

जीवन में आचरण करती है !

प्रस्तुतीकरण का दृष्टि से मर्डेकर ने पौराणिक भस्मों को धातुताउन विषय परिवेष्ट में व्यक्त किया। यांत्रिक नवीनतम उपमाएँ उठाईं। रौद्रमर्मा के जीवनावरणक उपान्यों की काव्य-उपकरण बनाया। अन्न की धानि के छल्लों का मुक्त प्रयोग किया। इतना ही नहीं उन्होंने प्राचीन दूध अमृत-धोवी को धातुनिक भाव व्यञ्जना के लिए उपयोगित किया। मर्डेकर ने मुक्त छंद में ( एक कविता अन्वय रूप में छोड़कर ) कविताएँ नहीं लिखी हैं। यह महत्वपूर्ण तथ्य नवकाव्य के इस पुरस्कर्ता के साथ सदा जुड़ा रहेगा। समाप्त विफलता और दृष्टा के बावजूद मर्डेकर की मानव और जीवन में घनी आत्मा की और यही कारण है कि उनका संवेदनशील कवि दिग्दर्शन देखे तिस्रमिता उठा ।

प्रकृतवाद प्रायश्चित्त दृष्टि—विदु से पु० वि० रेगे की कविताओं में व्यक्त हुआ है। उत्तान शृंगार और नारी के प्रति आकर्षण ही मांसल दृष्टिकोण उनकी कविता का मूल भाव है। दारुचन्द्र मुक्तिबोध के शब्दों में 'रेगे की नारी-दृष्टि मोग प्रधान है। उनकी कविता मानो छीन्ने का व्योरेबार वर्णन ही है।' वा० रा० कात 'दशवामा' में सांतिकारी कवि के रूप में दिखाई दिये किन्तु मयी कविता के परिवेश में उनकी कमानों रचनाएँ भी मिलती हैं। मर्दक से प्रभावित और उनकी-सी ही अवसाद-ग्रस्त दृष्टि बसल हृदयनोस की 'वदया दृष्टो' कविता संग्रह में दृष्टिकोण ही है। इधर उनकी कविताएँ देखने को नहीं मिलती। य० द० भावे (घाना हलबे मिय—दा संग्रह) ने अपनी कविताओं में आर्थिक विषमता और आधुनिक सभ्यता पर कटाक्ष किया है। महानगरीय जनजीवन और मध्यमवर्गीय नासदी का मार्मिक स्वर उनकी विशेषता है। श्रमिकों का दयनीय अवस्था का भी सहानुभूतिपूर्ण चित्रण किया है। रामोपाध्ये की कविताएँ 'निर्लावती' में संग्रहीत हैं। भीतिष भूत्वा की प्रतिष्ठा में मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन कर दिया है। उनका कविताओं में यह असन्तुलन प्रतीकों के माध्यम से उद्घाटित हुआ है।

विदा करदीकर दारुचन्द्र मुक्तिबोध और मंगेश पाडगांवकर ये तीन नाम मराठी नयी कविता के समसामयिक समुद्र स्वरूप को सहज प्रकट कर देते हैं। विदा करदीकर अपने प्रथम संग्रह 'स्वेदगंगा' में सांति और श्रोज के कवि थे। किन्तु 'मुदगंध' और 'धूपद' संग्रहों में उनका नया रूप सामने आया। उनका रचनाकार जहाँ उद्दाम शृंगार के मांसल दृश्य उपस्थित करने में सानो नहीं रहता वहीं सामाजिक विषमता पर कटाक्षात करने में नहीं चूकता है। जहाँ कवि ने मध्यमवर्गीय जीवन की विषमता को प्रकट किया है वही उसमें प्रसर भावावादी स्वर भी सुनाई पड़ता है।

रोने की भी शक्ति नहीं है

हँसने की भी शक्ति नहीं है।

किन्तु दूसरे ही क्षण कवि का आस्था प्रधान स्वर गूँजता है

भुमके दीख पड़ते हैं

अविध्यो-मुक्त स्वीकारणीय जीवन के

भाल सल भाल --

सांति के सौफाना में बार बार

जनता के सेट में

अग्नि है अग्नि है -----

जनता के देख्य में

सावा की सहर है --- --

जनता की नसा म

साल लाल रक्त है----- --

जनता की मुक्ति हंतु

धमी एक समर राय --- -----

विदा करदीकर का मुक्त्युत्सव प्रवाह और सय की दृष्टि से बजोड है। महाराष्ट्र की स्थानीय रूप-रंग चित्रात्मकता उनक बिम्बा में मजबूत हो उठी है।

शरद्वन्द्व मुक्तिबोध में आर्थिक विषमता और सामाजिक दुरावस्था के प्रति असंतोष और विद्रोह का स्वर ऊँचा हुआ है। उनका विद्रोह-आक्रोश सामान्य जन के प्रति सहानुभूति से मोनभाव और आत्मावादी है। साम्यवादी चिंतना कवि के अन्तर्मुख में सक्रिय रहती है। किंतु वह अपनी संस्कृति और परिवेश से विच्छिन्न नहीं होता। राजनीतिक आग्रह रचना प्रक्रिया और भाववीय संवेदनाओं में सम्मिश्रित हो कलात्मक ढंग से व्यक्त होता है। 'नवी मलवाट' 'यात्रिक' आदि सग्रहों में उनकी सशक्त रचनाएँ हैं। आक्रोश और क्लिप्तमिलाहट जैसे हृदय कवि को मयती रहती है

मेर केरा-जाल म परांता है श्रुद्ध वात --

और भी—

दहक उठे सारे जन

ऐसा अग्नि-गीत गा

गीत हो त्वेष का, विषमता-द्वेष का

विद्रोही गीत एक लौह दण्ड सा

साहेब हाथों का

कठोर गीत गा --- --

मुक्तिबोध की मुक्त्युत्सव योजना और नवीनतम सन्दर्भों में आक्रोश-व्यंजना नयी कविता के परिवेश में सामाजिक मनुष्य की प्रतिष्ठा की दृष्टि से अप्रतिम है। भोग पाठगाँवकर (जिप्सी छोरी आदि संग्रह) मुलतः प्रकृति और सौन्दर्य के कवि हैं। नव-रोमांटिसिज्म के अरातल पर वे हल्की संवेदनाओं का भूरी और अमूर्त बिम्बों में सुगमता से व्यक्त करते हैं। सौन्दर्य की व्यास जित्य उनका जिप्सी कवि मन प्रकृति के रंग-रूप रस-भाव को सशक्त बिम्बों में शून्यता आनन्द-दाक देता रहता है। उनकी प्रेम की कविताएँ सूक्ष्म और मार्मिक हैं। इस सौंदर्य दृष्टि के अविरक्त पाठगाँवकर में सामाजिक अंधता भी परिलक्षित होती है। शब्द-चयन



गति-सय और धार्मिक विम्बों के कारण पाठगोचर की कविता का सत्तात्मक पक्ष बहुत ही प्रभावकारी और सुगढ़ होता है। मंगल पाठगोचर सूक्ष्म संवेदना के सत्तात्मक कवि है।

सदान्तर रंग भी प्रकृतिपरक शीर्ष्य दृष्टि के रचनाकार है। रंग न छोटी कविता का रूप में व्यंग्य बहुत सुन्दर प्रस्तुत किए हैं। अस्तबल संग्रह में उनकी छोटी कविताएँ अत्यन्त प्रभावकारी हैं। वहीं रंग प्रकृति के छोटे छोटे मादक रंग विम्बा में बाँध सत है वही दूसरी ओर उनकी रचनाओं में दुर्बोध और विविध कल्पना भी कम नहीं। सतत बापट भी ताजी व्यञ्जना की दृष्टि से महत्वपूर्ण कवि है। रोमांटिक धारा और सामाजिक चेतना का समन्वय उनमें मिलता है। लेखिकाओं में इन्दिरा और पद्मा का कृतित्व महत्वपूर्ण है। इन्दिरा रोमांटिक धारातल पर नवीन संवेदना अत्यन्त ही बारीकी से उतारती है। आत्मसीन उदासी का विविध मूढ़ ताड़-टटके सशक्त विम्बों में सत्तात्मक रूप से उनकी कविताओं में मिलता है। पद्मा की कविताओं में पारिवारिक जीवन के हृदयघाटी विषय मिलते हैं। य भी नोमस संवेदनाओं को सघो रेखाओं और पूर्ण विम्बों में कुशल सदा से उतारती है। दाना ही में अनगड़ता कही नहीं—सत्तात्मक विन्यास दृष्टि गोचर होता है।

इधर के और नये कवि-तु ध्यावस्त करने वाले कवियों में दिलीप पुरुषोत्तम बिगे शंकर रामाणी, रमेश सेण्डुलकर भारती प्रभु और सरिता पदकी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों में शैक्षिक सजगता और वास्तववादी अभिप्राय से आधुनिकतम भावबोधों को और भी भाविन्य से छुआ है। पश्चिम के कवियों का प्रभाव इन पर दखा जा सकता है।

मराठी नयी कविता एक स्वाभाविक-आत्मीय प्रक्रिया में विकसित हुई है। मडेंकर को बहुत विरोध सहना पड़ा था। फिर भी मराठी मरकास्य आन्दोलन और गिरोह प्रयत्नों का प्रतिफल नहीं हो है। वैचारिक दुर्बोधता कल्पना की विविध सता होते हुए भी मराठी नयी कविता अनुवाद-सी कहीं नहीं सगती। संवेदना गत और व्यञ्जनागत असनुसलन नहीं दोख पड़ता। यही कारण है कि रूप रस गद्य रंग प्रकृति प्रेम-सौन्दर्य संस्कृति-मानव-जीवननिष्ठ और आधुनिकतम जटिल जीवन की विडम्बना सब कुछ एक साथ मराठी नयी कविता में परिलक्षित होते हैं।

(चन्द्रकान्त देवतासे)

# वर्तमान गुजराती कविता



स्वाधिनता के बाद तीन समय कवि विभा हो गए—हरिश्चन्द्र मट्ट, कृष्णसास श्रीधराणी और प्रह्लाद पारेख। उनकी अनेक रचनाओं में गुड सौन्दर्यानुगम भलकता है। चौथे दशक के प्रारम्भ में प्रह्लाद पारेख कृत 'बारोबहार' का प्रकाशित हुआ और गुजराती कविता ने जागरण समाजामिनिवेश से कुछ मुक्ति पाई। इसी दशक के अन्त तक राजेन्द्र घोड़ या पहुँचे जिनकी ध्वनि में गुजराती पाठक ने एक अनाबिल सौन्दर्य-सौक के दान किये। चतुर्थ दशक में सामाजिक दायर्य का आलेखन करने वाली रचनाओं की बहुलता की ध्वनि में ऐसी एक भी रचना नहीं। केवल कविता-तत्त्व तुष्टि का कारण बने इस बदर यहाँ है। उनका चौथा काव्य-संग्रह 'दान्त कोलाहल' ६२ में प्रकाशित हुआ। इसमें भी वे ध्वनि में सजित निरुद्ध अमानन्द के सुसंगवार माहौल में ही दूबे हुए सीधे। राजेन्द्र ने भी रचनाएँ भी बाँधी दी हैं। उनमें बगाली एवं भारवाही गीतों-लोकगीतों को लय का उपयोग किया गया है। इस कवि के 'बनबासी के गीत' मस्त तूफानी प्रणय की महक तथा ताड़नी लिए हुए हैं। ऐसी रचनाओं में पुनरावृत्ति का मय बना रहता है। फिर भी हिन्दी कवि ठाकुर प्रसादसिंह के 'बशी और मोदल के गीतों के साथ राजेन्द्र के इन गीतों का पढ़ना कम रम्य नहीं है।

उमाशंकर और सुन्दरम् पिछले तीन दशक के मूक्य कवि हैं। सुन्दरम् के सबेरा बरु प्रबल हैं। उनकी कुछ रचनाओं में प्रिमिटिव फोर्स का आस्वाद प्राप्य है। उमाशंकर में मानस सर की स्वस्थता है तो सुन्दरम् कभी कभी उमठ नन के समान बहते नजर आते हैं। बारोकी बोना की रचनाओं में ललित होती है। विचार की दृष्टि में सुन्दरम् की गति एक ही दिशा में तथा गहराई की छूने में मान प्रताप होती है। उमाशंकर गति और स्थिति—सार्वभौमिकता पसन्द करते हैं। सुन्दरम् की प्रारम्भिक कवित्वान्ना में वग-वीथम पर व्यग्य किये गये हैं। उनमें मार्क्स-दशन के अनुसार कुछ वर्ग-सघर्ष की भावना व्यक्त हो गई है। फिर वे गाँधीवाद की स्वीकार करते हैं और अन्ततः अरविन्द-दशन के उपासक बनते हैं। हिन्दी कवि पन्त और सुन्दरम् की गति कुछ समानान्तर-सी दीखती है।

उमाशंकर का सौन्दर्य-बोध रबीन्द्र के निकट और उनकी जीवन-दृष्टि गांधी के समीप है। उनके समस्त विचित्रता है। उन्हें मानव-मात्र से लगाव है। उसमें बसा मनुष्य वृहत्तर विश्व को प्यार करने उन्हें का विलयन करने में अपने अस्तित्व की सार्थकता महसूस करता है। 'यात्रा' के सुन्दर में भी यह उदात्त तत्व है किन्तु वे जन-जीवन के साक्षिण्य से हटकर एक कोने में जा बैठे और उन्होंने जीवन को समझने के लिए एक निश्चित दर्शन का कथन पहन लिया। देखें इस नयी अनुभूति की रचनाओं भी बिना दिए वे कैम रह सकते हैं ?

उमाशंकर निम्नीय (८०) की एक लम्बी कविता आत्मना खड़े (१७ शान्ति) हैं एक विविध धर्म में अंतर्मुख हुए हैं। यहाँ मानव जीवन को आकांक्षाओं के साथ निजी विक्षिप्त मनस्थितियों का प्रभावोत्पादक भजन है। प्राचीन ('४४) के पौराणिक पात्रों को उमाशंकर ने नवजीवन का सत्व पिलाया है। वे पात्र अपने स्थान पर खड़े होने पर भी युग की सीमाओं को भेधकर हमारे धर्म में एक दृष्टि पहुँचा पाये हैं। यहाँ प्राचीन पात्रों में अधिष्ठित जीवन में वर्तमान युगचेतना की धड़कन सुनाई देती है। मुठ के कारण विषष्टित जीवन-मूल्यों के बीच मानव-जाति की पुरानी पोढ़ाओं को खिन्न यहाँ नये अर्थ दिए हैं। 'आतिथ्य' ('४६) से जीवन की संवादित और प्रसन्नता मुक्तित हुई है। वसंत वर्षा ('४४) में प्रकृति के निविड़ आनन्द तथा विश्व मानव के प्रेम की प्राप्ति का सतोप स्वर्ग के रूप में है। महा स्वाधीनता के बाद लिखा गया 'जीर्णजगत' नामक काव्य है जिसमें समाज प्रतिष्ठित प्रवचनों के प्रति तीव्र आलोच्य व्यक्त हुआ है। उसका पूर्वाङ्क देखिये—

मुझे मूर्तों की आस धाये !  
 समा में समिति में बहुत से पंचा मे  
 जहाँ नये निर्माण की बातें करें  
 दकियानूस जबड़ ।  
 एक ही के पीछे ही की भेड़िया घसान  
 मिस घामद किसी के मर्द मूढ़ से मा,  
 उन्ने दुस्कार से भाई मगर ये बरबराना  
 विचरते मन्द नित्य  
 श्वास सेते अर्द्ध-सत्य असत्य मे  
 अरठ हमें कहीं कहाँ जवान पूरे  
 निरसकर मावी को सेते जम्हाई  
 सगाते कुण्डसी संकुल ऐसी चाहकर  
 कि सय का शवद्व हों जाय गमा ,

मुझे निशिदिन बुझे हुए तिलों की बास घाये ।

मुझे मुदों की बू सताये ।

पुष्प स लट्कर सजे रूप में विहरते

दाव समाज की हर छोटी से हर चाटी पर चाहे विचरते ।

जंगलों म कष्ट तो कम नहीं हुए

कुसियों बनती रहा अगणित ।

पुष्प भी खिलते रहें हैं बाग में

और सजाई जा रही है गर्दन

अचेतन की भारती में चेतना हवि हो रही ।

छिन्न मित्र छु' ('५६) कविता में व्यक्तित्व और समाज की व्यवस्थिति में विश्व राव कवि को खलता है । यही मनुष्य के प्रचन्द्र आंतर रूपा से आक्रान्त होते हुए भी कवि ने उनके प्रति एक प्रकार के ऋण भाव को स्वीकार किया है । इस अनवस्था और विखण्डिता के युग में हम पर छाई हुई विषमता का इकट्ठा करने वाले दूसरे दो प्रतिभा सम्पन्न कवि स्वार्तभ्य के बाद प्रकाश में आये श्री निरंजन भगत और श्री प्रियकान्त मणियार ।

प्राधुनिक गुजराती कविता में गान्धिल्य की क्षमता उमाशंकर के बाद सबसे अधिक निरंजन में है । निरंजन विश्व-कविता के अध्येता हैं । उनका कक्ष पुस्तकों की दीवारों से बना है । गुजराती-बंगाली कविता के अतिरिक्त पाश्चात्य भाषाओं की कविता के अध्ययन से भी श्री भगत ने काव्य-शिक्षा ग्रहण की है । वे कविता पर बातचीत नहीं कर सकते आपण दे देते हैं । वैसे वर्षा में प्राणामक दीखन पर भी उनकी दृष्टि गौरी प्रणोत अहिंसक मानवता-दृष्टि है । उनकी कृतियों के बहिरंग पर कल्पना (Image) प्रतीक आदि पर—बाल्सेयर इसिडट रिल्के आदि कवियों का यथावित प्रभाव सक्षित होना है । उनके प्रतिनिधि सग्रह 'छन्दालय म आकार निर्मिति का आश्चर्यजनक कौशल है । नगर-मस्कृति के विकास के फलस्वरूप व्यक्तिमन के मूनेपन का अनूठा अवन है । 'प्रवालद्वीप' (बम्बई पर लिखित काव्यगुच्छ) म व्यजित युगबोध निरंजन को सत्याम्बेधो तथा मनुष्यों के परम चाहन के रूप में परिचित करवाता है । परस्पर के यात्रिक व्यवहार के कारण मनुष्य का हृदय पराजित-सा हो गया है इसका निरंजन को बेहतर गम है । अथ प्रमर्या आकाशान्ना के पीछे दौड़ने हुए मनुष्य आन्ति के अधकार म फमकर दिग् अभित हा गया है । निरंजन का यह स्वर उनकी एक छोटी कविता 'महमदावाद' में भी सुनाई देगा । कुछ पक्षियाँ देखिय

यह न शहर मास घूम के घुर्  
 रुधते जहाँ मनुष्य के हए हए ।  
 असह्य नचा म अदम्य रूप की लुपा  
 खिलती तर्पायि व्यर्थ हा यहाँ उपा-  
 नीरवायये' पड़ सदा उदार कर्ण-सी  
 मिल-मालिकों के घर सुवर्ण-सी ।

प्रियकांत की रचनाओं में प्रथम पंक्ति से ही उमेश भनकता है । सारी रचना का ताजगी के साथ निर्वाह होता है । प्रतीकों में नये उपमानों से समृद्ध समग्र कृति एक स्वायत्त प्रतीक होती है । उनकी 'चासती चासती' कविता में छाया के प्रतीक के सहार छाज के मनुष्य के धर्मजगत की चहल-पहल का मनोरम चालेखन हुआ है । कवि ने विभिन्न मत स्थितियों की सुरेल तस्वीरे खींची हैं । 'प्रद्व नामक' कविता में सूर्य के रथ का चहन करने वाले छात भववा में ही एक भव यहाँ ताँगे में जुड़ा हुआ झलक चुबह स ही बरखत पानी में तरबतर बाँप रहा है । कर्त्तव्य स्थिति से व्युत्त छाज के मनुष्य के गमगीन परिवेश, और उसमें मजबूत सठ मनुष्य का यह भव्य अप्रतिम प्रतीक बन सका है । प्रियकांत ने कुछ मधुर गीत भी लिखे हैं जिनमें राधा-कृष्ण के परस्पर सम्बोधन का आधार लिया है । दूसरे भी अनेक नये कवियाँ न इस पुराने आधार से नई उपसर्ग के लिए प्रयोग किये लेकिन वे प्रयोग मात्र पुनरावर्तन बन कर छो रह गये ।

बालमुकुन्द दवे प्रजाराम और उद्यनस् सीना परम्परा प्राप्त और प्रचलित काव्य रूपा एवं काव्योपकरणों का उपयोग करने वाले प्रयोगों में उत्सुक कविता सिद्ध करने के प्रयत्न में मग्न रहने वाले कवि हैं । प्रजाराम भी राजेन्द्र की तरह 'भासमुग्ध' हैं । उनका संवेदना-पटल कोमल ऋजु है । अरवि-द-दर्शा को भगीवार कर लेने से जो साम-हानि सुंदरम् की कविता को हुई वही प्रजाराम की कविता के साथ भी हुआ । बालमुकुन्द में असाधारण सृजना तथा प्रासादिक माधुर्य है । उच्च स्तर के कवि होते हुए भी वे लोकप्रिय हैं । लोकगीतों के सहज और लुमार में इन्होंने काफी अच्छे गीत लिखे हैं ।

उद्यनस् विषय-वस्तु की दृष्टि से समृद्ध हैं । वे लिखते हैं, श्रुत लेकिन चाकई उनमें सर्ग-शक्ति है । कोई भी विषय उनकी लेखनी का उत्तम अति कर सकता है । मारसवर्ष पर लिखे गये उनके काव्या में विभिन्न प्रदेशों का व्यक्तित्व नैसर्गिक सुषमा मानव रचित कलाकृतियाँ और भिन्न-भिन्न जनसमुदायों की जीवन्त छवि मौ उतरी हैं । उद्यनस् ने प्रबंध काव्य के क्षेत्र में भी हस्तक्षेप किया है । उनकी

१ 'धी नरेल मेहता ने 'फागुन मासे' जैसे सप्तमी के प्रयोग किये हैं ।

कविता को इसारत में छल्लहटा ऊबड़-खाबड़ता और सर्वशब्द समभाव है। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में सस्त्रुत की अपरिचित साधनावली की भरमार के कारण दुरुहता थी। आदर्श में उनका विकासक्रम दिखाई देता है।

इन तीनों के साथ अन्य कवि हैं श्री जयंत पाठक वेणीभाई पुरोहित मकरन्द दवे पिनाकिन् ठाकोर हरीद्र दव नन्दकुमार पाठक सुरेश दसास हसित बूच आदि। गौधीयुग के श्री श्नेहरश्मि सुन्दरजी वेटाई मनसुखलाल भवेरी करसनदास मारण कूजालाल स्वप्नस्थ आदि भी आज लिख रहे हैं। बाद में लिखने का प्रारम्भ करने वाले किन्तु बोरे सध्य समझने वाले अनेक कवि कविता की उपेक्षा क्षेत्र समझकर लिख रहे हैं।

श्री हसमुख पाठक नलिन रावल तथा विनोद मध्वयु प्रयोगशील हैं। वे साम यिक्ता का मम पकड़न में प्रवृत्त काव्य गिस्प में प्रवीण पाश्चात्य कविता के अध्ययन का सदुपयोग करने वाले गत दशक के नये कवि हैं। उनमें उमाशंकर निरंजन की तरह समाजान्निमुखता भी है निशगोभिमुखता भी है वैयक्तिक मन-स्थितियाँ का भ्रमन भी है।

श्री हेमन्त देसाई और ग्लोप भवेरी ने संयोग विप्रयोग की कुछ कविताओं में मौसल प्रणय की आधगपूर्ण अभिव्यक्ति की है। बाद में ये दोनों अपना अनुकरण करने लग। इनके समान कम उम्र के श्री चन्द्रकान्त सेठ और जोसेफ मेकवान उज्ज्वल भविष्य के इंगित दे चुके हैं।

तीन चार वर्ष में यहाँ अछांत्स रचनाओं का शोरगुल मचा हुआ है। गत वर्ष महमदाबाद में अछादस कवियों का एक बड़ा उग्र जुलूस निकला था। इस दल में कुछ कवि छानों में अच्छी रचनाएँ देन वाले हैं कुछ गजबकार हैं तो कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने छंद का कभी स्पर्श भी नहीं किया है। छंद में जिसकी यथेष्ट गति हो, वे ही मुक्त छंद में सही माने में कामयाब हो सकते हैं यानी अछादस की आवश्यकता को समझ सकते हैं अगर है तो। इस समझदारी के कारण श्री गुलाम मोहम्मद शेख और श्री सुरेश जोषी इस विधा में कुछ आसन्न रचनाएँ दे सकें हैं।

छिन्न भिन्न छु' कविता में श्री उमाशंकर ने गुजराती के चारा कुल के छंदों का विनियोग किया है। उसमें और एक अन्य लम्बी रचना 'शोध' में बीच-बीच में गद्य खण्डों का मार्थक प्रयोग हुआ है। पहली रचना में लयकी टूटन और घटकन इस कान्तर सुनाई देतो है कि जीवन का छिन्न भापेह्व भिन्नता हबहू उभर उठती है।

श्री सुरेश जोशी ने 'प्रत्यक्षा' (१९१) में कुछ घद्यांश रचनाएँ दी हैं। कुछ रचनाओं में छंद की गण के निकट जाने का प्रयास किया है तो वहीं वहीं भलग भलग समय बात वाक्या की प्रास की दीवारा से नियंत्रित किया है। इस दृष्टि से चार आधार, मूर्धा घाति रचनाएँ पठनीय हैं। प्रतीका के आधिक्य एवं संयोजनव की कुछ रचनाएँ चर्चा के लिए पसन्द करने योग्य हैं — 'रोज रात', 'है, है साभलु छु' 'हठ' आदि रचनाओं में दृश्यमान घोर व्यथ—विजृम्भ और ऑडिटरि—दानो प्रकार के प्रतीक प्राप्त होते हैं। 'प्रत्यक्षा' में कवि के दृष्ट दृष्टीवर्धन-महान्ति का अनुभव कर रहे हैं। हाँ व्यवहार के दृष्ट की दृष्टियों का कविता में प्रतिबिम्ब होना चाहिए किन्तु किमर्थ तक ? भा तीव्र पीरातिव प्रतीक—*math* के विविध प्रयोग तथा नम्र प्रतीका के कारण ये रचनाएँ मर्यादित पाठकों के लिए हो हैं।

Pure Poetry के प्रवर्तकों में एक केंद्र प्रतीकवादी कवि का यह कथन श्री सुरेश जोशी ने आभसाए कर लिया है—*Poetry is not made of ideas but of words*—कविता ख्याति से नहीं दृष्टा से बनती है। कविता में विषय का महत्व नहीं है। बात ठीक है क्योंकि हिमासय पर लिखने से कोई रचना मध्य हो जाएगी इसकी किसी कवि को पूर्व प्रतीति नहीं होती। परन्तु जो कृतित जगत के विषय है, वहीं पर लिखने से कविता सिद्ध होगी इस भ्रान्ति से श्री सुरेश जोशी मुक्त नहीं है। भतसब कि उनकी रचनाएँ विषय के चुनाव की दृष्टि से अधिक महत्व रखती हैं।

'प्रत्यक्षा' को पढ़कर हम हम खमाने के प्रजीवागराव दलों से वाकित हुए हैं। कवि ने यहाँ यत्रयुग की पैदाइश के अनुकूल एक विद्रोही दर्पपूर्ण नास्तिक, भोगवादी क्षणवादी, सर्वांक पात्र की उभारा है जो तमाम रचनाओं के नपथ्य में बैठे बैठे बोलता है। रामाष्टिक कविया की तरह पात्र की प्रवृत्ति भी भोग परामण घोर भरलो-मुखी है।

य और नय तमाम घद्यांश रचनाकार मूल्य के आदर्शों के विरोधी हैं। तथाकथित मूल्य और कोर आदर्शों का नुकपाटी सधारणता किसी भी स्वातन्त्र्यवादी कवि ने नहीं किया। हम जोशीजगत रचना देख चुके हैं। फिर भी लगता है कि इस मजबूत कविया की निर्मोक्षता नवल नेतिवाचक नहीं हो सकती। इसके पीछे कोई विधेयात्मक बल होना चाहिए। तनिक विषयान्तर से बाध कर। श्री जे० कृष्णभूति ने बार-बार कहा है कि जो कुछ कहा गया है उसकी बिना सोच-समझ स्वीकार कर सने से हमारी रचनात्मक क्षतियाँ दृष्टि हो जाती हैं। हम अपने भासपास कल्पित आदर्शों के मजबूत विश्व शक्त कर सते हैं और फिर दम-दमकर

जोत है। इनके मर्यादाओं के पालन में जीवन की सहज गति घुस हो जाती है। घोर एम घातों का आरापण करने वाले नराला साग अपने आचरण से इतनी घातों की विद्वम्बना करते रहते हैं। यह सब देखकर आज का कवि आर्णवित हो गया है। यह दूसरा के सोखल उद्गारों का अनुसरण करना नहीं चाहता। जिस बात की उसे प्रतीति नहीं है उसके पीछे यह क्यों मारा मारा फिर? मनुष्य को अब एस आसनस्थ पयप्रदशक की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है स्वतंत्र व्यक्तित्व वाले मनुष्या की जो अपनी बात को स्वयं समझने की कोशिश करे। दूसरों के दिए हुए उत्तरों को अपने प्रश्नों का हम समझकर स्वीकार कर लेना मनुष्य प्रवृत्ति नहीं है। पुराने आस्थाए टूट गई हैं और नई आस्थाएं जगती नहीं हैं। इसलिए आज का कवि सदिग्धता का अनुभव कर रहा है।

चेतना का गीत गान में कवि गौरव नहीं मानते। वेदना को विषयता समझते हैं। अतः वे अंतरात्मा की ओर ताकते हैं। स्वयं या बिना की प्रवृत्तियों पर कविता लिखते हैं। इस कदम में कविता प्रभावित नहीं होती। मन की गहरी और सूक्ष्म हलचल के प्रकटन में इनकी रुचि है और इसके लिए वे उपेक्षित पदार्थों को प्रतीक बनाते हैं। भद्र और कुत्सित का शिष्य और दुरित का मुत्तर और अनुत्तर का भेद उनकी दृष्टि में नहीं है। क्योंकि वे दृष्टि के होने में ही विश्वास नहीं करते। चेतना के सबसे मृदुगम्य भागों को अभिव्यक्ति मिल रही है। इस अन्दाज में कवि अपने लक्ष्य में लोगों को व्यक्त करते हैं। अभिव्यक्ति का मूल विरोध करते हैं। किन्तु स्वयं अनेक बातें निराकरण करने में सार्थकता का अनुभव करते हैं। इन कवियों में कभी-कभी सगता है कि 'नीलो का स्थान' 'फदान' 'न ले लिया है' और 'अधिकार' में नये उन्मेष को अगह प्रयोगदास्य ही लक्षित होता है।

इस तरह अछादस रचना के विषय में अभी यहाँ सदिग्ध स्थिति बनी हुई है। तीन-चार साल में ही इस विधा में (जो नेतिवाचक वर्ग से ही) पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। इन वरसाही कवियों में कुछ शक्तिवादी भी हैं। उनका उद्देश्य भविष्य में यह है कि वे स्वयं ही दृष्टि तथा अनुमान को स्वीकार करें। परन्तु कठिनाई यह है कि कुछ तो मुक्त छंद को छन्दमुक्ति समझकर दौड़ भाग है। वे नहीं जानते कि छंद के मोटे नियमों की अपेक्षा धारक सत्य को हासिल करना मुश्किल है। अर्थात् नैतिक अतर्क्यता का भी अभाव देखकर लगता है कि ये कवि कविकर्म के प्रति गंभीर नहीं हैं। अतर्क्यता प्रतीक का बेर खड़ा कर देने से कविता सिद्ध नहीं होती। कविता कान का विषय है इसलिए अर्थ ग्रहण करने से पूर्व हम शब्दों को ध्यान से स्पर्श करती हैं। अर्थ के सवाहक के रूप में नाए सौन्दर्य को उपासना कवि के लिए आवश्यक है। दो शब्दों के बीच संवाद जगाने के लिए सत्य अनिवार्य है।



सय का यह साम थी गुरेन जोनी धीर थी गुसाम मोहम्मद दोस ने उठाया है ।  
 उस की तरसना यदि हमारे निजो जीवन में नहीं है तो छँ' से कहाँ से आएगी ?  
 स्थल की अवस्थल स्थिति का अंकन थी सुरेस जानी कुछ रचनाओं में कर सके हैं ।  
 इन दोना कवियों की कृतियों में कसा का अनुशासन प्रवर्तित है । अंधकार भन हूँ  
 तथा 'जमनमेरमा खडियर' नामक कविताओं में थी दोस ने बागीकी का पकड़कर  
 भूर्त्त करने का तथा छवि रग का परस्पर मेलमेल करने का धमता दिखाई  
 है । दूसरा रचना में इतिहास को मजबूत किया है ।

यही हम थी सुरेस ओगी की रचना देखें जिसमें एकांत का विभिन्न प्रकार देने  
 वाले उपमान देकर हृदयमान बनाया गया है । सूक्ष्म पदार्थों का परिपाक सहा  
 करके एकान्त को स्पर्श-क्षम बनाया गया है । एकान्त में विभिन्न प्रय-छायाएँ  
 भरने का कवि का कुशल संविमान देखिये

मैं तुझे देता हूँ एकान्त ।  
 हाथ की मोड़ के बीच एकाप सनहा भाँसू,  
 शब्द के कालाहल के बीच एकाप बिन्दु मोन  
 अगर तुझे हिपाजत करनी है तो  
 यह है मेरा एकान्त ।  
 विरह जैसा विद्याभ  
 अंधकार जैसा धन  
 पैरो उपेक्षा जैसा गहरा ।  
 जिसका गवाह नहीं सूरज  
 नहीं चाँद ।

ऐसा निहायत एकान्त ।

ना भटकना मत ।  
 नहीं छू गई उसे मेरी छाया  
 नहीं छिपाया उसमें मैंने अपना धूम्य  
 यह एकान्त जितना मेरा  
 उतना ही दो दरस्ती का  
 उतना ही सागर का,

ईश्वर का ।

यह एकान्त

नहीं है हमारे धून्य की रमणभूमि

नहीं है हमारे विरह की विहारभूमि

निपट एकान्त

में तुम्हें देता हूँ एकान्त ।

रचना के उत्तरार्ध में श्री सुरेश जोशी ने इनकार का विधेयात्मक उपयोग किया है और इस तरह एकान्त की रिक्तता का उभारा है । एकान्त में दूसरा व्यक्ति उपस्थित नहीं होता यहाँ दूसरा उपस्थित है बल्कि कवि उसे सम्बोधन कर रहा है । सम्बोधन पद्धति का कुशल प्रयोग कवि कर पाये हैं । इन सब विरोधों की सहायता से एकान्त को अंकित किया है । परिणामस्वरूप सम्बोधन करने वाला पात्र भी निर्मोही सवेगधूय उदासीन नजर आता है । श्री सुरेश जोशी और दोष के अतिरिक्त श्री सिताशु यशस्वन् और लामछंकर ठाकुर भी आगास्पद हैं । श्री प्रासन्नेय राधेयाम धर्मा और श्रीकांत शाह की रचनाएँ सप्रहीत हुई हैं । आदिस मसूरी मनहरमोशी प्रबोधपरीक्ष सुभाष शाह भरत ठाकुर मणिमाल देसाई ज्योतिष जानी आदि अनेक उत्साही नवयुवक इस क्षण में उद्यम कर रहे हैं ।

(रघुवीर चौधरी)

...

## आधुनिक पंजाबी कविता की प्रवृत्तियाँ

● पंजाबी कविता में आधुनिक चेतना अथवा जागृति का प्रवेश उत्तरीसवी शताब्दी के अन्तिम दशक के लगभग हुआ । इसके पूर्व पंजाबी कविता में शृंगार बखण की ही प्रधानता थी । यह शृंगार कही तो आध्यात्मिक रूप ग्रहण कर लेता था कहीं सामाजिक धरातल पर उतर कर विभुद्ध धारीनी रूप में अभिव्यक्ति का मार्ग खोज लेता था । यह स्थिति ग्यारहवीं शताब्दी ( बाबा फरीद ) से लेकर इसी सदी के पूर्वार्ध या उसके बाद तक रही । पंजाबी में इसको 'रयायती पर

परम्परागत कविता धारा का नाम दिया गया है। किन्तु यह परम्परा हिन्दी की भाँति रीति-रिवाज पर आधारित नहीं था बरन् माधव छन्द और व्यञ्जन रीति तक ही सीमित थी। ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं तक का कालावधि में जितना साहित्य रचा गया उसमें कला की दृष्टि से आध्यात्मिक कविता का ही मुख्य भाग बँटता है।

बासबो शताब्दी में पूर्व पंजाबी में लिखने वाले दो प्रकार के व्यक्ति थे। एक मत प्रथम प्रकार जो जनजायन से सम्बंधित थे। दूसरे में व्यक्ति का विशेषकर सामाजिक या धार्मिक जनता के लिए लिखत थे। कुछ आध्यात्मिकता से भी दूर होकर प्रेम सभी धनपद व्यक्ति थे। सन् १६०० तक पंजाब का पठान लिखा व्यक्ति पंजाबी का गंवार भाषा समझता था। इसलिए पंजाबी साहित्यकार इस समय तक कुछ भाषा में ही साहित्य-साधना करते रहे। उन्नीसवीं तक ही नहीं बल्कि कुछ दिन पूर्व तक पंजाबी का साहित्यकार अपनी मातृभाषा को छोड़कर उर्दू की धारणा लेते रहे हैं। उर्दू साहित्य में अधिक योगदान पंजाबियों का रहा है।

भाई चोरसिंह ने सर्वप्रथम लिखित कहे जाने वाले पंजाबिया के हृदय में पंजाबी भाषा के प्रति श्रद्धा का बीज बोया। पंजाबी को साहित्य में प्रतिष्ठा देने के साथ भाई चोरसिंह ने पंजाबी कविता को नया माह दिया जिसमें हम उन्हें आधुनिक युग का जन्मदाता मानते हैं। उन्होंने कविता को स्वायत्ती अर्थात् परम्परा के सीमित पर से निवास कर आधुनिकता का रूप दिया। यद्यपि उनका भावजगत प्रधानतः शान्ति प्रधान शृंगार ही रहा किन्तु इससे साथ उन्होंने नैतिक उपदेशात्मकता तथा देश प्रेम का भी कलात्मक रूप में व्यक्त किया। भाई चोरसिंह तथा उनका समकालीन कविता में यही आधुनिक परम्परा व्यापक रूप में प्रस्तुति हुई। उन्होंने एक-मात्र भावजगत का ही नहीं चेतना नहीं ही बरन् कविता को युगबोध के साथ जोड़ कर सामाजिक धरातल पर खड़ा कर दिया। उन्होंने नई चेतना के साथ अपनी कविता आवात्मकता नवीन चिन्तन एवं नया छन्द प्रवर्धन भी किया जिसमें पंजाबी कविता मूलतः से निकल कर मूलभूत भाव व्यञ्जना तथा भाजित भावों का युगान्तर-कारण रूप धारण कर गई। भाई चोरसिंह यद्यपि स्वयं आध्यात्मिक परिधि में बाह्य नहीं निकल सके पर उन्होंने धीरे-धीरे के लिए मार्ग अवलम्बन प्रशस्त कर दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि धनोराम यात्रिक ने पंजाबी कविता में पंजाबी संस्कृति देन प्रम व्यापकता के साथ चित्रित किया। पंजाबी कविता का इस नई चेतना के पीछे पारम्पर्य सम्प्रदाय धर्मजी साहित्य तथा सांस्कृतिक राजनीतिक धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलन का गहरा हाथ है। पंजाब में उन दिनों राजनीतिक क्षेत्र में लाला लाजपत राय

नरनार भजीतसिंह आदि का दशमतिपूर्ण आन्दोलन चल रहा था धार्मिक क्षेत्र में सिंहसभा की अक्वली लहर अपने गिखर पर थी। कुछ छिटपुटो सामाजिक सहर्षे भारतीय जीवन या पंजाब के जनजीवन को प्रभावित कर रही थी जिनका प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव सांस्कृतिक पंजाब साहित्य पर पड़ा। इन्ही आन्दोलनों में बीच पंजाबी कविता में जो व्यक्ति सबसे अधिक उमर कर आया वह था प्रो० पूर्णसिंह। उनकी कविता फार्म की दृष्टि से पूर्ववर्ती तथा समसामयिक कवियों से भिन्न कोण लेकर आई। प्रो० पूर्णसिंह की मुक्तक कविता में एक मुक्त वातावरण था। धारम क बाल पंजाबी कविता में पंजाबी संस्कृति की सम्भवतः सब से अधिक तथा व्यापक अभिव्यक्ति हुई।

१९३० तक आते आते कविता में एक नयी धारा का जन्म हुआ जिसको रामाष्टिक धारा का नाम दिया गया है। इस समय के प्रमुख चार कवि हमारे सामने आये। मोहनसिंह बाबा बलवन्त भमता प्रीतम और सफीर। ये सब कवि मूलतः रोमाण्टिक तथा प्रेम के कवि हैं। बाबा बलवन्त भी किसी सीमा तक शृंगारिक कवि कहे जा सकते हैं। इनको प्रायः सभी पंजाबी आलोचक असफल प्रेम का कवि कहते हैं। वास्तव में ये कवि भोग्य आत्मा हैं (बाबा बलवन्त का छोड़कर)। मरी नजर में इनकी प्रेम प्रधान कविता कभी न तृप्त होने वाली वासना की अभिव्यक्ति है। मोहनसिंह की शृंगारिकता पर उद्गू की शृंगारिक भावना का इतना गहरा प्रभाव है कि उसके नीचे मोहनसिंह का अपना व्यक्ति दब सा गया है। इसीलिए मोहनसिंह का भाव जगत निज का न होकर उद्गू कविता का भाव जगत है। उनकी गजलों तो बहुधा उद्गू गजल की छाया मात्र या अनुवाद मात्र लगती हैं। अमृता प्रीतम का अध्ययन क्षेत्र सीमित होने के कारण उनकी कविता उद्गू तथा अन्य आपाओं के प्रभाव से बची रही और व्यक्तिगत अधिक हो गई। मौलिकता की दृष्टि से मैं इसको अमृता की सफलता ही मानता हूँ। इसी कारण उनका व्यक्तित्व किसी प्रभाव के नीचे दब नहीं सका किन्तु गहराई तथा व्यापकता का उनमें प्रभाव ही रहा। उद्गू प्रभाव के कारण जहाँ मोहन अपनी कोई एक शैली निर्धारित नहीं कर सके वहाँ भमता प्रीतम सफल रूप में अपनी शैली को एक सीमा तक अव्यय ल गई। प्रीतमसिंह सफीर की कविता एक आध्यात्मिक शृंगार की कविता है। जीवन में यद्यपि वह भौतिक प्रेम से पीड़ित रहे किन्तु उन्होंने इस इन्द्रिय प्रेम को अतीन्द्रिय रूप दे दिया। वह इसको धसीट कर आध्यात्मिक क्षेत्र में ले गये जिससे वह रहस्यवादी कहलाये। बाबा बलवन्त की स्थिति इन तीनों कवियों से भिन्न रही। उनका काव्य जगत शृंगार तक ही सीमित नहीं रहा। यह धारम में ही अनेक सामाजिक पक्षों को एक साथ लेकर धले।

नये-पुराने कवि भी नयी कविता में दिग्भ्रम उत्पन्न कर रहे हैं। इनका सब कुछ हाने के उपरान्त भी कुछ नये कवि नयी कविता के भूम तत्व को परख कर इसके निर्माण में लग हैं।

नयी पंजाबी कविता में एक और उपयोगी बात घटित हुई है जिसका मैं पंजाबी कविता के लिए सौभाग्य की बात ही मानता हूँ। यह है पंजाबी नयी कविता पर मानवतावाद के नारे का बोझ न सामना। हिन्दी नयी कविता के कुछ आलोचना न नयी कविता की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए 'मानवतावाद' को उसके मूल खबरदस्ती बाध दिया है जैसे छायावाद के अन्तिम दिन) में छायावाद के साथ 'अर्वा-मवाद' का जोड़ दिया गया था। कविता बाद के सहारे नहीं जोती न कियों बाद से उसकी कीमत बढ़ती है। कविता की उष्णता या थप्लता तो उसके आंतरिक कथ्य में है वही कविता का मय है। पंजाबी की नयी कविता यदि पूर्ववत् इसी दिशा में धाग बढ़ती रही तो वह अपने वर्तमान में ही साहित्य की स्थायी निधि बन जायगी। यह उत्तरदायित्व पंजाबी की नयी कविता के प्रभु कवियों पर है। पंजाबी का आलोचक तो अभी प्रयोग में पँसा हुआ है।

पंजाबी की नयी कविता में सबसे प्रमुख स्वर व्यक्ति-व्यक्ति के लिए' का है। पंजाबी की रोमांटिक काव्यधारा भी भूमत व्यक्तिवादी ही रही है। किन्तु इसकी व्यक्तिवादिता में तथा नयी कविता के व्यक्ति-व्यक्ति के व्यक्ति-व्यक्ति के लिए' का है। पंजाबी की रोमांटिक कवियों की व्यक्तिवादिता वगैरह अधिक थी किन्तु नयी कविता का व्यक्ति-व्यक्ति के लिए' का है। पंजाबी की रोमांटिक कविता का स्वर है 'सबका व्यक्ति है'। इसी कारण 'अमृता प्रीतम' की पीढ़ा में तात्कालिक नारी वर्ग की पीढ़ा का स्वर है और नये कवियों में उनके अपने अपने व्यक्ति की अनुगूँज। इस अन्तर के कारण दोनों धाराओं की अभिव्यक्ति-पद्धति में भी वषम्य है। रोमांटिक धारा की अभिव्यक्ति में समानता है नयी कविता की अभिव्यक्ति में परस्पर भिन्नता या प्रयुक्तता है। इनमें से कविता के लिए बौनसी उपयोगी है मैं यहाँ इसके बारे में कुछ न कह कर यही कहूँगा कि समान अभिव्यक्ति पद्धति में कवि का व्यक्ति तथा व्यक्तित्व पूर्णतः व्यक्त नहीं हो पाता और व्यक्ति-व्यक्ति पद्धति में व्यक्ति तथा व्यक्तित्व के विकास के लिए पूर्ण अवकाश रहता है।

नयी कविता में दूसरा स्वर असंतोष का है। यह असंतोष व्यक्तिगत अपूर्णताओं विफलताओं के कारण उत्पन्न हुआ है जिसके कारण नयी कविता में एकांतिक कटुता अधिक व्यक्त हुई है। स्वर्ण तथा सुखवीर में इस भावना का स्पष्ट रूप दिखाई देता है। जगतार में तो एकांतिक कटुता सबसे अधिक तीव्र है। इन

सब की एकात्मिक कटुता विभिन्न मन स्थितियों के रूप में अभिव्यक्त हुई है।

प्रसन्नोप के साथ कटुता काम तथा मैत्र-सम्बन्धों में विघटित हानि वाली मन स्थिति के अनेक रूप भी मिलते हैं। चैनन उपचैनन के द्वन्द्व की सहज और विचित्र प्रियाएँ मोहनजीत में अधिक हैं।

पंजाबी नयी कविता में व्यंग्य का प्रभाव है। यू कहना चाहिए कि दो एक कवियों को छोड़कर व्यंग्य है ही नहीं। जिनमें है (जस गुम्बरण रामपुरी) वे रामायणिक काव्यपारा से यह कर भाय हैं। मैं इसकी नयी पंजाबी कविता के सौमन्य की बात मानता हूँ। क्योंकि व्यंग्य से कविता में सीम्पलता ही आती है पर कविता के प्रभाव को गहराई कम हो जाता है। सहज तथा मूकम व्यंग्य को कविता का विराधी न मानकर पूरक ही मानना है।

जैसा कि मैं ऊपर लिख आया हूँ प्रत्येक कवि में व्यक्ति-व्यंग्य है। इसी कारण इनकी कविता की भाविति एक दूसरे से भिन्न है।

मुल्लबोर की कविता नवीन तथा दैनिक जीवन के रूपाभास की कहीं प्रस्पष्ट जटिल तथा कहीं वास्तविक अभिव्यक्ति है। इधर कुछ कविताएँ प्रस्पष्टवादी शक्ति की आधार बना कर लिखी हैं। उसकी कविता का ध्येय मुक्तक है छन्द की लय में भाव सहिति न्यून है।

तारासिंह में सांकेतिक अर्थ-व्यंजना है। वह जीवन के घुलित जीवन-स्तरों की प्रपेक्षा जीवन की सहज तथा स्वाभाविक व्यंजना के पक्ष में है। उन्होंने अपनी कविता में नवीन प्रतीका तथा बिम्बा का संयोजन है। व्यक्त भाव तथा भाषा की मानुरूपता उनकी कविता का विशेष गुण है।

स्वर्ण भट्टमास के कवि हैं। उनकी कविता क्षण में जीती है। क्योंकि उसमें मूह-संज्ञा की भरमार है। जीवन की व्यापकता न सहा अर्धजोय एकान्तिक कटुता अजनबीपन कुछ भाषा अवश्य उनकी कविता के मूल स्वर हैं। वस्तुतः यही उनके अपने जीवन का क्रम है। यही उनकी अपना विशेषता लिये लिखाई देती है। या शिल्पगन् आनुर्य उनकी कविताओं में विद्यमान है।

जगतार का कविता में फस्ट्रेशन कटुता तथा पीड़ा का आधिक्य है। इसका सामाजिक घरातल भी है और इसमें मुक्ति पाकर नव्य समाज की स्थापना का प्रयत्न भी है। यह घोर निराशा में भाषा का अचल आड रहत है। जगतार का आगावाद (को माकसवाद की देन है) बरखा उनकी कविता पर घोर प्रतीत होता है।

भीमा की कविता में धार है। उनकी कविता भावुकता से मुक्त है। वेस कविता की लय गद्यात्मक है भाषा का स्वर भी। उसमें नव प्रतीका का संयोजन अवश्य पाया जाता है।

वृष्ण प्रशान्त नयी कविता में दार्शनिकता का प्रणयन करने में सफल हैं। उन्होंने राज के जीवन की विषमताओं को समीप से देखकर तटस्थ दृष्टा का रूप में उनका चित्रण किया है। आधुनिक काव्य के विभिन्न रूपों का सशक्त चित्रण उनकी कई कविताओं में दिखाई देता है। दूसरी ओर सतिशुमार ने परम्परा से हटकर यन्त्रयुग से विगलित व्यक्ति के स्वानुभूत चित्र खींचे हैं। एक पूर्ण क्षण में जिये अपूर्ण जीवन की सांकेतिक अभिव्यक्ति उनकी अधिकांश कविताओं का वैशिष्ट्य है। नैतिक सम्बन्धों के प्रति प्रखण्ड घनास्था औपचारिकता की अव्यवस्थितता पर बहू, परन्तु सूक्ष्म व्यंग्य द्वारा सतिशुमार ने अपनी कविताओं में इधर जीवन के नये घरातला को छुपा है। व्यक्ति-मह के हाथ जीवन-सत्य की स्वीकृति निश्चय है। पञ्जाबी नयी कविता की एक नयी दिशा का संकेत है।

( शांतिदेव )

\*\*\*

## भारतीय अंग्रेजी कविता एक अनुलेख

भारतीय अंग्रेजी कविता को १९४७ से अब तक का सधु समय प्रयोग और विस्तार के लिए मिला है। इस काल में विकास का यह अवधि बड़ी महत्वपूर्ण है जिसमें कविता ने एक नयी वास्तविकता की खोज की है। यह बात किसी आधुनिक आलोचना-ग्रन्थ से उद्धृत प्रतीत हो सकती है किन्तु कोई भी कह सकता है कि ऐसा है नहीं। यह विकास एक सधु परम्परा को बनाये रखने के सधम में काफी महत्वपूर्ण है, यद्यपि राधाकृष्णन ने सरोजिनी नायडू तादृश और श्री अरविन्द की अंग्रेजी के सर्वत्र न मान कर 'बारीगर' माना है। इनकी दौरी पर किसी को आपत्ति नहीं है। आपत्ति है तो उस अवस्था के अभाव पर जिसने कारण तादृश गुलाबा को जगाने वाले क्षण कथा तुम्हें नहीं जगायेंगे जैसे बटकीले भावुक गीत मिसली जाती हैं सरोजिनी नायडू जान-बूझ कर मनोहर भारतीय विम्बों का प्रयोग करती हैं और अरविन्द सर्वत्र पठतावादी हिन्दू आध्यात्म से नाता जोड़ते हैं ( उनके अनुयायियों का दावा है कि अरविन्द ने आत्मवाद का प्रयोग कर उसे गहरी काव्योचित प्रतीक-मार्मकता में ढाल दिया है। )

१९४७ के बाद किसी कवि ने यह बात नहीं मिसली। यह एक महत्वपूर्ण आभास है क्योंकि यस्तु और दौरी की दृष्टि से ये कवि एक विशिष्ट मार्ग के

हैं। यह कहना न साफ ही कड़ आपत्तियों उठ खड़ा होती हैं कि ये कवि स्वतन्त्रता यन्त्रास बम्बई और सिन्धु के सहरो कवि हैं कि इनका जात्र-चतना में एक दिष्टता प्रत्यक्षता का प्रसार और वृत्तिमत्ता है जो इन्हें जनसमुदाय से दूर न जानी है कि उनके विचार और प्रतिस्पर्धा स्कूल-कालों में पनी हुई *Ode to Nightingale* जसा कविगाथा स आश्रित होता है, कि वे उस भाषा में लिखते हैं जिनके विष्ट स्पानीय भाषाओं के क्षेत्र में बहूनी से भरे हैं कि उनके काइ साम्प्रतिक पाठ्य भा नहीं हैं अतः अमेरिका और अमेरिकन कवियों का रूपमा और भाषाओं का रूपन प्रथमा उन्हें मिलनी है, कि वे आध्यात्मिक हैं जैन निराशा में टीं वरीं मना-साष्ट ।

ये सब नक भाष्य हाकर भी विवादग्रस्त हैं। नत जोलह वर्षों में ऐसा भी बहुत कुछ हुआ है जो एक आगाध स्थिति का प्रमाण है। डा० आनिवास अर्जुनर न १८८३ में भारतीय अग्रजी साहित्य पर प्रकाशित पा० ३० एन० पुस्तिका में लिखा का 'मरा विचार है कि हम पूरा क विस भ हैं जहाँ मून व्यक्तिता का अस्तिता भा गप नहीं हैं। हमारे पास न कोई निम्निका है, न कोई निम्न-मूषि न काइ विवचनाय निचय-पुस्तिका है और न काइ भारतीय अग्रजी साहित्य का विमृत कवैमर। १९४३ का इस पुस्तिका में कवल ७० पृष्ठ थे। १९६२ में एशिया पसिफिक हाउस ने डा० अर्जुनर को एक ६०० पृष्ठों की पुस्तक *Indian writing in English* प्रकाशित की जिसमें स्वातन्त्र्यात्तर कविता के ही ३० पृष्ठ हैं। अग्रजी में लिखन बाल भारतीय कविता का सर्वोच्च व्यक्तिकरण अस्मिता रूप से विकसित और भारतीय परम्परा में समन्वित होती कविता का प्रत्यक्ष प्रमाण है अग्रजी का व्यवहार अधिकधिक हो रहा है जब वह भी भारतीय भाषाओं में से एक है। और प्रभावशाली साहित्यिक क्षेत्रों की बूढ़ रचना के बावजूद यह तथ्य सा० भार० रेडडा के हस्तों में भारतीय अग्रजी साहित्य भारतीय साहित्य से अलग नहीं है। विमृत रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

भारतीय अग्रजी कवि को टाक-ठीक समझने के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारत का सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ कभी भी शुष्क या अमरिका जैसी नही रहें। भारतीय सन्धिति एक 'गहराई' लिये हुए है जिस पर नहूँ 'पुनर्लिखित पाठुलिपि' कहते हैं और भारतीय साहित्य विविध रंगों का सामग्रस्य है। इन रंगों में अग्रजी का हल्का-सा रंग पहले ऐतिहासिक रूप से और अब आधुनिक रूप से एक अन्तर्राष्ट्रीयता और अमिजात्य वग का प्रतिनिधित्व करता है। बायेंलाम्बू का वदनामय अन्त परावर्तन साहा के सादे सामाजिक व्यंग्य इजकिन् को नती इमानगरी भारिस को रुमानो वेदना



राघवेन्द्र राव क संयमित रंग और छन्दनाई मेरी एस्तवर की उपचेतन की परिक्ल्पनाओं को छोड़ो। त्रिवेणी का पुरोटिक प्रतीकवाद, प्रदीप सेन के तीमे और निष्कपट ईसाई मूल्या केवलियन मियो की पीड़ा छिपाय हुए मरसता ये सब परिपक्व प्रतिप्रियाभा क लगना हैं। ये सायन नगर संस्कृति की प्रतिप्रियाएँ हैं किन्तु सत्य होने क कारण कचाटन वाली हैं। 'श्वेस्ट मे आधुनिक भारतीय अग्रजी कविता की समीक्षा करत हुए डविड मैकगुस्विन ने लिखा था 'अष्ट सताब्दी क कवि तरण अवेपी और वैयक्तिज हैं। अग्रजी उनकी अभिव्याक्त का स्वाभाविक माध्यम है—कोई विन्नेगी भाषा नहीं अपितु वह भाषा जिसमें उनकी सज्जता अत्यंत संनोपशद आकार ग्रहण करती है वह भाषा जिसमे वे प्यार करते हैं जैसा थो सास का कहना है। भाग उहान मित्रा है भारतीयों द्वारा अंग्रेजी में लिखी गयी कविताएँ इस बात का ठाम प्रमाण देती है कि ये परिपक्वता तक पहुँच रहा है।

( पी० सास )

●●●

## आधुनिक मलयालम कविता

अनुकरण युग क आचार्य राजा करस वर्मा क समय से सबर धुड आत्मा को अभिव्यक्ति क आधुनिक युग तक की मलयालम काव्य धारा की विस्तृत चर्चा करना यहाँ प्रतिवार्य मानूम नहीं होता। आधुनिक युग के काव्यकारा पर गत काव्य प्रवृत्तिया का पूरा-पूरा प्रभाव पडा है यह ठोक है। स्वर्गीय महाकवि श्री कुमाग्न आशान उत्तर और बल्लसोल आधुनिक मलयालम काव्य जगत के सर्वाधिक प्रभावशाली कवि रहे हैं। इनके समय मुख्य रचनाएँ खण्ड-काव्य की कानि में आती हैं। कामल और उच्च सकल्प दार्शनिक विचार स्वस्थ सर्गात्मकता ये सब उनकी रचनाओं में दर्शनीय विंगण गुण हैं। मगर इसी समय के अंतिम चरण में था चडपुया कृष्ण पिल्ली की धूम भी। आप इतना मधुर एवम् भावपूर्ण रचनाओं में मलयालम पाठकों को हठात् आकर्षित कर सक। आप गान-नाचक कहलान लगे और सर्व साधारण के प्यारे कवि बन। आपका निधन १९४८ ( स३ ) में हुआ। पर आज तक उनकी अमिट छाप मलयालम काव्य धारा में परिलक्षित है। उपयुक्त कवियों की रचनाओं द्वारा सामाजिक राष्ट्रीय धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में ठाम स्पन्दन शुरू सका और नपसि परिवर्तन आ सका।

सन् १९५० से लेकर मलयालम काय-कारों में श्री जी० गंकर कुरूप का नाम सब से ऊपर मुद्रित रहा। आज भी यही हास है। श्री जी० गंकर कुरूप की रचनाएँ पाठकों के अन्तर्मन को सचेत करके उस सद्भावनाभा के ताजमहल में प्रविष्ट करा गयी हैं। आपकी काव्य-सरिता रहस्यवान् छायावाद समन्वयवादी ध्वनतावाद मानवतावाद आदि काव्यापेक्ष भावों का अनुसरण प्रतिफलण कर चुकी है। और जहाँ से होकर वही पूरे विश्वास के साथ और सत्य पर स्थिर दृष्टि रखते हुए।

श्री वेण्णिगुलम गोपाल कुरूप मलयालम गीति-काव्य युग के अद्भुत प्रथम कवि हैं। आपकी कविताओं में ताल-लय का सुन्दर सामञ्जस्य दर्शनीय है। प्राधुनिक मलयालम कविता में आपका अद्वैत स्थान है।

श्री पाला नारायणन नायर की रचनाओं में दर्शनीय केरलीयता का भाव प्रायः कवियों के समस्त धर्मात्मक अस्तित्व का माना जा सकता है। आप करल की सीमा मल्लिका की अपनी कविता के सहारे व्यापक बनाने का प्रयत्न परिश्रम करते हैं। श्री वल्लोपिल्ली श्रीधर मनोन का अपना धर्म काव्य-पथ है। वैज्ञानिक दर्शन की नींव पर सुन्दर कलात्मक अभिव्यक्ति करने में आप विजय पा गये हैं। आपकी अधिकतर रचनाएँ संवेदनशील अनुभूतियों की उपज हैं। अदम्य काव्यात्मक प्रेरणा स्वतन्त्र चिन्तन सधी परल आदि आपकी कविताओं की विशेषताएँ हैं। जहाँ वल्लोपिल्ली मानवता के वायुमन में बढ़ कर समूह जगत का भ्रमण करता है वहाँ श्रीमती शालामणि अम्मा मातृत्व के काव्य विन्दु में सारे जगत को केन्द्रित कर देती है। सारे स्पन्दना का एकमात्र केन्द्र उस कवियित्री के लिए मान मातृत्व है। आपकी कविताओं में दुःखता की गुंजाइश अधिक मात्रा में मिलती है।

श्री पी० कुञ्जिरामन नायर की कविताओं में आध्यात्मिकता की अधिकता है। उनकी कल्पना जैसी ऊँची उड़ान आपन दुर्लभ है। फिर भी रचनाएँ अतीव आकर्षक और मधुर हैं।

काव्यक्षेत्र में किसी प्रकार के बाह्य एवं आन्तरिक परिवर्तन न मानने वाले कवि हैं श्री के० बी० राजा। यहाँ पुरानी छंदोमद्धता और यही पुरानी चिन्तन प्रणाली। मलयालम काव्य जगत में आपका यह धक्का रहता निराशा भावपूर्ण होता है। श्री० श्री० एन० बी० कुरूप और श्री वयसार रामवर्मा की रचनाएँ नवीन कविताएँ गेय तथा विप्लवपरक हैं। आज इन दोनों युवा-कवियों में भाव जगत का पर्याप्त अंतर आ गया है। इनका मृजल शक्ति भी अतिरिक्त है। श्रीमती मुगतकुमारी

ऐसा कवियित्री हैं जिन्होंने ध्यान लिए पृथक् रामना बूढ़ निकाला है। उनकी कविनामा में थोड़ा तथा ध्वजा का सागर उमड़ पड़ा है। फिर भी उनमें गति है जो जीवन की मसकत ला जाती है।

मलयालम काव्य-अगत में अमर भारतीय काव्य में दिखाई पड़ने वाली प्रमुख सारी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। भाव-बल और कलापक्ष से सम्बन्धित परिवर्तनगत मधोम काव्य-रूप भी पाये जाते हैं। टी० एस० इलियट की अव्यवस्थित तथा टूटी हुई कल्पना से मुक्त काव्य रीति भी मलयालम में स्थान पा रही है। इस दिशा में ए० ए० वी कृष्णवारियर श्री एन एन० कक्काड श्री अश्वत्थ पणिक्कर आदि कवियों का परीक्षण चल रहा है। श्री कृष्णन नायर चरियान क चरियान जी कुमारपिल्लै, पी० आम्बरुन आदि असह्य कवि मलयालम काव्य भारत की बराबर सेवा कर रहे हैं। जीवन के विविध पहलुओं का संकेत निर्देशन करते हुए मलयालम काव्य धारा नय-नय भावों और नय नय बाह्य रूपों और आभ्यासों को अपनाते की चेष्टा कर रही है।

( एन० चन्द्रशेखरन नायर )

●●●

## आधुनिक तमिल कविता

●

तमिल-काव्य की एक सुनीध परम्परा रही है। तमिल में काव्य साधना बहुत ही प्राचीन काल से प्रारम्भ हुई थी। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में चले गये महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ अब भी उपलब्ध हैं। काव्य गुरु की दृष्टि से ये काव्य बहुत ही उच्चवर्गीय हैं। तमिल की यह काव्य धारा अबाध गति से प्रवहमान रही। विभिन्न युगों में काव्य के वर्ण विषयों में भी परिवर्तन होता रहा है। सामाजिक राजनैतिक सामाजिक धार्मिक परिस्थितियों के अनुकूल काव्य की वर्ण वस्तु भी बदलती रहती है। सधकाश ( ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों ) की तमिल कविता में प्रकृति प्रेम और मोरता काव्य की वर्ण वस्तु रहा। उसके बाद की शताब्दियों का तमिल-काव्य भक्ति भावना से प्रेरित है। तमिल की यह भक्ति-काव्य धारा कई शताब्दियों तक प्रवहमान रही। स्वतन्त्र तमिल का अधिकांश काव्य भक्ति-रस सिन्धु हो गया जिस में आधुनिक तमिल कविता कह सकते हैं उसका धार्मिक उन्नासर्वाँ गति के उत्तराद में ही मानना उचित है। तमिल-काव्य के क्षेत्र में आधुनिक युग के प्रधान प्रवर्तक

यो सुदृष्टव्य भारती ये । भारती ने तमिल के काव्य क्षेत्र में ही नहीं बल्कि साहित्य के अन्य अंगों के क्षेत्रों में भी नवीन युग का आरम्भ किया । भारती के आगमन के पश्चात् ही आधुनिक तमिल कविता को दिग्ग निश्चित हुई । भारती की काव्य-भाषना महान् यो । यही कारण है कि आधुनिक तमिल कविता का प्रारम्भिक काल 'भारती-युग' के नाम से प्रसिद्ध हुआ है । कविता के क्षेत्र में उन्होंने क्रांति मचायी थी वह युग जन-जागरण का प्रारम्भिक काल था । भारती ने कविता की परम्परागत शैली को त्याग कर नये नये छन्दा में जन प्रिय भाषा में नये नये भावा एवं कल्पनाओं से भरी गयी कविताएँ रची । भारती-युगीन काव्य में भाव भाषा और छन्द सभी में प्राचीनता का पण्डितार और नवीनता का समावेश हुआ । भारती के पश्चात् तो अनेक कवि हुए हैं जिन्होंने भारती की कविता से प्रेरणा पायी है । आज तो तमिल कविता कानन में अनेक सुकुमार फूल खिले हैं । भारती के समय से आधुनिक तमिल कविता की उत्तरात्तर प्रगति हुई और काव्य के क्षेत्र में बहुमुखी प्रवृत्तियों का द्यन हुए ।

जिस तरह आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में विषय की दृष्टि में विविधता और विभिन्न प्रवृत्तियों का दर्शन होते हैं ठीक उसी तरह आधुनिक तमिल कविता की भी बहुमुखी प्रवृत्तियाँ रही हैं । आधुनिक हिन्दी कविता की जो प्रमुख प्रवृत्तियाँ रही हैं वही वरीय वगीय आधुनिक तमिल कविता की हैं । हिन्दी काव्य-क्षेत्र में विविध वादा का जन्म हुआ । छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद आदि विभिन्न वादा के मूल में जो तथ्य रहे हैं उन सब के द्यन आधुनिक तमिल-काव्य के क्षेत्र में भी होत हैं । किन्तु अन्तर इतना ही है कि तमिल कवि अपने को जान-बूझकर किसी विनिष्ट वाद के संकुचित क्षेत्र में बाँधना नहीं चाहता । साथ ही साथ यह बात भी दृष्टव्य है कि तमिल आलोचका ने भी विविध वादा के अन्तर्गत रखकर कविताओं का मूल्यांकन करने की पद्धति नहीं चलायी । परन्तु यह बात अवश्य है कि आधुनिक तमिल कविता के क्षेत्र में छायावाद, रहस्यवादी प्रगतिवाद, प्रयोगवाद प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं । तमिल कवि के विषय में यह कहना कठिन है कि अमुक कवि छायावादी है या प्रगतिवादी है । एक एक कवि की कविताओं में एक से अधिक वादा के द्यन होत हैं ।

यहाँ आधुनिक तमिल कविता की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों की चर्चा करेंगे । चूँकि आधुनिक तमिल कविता का जन्म भारती की कृतियों से माना जाता है अतः भारती की कविताओं की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालना आवश्यक है । भारती का अधिकार्य कविता राष्ट्रीय भावनाओं से भोजप्रोत है । उनकी कविताओं में देश प्रेम समाज-सुधार आदि विषयों का समावेश हुआ है । इस

काटि की कवित्तया की मूल भावना है देश भक्ति । आधुनिक तमिल कविता की यह एक प्रबल प्रवृत्ति रही है । इस काटि के कुछ कवियाँ न केवल तमिल भाषा और तमिल-संस्कृति का योगोपाय करने से ही संतोष कर लिया है किन्तु प्रचिकीर्ण कवियों का दृष्टिकोण व्यापक रहा है । राष्ट्रीय-संस्कृतिक कविता क रचयितायाँ न सबसे ऊँचा स्थान भारतो का ही है । राष्ट्रीय भावना की कविता के अन्तर्गत गांधी-दर्शन की भी अभिव्यक्ति हुई है । श्री रामनिगम पिल्लै की कविताओं में विंग्रह रूप से गांधी-दर्शन को बहुत सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है ।

हिन्दी की छायावादी कविताओं में साम्य रखनेवाली कविताएँ भी पर्याप्त मात्रा में तमिल में रची गई हैं और रची जाती हैं । परन्तु तमिल की इन कविताओं को 'छायावाद' की उपाधि नहीं मिली है । छायावादी कविताओं की सभी विशेषताएँ उन तमिल कविताओं में मिल जाती हैं । हिन्दी में छायावादी काव्य का जो सामान्य स्वरूप स्वीकृत हुआ है वही उन विगिह्रि करने का प्रयत्न किया है । छायावादी वास्तव में एक विनोद प्रकार की भाव-प्रवृत्ति है । जीवन के प्रति एक विंग्रह भावामय दृष्टिकोण है । इस दृष्टिकोण का भावेय नवजीवन के स्वप्ना और कृष्ण के सम्मिश्रण से बनी है । रूप विधान अन्तर्मुखी तथा वायवी है और अभिव्यक्ति है प्रकृति के प्रतीकों द्वारा । छायावाद में कवि विश्व के कल-कल में प्राना की छाया देखता है और उसमें व्यक्तित्वादी भावनाएँ प्रकट हो जाती हैं । उसमें विषय नहीं स्वयं कवि और उसका राग विराग प्रधान हो जाता है । छायावाद में कवि की रूपना या अनुभूति रहती है ।

जीवन की विषम परिस्थितियों से विपरीत उसे कल्पना-लोक में सुख मिलता है । अन्तर्गत स्वरूप प्रकृति के क्षेत्र में वह भुसकर कल्पना का सेम करता है और छाद का आवरण डालकर अपनी अभिव्यक्ति करता है । छायावादी कविता में कवि अपनी व्याधा-वेदना सुख-दुख भाँति को विश्व की व्याधा-वेदना सुख-दुख के रूप में रखकर सर्वव्यापक बनाता है । वह अपनी अनुभूति का प्रधान रखता है । छायावादी कवि प्रकृति का चेतन स्वरूप देखता है । वह प्रकृति का निर्जीव या कोरे 'हीन रूप' में नहीं मानता । उस पर कवि अपनी भावनाओं का आरोपण करता है । प्रकृति पर नारी भाव का आरोपण द्वारा या सारी के अतीन्द्रिय सौन्दर्य के प्रति अपने कोतूहलपूर्ण दृष्टिकोण द्वारा वह अपने अचेतन मन में हुई नृगार भावना प्रकट करता है । छायावाद की काटि में आनेवाली तमिल कविताओं के रचयिताओं का भी यह सामान्य रूप रहा है । इस काटि की कविताओं के रचयिताओं में अनेक तमिल कवियों के नाम मिल जा सकते हैं । मुख्य रूप से भारतो दासन', कम्प दासन', सोमु आदि कवि उल्लेखनीय हैं ।

आधुनिक काल की कुछ तमिल कविताओं में रहस्यवाद की भी झलक मिलती है। रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्निहित प्रवृत्ति का प्रकाशन है जिसमें वह दिव्य और प्रसौक्तिक शक्ति से अपना दान्त और निष्पन्न सम्बन्ध जोड़ना चाहता है। रहस्यवाद हृदय की वह अलौकिक अनुभूति है जिसके भाषावर्ण में जीवात्मा अपने समीप और पार्थिव अस्तित्व से असीम और सूक्ष्म महत् अस्तित्व के साथ तानाश्रम्य का अनुभव करने लगता है। इस रहस्यवादी प्रवृत्ति से युक्त कुछ तमिल कविताएँ भी आधुनिक काल में रची गयी हैं। योगी सुदानन्द भारती दैनिक विनायकम् पिस्तै आदि कवियों की अनेक कविताओं में रहस्यात्मक प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

प्रगतिवादी कविताएँ भी पर्याप्त मात्रा में आधुनिक काल में रची गयी हैं। तमिल में प्रगतिवादी के लिए 'मुपोंक्कु' शब्द प्रयुक्त होता है। 'मुपोंक्कु' शब्द का साधारण अर्थ है 'भाग बनना'। तमिल में प्रगतिवाद से सात्पर्य 'मुपोंक्कु' शब्द के साधारण अर्थ से ही है। हिन्दी में भी प्रारम्भ में प्रयोगशीलता का ही जोर रहा। फिर प्रगतिवाद ने साम्प्रदायिक रूप प्रकट करना प्रारम्भ किया और वह काव्य प्रगतिशील न रहकर प्रगतिवादी हो गया। प्रगतिवादी भनोवृत्ति के मूल में जो धारणा है वह जीवन में गतिशीलता ही है। यथार्थ में जीवन प्रगति ही का पर्यायवाची है। इसलिए उसे प्रत्यक्ष क्षण में आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन में जीना चाहिए और जो कुछ जीवन के सामने है वही सत्य है। अतः वस्तु-जगत् से भाँखें मेरी नहीं जा सकती। वस्तु जगत् में परे भ्रष्टात्मक अथवा परलोक आदि कुछ नहीं है। जीवन में साम्य होना चाहिए। जीवन में साम्य के लिए समाज में साम्य की आवश्यकता है। सापेक्ष दण्ड का घोर विरोध होना चाहिए। जीवन में हेय और अथवा पक्ष हैं श्रेय का पक्ष प्रबल करने के लिए हेय का चित्रण भी होना चाहिए। प्रगतिवाद की इन मूल प्रवृत्तियों का लेकर तमिल में अनेक कविताएँ रची गयी हैं और रची जा रही हैं। इस कोटि में तमिल के अनेक तरुण कवि आते हैं।

हिन्दी में 'प्रयोगवाद' के नाम से जिस प्रवृत्ति का जन्म हुआ करीब-करीब वही प्रवृत्ति आधुनिक काल के कुछ तमिल कवियों की रचनाओं में भी देखी जा सकती है। प्रयोगवादी कविता का मूल सत्त्व स्वभावतः ही काव्य विषयक प्रयोग अथवा अन्वेषण है। हिन्दी में प्रयोगवादी कविता के नाम से जिन कविताओं की रचना हुई है उनमें पुरानी और नई भावना की ही उलट-पुलट कर सजाने की प्रवृत्ति है। उनमें प्रगतिवाद का विकृत रूप चित्रित हुआ है। ऊल-जलूल भाव और बसिरपैर की शब्द-योजना मात्र है। लेकिन तमिल में 'प्रयोगवाद' केवल काव्य विषयक नवीन प्रयोगों के अर्थ में ही स्वीकृत हुआ है।

निरूप के क्षेत्र में नवीत प्रयोग करना ही तमिल की प्रयोगवादी कविता का सत्य दोषता है। अनेक सरग कवियों ने तमिल में इस प्रकार के प्रयोगों का परोक्षण किया है। एक अन्य प्रकार की कविता भी तमिल में रची गयी है और रची जा रही है जिसको हम 'वैयक्तिक कविता' कह सकते हैं। यह एक प्रकार से प्रतिघाय चारमपरक कविता है। इस कविता की अपनी अलग विनयता है। एक और जहाँ यह प्राचीन चारम निवेदनपूर्ण काव्य समिश्र है दूसरी ओर छायावाद की प्रकट प्रभावशालिन्कृतियों से भी अलग है। वैयक्तिक कविता का विषय आज के समाज की व्यक्तिगत समस्याएँ हैं। ये समस्याएँ मूलतः 'काम' और 'धर्म' के चारों ओर केन्द्रित हैं। काम-परक कविताओं में रसिकता और प्रेम के दर्शन होते हैं। इनके अभाव और अपूर्ति में निराशा और उग्रता की अभिव्यक्ति होती है। इस कविता का आधार मानव के भौतिक अस्तित्व की स्वीकृति है। अतः मानव के लौकिक सपर्ष की जय-पराजय से ही इसकी उत्पत्ति हुई है। जीवन के सहज सपर्ष से उद्भूत होने के कारण इस जीवन दर्शन का विकास अत्यन्त स्वाभाविक रीति से हुआ है। इसी कारण से इसमें एक स्वाभाविक आकर्षण भी है। साथ ही वैयक्तिक कविता या तो गीता में होकर पूरी है या मुक्तक रूप में। कुछ रचनाएँ ऐसी भी हैं जो छन्दों का ब्यवन मानकर नहीं चलती हैं।

प्राधुनिक तमिल कविता की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों की चर्चा करने के उपरान्त कुछ प्रमुख कवियों और उनकी मुख्य रचनाओं का परिचय देना आवश्यक हो जाता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है सुप्रसिद्ध भारतीय प्राधुनिक तमिल कविता की जन्मदाता है। भारती की अधिकांश कविताओं में राष्ट्रीय भावना ही मुखरित है। भारती की कविताओं ने जन मानस में राष्ट्रीय चिन्तन और राष्ट्रीय एकता की भावनाओं को अनायास ही जगा दिया है। उनकी कविताएँ प्राणवान् हैं। उन में भावनाओं की उमड़ती धारा है। देश की आकाशों के लिए कवि का हृदय तड़प उठा। कवि ने उस दिन का स्वप्न देखा था जब कि भारत माता के कराँसे वेदियाँ गिर पड़ेंगी और भारतवासी दासता के मोह से मुक्त होंगे। कवि की तीव्र आकांक्षा निम्न पंक्तियों में स्पष्टतः प्रकट हुई है

एट्ट तणियुम इन्द सुदन्तिर ताहम् ?

एट्ट मडियुम एंफल मडिव्यिनि मोहम् ?

एट्ट मतनी कै विलकुल पोहम् ?

एट्टिमतिन्नलकस सीन्नु पाट्याहम् ?

० ३६ वर्ष का आयु ग सन् १९२१ ई. में ही इस महान् कवि का स्वर्गवास हो गया।

(कब बुझगी हमारी यह स्वतन्त्रता की प्यास ? कब मिटेगा हमारा यह शासता-मोह ? कब गिर पड़ेंगे ये वेदियाँ माँ क करों से ? कब दूर हागी हमारी यातनाएँ ? )

भारत की भावात्मक एकता को चाहन वाल भारतीय की अन्तरात्मा से जो वाणी निकली है वह दृष्टव्य है

‘मुष्टु कोठि मुत्तमुठैयाल उयिर  
भोदम्पुर भोन्टुठैयाल—इवल  
अप्पुम मोप्पो पन्निट्टुठैयाल एनिर  
चित्तनी भोन्टुठैयाल’

( हमारी भारतमाता तीस करोड़ ( अब बालीस ) मुख वाली है । किन्तु उसकी जान तो है एक ही है । यह अद्भुत मापाएँ बोलती हैं । किन्तु उसका चिन्तन तो एक ही है । )

पाञ्चाली शपथम् । ( पाञ्चाली की शपथ ) नामक लघु-काव्य भारतीय की अमर रचना है । महाभारत के एक भाग का आधार पर रचित इस काव्य में भारतीय ने आरम्भ से अन्त तक सरल लोक-रन्दा का ही प्रयोग किया है । इसे काव्य-रूप में कहा जा सकता है क्योंकि श्लोकों के रूप में भारतीय ने देश की स्थिति का प्रतीक चित्र खींचा है और संकेत से यह बताया है कि जिस प्रकार पाञ्चाली की शपथ पूरी हुई उसी प्रकार भारत के भी अन्त शासता अथ विश्वास विभेकारी तत्व इत्यादि अन्त में मर जायेंगे और फिर एक बार उस के अन्धे दिन आयेंगे !

भारती प्रकृति प्रेमी थे । सूर्योदय सूर्यास्त वर्षा वसन्त आंधी कोयल मलय पवन नदी समुद्र आदि विभिन्न विषयों पर उनकी कविताएँ विश्व काव्य-मानन का अमर नुमन हैं । ‘कप्पण पाट्टु’ (कन्हा के गीत) में भारतीय ने प्राचीन तमिल काव्य-शैली को नया रूप दिया है । श्री कृष्ण को उन्होंने नायक नामिका सखा पिता शिष्ट शून्य स्वामी शिष्य गुरु आदि विभिन्न रूप में वर्णित किया है । कोयल का गीत ( कुयिल पाट्टु ) एक मौलिक स्वप्न-काव्य है । भारतीय ने इसमें एक सुन्दर प्रेम-कहानी का वर्णन किया है । सरस रहस्य रस एव शृंगार रस का अतिशयोक्ति यह काव्य बहुत ही रोचक है ।

आधुनिक काल के तमिल कविता में भारतीय के पञ्चाक्षर दक्षिण विनायकम् पिल्लै ‘भारती-शत्रु’ और रामनिगम पिल्लै ये तीनों ही अधिक प्रसिद्ध हुए हैं । दक्षिण विनायकम् की साकप्रियता का अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि वे कविमणि नाम से अधिक विख्यात हैं । कविमणि अचन्त सहस्र कवि



हैं। उनकी भाषा में जो मिठास है वह दूसरे कवियों की भाषा में नहीं। उनकी कविताएँ आप ही आप सुन्दरतम रूप धारण कर लेती हैं। ऊपर से सान्निध्यी कृत्रिम सुन्दरता उनकी कविताभा में भी नजर नहीं आती। भाषा में एक स्वाभाविक बहाव है। कविमणि ने गृहविन अर्नस्ट की लाइन 'आफ एंडिया तथा समर खीयाम की स्वाइपात' का तमिल में अत्यन्त सुन्दर पद्यानुवाद प्रस्तुत किया है। मोरा के गीतों के आधार पर उन्होंने प्रेम की जीत 'गोदक मधुर कवितावली' रखी है।

गिणु हृदय की बीजस भावनाओं का चित्रण करने में कविमणि सर्वोपरि हैं। उनकी अनेक कविताभा में गिणु के उद्गारों का सुन्दर चित्रण हुआ है। प्रथम शोक शोधक कविता में एक छोटे बालक के हृदय की व्याध का अत्यन्त मार्मिक वर्णन है। बालक अपनी माँ से पूछता है

माँ जुही खिली हरासिगार की कसी विवसित हुई  
 बल्लिका भी खिलकर सुगम छिटका रही है।  
 उपवन में तोता बोस रहा है और भौरा गुनगुनाता हुआ उसे खोज रहा है।  
 भैया कहाँ हैं माँ? उसके बिना प्रेस में रूम शनू माँ?' माँ उत्तर देती है  
 'पूल की तरह खिलता था वह जब कुम्हसा गया है। नही वह तो परमारमा के पास खेल रहा है वेग खेल रहा है।

'रोफानिका' शीर्षक कविता में सरस कल्पना और यथार्थ चित्रण का जो सजीव एवं सुखद सम्मिश्रण है वह देखते ही बनता है

मधुमय गुमन भर उपवन में  
 खनी सुवास गरी बयार जब  
 बर्यं वधु-सी भाकर ठहरी  
 तब क्या प्रमुदित रोफानिके ?  
 हरे पत्तों सास पत्तों से  
 लगा है घना घट का वृक्ष  
 उसक ऊपर जा बठी हो  
 दखू बैस में शाफालिके? "

'कविमणि' समाज का स्थिति में परिवर्तन चाहते हैं। उनके कवि-हृदय से यह अन्याय सहन नहीं जाता कि महानगर की कोई और उसका पत्त मोगे और ही कोई। स्वाभित्व किसका शोधक गीत में वे कहते हैं

मग्न रहने से कही हातो है सेती ?  
 भूमि के स्वामी तो वही है जो श्रम करे

‘भारतीदासन’ आज के तमिल कवियों में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। ये ‘पुरटची कविनर’ (‘द्रोतिकावा कवि’) कहलाते हैं। ये सुब्रह्मण्य भारती के अनन्य भक्त हैं अतः इन्होंने ‘भारतीदासन’ का नाम अपना लिया है। ‘भारतीदासन’ की अनक कविताएँ ‘छायावा’ के अन्तर्गत आती हैं। उनकी प्रवृत्ति-वर्णन की कविताएँ बहुत ही सुन्दर हैं। एक कविता का भाव इस प्रकार है

‘मरी भाँख बचाकर वह पीछे से आया।  
मुझे कुछ ठट-सी लगी वह लगे मरे पास।  
आलिंगन करने लगी प्रेम-पाग में आवड़ हा।  
उस सुख का अनुभव करने लगी जिस  
वह स्वयं नहीं समझ पाती थी।  
मैंने सोचा वह समझ जायगी  
किन्तु यह क्या सामन एक और झो खड़ी है।  
मह बोलन वाली मरी पत्नी है पहले वाली मन्द पवन थी।

‘भारतीदासन’ की अनक कविताओं में प्रगतिवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। रुढ़ि-विरोध वापितों का करण गान दीपकों के प्रति घृणा और रोप क्रांति का सन्देश साम्यवाद का समर्थन नारी का गौरव-गान मानवतावादी वेदना और निराशा सामाजिक जीवन का गपार्य चित्रण, सामयिक समस्याओं का चित्रण आदि उनकी प्रगतिवादी कविताओं के वष्य विषय हैं। उनकी एक कविता का भाव इस प्रकार है

‘जीवन के अन्तिम क्षण तक  
वैल की तरह काम करते रहो  
छून को पसाने में बहात रहो  
क्या तुम्हारा परमात्मा भी आँखें बन्द कर बैर गया ?  
खाली पट बाल य दखि ‘दास’  
अगर जाश में आ जायें तो  
मरे पट ‘यजमान’ को क्षण में गिरा दें।  
फिर तो ‘दास’ और ‘यजमान’ का अन्तर ही न रहे।’

‘भारतीदासन’ ने तमिल भाषा के प्रति अत्यधिक प्रेम अभिव्यक्त किया है। उनकी कई कविताएँ मानव भाषा तमिल की मधुरता की प्रशंसा में हैं। उनकी कविताओं के अनक सग्रह निकल चुके हैं। ‘कुटुम्ब विसक्तु’ ( घर का दीपक ) अल्लकिन चिरिप्पु’ ( सुन्दरता की हैसी ) ‘पाडियन परियु’ भारतीदासन कविताएँ आदि उनकी कविता सग्रह हैं। श्री रामलिंगम पित्तू गाधीवाणी कवि हैं। उनकी कविताओं

म गांधी-दशान की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। इनकी मद्रास का मास्थान कवि' (राजकीय कवि) माना गया है। राष्ट्रीय भावनाभा से युक्त इनकी कविताओं के अनेक संग्रह निकले हैं। राजाजी ने इनके विषय में एक बार कहा था कि तिलक का बोया हुआ बीज सुप्रसूत भारती बनकर अंकुरित हुआ, ता गांधीजी का बोया बीज रामलिंगम बनकर निराला।'

'तमिलन इय्यम' नामक कविता-संग्रह में रामलिंगम पिल्लै की बहुत मात्रा कविताएँ संकलित हैं।

भारती के पश्चात् उपयुक्त तीन कविता के अतिरिक्त मात्रा अनेक कवि तमिल कविता को सजा रहे हैं। धामी पुढानन्द भारती की कविताएँ भी उस काटि के काव्य गुणों से युक्त हैं। इन्होंने 'भारत शक्ति' नामक एक बहुस्तोत्र लिखा है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों स्फुट कविताएँ और गीत रच हैं। इनकी कविताभा का एक संग्रह है 'कवि स्वप्न'। ये प्रकृति प्रेमी हैं। कहीं कहीं प्रकृति-वर्णन से युक्त इनकी कविताएँ छायावाद की काटि की बन जाती हैं। इनके ऊपर पश्चात्य कवि 'सैली का काफी प्रभाव पड़ा है।

श्री सुप्रसूत योगी की कविताएँ प्रगतिवादी और वैयक्तिक हैं। तमिल कुमरी' इनकी कविताभा का संग्रह है। चिल्प के क्षेत्र में इन्होंने कुछ नये प्रयोगों का परीक्षण भी किया है। कवि 'सोमु' की कविताभा में एक अद्भुत धारित है। इनकी कविताभा में शब्दों का अर्थ बहुत ही सुन्दर है। सरसता और सरमता इनकी कविताभा की ली विद्यमान हैं। 'इसवेनिल' दीपक कविताओं में प्रकृति का विविध कारण से चित्रण हुआ है। इनकी कुछ कविताएँ छायावादी हैं।

मुडिमरसन की कविताभा में कल्पना का सौन्दर्य भावों का उत्कर्ष शब्दों का गाम्भीर्य ये सभी गुण विद्यमान हैं। ये भारती दासन की शब्दों को अपनाते हैं। इन की अनेक कविताएँ छायावाद की काटि में आती हैं।

'कम्बदासन' तमिल के मस्त कवि हैं। वह जीवन को मधुमय रसमय नज़र से देखते हैं।

समस्त प्रकृति 'कम्बदासन' की प्रेममय दीक्षता है। रवि-किरणों में लहरा के गीत में नमल के सौन्दर्य में अमर का गुनगुनाहट में उन्हें प्रेम ही प्रेम नज़र आता है। कुछ कविताभा में रहस्यवाद की झलक मिलती है। कम्बदासन की अनेक कविताएँ प्रगतिवादी हैं। पर इनकी अधिकतर से सम्बंधित कविताभा में वह सीलापन नहीं है जो 'भारतीदासन' की कविताओं में देखने को मिलता है।

कवि 'कप्पुदासन' ने भी अनेक सुन्दर कविताएँ रची हैं। इनकी कविताभा

म सञ्चयन बहुत आकर्षक होता है। कविताएँ कुछ प्रयोगवादी हैं, कुछ वैयक्तिक। इनके प्रतिरिक्त भाज के तमिल कवियों म पेरियस्वामी 'तुरन', बाणोत्तसन, अण्णामनै, 'मुरदा 'इलम् भारती', वा० मु० सेरीफ, रघुनाथन् तमिसल्लन' भास्करत्ताण्डमान आदि उल्लेखनीय हैं। इनकी कविताओं में छायावादी, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। लोक गीता को गली म कविताएँ प्रस्तुत करने वाला मे कातमंगलम् सुब्बु तिरिप्पाक चीताराम आदि प्रमुख हैं। कोत्तमंगलम् सुब्बु ने ग्रामीण किसानों की बोली में कविता लिखने की नयी परम्परा खसाई है। उनकी कविताओं की विशेषता यह है कि भाषा के साथ साथ, कल्पना एक भाव भी ग्रामीण किसानों के हाथ है। फलतः उनकी कविताओं में असाधारण भावपूर्ण पाया जाता है।

बच्चा के लिए सरल भाषा म सुन्दर कविताएँ रचनेवाला म सर्वाधिक प्रसिद्ध है श्री अल वल्लियप्पा। इनकी कविताओं के अनेक संग्रह निकल चुके हैं। 'मल्लम् उल्लम्' वल्लियप्पा की कविताओं का एक अच्छा संग्रह है।

सिन्धु के क्षेत्र में नये प्रयोग करने वाला म 'पुदुमै पित्तन', पिच्चमूर्ति, 'सुरमी' कि० व० जगन्नाथन आदि के नाम लिये जा सकते हैं। चल चित्रा के लिए गीत रचनेवाला की एक अलग ही गोष्ठी बन गयी है। इनमें पापनाथन शिवन कण्णदासन कम्बदासन सेरीफ भरदकासी आदि कवियों ने कुछ अच्छे गीत रचे हैं।

तमिल कविता के विषय में यह कहना कठिन है कि भाज किस 'वाद' का प्राबल्य है। जैसा प्रयोगवादी कविता को नयी कविता' का नाम हिन्दी में प्राप्त है, उस तरह तमिल भाषी प्रयोगवादी कविता को नयी कविता' मानने को तैयार नहीं। हाँ! कविता के क्षेत्र म नये प्रयोग अवश्य हुए हैं। किन्तु ये प्रयोग हमेशा होते ही रहते हैं।

(मलिक मोहम्मद)

...

## कन्नड में नयी कविता

संसार का धर्म है अज्ञानता। संसार का धर्म ही साहित्य का भी धर्म है। इसका अपवाद नहीं है कन्नड साहित्य। करीब पन्द्रह सौ वर्षों से कन्नड साहित्य अब तक उतार-चढ़ाव दृष्टता आया है। उसमें ज्वार भाटा आया है। जैसा धुग बन्ता वैसा कन्नड साहित्य भी बदला। कन्नड काव्य म परिवर्तन हुआ।

कथन म नयी कविता आई अगली के प्रभाव से । सगमय ७-८ साल पहले ।  
 किन्तु यह नई कविता धीरे धीरे शक्ति-संचित करके बढ़ने लगी है । प्रारम्भ में  
 इस कविता का विरोध भी हुआ तो भी विरोध में उसकी प्रगति को बल मिला ।  
 परंपरागत भावों का सजकर यह नई कविता गतिमान हुई है इसलिए इस का  
 नाम भी पड़ा । किन्तु आज की नई कविता ने हरिहर राघवों का रत्नाकर  
 सवम और मुहण की कृतियों में जो सन् १६०० के पहले की है को दृष्टि में  
 रखा है ।

नई कविता की वस्तु कल्पना, सीली सचा बदिरा सभी नवीन हैं । यह मुक्त  
 स्वच्छन्द धर्म का पमद करती है प्रतिभावा का सहारा लेती है । किन्तु प्रतिभा  
 सज धज कर जाती है । इसकी वस्तुओं में वही पुरानी वस्तुएँ ही हैं जैसे समुंदर  
 सौम्य-सबरा आत्मा मृत्यु धूसि विद्यालय इत्यादि ।

नई कविता की सुरही बजाने वाले हैं विनायकजी (प्रि० वि० के० गोकाक) ही  
 कहा जाय तो श्रमयुक्ति या घृष्टता नहीं होगी । नई कविता के रचनाकारों में श्री  
 शरद्विद नादकर्णी श्री पशुपति रेड्डी श्री भार जी कुलकर्णी प्रो० बी० एच०  
 श्रीधर, श्री चैतन्यदेव कण्ठवी श्री जो० एच० शिवरूप्य आदि के नाम  
 उल्लेखनीय हैं ।

धूलु

कृतिस्तन सिद्धिदेष्टु नित  
 गौधी टाप्पिग किन्तु विसादित  
 गौड गे ह्मन्दि देव देवियर चित्र नोदित  
 धूलु ! धूलु !! धूलु !!!  
 धूलु मुमुक्ति देवर चित्रके ।

भार० जो० कुलकर्णी

[ बैठा हुआ उठ खड़ा हुआ गौधी टोपी केकी दीवार पर दीगी देव देवियों की  
 तस्वीरें देखी धूसि ! धूसि !! धूसि !!! धूसि चढ़ गई है देवा की बिना पद ]

सत्तात्ममगल सन्धु

किटेल किटेल कोशद नूरा टेब-  
 स्मूरने पुटदसि सिन्धुव आत्मद  
 पडियन्गुगलत्यसस्य मुत्तसु  
 काणुतिवयो विचित्र रा मय

नगरोलब्धा भद्रुगसं कुणितव

कटे कटे कप्पिरिवाढेवनक ।

श्री० एष० श्रीधर

[ किटस साह्य क कोग म एक सी तिरपन पृष्ठ पर मिसने वाली आत्मा के  
द्वि (ज्याक) अनगिनत चारा चार दीख रहे हैं विचित्र राय क नगर में, उन  
का नृत्य दखा देखा रे सब तक घाँसि न पृष्ठ गइ । ]

समुद्र मोहिनी

महा समुद्रवे ।

विश्वव्यापी समुद्र लहरिय ।

ना दृढ मणिमय मणिकेमलि प्राणव हूलिटु

चप्पिरिसुतिहे होटलिय ऐसप्रामु

सवियुतिहे चिचपट प्रमकसरत्तु-

एदुस नमुत्तित्तु समुद्र नारय सारहासत्त । अरविद नाइकणी

[ ओह ! समुद्र ! विश्वव्यापी समुद्र की लहरें ! मैं कुछ हू मिट्टी के मटक में प्राण  
को गड़कर हाटल का घाईसनीम चल रहा था चिचपट की प्रेम की कसरत  
का भ्रान्त मूढ रहा था सामन समुंदर फनिच सारहास में हस रहा था ।

जड़

ससनयर वनिनडे

हाविनोनु जात्व जडे

कानिनियतित्तित्तु कारलड ग कवलोडेदु

भतित्त हुरिद जडे ।

कुट्टुल जीवाकपण परिणत भा

पौचलिय जडे

सोतय कण्णीरीनु जडे

भा भा ई जड गन्ति मिद कडे ।

संजयति ह्यनु कम्भ कस्तलय

काल जडे

वसगिनलि इरुनु विञ्जुव वेत्तनय

वेलकु जडे ।

जडेया विरुमिसिं तायमुत्त मात्रहन्ति

काण्डल १

श्री० एष० शिवरत्न

[ ससनाभा की पीठ पर सप नी भौलि सटवता हुआ जूड़ा काँसिदी (सप) की माइ । गदन के पास दाखा म घटकर दधर उघर भूलने वाला जूड़ा । कुरुकुल क प्राण लने वाला बहु पाँधाली का जूड़ा । सीता क अमुष्मा में भोगा हुआ जूड़ा । घरे भरे इस जूड़े का अंत कहाँ ? सौम्य म दिन की कुरेदने वाले अंधकार का काता जूड़ा । सवेरे म रात को खामने वाला सफ़द प्रकाश का जूड़ा । जूड़े के दूसरी ओर मुड़ा हुआ माता का मुख तो धाज भी नहीं देख रहा है तो ? ]  
इसी प्रकार ओरों की रचनाएँ भी हैं जिसमें 'विनायक जो का वैद्य विद्यालय' गोपाल कृष्ण अहिम जी का 'भूमिगीत' भी महाहर है ।  
नई कविताओं की सम्यक् समालोचना इनकी विशेषताओं की जानकारी आदि लेकर जनता का ध्यान पंडितों का ध्यान नई कविताओं की ओर खींचा जाय, तो इनका भविष्य उज्ज्वल होने की संभावना है ।

( गुरुनाथ जोशी )

...

## समसामयिक उडिया कविता



धीसवी शताब्दी के द्वितीय दशक में महात्मा गाँधी के आसीयताबोध और रवीन्द्रनाथ के विश्व-भक्ति के साथ मानवता के एकात्म्य एवं सौन्दर्य-बोध ने उडिया काव्य धारा की विशेष रूप से प्रभावित किया था । किन्तु मधुसूदनदास गोपबन्धुनास आदि प्रमुख नेताओं का भाषावार प्रदेश-गठन का आन्दोलन तथा उत्कल के प्रतिवेशी बंगवासियों का उडिया विद्रोह आसीयता के भाव की मिलित भारतीय स्तर से उतार कर प्रादेशिक स्तर पर ले आया । उत्कल की सारस्वत बीणा से इसके दो स्वरा का जो समाहार उठा उसका आभास हम हरिहर महापात्र मायाधर मानसिंह गोणवरिस महापात्र नित्यानन्द महापात्र कृष्णचन्द्र त्रिपाठी राधाभोहन गौडनाथक आदि प्रमुख कवियों की काव्य धारा से हाता है । सत्य धर्म की ध्यान में रखकर कविता के रूप और विषय-वस्तु में समन्वय का सचा कविता में ध्वनि एवं गेयता का माध्यम से सत्य को बनाये रखने का ध्येय रही कविता की है ।

तृतीय दशक के मध्य भारत की एक समाजवादी राष्ट्र के रूप में बदल देने के लिए जातीयता आन्दोलन उग्र हो चला तो काव्य धारा की एकाएक नया मोड़

मिला। उस समय जड़ीझा बिहार से चलते होकर एक स्वतंत्र प्रदेश बन चुका था। और उसी समय इंग्लैंड में ग्रीकनिष्ठ डेलवी, रूस में मायकोव्स्की एवं स्पेन में एण्टानियो मन्झाको 'सफ्ट रिथ्म' (बाम पद्य) की कैद मानकर प्रगतिशील कविता मिल रहे थे। इनकी रचनाओं से भारत का प्रादेशिक साहित्य विषय रूप से प्रभावित हुआ था। उद्दिष्ट-काव्य में इस भाव-धारा का प्रवर्तन सचिवालयतन्त्रात्मक न किया और स्वयं को बाम-पक्षी कवि के रूप में प्रचारित किया।

अनन्त पटनायक, ज्ञानेन्द्र वर्मा और कुप्पबिहारीदास का रचनाधीन भी इस भाव धारा की स्पष्ट झलक मिलती है। इनके काव्य का विषय मानववाद का येनी-सपन था और दृष्टि एवं श्रमिक वर्ग का हित साधन इनका लक्ष्य था। किन्तु उद्दिष्ट में वह भाव धारा घषिक दिनों तक न चली। सामन्त धर्मी और वर्मीदारों से घासित और घित्य के क्षेत्र में अनुमत्त उत्कल के लिए ऐसी कविता मान एक फव्वान बन कर रह गयी। एल्डस हक्सल के अनुसार इस प्रकार की कविता में कला की एकात्मिकता (Sincerity is art) के अभाव का अभाव होता था। स्वाधीनता के बाद ही यह काव्य धारा फूल चली। मायाधर मानसिंह इस प्रकार की कविता पर कुछ होकर कह रहे

दस-बीस साल पहले उद्दिष्ट-काव्य में हविदा-दृष्टि की बाढ़ आयी थी। कामरुज्जमान ऐसा कहते हैं कला एक पक्ष से निरुद्ध पक्ष भी उन्नत कीट की कविता जैसे प्रतीत होने लगते थे। किन्तु तत्कालीन दान बची आतिवादियों की पूरी टोली ने अपने ऊपरी नेता सचिवालयतन्त्रात्मक समेत सब चीला बदन लिया है।

कला राजनीति की परिचारिका नहीं है। साधनमूल और कोणाके का निर्माण राजनीतिक दल के निर्देश से नहीं हो सकता। तथा अन्तर्निष्ठा धर्मकाण्ड कावरे कविता कुछ के अनुसार तत्कालीन कविताएँ घल्य सक्य होकर न सामन्त धर्म के पाठक के मन में दम-वेतना का बीजारोपण करने में सक्षम हुई थीं। इतना ही नहीं, वह तत्काल में सामन्तवाद के विरुद्ध विप्लव की प्रति प्रज्वलित हो रही थी इन कवियों ने ही तबमें युतादृष्टिवादी भी और बितने ही सत्य सम गये थे।

मानसिंह सोन्दर्य-काव्य राष्ट्रीयता और मानवीयता के कवि हैं। काव्य धारा का स्वांगण इनसे ही हो सका। द्वितीय महायुद्ध के बाद वह तत्काल एक तरफ कवि अन्तराष्ट्रीय विमताधारा के प्रति पूर्णतः समर्पित हो चुके थे इन्होंने लिखे होकर कहा — 'और अब एक अन्तराष्ट्रीयतावादी तरङ्ग-दल मैदान में



उतरा है जिसकी पड़े वहीं नहीं है और जिस छोटे छोटे पाठक और इतिष्ठ कृतान्त का गौरव जन मिल जाय य स्वयं अपने सुंदर उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकते। सघाक्यित 'जाली' के एक अग्रगामी लेखक किनो'चंद्र मायक ममसामयिक उद्दीप्ता में कवि-कर्म की स्वच्छाधारिता के लिए कृत्यात है।

भारत की सामाज्य प्रादुर्गिक भाषाओं पर इतिष्ठ डायलन यामिस, एकरा पाठक्य घा'ि प्रमुख कवियों का जमा प्रभाव पडा वैसा ही उद्दिष्टा काव्य पर। किन्तु इन कवियों का स्वकत्व एव घा'ानुयास इस सम्प्रदाय के उद्दिष्टा कवियों के लिए दलम रहा। इतना ही नहीं कृत्रिम भाव और कृत्रिम वस्तु वर्णन में हा इन्होंने कवि-कर्म की प्रतिष्ठी ममभी। समाजांतरक जनानमि नरे इन्द्रुमार, इन्द्राणि महन्ति, राहम राय घा'ि कवि 'य' थना म घात है। य कवि कत्ता सटि क मापदण्ड वजन एव वजन (Elimination and Selection) के प्रति सचेत नहीं थे।

ममसामयिक कविता की 'नीय धारा रोमानवादा है। सत्यानन्द चम्पतिराय चिन्तामणि बेहरा जानशायलनम महाति दुर्गमाधव मिथ कृष्णचरण बेहरा दुर्गाचरण परिडा विद्यनप्रभा'वी मुसवीदास 'नाद रा'तराय अजनाधरण रवी'कुमार पानी समझाकर एडा घा'ि कवि इसी धनी के हैं। इन कवियों ने महत्तुन सत्यानकार एव छन्द का त्याग किया और जीवन की छाटो-छाटो सवगपूण घटनाओं की समप के माध्यम से व्यक्त किया।

एक और दल फ्रेंच उद्गोधनपरक कविता (French resistance poetry) का माति देश की मुक्त चेतना की आधुत करने वाली कविताए लिख रहा है। धीनी मात्रमण के बाद इस प्रकार की कविताओं की सख्या म वृद्धि हुई है। कविता का परिणाम य कवि-सख्या का प्राचुय दलकर लगता है कि असमय रूपक'य अमलन भाव धारा अग्रचलित स'ि-वि'यास के अपट्ट हस्त द्वारा गद्य छन्द के व्यवहार से कवित्व का स्फुरण बनीव हो गया है। ऐसा लगता है कि राजनतिक घादपाहीनता जीवन की विशृखलता और अन्व'ध समाज की प्रतिच्छवि से कविता श्रीहीन हो गयी है। नवोदित कवियों में समाज के गुण-दोषा के वदन की मानसिक शक्ति अभी घा नहीं पायी है और प्रतिष्ठित कवि वतमान समाज से युगा से मुह फेर बठे हैं।

इस परिवर्तन'गी-

का सहानुभूति

कर इसके सुख दुख और

आगा निरा

वाले नय

वि में अभी कुछ सनय

और --

इच'इ नायक

# आधुनिक तेलुगु कविता

★

श्री गुरुजाराध धम्माराव की कृतियों से आधुनिक तेलुगु साहित्य का धीमछेउ हुआ था। परिणाम की दृष्टि से ध्वस्त होने पर भी उनकी कविता साक्षणीत स्रदाय की सुषमा से ध्यानायित है। एक नवीन सागावा की दानिष्टता के सहारे सामान्य मानव के सुख दुःखों का चित्रण उन्होंने किया था। निम्न बीजत बीजत उनका व्यक्तित्व जगत् प्रभावशाली तथा व्यापक बन गया था।

श्री गायत्रोलु सुम्भाराव की रचनाओं के साथ साथ आधुनिक तेलुगु साहित्य में मधुर बल्बनात्मकता का प्रादुर्भाव हुआ था। उद्यम सत्तय मधुर बल्बनात्मकता की चरम सीमा तक पहुँचने का ध्येय श्री दकुम्पल्लि हृष्ण गायत्री को है। कई महान कवियों ने सामान्य आश्चर्यचिह्न मानव के सर्वांगीण चित्रण, बाल्य सुन-सरलता प्राकृतिक शोभ्य सगिह कामनाओं से घटीत विगुड प्रणय की महत्ता तथा दशभक्ति की गरिमा आदि उच्च वस्तुओं को प्रभुत करने के मधुर बल्बना प्रमाण इस कविता की उपासना की थी।

जीवन की कठोर वास्तविकताओं के क्षण में घाटी हाकर जब भाव कविता मोरम होने लगी तथा जब वह स्वर्ण मंदिर में प्रतिष्ठित एक प्राणहान मूर्ति बन गयी, तब श्री श्री के विरोध का प्रथम गूँज उठा। उनकी कविता प्रत्येक कारी येग से बद्ध निरुद्धी। माकमबाग घाटों से प्रेरित हाकर उन्होंने परम्परा पर धम रुद्धिवादी सिद्धांतों की गृहस्थाओं को एकदम तोड़ डाला। मध्य भविष्य के आलोचनय स्रष्टार होने का डरा बताया। आधुनिक प्रगतिवादी का के के स्रष्टृत बन।

साहित्य क्षेत्र में कवि सम्राट विन्नाय मय्यनारायण का प्रवृत्त विद्वरूप का मासाकारना हुआ। प्राचीन परम्परा सगत् के समक्ष होने हुए भी उन्होंने विभिन्न रचना प्रक्रियाओं के प्रयोग के द्वारा आधुनिक साहित्य स्रष्टार में उभल पुष्प मचा दी जितनी धीरे समकालिक आश्चर्यचकित होकर देखत रह गय। इससे वे एक मुहूर्त रूप में अद्भुत डग से रामायणाय कथा पर एक महाकाव्य की रचना करने में ससन्न हैं।

वैयक्तिकता की कवियों में कवि जाधुमा का एक प्रमुख स्थान है। उनकी सुस्वाद मधु मधुर सती प्राधान परपरानुगत धाराओं में बहती है। लेकिन उनके विचार पुरानी बीजत में नवीनतम आभासक से हैं। स्पष्टता तथा नवीनतम के कारण उनका प्रभाव अत्यन्त व्यापक तथा प्रविचल है।

भाव कविता का माधुर्य 'गैयम' में मूर्तिमान हुआ। विछले कुछ छात्रों में मैथम के उज्ज्वल रूप का कई तरह के कई छत्रों में समग्र विकास हुआ। बसवराज, नहरी बापिराज, कुण्जशास्त्री, श्री-श्री दारपी तथा नारायण रेड्डी जैसे प्रतिभावान कलाकारों के हाथों से प्रशसित लोक कविता के साथ में, इसका सर्वांगीण सुन्दर रूप ढाला गया है।

कुन्दुति घाबनेयुलु, आरुद्धा गोपाल बनवर्ती तथा भरिपिराम विश्वम आदि अति नये कवियों के हाथों में नए कविता तथा स्वच्छन्द कविता कलात्मक पठन संपन्न हुआ है। अपूर्व विविधता तथा कठोर वास्तविकता के आधुनिक जीवन की द्रवति को इनकी आराधात्मिक विचारधारा चरम सीमा तक ले गई है।

पाश्चात्य नीतिकला क रसहीन क्षेत्रों में विफल विचरण करने के बाद विभिन्न अनिश्चित तथा सदेहास्पद आदर्शों को विफल साधना के बाद आज जीवन क वास्तविक मूल्यों का अन्वेषण हो रहा है। आज के कई नए युष्क सिद्धान्तों एवं कौर नारा की व्ययता का महसूस करने लगे हैं। उन्होंने जान लिया है कि सुन्दर स्वप्नों क अभिव्यक्त की पृष्ठभूमि की स्थापना के लिए आधुनिक तथा नवीनता क उन्नत सामग्र्य की आवश्यकता है।

( अमरेन्द्र चतुर्वेदी )

\*\*\*

कवि-परिचय  
और  
कविताएँ



# सर्केतिका

## वीटनोक कविताएँ

६

|                     |                                       |
|---------------------|---------------------------------------|
| एलेनजिन्स वर्ग      | — भसली महत्वपूर्ण वस्तु               |
| जक डेरुएक           | — हट्टियाँ                            |
| मिकाएल होरोविज      | — आगामी युद्ध के बाद                  |
| एड्रियन मिचेल       | — सार्ड होम जिन्ह ५००० पौंड मिलते हैं |
| ओम्                 | — पम् और पछ                           |
| पाल ब्लैकवन         | — प्रतीक्षा                           |
| ब्रदर एटोमिनस       | — दण्ड जन्म                           |
| मार्टिन सेमूर स्मिथ | — एक इमारत के पास मिला खत             |
| सी एच सिसन          | — युवती                               |

## यूरोप की कविताएँ

२०

### फ्रांस

|                |                      |
|----------------|----------------------|
| पियरे रिवेर्डी | — काला और सफेद       |
| पाल जिल्सन     | — अस्थिरों का भरसिया |
| जाक्स हुसेट    | — तुम्हारे चारा और   |

### जर्मनी

|                    |                  |
|--------------------|------------------|
| वरतोल्ड ब्रेख्त    | — बेचारा बी० बी० |
| हेलमुट हीसेन बुटेस | — दुश्मन         |
| वर्नर रेफेन्ड      | — मोठों पर पवन   |
| होस्टलंग           | — रात्रि संगीत   |
| इग्नेबोर्ग बाखमान  | — दुपहर को       |

### ग्रीस

|              |       |
|--------------|-------|
| रेम्को कम्पट | — कवि |
|--------------|-------|

### डच

|                 |                      |
|-----------------|----------------------|
| गैरिट आशटेवग    | — सुय                |
| हन्स सोडईजिन    | — पिता के लिए        |
| आद्रियाँ भीरिखन | — एक सड़की           |
| मॉरिस गिलियाम्स | — एक बच्चे की मौत पर |

### आइसलैण्ड

|                      |     |
|----------------------|-----|
| सिगुरडुर ए० मैन्नुसन | — ? |
|----------------------|-----|

रूस

|                              |   |                                    |
|------------------------------|---|------------------------------------|
| वोरिस पास्तरनाक              | — | गाँव                               |
| ब्लाडीमीर मायकोव्स्की        | — | तुम्हारा श्वास है तुम कर सकते हो ? |
| ज्यार्जी इवानोव              | — | उपयोग                              |
| एब्जेनी एब्जुशेवो            | — | बाबीघार                            |
| एलेक्जान्दर येसेनिक बोल्शिन- | — | कीमती                              |

रूमानिया

|              |   |                               |
|--------------|---|-------------------------------|
| जो वकोविया   | — | आक्षिप्त कविता                |
| मागदा इसानोस | — | यदि 'यामपूर्वक' बौ' लिया होता |

स्पेन

|                 |   |             |
|-----------------|---|-------------|
| गार्सिया लोर्का | — | आत्महत्या   |
| रफ़ाएल आलबेर्ती | — | दुरासता     |
| मिगुएल हरनादेज  | — | साँड की तरह |

युगोस्लाविया

|             |   |              |
|-------------|---|--------------|
| इवान इवानजो | — | रेसनाही      |
| वेस्नापहन   | — | साया म बेहरा |

लटिन अमेरिकन कविताएँ

४६

मक्सिको

|                           |   |                     |
|---------------------------|---|---------------------|
| ऑक्टवियो पाज              | — | सपट                 |
| एनरीक गार्जालेज मार्टिनेज | — | बन्द बगीचा          |
| लुई करनूदा                | — | बहुत पहले का वसन्त  |
| जेवियर विलोसिया           | — | बर्फ में कब्रिस्तान |

पेरू

|              |   |            |
|--------------|---|------------|
| रेने एरिज़ा  | — | सीटने पर   |
| इसेल रिबेयरी | — | कितनी घीमी |

पेरू

|               |   |          |
|---------------|---|----------|
| सेज़ार बलेज़ा | — | घनत चौपट |
|---------------|---|----------|

इक्वेडोर

|                   |   |              |
|-------------------|---|--------------|
| जाज करेरा अद्रादे | — | मिट्टी के घर |
|-------------------|---|--------------|

गुयाना

|                     |   |                  |
|---------------------|---|------------------|
| जुलियो हररा य'रासिग | — | नगण्या का रंग मध |
|---------------------|---|------------------|

पाजोस

|               |   |              |
|---------------|---|--------------|
| मानुएल वादेरा | — | पूर्ण मृत्यु |
|---------------|---|--------------|

अजेंटाइना

जाजलुई वारेजीज  
रिकाडो ई० मोलोनारी  
सिल्वीना ओकेम्पो

चिली

पालो नरत्न  
विसेंते हुई दीग्रो

कनाडियन कविताएँ

वाँव डारनिंग

फिलिस वेव

विल विसेट

के० बी० हर्ज

फ क डिवी

रेमेण्ड जे० फ्रेजर

मार्टिना विलन्टन

करेबिया की कविताएँ

ए जे सिमूर

फक ए कौलीमोर

डेरैक वाल्कांट

समएल सेलवाँ

मार्टिन कार्टर

ट्राम कौम्बस

एल्फेड प्रेग्नेल

न्यूजीलंड की कविताएँ

चार्ल्स ग्रंथ

डब्लू हाटस्मिथ

लौरी रिचड्स

मौरिस डुगन

क्नेथ मेक-क्नी

पीटर ब्लड

हुवर वियरफोड

— उपवन

— नहीं आयेगा

— निद्राहीन पलीनरस

— स्थिर बिंदु

— छी

— सत्य

— द्रुटे हुए नग्न कविता

— हृदय में कवि

— मृतमाँ का स्वप्न पगम्बर नहीं हो

— महादिवस

— मैं और वे

— सद्य कविताएँ

— सूर्य सुडोल अग्नि है

— विद्रोही

— अग्निमूत नगर

— सूर्य

— आवाजें

— ?

— दोस्त को छव

— आत्मा का आत्मा से वार्तालाप

— अग्नि निश्चार्य

— समझान शृङ्ख

— एक निवेदन उन सबसे

— गलीफो औरत

— एक कृत्त की मौत

— बैबटस

६५

७५



गोर्डन धलिस  
रुथ डसास

— समान रखे हुए ताप का मनुष्य  
— समुद्र पर बादल

## आस्ट्रेलियन कविताएँ

६१

जूडिथ राइट  
डोरोथी हीवेट  
क्लेम क्रिस्तेसेन  
भार ए सिम्पसन  
जेम्स कबेट  
डोरोथी प्रॉक्टर लोनी  
ग्वेन हारबुड  
डेविड रोजस  
डेविड मार्टिन

— प्रेमियों का दल  
— नाविक की यापिती  
— कविता  
— दुर्घटना  
— मृत्युलेख  
— विदा गीत  
— पानी के किनारे  
— मरते हुए सप्ताह पर पुनर्विचार  
— निवृत्त विचार

## अफ्रीकी कविताएँ

१०३

### दक्षिणी अफ्रीका

जईस मीग  
जेक कोप  
सी एम वान डेन हीवर  
गार्ड बटसर  
इन्प्रिड जोम्बर  
राय मक्नाव  
रुथ मिलर  
तानिया वान जिल

— काल गिरिष्णु ग काली हवा  
— यदि तुम लौट साओ  
— आह्वन तबू नू सरदार  
— मैं  
— मैं नहीं चाहता  
— यूरोप और अफ्रीका  
— भटकाना  
— मृत

### पुगाण्डा

कोलिनराय  
जोजफ जी मुटिगा  
अलबट वी भोगारो

— अफ्रीका  
— अफ्रीक रात को भोगो  
— प्रत्युत्तर

### नाइजीरिया

अइग हीगा  
क्रिस ओकिम्बो  
मेल सोयिनका  
गोवरिअस ओकारा

— रीति हिंसा  
— मूक बहनों का गीत  
— टेसोफोन वाता  
— रक्त छट पर एक रात

मेडगास्कर

ज्याँ जोजक रिबेरिवेलो — हमारी प्रगति

घाना

बवेसी ब्रू

— याचना

कांगो

जी एफ डी चिकाया

ऊतामसी

— जन्म मन्त्र के साथ ताओ

सेनोगल

डेविड ड्याप

— तुम्हारी उपस्थिति, मुझ को बताओ  
अन्वीक

लियोपोल्ड सेडार सॅघोर

अल्जीरिया

— नीसिमाएँ

अब्दुल बहाव अल बयाती

मलेक हद्दाद

— अल्जीरिया को बसन्त और बच्चे  
— जो इतिहास बन गये मैं जानता हूँ

मिश्र

उमर अबू रिशेह

अनवर नफेह

— पोर्ट सईद का शीत, प्रदूषण  
— दो प्रेमी

एशियाई कविताएँ

फिलस्तीन

इब्राहिम तौकान

मुहम्मद कासिम

अकरम फ़ादिल

— कव्वातर

— बास्केट बाल का खिलाड़ी  
— वहाँ घुर्गुंग मैं फूल !

टर्की

फाजिल हुस्तु उगलारका

सी टरान्सी

— नग्न सुता

— भूत्योपचान्त

इजराइल

इतजिक मैगर-

बर्नाड कॉप्स

— मैं वहीं हूँ

— शांति बम

जापान

शिन ऊका

हिरोसी इवाता

यू सूवा

मिनोरु योसिमोका

— कर्नल और बम

— बिल्सी और चिड़िया

— खरद का पुरुष

— विगत

हाइगाकू होरीगुचो  
टारायामा मोटो

फिलिपींस

जी बस बुनाओ

मलाया

ई तियाग हाग

कोरिया

विम सू-यु ग

को-बॉन

मिन जाई शिक

इ डोनेशिया

चयरिल भनवर

सितोर सितुमोरग

डब्ल्यू एस रेन्दा

वियतनाम

तो घुई येन

वान दाई

लका

जॉज केट

धमों शिवरामू

भारत

हिंदी

कुंवर नारायण

कैलाश वाजपेयी

गिरिजा कुमार माथुर

जगदीश गुप्त

जगदीश चतुर्वेदी

ठाकुर प्रसादसिंह

नेमिचन्द्र जन

वालकृष्ण राव

भवानी प्रसाद मिश्र

माखनलाल चतुर्वेदी

रामदरश मिश्र

— समुद्र

— नाई की दुकान पर

— दो कविताएँ

— मि० तान मूनैत्र

— बर्फ

— भूमध्यसागर पार करते हुए

— कार्नेलिया जो अमेरिका में मिली

— मेरा घर एक कमरा

— जागरण

— धमागा कोजन

— बापसी

— पर्वता पर बसन्त आता है

— रात्रि में भय

— दरवाजा

— माँ निगाद प्रतिष्ठा

— समझार लोगों की कविता

— भवस्तू कइया

— उम्र का माया

— चार छोटी कविताएँ

— लोकान्तरण

— दो कविताएँ

— मध्याह्न

— स्फटिक प्रभ

— गीत

— सहर एक जादुगर

शम्भुनाथसिंह  
शमशेर बहादुरसिंह  
श्रीकान्त वर्मा

बगला

विनयमज्जुमदार  
शक्ति चट्टापाध्याय  
सुनोल गगोपाध्याय  
मानस राय चौधुरी

उड्ड

रफ्त सरोश  
निदा फाजली  
शहरयार  
जावद कमाल  
राही मामूम रजा

मराठी

प्रभाकर भाचवे

वा० भ० वोरकर  
शिरीष प

जा० रा० देशपाण्डे अनिल

गुजराती

घोसफ मेकवान  
अब्दुल करीम शेख  
हेमन्त देसाई  
तिलीप जवरी

पंजाबी

कृष्ण अशक्ति  
तारसिंह  
सुखवीर  
स्वर्ण

अंग्रेजी

पी० लाल  
पद्मनाथ शमशेर

— यात्रा के बाद  
— सारनाथ की एक शाम  
— बुझार में कविता

— पहली कविता  
— गुतषर  
— नारी नगरी  
— अनुभव

— कत्त  
— तुम्हारे सत  
— इत्तहा  
— नौद  
— गजस

— सध्वारण्यकोपनिषद् । परोपजीवी  
— दुख का हिम  
— अमग  
— किसी एक बरसात में  
— देर से आई बरसात

— यहाँ भी  
— अश्वत्यामा  
— असहाय कवि  
— धम्मा

— गर्दा हमाल  
— निमन्त्रण  
— होटल एक मजिल  
— मुग्ध

— एक रंग चित्र  
— पुण्यतिनाथ-टेम्पुल

|                        |   |                      |
|------------------------|---|----------------------|
| बी० बी० पनिकूर         | — | मैनहटन-स्ट्रीट       |
| सुनोता वैतर्जी         | — | रिक्लेक्शन           |
| प्रजनी मोहन्ती         | — | ४२ बी कविता          |
| नारायण चिन्तामणि       |   |                      |
| महाशब्दे               | — | परिवर्तन का एक धरु   |
| राम महाबली             | — | देवमास ?             |
| नयनतारा सहगल           | — | दीवार                |
| मोनिका वर्मा           | — | कब कोई मरसुद नहीं    |
| निसिम हजिमिएल          | — | सम्बन्ध              |
| अनुसूया आर० दोनोप      | — | रोटी और स्वातन्त्र्य |
| मलयालम                 |   |                      |
| वल्लोपल्ली श्रीधर मेनन | — | ये मंगल, नन्हा मुह   |
| बालामणि अम्मा          | — | बड़जा मुन्ने ! आगे   |
| सुगुतकुमारी            | — | निधा कुसुम           |
| तमिल                   |   |                      |
| पुटुम पित्तन्          | — | भागो मत              |
| कम्बदासन               | — | परिपाद कर्मजस        |
| भारती दासन             | — | विमिर                |
| सुब्रह्मण्य भारती      | — | हमारा देश            |
| कन्नड़                 |   |                      |
| अरविन्द नाडकर्णी       | — | समुद्र मोहिनी        |
| पद्मपति रेड्डी         | — | कारिन्दा             |
| पी० वेक्टरभणु आचार्य   | — | बानीस के करोब        |
| सिद्ध मससी             | — | टन् टन् टन्          |
| रामचन्द्र शर्मा        | — | बसुधरा               |
| उडिया                  |   |                      |
| विनीतचन्द्र नायक       | — | माह के मकान          |
| ब्रह्मोत्रि महान्ति    | — | भीरी                 |
| मायाधर मानसिंह         | — | एक अनेक              |
| तेलुगु                 |   |                      |
| वनकुधरम                | — | मैं                  |
| कल्याणी                | — | अजसि                 |
| स्फुटित्री             | — | ऐ सीतामिनो           |



## नौ द्वावीनीक कविताएँ

एलेन निन्सबर्ग  
जक केदएक  
मिकाएल होरोविज  
एड्रियन मिचेल  
ओम्  
पाल ब्लैकबर्न  
ब्रदर एटोनिनस  
मार्टिन सेमूर स्मिथ  
सी० एच० सिंसन

|                            |                                                                                                             |
|----------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| एलेन जिन्सबर्ग             | जन्म १९२६, धीमनीक कवियों में अग्रणी।<br>हाउस एण्ड गदर पीपल्स प्रसिद्ध संग्रह,<br>भारत में भी रहे।           |
| जक केरएक<br>मिकाएल होरोविज | प्रसिद्ध बोट कवि, कई संग्रह प्रकाशित।<br>सम्पाक—'न्यू डिपार्चर्स', इंग्लैण्ड के<br>क्रुड कवियों के एक नेता। |
| एड्रियन मिचेस              | प्रसिद्ध क्रुड कवि 'न्यू डिपार्चर्स' दल के<br>सदस्य।                                                        |
| मोम                        | वास्तविक नाम—मोसिविया डी हॉलविल<br>क्रुड नयी कवियत्रिया में अग्रणी, 'न्यू<br>डिपार्चर्स' से सम्बद्ध।        |
| वाल ग्लकबर्न               | जन्म १९२६, कवि सम्पाक अनुवादक,<br>कई पुस्तकें प्रकाशित।                                                     |
| बदर एण्टोविकस              | जन्म १९१२, बेहद धम्वी कविताओं के<br>कारण प्रसिद्ध दि क्रुडेड लाइन्स गाँव<br>गॉड —प्रसिद्ध संग्रह।           |
| मार्टिन सेमूर रिमस         | इंग्लैण्ड की सुप्रसिद्ध पत्रिका 'एक्स' से<br>सम्बद्ध।                                                       |
| सी० एच० सिसन               | ये भी 'एक्स' से सम्बद्ध।                                                                                    |

## असली महत्त्वपूर्ण वस्तु • एसेन जिन्सवग

( एन्जिग एस द्वारा द्रव्यवत्ता को जोर कदम )

महान् संवादी सत्ता में मेरी उपस्थिति

की गहरी संविदना

जिसमें अब धारणा से परे की

असंवादिता भाग लेगी

मैं फिर वहीं वापस आ गया हूँ—यांत्रिक

भ्रम की अनुमति अपने मूढ़ भाग्य पर सौट

भाई है—चूड़ बिजय-समीप के साथ—

मैं छोड़ देता हूँ

भयकर वास्तविकता के अर्न्त समकालिक

रूपाकारों के आभास जो गलती से प्रकट होकर

कुछ नहीं के मूखतापूर्ण चेतना प्रदेशों में

छूट गये हैं

शून्य के बंद होते गन्ध छिद्र में लुप्त

होते हुए—‘रुको का पिछा जो चक्कर खाकर

भाँख के आकार में सामने ठहर जाता है—

मुझे भाँख मारता है और हम लुप्त हो जाते हैं। •

विरस-कविता ११



## हड्डियाँ • जैक केरुएक

मैंने

साफ साफ  
देखा

इस

सारे

व्यक्तित्व

प्रदर्शन

के नीचे छिपा बकास

मनुष्य

और उसके गर्व

का अन्त में

हड्डियाँ के सिवा

क्या शेष रहता है ?

राजोंपत उसके नृत्यों का

पीपे भर भर शराबों का

जो उसके गले से चतर गई

“हूँ हि यो”

कम में बह

सदता है

बीड़े उसे

छाते रहने हैं •

## आगामी युद्ध के बाद • मिकाएल होरोविज

क्यों हम घबस्त क़टर नगरो में मरें      क्या  
हम सितारे नहीं, जो एक सुन्दर अनन्त उद्यान  
बना सकें      क्याकि

तभी उड़ता पतंग ही भीनारों में लपटा घटियाँ देख सकती हैं  
जिन्हें कोई सुन नहीं सकता—सब आत्माएँ  
और मन नय सफाई साबुन से  
धुल चुके हैं—

नौटिंग हिल के  
तिमज़िने घर की बात है

पहली मजिल पर  
हर मेजेस्टीज सविस्त्र के  
कामकाजी लोग रहते थे  
जिन्हें बमों पर रोक लगाओ आन्दोलन से  
कुछ लेना दना नहीं

—अगर कबूत गई

तो इग्लैंड डूब जायगा—

वे सामोरी से अपना नाम घसा करते और  
ऊपर जाने हुए धरा भी किसी से छू गए  
तो कहते 'माफ़ काजियेगा

दूसरी मजिल पर  
तेरह निष्वासिन

सभी शक्ता आकारों और रंगों के हर वस्तु  
धार भचाने पात्रियाँ करते—और क्या भयकर संगीत  
जैसे हिस्पोरिया में पीड़ित हों  
बसा में उनके बगल में कोई बल्ला नहीं था  
वे सभी अपने लिए अपने साधियों, और पालतू जानवरों के लिए  
हमेशा कुछ न कुछ भाना देते रहते

ऐसी ही और भी बाह्यात बातें—  
 और आगिरी मजिस का यह दम्पति—  
 यह तो मुझे भ्राम पतिन है  
 —ये दोनों क्यों हूयेया ही भीतर बाहर  
 ऊपर नीचे बीच में घाते घाते रहते हैं—उनका  
 विशेषता से बेहू गहरा सबब है  
 जो सितारा के नीचे जमीन के ऊपर सब तरफ फैले हैं  
 नीचे बाते उनकी परवाह नहीं करते  
 सिर्फ जब सब उपहास कर लेते हैं—  
 पर जब उनके जीवन में हस्तक्षेप होना है  
 सब दुपटनाएँ शुरू होती हैं—  
 और अब तो बस गिर चुका है  
 जिसने सभी दिन ताड़ दिये हैं •

एड्रियन मिचेल

लॉर्ड होम जिन्हें ५००० पौंड मिलते हैं

लॉर्ड होम लॉर्ड होम जिनका आयताकार चेहरा है  
 जो सुंदर नहीं तो एकदम बप्सूख भी नहीं है  
 पर सपाट सपाट जैसे युग का एक आइना ।  
 और लॉर्ड होम का सपाट आयताकार चेहरा  
 सपाट आयताकार चेहरे वालों की सम्प्री परम्परा की छे उपज है  
 सुसंस्कृत उनके दर्जी ने कहा, बतुर कच्ची से  
 कीमती ढग से लॉर्ड होम के बढ़िया कपड़े बतलते हुए ।  
 अपार दीप्त उनकी शिखा पर रंग ढंग पर बहाई गई है—  
 योम्य परम्परा के योम्य वंशज ।  
 लॉर्ड होम लॉर्ड होम ने अपने आयताकार चेहरे का  
 मुह खोलना शुरू किया ।  
 मुह खुलने लगा खुलता रहा और पहले भाषा  
 फिर पूरा फिर जिसकुल ही खुल गया—

एक साफ़, फ्लोरोज़िन से पूर्ण, साई, जिसमें  
संकट के समय लोग बसेरा से सकते हैं।

इस साई से शब्द भ्रष्टाचार में निकलने शुरू हुए  
जिनका आशय यह हुआ कि भ्रष्टाचार बलिन को प्यार करते हैं—  
तुम्हें याद है वह शहर, जिसकी हर भूमि पर एक स्वस्तिक था  
जहाँ सभी सम्मान से रोने से यहूदी और यहूदी

उन्होंने कहा कि उस शहर से प्यार के लिए सभी भ्रष्टाचार  
भगुवन की राख में मिल जाने को तयार हैं  
पर उन्होंने कहा, पर भूलो मत उन्होंने कहा, पर, पर  
वे ऐसा करोगे नहीं।

लॉर्ड होम, लॉर्ड होम बामर हैं, मुर्गों बराबर भी जिनका कलेजा नहीं  
सपाट धूल भरे चेहरों की परम्परा के प्रयोग्य।  
मैं धूल हो जाना चाहता हूँ लोकनर प्रेमी स्वयं उद्योग की धूल।

मेरे शरीर का हर अणु टूटने को व्याकुल है।  
ध्वस तथा भस्मिकण्ड के बाद से मेरे सभी भ्रष्टाचार अणु  
उस स्थान पर देश भक्तिपूर्वक एकत्र होने लगे हैं जहाँ

पहल मेरा दिल उठते गिरते बादल देखा करता था।  
ध्वस और भस्मिकण्ड के बाद स अणुओं की सेना

जो पहले मेरे जीवन के बायों में काम आती थी  
अब उस पुरवा हवा की आतुर प्रतीक्षा कर रही है  
जो उसे लौह भावपूर्ण के पार उठा ले जाय

और मास्को पर तब तक बरसाये  
कब तक इस के बुरे भादमी और बुरे औरतें अपाहिज न हो जाय। ●

पख और पख • थोम्

वह पंख

हवा से उड़कर

मेरे पंखों पर आ गिरा

मैंने उसे उठाया देर तक देखता रहा

और गहरी उन्हासी से एक भाह भरी

इस पंख पर सफ़द पन्ने थे

मेरे क्रिय भाग्य का सूचक था यह पक्ष ? मेरी स्मृति प्रसी,  
 भासना ने झूठा निषा घोर इन्धिया विपन की मुशबुसी म  
 हुनने सर्पी वह पक्ष मेने अपनी जब म रण लिया  
 एक घाह भरकर घोर धौलें बंद करके  
 उसकी वानी भीगी त्वचा बमावम हो रही थी  
 मुने हूँ घाडा में मुदर दीन निवाई दे रहे थे और सफेरी  
 न विग गमार मोल जैस कुछ कह-मी रही थी ।  
 जब यह एक्षिया पर धूमी

उसकी छातिर्या गहवाई

और उसके शरीर में भरी शक्ति न उसे भुङ्कर भगवाई ला ।  
 वह देखता रहा दबता रहा बिना हिले धुपचाप  
 इस दृश्य ने उसे जकड़-सा लिया  
 हृदय म एक इच्छा उठी दूटे फूटे शब्दों में उसे  
 पास आने की कहा । वह उसकी वान में आ बठी  
 पर वह लग्न हो रहा एवदम धुप उस एकाकीपन से  
 दिया बिधा जो उसके नेत्रों की कोर में  
 दिया हुआ बठा था

वह प्रान-दृष्टि से देखता रही एक सकुचिन मुसकान  
 भवान ही उठी उसकी शक्ति स बचबर ।  
 एक धन्येगर पक्ष उसने सोचा यह बदा हलका  
 और कोमल है बडा पतला और धारिणीगर ।  
 किस बिधिया से दूटकर यह उठ घाया है कीन सी हवा  
 उसे यहाँ पहुँचा गई है  
 क्या वह इतना ही लोपा हुआ है बिना निवाई देता है और फिर  
 वह नुँ अपनी गहवाई में जाकर सो गया फिर भा "   
 उसकी त्वचा किन्ती कमजोर है  
 जैसे समुद्र की चट्टान हो  
 और दूसरी ओर देपर  
 वह भागत को सोचने लगा  
 यह धन्येगर पक्ष जिसने उसके भावों की भाँप लिया  
 और बुद्धि को स्तमित कर दिया त्वचा का यह कातापन

ऐसा मनोज्ञ और ऐसा सन्धा  
 बना यही वह गहवाई है जिसे वह सोचता है कि वह समझ पाया है ?  
 वह उम छू नहीं सका वह निविद्ध पक्ष था ।  
 एक ध्वेदार पक्ष मेरे पैरों के पास उड़ आया, मैंने उसे  
 एक आह भरकर अपनी जेब में रख लिया । •

## प्रतीक्षा • पाल = लैकवर्न

पृथ्वी मुड़ती है  
 शिथिल की सध्या की ओर  
 शीतल शारदाय प्रकार  
 (पृथ्वी धूमती रहता है,)

सार्वभौम के भरोवों की  
 भर रहा है मैं प्रकेला  
 विम्वर पर सेटा हूँ

उजले सूरज की गुलाबी रोशनी में रंगी  
 सफे दीवार के पार  
 एक मक्खी उड़ती है  
 दरवाजे तक भाती है  
 जगह जगह झूठी है  
 चुपचाप

मेरे अस्तित्व की भाड़ी बरू रेखाएँ  
 मेरे के इतर उबर मँडरा रही हैं  
 मुल्ल, धप धेवन, अर्धमत  
 मन की मित्रों से भर रहा हूँ •

## शब्द-जन्म • मंदर पंदोनिनस

एक गहराई

बिराट अंतर्क्रिया

शून्यता अपनी ही रिक्तता से भावोन्मत्त  
 प्रपंच अपनी ही स्वार्थता से पराजित  
 किसी छेद के लिए बेधेन

क्या संकट ?

महोत्सव

अपनी भूच्छता में प्रकटित—  
 बहुत दूर तक ।

कौन ?

खिलते हुए

रूपान्तर के अपने गुण में  
 उभरते हुए ।

समर्पित

अक्षर एकाग्रचित्त  
 निश्चय से समन्वित ।

धारणा

शुद्ध संगति से उत्पन्न ।  
 इच्छित नहीं, अनुभूत  
 घोषित नहीं स्वीकृत ।  
 आयामा में विस्तृत—  
 बाह्य अभिनन्दन ।

अद्विष्ट स्वतंत्रताओं में सुधारित,  
 समोद्भवित  
 प्राचीनताएँ विषदित ।

स्वभाव्यता से भी भ्रमर,  
 पूर्ण से अधिक  
 विनम्र । ●

मार्टिन सेमूरस्मिथ

एक इमारत के पास मिला खत

मेरे प्रिय

वैंग वेस्ट में बनती इस इमारत की बगल में  
 मैं नगा पड़ा हूँ । सुबह के १ बज कर ५ मिनट हुए हैं  
 बकी सड़ें हैं । कुछ मरे चारों ओर घिर रहा है संभो

की तरह । मुझे बहुत कुछ सोचना है खास तौर पर यह  
 कि मुबह होने पर मैं क्या करूंगा ?  
 यह सब मैं कोयले के टुकड़े से लिख रहा हूँ  
 एक मछे चिटे अक्षरवार के दागी टुकड़े पर  
 मुबह के धनधानते साइलन धजने से पहले  
 शायद यह तुम्हें मिल जाय । न भिने तो,  
 मेरे बारे में सोचना पर मेरा पता मत लगाना । ●

## युवती • सी • एच • सिसन

मटलान्टा सी बाबाईडोन तुम सड़क पर चलता हो ।  
 कुछ ही समय पहले तुम किसी की पुत्री थी,  
 अब इस झुंड की माँ हो ।

तुम्हारा एक हाथ एक छोटे बच्चे को पकड़े-है  
 दूसरा परा के पीछे एक और बच्चे के पीछे है  
 और हसती हुई तुम एक तीसरे के पीछे भाग रही हो ।

तुम्हारे स्वस्थ उदर में एक गुफा है  
 जिसमें से य इस सुगन्धित ससार में आये ।  
 वे पक्षियों की तरह हैं, पर तुम्हारी छाँवों पर  
 रेखाएँ खिंचने लगी हैं,  
 ओ शरीर तुमने अपनी सुगन्ध शय्या को दिया  
 उसे देखकर लठके अब सीढ़ियाँ नहीं बजाते ।

जल्द ही तुम समझ जाओगी कि आशा  
 जिसके पीछे अभी तुम भाग रही हो,  
 रूप में रखे पानी की तरह से जानी होती है ।  
 अन्ततः तुम इसे ऐसे ही पकड़ोगी  
 जब यह सब भाग-दौड़ ज्ञान मात्र में बदल जायगी  
 और उसकी खोटी-भोटी से तुम उल्टी हुई पादर हो जाओगी । ●





## यूरोप की कविताएँ

तीन फ्रेञ्च कविताएँ  
पाँच जर्मन कविताएँ  
एक ग्रीक कविता  
चार डच कविताएँ  
एक आइसलैण्ड कविता  
पाँच रशियन कविताएँ  
दो रुमानियन कविताएँ  
तीन स्पेनिश कविताएँ  
दो युगोस्लाव कविताएँ

•

फ्रांस

पियरे ज़िवेर्नो

पास मिलसन

जान्सेन ब्रूसेट

जर्मनी

बरतोस्त ब्रह्म

हेसमुट होसेन ब्रूटस

बनर रेडर

होस्ट सग

हंगरी काजमान

ग्रीस

ग्राइसलण्ड

तिगुरतुर ए० मनुसन

रूस

बोरिस पास्तरनाक

अग्रणी प्राधुनिक फ्रांस कवि ।

पेरिस रेडियो से सम्बद्ध रहे, नयी

पाठ्य के कवि एवं उपन्यासकार ।

अधुनातन अग्रणी कवि ।

(स्व०) विश्वविख्यात नाटककार,  
कुछ कविनाएँ मिलीं, बाँट म  
मानसवाणी हो गये ।

जन्म १६२१, कई कविता संग्रह  
प्रकाशित ।

अधुनातन कवि और विद्वान,  
काफ़ी पर बीसिस कुछ समय  
भारत में भी रहे ।

जन्म १६०४, रहस्यवादी तथा  
मौलिक तत्वों की अनुभूति के  
कवि ।

जन्म से वास्तविक महिला, कविता  
और कहानियाँ व दो सक्शन  
प्रकाशित कविता में युद्ध की तात्क  
अनुभूतियाँ हैं ।

प्रसिद्ध ग्रीक कवि एवं विद्वान ।

नयी पीढ़ी के अग्रणी कवि कुछ  
समय पूर्व ही भारत आये थे ।

(स्व०) नोबल पुरस्कार मिला और  
उससे बड़ी हमसफ़र मची, गीतों  
के कई संग्रह प्रकाशित काफ़ी  
अनुवाद काय किया । मान्योत्तर  
रूस के प्रमुख कवियों में एक ।

**महावीर भाग्यकोशकी :** (स्व०) ३७ वर्ष की आयु में भारत  
हत्या की, जिसका हस और यूरोप  
के साहित्य-मानस पर बड़ा असर  
पड़ा। स्त्री सन्ति और भविष्य  
वाच के प्रमुख कवि।

**ज्यान्नी इवानोव** (स्व ) हस त्याग कर फ्रांस में  
रहे धनास्था के कवि।

**एम्पनी एम्पुशोकी** युवक इसी कवि समेतिता धूम  
जुके भव क्यूवा में है।

**एलेक्सांडर सेलेनिन** पिता भी प्रमुख स्त्री कवि थे।  
**सोल्विन** ३८ वर्षीय नयी परम्परा के कवि,  
गणितज्ञ तथा दार्शनिक। जेलों में  
खूब रहे।

**स्पेन**

**गार्सिया लोर्का** (स्व ) पुरानी परम्परा के स्पेनी  
कवि फ्रांको के दसवालों ने हत्या  
कर दी। त्रिम्बियों, साह-मुद्रों,  
प्रेम झुला मृत्यु आदि पर  
खूब लिखा।

**एफ्रास मातबर्तो** पुरानी परम्परा से धारम्भ करके  
अति-व्यपार्यवाद तक निगते रहे  
हैं। स्पेनिश गृहयुद्ध के बाद  
अर्जेंटीना में रहने लगे।

**मिगुएल हरनान्देस** ३२ वर्ष की आयु में मृत्यु जेलों  
में रहे। बहुत सचित सरस और  
भावपूर्ण कविताएँ लिखी।

**यूगोस्लाविया**

**इवान इवानोवी** दूसरे महायुद्ध के समय के बन्दी  
शिविरों में रहे। दो कविता संग्रह  
और एक उपन्यास प्रकाशित।

**वेस्ना पस्न** ४१ वर्षीय प्रसिद्ध यूगोस्लावियन  
कविमित्री दो कविता संग्रह  
प्रकाशित।

## काला और सफेद • पियेर रिवेर्डी

इस सप के विशाल श्वेत वृक्ष को छोड़कर

और किसके समीप रहें

ने एक-एक बरफे

अपन सब हाथी-दाँत निकाल लिय है,

य बच्चे जो मरते हो नज़ा

इनके गुम्ब का लाभ हो क्या

यह बुढ़ा—

ये दाँत—

पर यह वही सपना नहीं था

जब उसे लगा कि वह ईश्वर के बराबर

बढ़ा हो गया है तब उसने

अपना धर्म बदल दिया और

अपना पुराना अचेरा घर भी छोड़ दिया

तब उसने नये जन्म खादे और

एक अलमारी खरीदी

पर वृक्ष के समान श्वेत समस्त शिर

साक्षियों पर पड़ी मामूला गैर

से अधिक कुछ भी नहीं रहा

दूर से गूँहिलती प्रतीत होती है,

इसके बगल में एक कुत्ता है

और यदि यह गूँह ही हो

तो इस रूप में यह कब तक हिलती रहेगी

कुछ पता ही नहीं चलता। •

## अस्थियों का मरसिया • पाल निलसन

धूल यह दोबाल की थी

इस कीर्ति सन्देश नहीं था

कि इसे उस गुण की अच्छी जानकारी थी

जब दीवारों के भी नान होत थे और  
नष्ट पम्पनिर्मा गलियारों में गूँजता था

कल शाम की गर्मी से भव भी परेशान  
स्मृति की राख के भीतर  
इतना चमक़ भभी वाली थी  
कि द्वारों के बीच खड़े भूता को  
प्रतीकों की रोशनी हर सजे — जो  
चाहे खाना खाते सोया की भाकृतियाँ हा  
मैड के नीचे जिनकी नाव डूब गई  
या फ़रानपरस्त का घरमा हो  
या संपद का भानरण हो  
या किसी मृत स्त्री के बात हा

नीम-हत्तीम का सब रोगनाशक पाउडर  
भी कुछ नहीं कर सका  
पर कोई पुरोहित की बात नहीं सुन सका  
भादमी राख ही होता है  
राख हा में वह मिल गया है  
उमके घर-जीवन में कुछ कभी-भी सगती ।  
कुछ ऐसा भभाव  
जो परवरों को भी पिपला दे  
पर राष्ट्रों की श्मशान भूमि में  
भव पत्थर भी रोप नहीं हैं

सारी दुनिया पुरी तरह  
जाने नहीं थी सुनी है । •

## तुम्हारे चारों ओर • ताँसेस हूँ सेट

तुम्हारे शरीर के चारों ओर  
पारदर्शी मांस वाली मछनियाँ हैं  
और नक्षत्र भन्नाओं का एक स्वर्ग

जिस घमकार गुप्त रूप से बाटता है  
सुम्बना के मध्य हम खेल रहा है

तुम्हारे स्तनों के चारों ओर  
दूध से भरी नस-नाडियाँ हैं  
बबूतर जिनका कोई नीह नहीं  
ओर फूलों के मिलने हुए गुच्छ  
तुम्हारे चरणों के साया में उगने हैं

तुम्हारे मुख के चारों ओर  
हँसी की फुहारा की दावन हैं  
कुतरे हुए फल के स्वाद से पूर्ण  
भयहीन शब्दों से युक्त  
जो शून्य से भी हलके हैं

तुम्हारी छाँवों के चारों ओर  
जवान सड़का के चेहरे हैं  
आँसुआ के नमक से मज्जित  
ओर तुम्हारे नयना के इपर उग  
फँसी सुगंधों से सुसज्जित

तुम्हारे स्तिर के चारों ओर  
तुम्हारे विविध सपने हैं  
वचन की निश्चित नीदें हैं  
जो अब कभी नहीं सोयगा  
हजारा तरह के विचार हैं  
जो जानते नहीं बिचर बायें  
छुशिया का टोप ओर  
मरे तुम्हें कहे शब्द हैं

जब भी मैं तुम्हें छूँगा हूँ  
तुम्हारे गले की बिजलिया के नीचे  
भस्कुटित पोस्तों का स्फुरण होता है •

## वेचारा वी वी • बरतोत्त मेरत

मैं बरतोत्त ब्रूख जाने जगला का निवासी हूँ ।  
 मो मुझे पट में लिये हो शहर घा गई थी ।  
 और जब तक मैं झड़ नहीं जाना  
 जगलों का शीत मुझमें प्रत्यग नही होगा ।

कोसनार के शहर में मैं खुश हो हूँ  
 शुरू से ही मैं मौन के सत्य प्रतीको में मुक्त हूँ  
 समाधारपत्रों से शराब और तम्बाकू से ।  
 सहेही और झालसा और बतन सतुष्ट ।

लोग मुझे पसन्द करने हैं । मैं उनकी  
 प्रथा के अनुसार बाउसर टोप लगाना हूँ ।  
 मैं कहता हूँ य वड़े तुस्ताचीं लोग हैं ।  
 पर कोई बात नहीं मैं खुश भी ऐसा ही हूँ ।

सुबह न रात मैं बभी बभी कुछ स्त्रिया को  
 अपनी रॉकिंग कुर्सिया पर बटाकर सुश सुश  
 उन्हें दबा करता हूँ और उनसे कहता हूँ  
 मैं ऐसा भादमी नहीं जिस पर तुम विरवास कर सको ।

शाम को मैं पुरुषों को अपने पास एकत्र करता हूँ ।  
 हम सब एक दूमेरे को 'धीमान्' से सम्बोधित करते हैं ।  
 वे मेरी मेज पर पर रखकर बैठते और कहते हैं  
 जल्द ही सब ठीक हो जायगा । पर अब यह मैं नहीं बूझना ।

सुबह की भुरी उपा में देखनार जगसी से हिलते और  
 पत्नी तथा उनके बच्चे रोने लगते हैं तब मैं  
 शहर में अपनी गिन्याम खत्म करता हूँ और सिगार  
 कककर चिन्तित मुँह में सोन बसा जाता हूँ ।

इन नगरों से जा मुड़ता हूँ वही राय रद्दगा—धानी हवा ।  
 लोग घर में खुश रहकर भी उसे धापी कर जाते हैं ।

हम पना है कि हम भूमिका मात्र हैं और हमारा दाँ  
यहाँ जा वस्तु प्रापगी—बल् उत्सखनीय नहीं होगा ।

प्रापगी भूचाला में मुझे आशा है कि तबो  
के कारण मैं प्रापगी सिगरट नहीं फूँकू गा—  
मैं बरतोन्य बदन का न जगला स बहुत समय पूष  
माँ के पेट में रहन हुए हा कावनार के नगरा में फँका हुआ । •

## दुकड़ा • इलमुट हीसेनवूटल

दिनिज सभी गोल हैं ।  
घरती की सपाट चक्का पर  
मैं दूरस्थ घण्टापरा की ध्वनियाँ हूँ ।

रेडियो बज्जा है  
स्वाधानता असम्भव वस्तु है  
फिर एक रिकार्ड  
मर्नाड शाएनवर्ग का प्रोब्लेम स्ट्रिंग क्वार्टेट ।

मूरज मेरी जेल कोठरी से दूर है ।  
हवा में तरती  
शहर की रेला की गडगडाहट  
बड़ी मोठी लगती है ।

अप्राप्य की निराश और कुण्ठित चुपाए ।  
जान के अनेक समय  
माने का कोई नहीं । •



## ओठों पर पवन • धनर रेफेल

घाँटा पर पवन  
छाया देती है  
झगते दरवाजे का  
झाड़ने में मिटाती है  
राता के साथ  
गङ्गा पर नल करती है  
गोपन की नामहीनता की  
उठछो है सहरोँ में  
दम्पति की लय में  
पढ़ें में  
स्वीटन समय में सम्मुख । •

## रात्रि संगीत • होस्ट लैंग

अब आँखों तरह सोभो निगा से एकरूप होकर  
दिन को भूल जाओ, तारीफ से उतर जाओ,  
घान् घोर तारों के रस को हृदय में समाने दो  
आरहीन शीतल और शुभ बन जाओ ।

सगर पतवारहीन यह नाव—  
रक्त-भरे सपना से किसल छिमल जाओ,  
बाजा छूफाना से मुक्त आसमान को महसूस करने को  
पेड़ों के भागे छुपचाप सट जाओ ।

मय की गगाओ, लोगो को भूल जाओ  
अभाव के छोटे नंगे बच्चे बन जाओ  
गाँ करो उन सक्त हाथों का जिनमें एक दिन  
घरती के गर्भ से तुम निकले गये थे ।

अंधेरे की पर्तों में सतरे भरे हैं  
छिपे रहो हृष्ट को नष्ट कर दो  
ससाहीन कर दो छुपचाप छु की—  
अभी तुम जीवन के विनाश और मृत्यु से अजनबी हो । •

## दोपहर को • श्मशान भ्रम

गर्मी के दिन में

जब नींद के वृक्ष पुष्पाप फूलते हैं  
नगरा में दूर दिन का एक क्षण  
रोशनी की पीली निराला बिखेरता है  
दोपहर हो गई है,

धूप फव्वारे में तर रही है  
मलब के ढेर पर शमशान का पत्ता कोनिकस  
अपन पादाग्रस्त पक्ष खालता है  
और पत्थर फटने के कारण विह्वल हाथ  
उगते शमशान में डूब जाता है ।

जहाँ जन्म शमशान घरती को कासा कर रहा है  
एक निरह्वान दबदब भानवी धृष्टा की कन्नू डूबने में लगा है  
यह उस हृदय की कुँजी खोज जाता है ।

दूर का एक ठंढा पहाड़ी के पार जाकर खा गया है ।

सात सात बार

तुम्हारे पुराने विचार वही तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं—  
फाटक के सामने लगे फव्वारे पर  
समान मज धूरी मज धूरी  
तुम्हारी धार्मिक श्रद्धा में डूब जायगी ।

सात सात बार

उस घर में जहाँ मुझे पड़े हैं  
कल के जन्म सात के प्याना में  
शराबों पा रहे हैं  
पर तुम्हारी धार्मिक श्रद्धा में डूब जायगी है  
दोपहर हो गई है

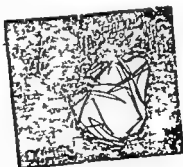
रात के भीतर

साहा तहप रहा है झण्डे काँटा पर  
 नटक है और आन्ध्र सपनों की  
 घटान जजीरा में जकड़े  
 गदह को उठाये हैं ।

रोरानी में धँसी आया भय से काँप रहा है ।

उसकी जंजीरें उतारो उस स्तूप से  
 नीचे लाओ उसकी मान्य  
 अपने हाथों से डक दो  
 कि कोई भी परछाई उस पाक़िन न करे ।

जहाँ जमन घरती आसमान को बाला किये है  
 बाल शला का पीछा कर रहे हैं  
 खोहा को मौन से भरते हुए  
 ग्रीष्म के उह हवकी वर्षा में मुग पान में पूर्व ।  
 जा कथनीय नहीं वह भूमि पर घूम फिर रहा है  
 फुसफुसान में व्यक्त होता  
 दोपहर हो गई है । •



# कवि • रेम्को कैम्पर्ट

पूरा तोपखाना  
एक हाथ में लिय  
घातनाशों से भूजन  
मान धानमान के नीचे  
में बहा रहा ।

एक खाली दीवाल पर  
सामो न लिखा  
स का 'ट'  
काई मरकर मधुरा नहा था ।

उन्हें मरी धाँकों पर विश्वास नहा रण  
मरी दृष्टि पर मरोसा छोड़कर  
उन्होंने मुझे एक घर में भेज दिया

एक घर में, जहाँ दाँत सब रह थे,  
जा चारों तरफ पानी से घिरा था  
पर जिसकी चिमनी बिड़िया से भरी  
एक पुरानी हूँजी हुई चिमनी  
जा बिड़िया से जीवित थी ।

जिसका एक दीवाल सफ़ेद थी  
फिर जहाँ एक नाव भी आ गई  
घर घर जान के लिए ।

उन्होंने मुझे घर भेज दिया  
एक हाथ में  
घातनाशों भरा पैना  
और दूसरे में  
पूरा तोपखाना देकर । •

## सूर्य • गेरिड आशटर्भर्ग

सूर्य में आरम्भ होती है मौन  
 आरम्भ होती है एक प्यारा निवाना खेतें हुए  
 वधन तोड़ गम खेतों पर दीहती हुई धूप ।  
 नदी सड़का पर अपने पवित्र पाँवा से जाने हैं हम  
 उस सर्वशक्तिमान ने हम विच्छेदिन किया  
 भीर कही पराजय मही गई है ।  
 अपना रक्त—काने सूर्यो व साय निवान को हर मौ  
 स्वच्छिन्त है  
 हमारे रक्त काणो से उछकर  
 ओ वसन्त—सूर्य नशे में चूर दीहता है वन्धन-मुक्त । •

## पिता के लिए • हंस छोडइजिन

पिता हम रहे साथ  
 धीमी बजती रेखों में फूला बिना  
 वे राते फेकती थी हस्तावरणों की तरह  
 पिता हम रहे साथ  
 उस अवकार में भी पिता  
 जब तक पिट नहीं गये हम चुप में—  
 अब तुम गये कहीं—किधर घुड़सवारी में  
 एक हरी कार—ठण्डी छोटी हवा में  
 अबवा नि ने नहीं उतारे अपने हस्तावरण  
 सम मेज पर जहाँ रोशनी की लकीरें  
 मुलायम आरामवेदी का आगमन निरिधत है ।  
 मेरे छोठ  
 मेरे नाबुक्त छोठ वन्द है •

## एक लड़की • आत्रियाँ मोरिअन

मेर धन्तर है मेरा रक्त भा ध्वनि हीन  
जावन को दोबाय रखने के लिए  
मेरे मयभीत हाथ  
मेरी गीत—नज्मा से प्रताडित  
सकुचित और चकित ।  
मेर हिमपिण्ड छाटे हैं—उन्हें आवृत्त करन  
मैं पहनती हूँ गीतमय रेशम अपन प्रन्दर  
ओ मेरे समय  
छोड़ दो मुझे इस अज्ञानबोध और यौवन के मोद म  
मैं बहुत छोटी हूँ  
सधुतम ... । ●

## एक वट्टे की मौत पर • मॉरिस गिल्डिबाम्स

हमारी संभुनियाँ जुदा है ।  
क्रौंस के नीचे  
तुम्हारे भवे बाण सो रहे हैं ।  
अपनी छाँसों की स्मृति में  
एक बार फिर पहुँचते हैं तुम्हारे पास ।  
स्वप्न से अग्निक  
बाने जिता म और हमारे कावों में  
एक अग्नेवी क्रिया  
नि—तुम्हें ले लिया गया है । ●

रुद्र चरितार्थों के अनुवादक गंगाप्रसाद विमल

आत्मलोक को एक कविता

? • सिगुरदुर ए० मैग्नुसन

समय के पीछे

जिम्मे मुझे माँ के गम से निकाला

कौन मुझे हाथ में बमकर पकड़े है

समय के पीछे

प्राण यह है

कुण्डली सर्प सेव के साथ •

## गाव • बोरिस पत्नरनाक

शोर धम गया है । मैं रगमच पर आ गया हूँ ।  
द्वार के चौखटे पर झुककर  
मैं मुहूर ध्वनि में यह मुनने की चेष्टा करता हूँ  
कि मेरे जीवन में क्या क्या घटेगा ।

हज़ारा भपिरा-वज़मा से रात्रि का  
सर्वप्रायी अंधेरा मेरे ऊपर कन्द्रित हो रहा है ।  
अन्धा पिता अगर यह सम्भव हो तो  
यह प्याला मेरे सामने स हटा ला ।

तुम्हारा यह कठोर नाटक मुझे पसन्द है  
और मैं यह अभिनय करता सन्तुष्ट भी हूँ ।  
पर यह दूसरा नाटक शुरू हो रहा है,  
इसमें मुझे अपनी इच्छा कर लेने दो ।

हरया का क्रम निश्चित हो चुका है  
और मार्ग का अंत भी सुनिश्चित है ।  
मैं अकेला हूँ, सब हूँ जा रहा है ।  
जिन्गी में चला मगान में चला नहीं है । •

## व्लाडीमीर मायकोत्स्की

### तुम्हारा ख्याल है तुम कर सकते हो ?

सहसा मैंने राजमरी क नकशे को समुद्री लहरों पर दे मारा  
और गिलास के भीतर से रंगा के इद्रघनुष इधर उधर छिन्नयन ।  
जिनटीन की तश्तरी से मैंने निकाली  
समुद्र के गाला की तिरछी तिरछी हड्डियाँ ।  
नन्ही एक मछली के पंखों में  
मैंने नय ओठों की धाकाचाए पक़ीं ।  
और तुम,  
क्या तुम पाना के नला की बाँसुरा पर  
स्वप्न-संगीत बजा सकते हो ? •



## उपयोग • क्यार्जी इमानोथ

धमानवी भाव्य से क्या  
सक किया जा सकता है ? क्या कुछ  
किया जा सकता है ? सब घोवा है ।

पर इस उदास नीली शाम पर  
सभी भी मेरा राज्य है ।

घौर घाघमान शाखों के बीच  
साल किनारों पर मोतिया ---  
जामुनी आदिया में बोवस गा रही है  
घास पर एक बीटो बस रही है  
शायद किसी को इसका उपयोग हो ।

शायद इसी तथ्य का कुछ उपयोग हा  
कि मैं हवा में सांस ले रहा हूँ  
कि मेरा भोवरकोट बायी तरफ  
सूर्यास्त की रोशनी में नहा रहा है  
और बायी तरफ सितारों में डूबा जा रहा है । •

## बावी चार • एब्जेनी एन्डुरोंको

बावी चार किएव (कस्त) के बहर एक लड़का नाम है  
जहाँ नाजियो ने ७० हजार मछियों को जीवित  
मार काया था ।

●●

यहाँ कोई स्मारक नहीं खड़ा है ।  
मुझे डर लग रहा है ।

आज मेरी उम्र उतनी हो गई है  
जितनी सम्पूर्ण यहुनी जाति की है  
मैं सब भगने को देवता हूँ  
यहुनी हूँ मैं ।

बर्न में प्राचीन मित्र के मध्य में गुजरता हूँ ।  
 यहाँ में मारा गया हूँ काम पर चढ़ाया गया हूँ  
 और आज निम्न तक कीलों के घाव शरीर पर लिये हैं ।  
 मैं अपना बे

दुःख के रूप में देवता हूँ ।  
 यह फिलिस्तीनी भेनिया भी है, न्यायावीर भी है ।  
 मैं सौम्या के भानर हूँ ।

घिर गया हूँ ।  
 लोग मुझ पर परवर बरसा रहे हैं गालियाँ दे रहे हैं धूँक रहे हैं ।  
 आत्मार करता क्षिया

मर बैठे पर पट्टियाँ बाँच रही हैं ।  
 तब मैं अपना को देखता हूँ—

बियालिन्टाक का एक नौजवान लम्बा ।  
 खून बह रहा है, धरती भीग गई है ।

बार-बार के उपद्रवी लफंगे  
 जिनमें बोहका और प्याड की धू निकल रहा है—  
 असहाय मुझ एक बूट ठाकर से परे डाल देता है ।  
 इसर व शार कर रहे हैं

“यहूजिया को मारो हम जितना चाहें ।”  
 उधर एक दुकानदार मरा माँ का मार रहा है ।

ओ मेरे रूमा भाइया ।

मैं जानता हूँ  
 तुम प्रकृति से

अन्तरङ्गिय हो ।  
 परन्तु जिनके हाथ साफ नहीं रहे  
 वे अम्पर तुम्हाग पावन नाम संत हैं ।  
 मैं अपना देश की अछूता जानता हूँ ।  
 वेम दुष्ट हैं ये समान्ट विरोधा  
 जो बिना सकोच के अपने को  
 ‘रूसी जातीय सघटन’† कहकर पुकारते हैं ।

---

† एक संस्था जिसने ज़ार युग में यहूजियों का नाश कराया ।

## उपयोग • ज्याजी इथानोय

ममानवी भाष्य से नया  
सर्व किया जा सकता है ? क्या मुद्द  
किया जा सकता है ? सब घोवा है ।

पर इस जन्म नीली शाम पर  
झरो भी मेरा राज्य है ।

और भासमान छात्रों के बीच  
साल बितारों पर मोलिया ---  
जामुनी छाटियों में बोयल गा रही है,  
शाम पर एक खोटी चल रही है  
शायद किसी को इसका उपयोग हो ।

शायद इसी तथ्य का कुछ उपयोग हा  
कि मैं हवा में सांस ले रहा हूँ  
कि मेरा मोवरकोट बायीं तरफ  
सूर्यास्त की रोशनी में नहा रहा है  
और दाया तरफ सितारों में डूबा जा रहा है । •

## बाबी थार • एन्जेनी एन्डुशेंको

बाबी थार कियत (कत्त) के बाहर एक बच्चा का नाम है  
जहाँ नाजियो ने ७ हजार दहसियों को जिवित  
मार काया था ।

●●

यहाँ कोई स्मारक नहीं खड़ा है ।  
मुझे डर लग रहा है ।

भाज मेरे उम्र जतनी हो गई है  
जिनकी सम्पूर्ण यहुनी जाति की है  
मेरे सब अपने को देवता हैं  
यहुनी हैं मैं ।

यहाँ मैं प्राचीन मित्र के मध्य स गुजरता हूँ ।  
यहाँ मैं मारा गया हूँ आस पर चढ़ाया गया हूँ  
और आज दिन तक कीलों के पाव शरीर पर लिये हूँ ।  
मैं अपने को

इ कम के रूप में देवता हूँ ।  
यह पितृस्तीनी भेलिया भी है 'यायाघोरा भी है ।  
मैं सीविचा के भीतर हूँ ।

घिर गया हूँ ।  
लोग मुझ पर पत्थर बरसा रहे हैं गालियाँ दे रहे हैं धुँक रहे हैं ।  
बालार करता जियाँ

मेरे चेहरे पर पट्टियाँ बाँध रखी हैं ।  
तब मैं अपने को देवता हूँ—

बियालिनटाक का एक नौजवान लम्बा ।  
खून बह रहा है धरती भीग गई है ।

बार-बार के उपरवी सफ़े  
जिनसे बोडका और प्याज की बू निकल रहा है—  
अमहाय, मुझे एक बूट ठाकर से घरे डान देना है ।  
इधर व शार कर रहे हैं

"यहून्विया को मारा कम जिन्नावा" ।  
उपर एन बुकानगर मेरी माँ को मार रहा है ।  
या मेरे रूसा भाइया !

मैं जानता हूँ  
तुम प्रकृति स

अन्तराष्ट्रीय हो ।  
परन्तु जिनका हाथ ताक नहीं रहे  
वे अन्तर तुम्हारा पावन नाम लत हैं ।  
मैं अपने दश की श्रुति जानता हूँ ।  
कैन बुष्ट हैं य मैंमाट विरोधी  
जा बिना सकोच के अपने को  
रूसी जातीय संपटन† कटकर पुकारते हैं ।

† एक सभ्या जिसने जार युग में यहून्विया का नाश कराया ।

मैं अपने को देखता हूँ

एक फ्रैंक के रूप में,

वसन्त की शाख सा कोमल ।

मैं प्यार करता हूँ ।

भारी मरनम शब्दों की मुझे ज़रूरत नहीं है ।

मेरी ज़रूरत है

कि हम एक दूसरे को समझे ।

हम कितना कम देख

या सूँघ सकते हैं ।

पत्तियों हम मना है

आकाश मना है

फिर भी हम यह सब कर सकते हैं—

मानियन

अन्धेर कमरे में कोमलतापूर्वक ।

वे यहाँ आ रहे हैं ?

डरो नहीं ।

यह आकाश तो वसन्त की हा है

वसन्त यहाँ आ रहा है ।

तो मेरे पास आओ ।

जल्दी से अपने मोठ दो ।

क्या वे नीचे द्वार तोड़ रहे हैं ?

नहीं यह तो बर्फ टूट रही है

बागी चार पर जगली घास लहरा रही है ।

बुद्ध बड़े अमंगलसूचक लग रहे हैं

मानो ग्यायापीय हा ।

यहाँ सब वस्तुएँ मौन रोमन कर रही हैं

और अपना सिर सोल लेने पर

मैं अनुभव करता हूँ कि

मेरे ध्यान सफेद हुए जा रहे हैं ।

घोर में शुद्ध

यहाँ गड़े हज़ारों हज़ारों के ऊपर

एक गहरे, ध्वनिहीन, रोदन से व्याकुल हूँ—

मैं वह वृद्ध हर हूँ  
 जिस यहाँ गोली लगी  
 वह हर वानक हूँ  
 जिसे यहाँ गोली लगी ।  
 मरी सत्ता यह सब  
 कभी नहीं भूलगी ।  
 गरजन दो  
 अन्तराष्ट्रीयता को  
 जब तक इस धरती का  
 एक एक सेमण्ट विरोधी न मर जाए ।  
 अपन आमुरी क्रोध में  
 सब सेमण्ट विरोधियों को  
 मुल्हन घृणा करन दो  
 जस में घृणा ही हाऊँ ।  
 और 'सी कारण  
 मैं सच्चा रुसा हूँ । •

## कौशा • अलेक्जान्दर येसेनिन-ग्रोत्पिन

एक रात आतक के तिनों म मैं घोंमस मोर को पड रहा था  
 कि कहीं यूरोपिया की उपेक्षा मरे ही सिर न मट्टी जाय  
 उसक लम्बे उवानेवाल बिबरणों में मैं बूढ़ रहा था  
 युद्ध मुक्त देशा म आवासी के लिए कम क्रिय जाने का समथन  
 'क्याकि इस' -- 'जसी आवासी के लिए युद्ध की जरूरत नहीं होती  
 क्या थामस मार गहरी बात कहता है ?

और मैं उस राष्ट्र के बारे मे सोचता रहा, जहाँ  
 स्वतंत्रता अपमानित होखी है  
 सहमा द्वार पर घाट हई नोन घाया है इतनी रात का ?  
 शका और दुख स भरकर मैं चिन्ता उठा, 'यद् दास्त नहीं हो सकता  
 मर सब दोन्त जेतों में बन्द हैं -- जरूर कोई धोर होगा ।

उल्लसित भाषा से मैंने पुकारा वार भाषा भीतर जाओ ।

पर भाषाज आई काँव काँव 'फिर नही ।

समझ गया । यह वह पुगतन बीमा था । जल्दा से  
मैंने बिडवा सोनी और परिचित महान कौण को सामन देखा ।  
बेसब्री से भीतर घुमकर उसने परीक्षा का दृष्टि चारा बार छात्रा  
हडबडाकर मैंने उससे कहा, तुम जमीन पर हा बैठ जाओ,  
इस घर में मजबूत कुर्सी नहीं है कृपया जमीन पर ही बैठ जाओ ।  
जमीन ही है और कुछ नही ।

कुछ विस्मय-मा कुछ हठ-सा वह जमीन पर बैठ गया  
सभी परते खुल गये मेरे पाम किनावा बहुत है  
फडफडाकर उसने उन्हें देखा और अपनी कानी शकल  
सामन करके भाव मिचकाई और मोर शीर्षक पर बाव मारी  
सहसा उत्तजित । वह 'मोर पर बाव मारता ही रहा  
और काँव काँव कर बोला यह नही ।

मैं बकित रह गया । बोला ऊपर बैठे तुम मेरे साधकता की  
ऐसे कठोर शष्पा में मत्तना क्या करते हो मायावी पत्नी  
एतना छोकर अपने मन की बात भाषा तो कहो जैसे  
तुम्हारी खाई को पार करू ? मैं डरता रहा हूँ कि इससे पहले  
अष्ट चना में ऐसी खाईयाँ और भी अनेक बन चुकी हैं  
पर वह बोला काँव काँव फिर नहीं ।

काँवे ओ काँवे समय यह सनिका को चाहता है, कवि को नहीं ।  
तुम शायद हमारे मतभेदों का अच्छी तरह समझ नहीं सकते ।  
क्या पता इस युग की हमारे सजायों के विषय में जल की प्रतिभाएँ  
क्या लिखें, नयी कृतिमा का मुकुट लोकवाता का अनुरूपयोग  
और शायद हमारी कल्पित वार्ता को ही विषय बनाया जाय ।  
पर कौवा बोला काँव काँव, नहीं नहीं ।

ओ पण्डित तुम सामान्य पत्नी नहीं, क्या ऐसा विदेश कोई नहीं  
जहाँ जना पर स्वतंत्र विचार अवसर न होता हो ? क्या मैं  
ऐसे देश में अग्र हो तो कभी पढ़ूँ सकेगा और मार नहीं जाऊँगा ?

पाद म या नीतरलैंड म, क्या मैं ययापवानी और रोमांसवाण  
आवे को पुरानन समस्या का क्या निरुप्य कर सकू गा ?

पर कौवा यही बोला कभी नहीं ।

नही नही ।' कोणा बोलता रहा 'एसा दश समुद्र के पार है

तभा सहसा दा सलिक मोतर घुस आय साय म चौकीनार निय

मैंने उनका स्वागत नही किया, बल्कि मुख पर घूट दिया,

और कौवा गम्भीर कौवा, काँव काँव करता रहा, नही नही ।

फिर नही । और अब मैं भा टेना घसीटना कहना हूँ 'फिर नही ।

अब फिर उठना नही है कभी नही ।●



## आखिरी कविता • ची० उद्योतिया

जिसे कोई नहीं जानता उसे भूलने के लिए मुझे शराब पीना चाहिए,  
गहरे गान्धाम में छिपा कुछ भी न झेलना मैं वहाँ बहूँ या  
घुसपान करूँ या और अपने घाव से भी तुम हाँ जाऊँगा  
शायद दुनिया से बचने का और कोई उपाय नहीं है ।

खिन्ना को मर्का पर चिल्लाने और मौन को  
पटखिया पर बचने दो सूर्या म कष्ट का भकेला छोड़ दो पाम म  
शुजरती मुझी कविता को शोकगीत निस्तन के लिए ।

जानता हूँ

स्वप्न की मृच बाप्ती नहीं है

स्वप्न की रचना के लिए,

मेरे ऊपर की बारिश नूफान और धोव

मर समय व इतिहास का अन्त हावे ।

साग कहते हैं कि दुनिया मेरा इन्तजार कर रहा है ।

प्यार करने का पर मुझे शक है,

प्यार सग हीपक्षीय होता है । यह मैं जान सका

उन्ही की तरह कहकर आम्हो महान् भविष्य मेरे पाम आम्हो ।

लेन्तिन मैं जिसे कोई नहीं जानता उसे भूल जान की छुटी चारूँगा

अपन अपराधा की माफा मागना और उनकी भी

जो मुझे सड़क के दूसरी पार से देख रह हैं उनक घाग मे

भसना का कोई शक नहीं निवन्ता । वे उगमी से मुस्कराने हैं

'शायद' दुनिया से बचने का और कोई उपाय नहीं है ? •

माग्दा इसानोस

यदि न्यायपूर्वक वाट लिया होता

ऊपर के पहाने के दरों म

मैं विनाशित हुआ रहता हूँ

मरा सिर बट्टानों स मिटना जुता है  
जो शिखरों की प्रशंसा स भूज रहे हैं  
शिखर जिन्ह में कभी छू न सकूँ गा  
न जो कभी प्रकाशित हो होंगे ।

यदि इस ससार का सब दर्  
मयपूवक बाँट लिया गया होता  
कुछ दुःख तुम्हारे लिए कुछ मरे लिए  
तो मैं इस ज़बानी स न मरता ।  
और भी काफ़ी समय तक मैं  
सूर्य और हरियाली का धामन ने पाता  
और भी काफ़ी समय तक मैं  
बना और वृक्षा के बाघा पर गीत गाता  
कितने उद्यान सूट जाने को रोये हैं  
मैं सेवा सतरों और फूला की  
गोराइयों को अच्छे तरह नाप सकता ।

यदि इस समर का सब दर्  
यापूवक बाँट लिया गया होता  
तो और भी कुछ समय तक मैं  
खेता की रोशनी को काट सकता ।  
लेकिन मैं अपने दोस्त को पुकारूँ  
जो मुझे इन पहाड़ों की सुइयों ला दे  
ऊँचे आसमान स हवाओं के पास  
जा मेरे सिर के पास बलने को आती हैं,  
गहरिया की चुपचाप जनती अग्नि के पास ।  
दिगी ! कुछ के लिए तुम पकवाना मरा मेज  
होती हो मरे लिए चाँदे की सल्ल सगाम  
जो बेकाबू इमर उपर दीठता फिरता है ।  
तुममें खुशी का या डर का कोई, सतुलन नहा है  
मैं तुमस मिलता हूँ, दुख पाता हूँ, छोड़ देता हूँ नून जाता हूँ ।●

सोन इंदिय कजितपे

**आत्महत्या • गार्सिया लोर्का**  
( जो इतलिय हई कि तुम अपनी जयामिति नहीं जयने से )

बच्चा घेतना खा रहा था ।

मुक्क के दस घण रहे थे ।

जसका हृन्ध भर उठा था

हूटे डना, मुरमाये फूना से ।

उन सगा कि उसक मुख म

तक हो शय्य शेष रहा है ।

जस उसने दस्ताने उतारे

कीमता राख उसके हाथा से गिरी ।

खिड़का से एक मीनार जिझाई देती थी ।

उमने घुट को खिड़की और मीनार अनुभव किया ।

उमने ये वा कि सामने रखी घड़ी

स्विर दृष्ट से उस तक रहा है ।

मिस्त्र के सफेद दीवान पर

उमने अपनी शीत लेटी छाया दबी ।

जगोर जयामितिक बानक न

हथीके से भाईना चूर चूर कर डाला ।

उनक हूटते ही छाया की एक बड़ी चार

घबकाय विग्रामघर पर हमला करने लगी । •

**दुराशका • रफाएल आल्वेर्तो**

तुम्हारे पीछे बधा न पास,

कोई अपने शब्दा से

तुम्हारे नत्रा को बाँध रहा है ।

तुम्हारे पीछे, शरीर-हीन

आत्माह्वान ।

सपन म धुए से भरी आवाज  
जो टूट जाती है ।

धुए स भरी आवाज  
जो टूट जाती है ।

अपन शब्द स, मूटे करोना से ।

अधे बनकर मृत्यु के साथ बनने  
मोने की सुरग स

जिमम काले शीरो जडे हैं  
तुम एच गली में घुसने हो ।

गली म तुम खुद ही  
अपनी मोत से मिलते हो ।

और कोई तुम्हारे पीछे कपा के पास  
जहाँ भी तुम जाओ । ●

साँड की तरह • मिगुएल हरनादेज

साँड की तरह मैं शोक और दुख के लिए  
पग डूबा साँड की तरह मैं अपनी बगल म  
नारकीय चिह्न से अंकित हूँ और मनुष्य के  
रूप म अपनी नाँवा में एक राज से ।

साँड की तरह मैं अपना अमाप हृदय  
दहन छोटा पाता हूँ और खु बनयुक्त  
प्र म के समझ में तुम्हारे प्र म के लिए  
साँड की तरह युद्ध करता हूँ ।

साँड की तरह मैं दह स बढ़ता हूँ  
मरी जिह्वा मेरे हृदय में नहाई हुई है,  
मरा ग न पर सबन पछुमा हवा बसती है ।

साँड की तरह मैं तुम्हें भगाता और तुम्हारा  
अनुगमन करता हूँ तुम मेरी आवाज  
साँड को चिढ़ाने की तरह, सत्वार पर रख दो । ●

दो गुगुस्ताव कफितार

## रेलगाड़ी • श्वान श्वाननी

कोन जानता है कोई कहीं और क्या जाता है  
कब कबे और किसके साथ वह मिल जायगा ?  
सभी यह मदन आशा के मध्य  
अपनी अममम्य यात्रा में  
बिना कही पहुँच, गुजरते रहते हैं ।

और सभी यह पाने हैं कि  
शहरों में स्टेशनों पर और गाँवों में स्टॉपों पर  
उनकी प्रतीक्षा करने वाला भाव्य संघा हा है  
( क्योंकि कुछ को ज्यादा और कुछ को कम मिलता है )

शायद एकाप मिनिट के लिए  
गाड़ी बंदी रहेगी और य कोई नहीं जानता  
कि यह चलना क्या नहीं है ?  
फिर चलन पर यात्रा अपने मनः का अनुमान करता है  
पर उनी स्टेशन पर कभी दर हो जाती है । •

## साया मे चेहरा • बेस्ना पसन

यद्यपि मुझे उसका नाम याद नहीं है  
पर मैं जानती हूँ  
कि पक्षियों को वह बहुत प्रिय था  
और मेरी आँखों में  
उसकी मोठी मुस्मान उतर-उतर आती है

चारों तरफ लोग घन फिर रहे हैं  
पर मैं अपना मुँह नहीं मोटती  
क्योंकि मैं पुराने सपनों की  
आवाजों में हूँ डूबी हुई

समुद्र पक्षी भी अपने मृत मित्र को भ्रूस छुका है  
 तो तुम्हीं क्यों घोर करती हो ?  
 पक्षी पहाड़ पर दन अपने घोंसल का भ्रूस छुका है  
 उत्तर और दक्षिण अब उस समझ नहीं पड़त

समुद्र अभी भी अज्ञात है  
 पर मैं परदा गिराया नहीं है  
 मैं रक्षा माँगती हूँ नुक़ीत वृषों व दह से  
 समुन्ने गहराइयों के भय से । ●





## लैटिन अमेरिकन कविता

चार मेक्सिकन कविताएँ  
दो क्यूबियन कविता  
पेरू की एक कविता  
इक्वेडोर की एक कविता  
गुयाना की एक कविता  
ब्राजील की एक कविता  
अर्जेंटीना की तीन कविताएँ  
चिली की दो कविताएँ

•



## मक्सिमवो

आस्टावियो पाञ्च मशहूरी मक्सिमवोन कवि धीरे विचारक इटली में राजदूत रहे । अब भारत में राजदूत हैं ।  
 एनरोऊ गोंज़ालेज़ माटोनेज़ (स्व०) पुरानी पाकी न होने पर भी नयी पीढ़ी के कवया स भागे । गहन धौदिक कवि साए लिबी ।

सुई करनूवा स्पेन छोड़कर मक्सिमो में रहने लगे । कविता पर पर्याप्त यूरोपीय प्रभाव ।

अविपर विसोसगिया (स्व०) कवि, नाटककार अनुवादक, समरिबी कविता से प्रभावित ।

## क्यूवा

रेने एरिआ क्यूवा के युवक कवियों में अग्रणी ।

इसत रिवियरो नयी पीढ़ी के प्रमुख कवि ।

## पेरू

सेखार पलेसी (स्व०) प्रसिद्ध कवि राजनीतिज्ञ । फ्रांस् शक्तियों में प्रभावित फ्रांस में हा ४२ वर्ष की अवस्था में मृत्यु ।

## इक्वेडोर

जोर्ज कदेरा अन्नादे इक्वेडोर के प्रसिद्ध कवि दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं ।

## युगुये

मूलियो हरेरा में रीसिंग (स्व०) उत्तर स्पेन की लैण्ड-स्वैप सम्प्रदाय कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हुईं यद्यपि वहाँ कभी नहीं गयी ।

## ब्राजील

मानुएल गादेरा

भावुनिकतावाण कवियों में  
अग्रणी, कई संग्रह प्रकाशित ।

## अज़र्बैजाना

आँख खुई खोरेओख

घातकपूर्ण कहानियों के कारण  
पिछले दो दशों में बहुत प्रसिद्ध  
हो चुके हैं । कविताएँ कम  
ही लिखी ।

रिकाशो ई० मोसोनारी

अज़र्बैजाना की खुना विस्तृत  
भूमि नष्टिया व पहाड़ों के  
कवि । पुराने व नये का अद्भुत  
सम्मिश्रण ।

सित्थोना ओरुम्पो

प्रसिद्ध कवियिता रवि कानून में  
धनियुक्त सम्बद्ध रहीं । भाषा की  
बहुत प्रसिद्ध पत्रिका मूर की  
सम्पादिका रहीं ।

## चिली

वाग्लो नरवा

विश्वान कवि शक्ति और तेज  
के धनी, प्रति यथापचात का  
अनुकरण करने व बात कम्प्यू-  
टिस्ट हो गए ।

विमते हुइदोबो

परिस में दायाबात और प्रति  
यथापचात का अध्ययन किया ।  
फिर अपने देश में य प्रभाव  
थाप ।

## लपट • श्वेताश्रितो पात्र

भावारा और रोशनी के सण्डहर सुन्दारी गहरी छाया को  
पूजते हैं प्यार जिसकी परछाई की ओर  
मेरा हीपनी हुई सौस भागनी है एक जीवित वृद्ध  
जो अपनी अस्पष्ट पङ्कटिकाहट से पूर्व  
विद्यत् की चमक की तरह उगता और उठता है ।

एक देवता-प्यार-उमत्त और काला,  
नाम और बाणीहीन जीवित देवता,  
गहरी स्तब्धता को गीत में परिणम करता है,  
मरी शक्तिहीन जिह्वा का बीज में बल्लता है  
मदगामी दुनिया को लपट बना देता है  
जो अपनी अग्निमय छातियाँ में एक और  
अतुल्य गुप्त और मयंकर अग्नि छिपाये है

इस लपट के लिए बुलबुल बिलाप करती है,  
बन्व भावार, वीज के तूफान अश्रु और रोदन  
रात को पार करते हैं जब तक कि उनके गुस्से  
क भ्रमों के प्रवाह पृथ्वी की सोमा तोड़ नहीं देते,

दुनिया नसी जीवित लपट के लिए मरती है  
प्रेम की महिमा में ऊँचे उठकर और औरत  
पृथ्वा पर दौड़ती फिरती हैं पागल घोड़े अपने  
जपागारा की अपेक्षा हृदय की घड़कों के  
काल चरमा से पानी पीना पसन्द करते हैं,  
जब तक कि वे अपनी खतरनाक सौस से  
मेरे शरीर के स्थिर प्रमाण-सारे को ढक नही लेते

इस सोखी लपट के लिए रक्त बहना है  
मेरे काना में एक तूफान पट पड़ता है,

मरी झुलसी हुई जवान गूगा हा जाती है  
 और तिल की घड़कों के पुन पर हम मौन  
 और सन्ध्या को पहुँचने तक दोड़ने रहते हैं

इस गुप्त सपट के लिए मैंने दुनिया बुझ दी,  
 वा भी इस नहीं चाहता, उस में नष्ट करता हूँ,  
 छायाओं के नातर मैं इस पहचान सजता हूँ  
 और इसके रक्त में सग के लिए हूँ जाता हूँ । ●

## वदु वागीचा • एनरीक गोंजालेस मार्टीनेज

मेरे प्रजीदारत हृदय पर, भविष्य या विस्मृत सूत से  
 उल्टा आवाजें, वा कभी जीवित थीं, और आत्माएँ  
 जो कना जमा हो नहा यूँ नार सटखान रही हैं  
 मानो यह कोई बेहूँ पुराना घर हो

प्यार की पकला रात को मधुर ध्वनि  
 चीन् की रोशनी का तरंगदान सगीत  
 जीवन भर ध्वन्य चटा से पालित आदर्श

मैं इस सटखाने का रहस्य जानता हूँ  
 दाउ हुए तिनो में इमने बह दाहक ज्वर लिया  
 जिसको आज बिन्ग्या विनयनूयक धिराना चाहता है—

आत्मा न साफ़ह मौन होकर रात्रि का दीप  
 जला लिया है द्वार बन्द कर लिये हैं  
 और अब वह कोई उत्तर नहीं देता । ●

## बहुत पहले का वसत • लुई फरनूदा

अब इस सच्चा के वगनी सूर्यास्त में  
 जब पूर्णों में गिरी ओस से मैथोनिया नीम हैं  
 उन सड़कों से गुजरता, आसमान में चीन् को

बढ़ने हुए देवना, एक जाग्रत स्वप्न-सा होगा—  
 पदियों के दल धपन विभाप स आकाश को  
 विस्तृत कर द्यो फुहारे का जन अपनी शुद्धता से  
 पृथ्वा की गहरी अचाब को ऊपर धिमेरेना  
 और सब आसमान और घली एरन्म पुर हो जायेंगे—  
 निजन के किसी कोन में धकेले अपना सिर  
 अपने हाथों में लिय, प्रतिस्पर्क प्रेव की तरह  
 तुम बहु सोच सोचकर रोते रहने कि  
 बिन्दुओं किन्नी नूबमूरत थी और किन्ना व्यर्थ — •

## बर्फ में कब्रिस्तान जे यियर बिलीखशिया

बर्फ में कब्रिस्तान जसो चीज दुनिया में दूसरी नहीं है।  
 श्वेतता पर रखी श्वेतता के लिए क्या नाम है ?  
 आकाश ने कब्रों पर बर्फ के अनुमूर्तिहीन पत्थर केंके हैं  
 और अब बर्फ पर बर्फ के सिवा कुछ भी रोप नहीं है—  
 हाथ पर सन् के लिए रख हाथ की तरह।  
 पत्ती आसमान का पार करना चाहत है  
 हवा के अदृश्य नियारों को धायल करने के लिए  
 कि बर्फ के एतान को कोद भा बाधा न रहे  
 वह समग्र हो सके  
 बर्फ की ही भांति जीवित रह सके  
 क्योंकि यह कहना पयात नहीं है  
 कि बर्फ का कब्रिस्तान स्वप्नहीन निद्रा की तरह  
 बुनी जाना आँखों की तरह होता है—  
 यद्यपि इनमें कोई अचेतन और निद्रित शरीर होता है  
 एक नीरवता पर दूसरी नीरवता के गिरने-सा  
 विस्मरण के रिक्त प्राणह-सा  
 पर बर्फ के कब्रिस्तान जसो दूसरे कोई चीज नहीं है—  
 बर्फ यद्यपि सभी वस्तुओं पर नीरव होती है  
 पर रक्तलेन समाधि पर, उन घोठों पर  
 जो अब कुछ नहीं बोनेंगे, उसकी नीरवता और भी बज जाती है— •

## लौटने पर • रेने एरिज़ा

मैं उस यात्रा से लौटा हूँ  
जिम्ह स्वत को निर्वासित समझता था  
मैं आईनों में देखता हूँ  
अरे यह मैं ही हूँ ?  
शायद मरी आँखें अब  
नगर बसी हो गई हैं  
पर यह मैं ही हूँ  
मैं पुरातन आईना के  
मकड़ी-जाल से पराजित हूँ

पारदर्शिता  
बिन्नी ईश्वर का दिये  
सुम्बन के अंधेरे में  
हूब गई है  
पर उस अंधेरे में भी  
ढहलियों का प्रसव सम्भव है

उस कोण के भीतर छुपा हूँ  
जहाँ मेरे अग्र मुँह का नहीं सकते  
उस भूमि को नाली हाथ  
शून्य रूप से लुप्तता  
हैनी को घसाटता हड्डिया से ढका  
पाछे नीचे मैं हूँ । •

## कितनी धीमी • इसेल रिबयरो

कितना घीमा है यह उडान  
नगर से ऊपर उठो बबूनरा की  
रोशनी के उनके पंख कितन सड़ चुके हैं

बढ़ते हुए देवना, एक जाग्रत स्वप्न-सा होना —  
 पक्षियों के दल अपने विनाप से आकाश को  
 विलुप्त कर दोगे कुहारे का जल अपनी शुद्धता से  
 पृथ्वी की गहरी आवाज को ऊपर बिखरेगा  
 और तब आसमान और धरती एकत्र जुड़ जायेंगे —  
 निजन के किसी कोन में अकेले अपना सिर  
 अपने हाथों में लिये, प्रतिहिंसक प्रेत की तरह  
 तुम बह सोच सोचकर रोते रहने कि  
 जिन्दगी कितनी सूबसूरत थी और कितनी व्यर्थ •

## बर्फ में कब्रिस्तान जेथियर बिलौरशिया

यह म कब्रिस्तान जैसी चीज दुनिया में दूसरी नहीं है ।  
 श्वेतता पर रखी श्वेतता के लिए क्या नाम है ?  
 आकाश ने कहीं पर बर्फ के अनुमूर्तिहीन पत्थर फेंके हैं  
 और अब बर्फ पर बर्फ के सिवा कुछ भी शेष नहीं है —  
 हाथ पर सदा के लिए रखे हाथ की तरह ।  
 पक्षी आसमान को पार करना चाहत है  
 हवा के अदृश्य गनियारों को घायन करने के लिए  
 कि बर्फ के एकांग को कोद मा बाधा न रहे  
 वह समग्र हो सके  
 बर्फ की ही भाँति जागृत रह सके  
 क्योंकि यह बहना पयास नहीं है  
 कि बर्फ का कब्रिस्तान स्वप्नहीन निग का तरह,  
 सुनी साता धाँधों की तरह होता है —  
 यद्यपि इनमें कोई अचेतन और निद्रित शरीर होता है  
 एक नीरवता पर दूसरी नीरवता के बिरले-सा  
 विस्मरण के रिक्त आग्रह-सा  
 पर यह के कब्रिस्तान जैसी दूसरी कोई चीज नहीं है —  
 यह यद्यपि सभी वस्तुओं पर नीरव होती है  
 पर रक्तहीन समाधि पर, उन मोठों पर  
 जो अब कुछ नहीं बोनेंगे, उसी नीरवता और भी बढ़ जाती है — •

## लौटने पर • रेने एरिजा

मैं उस यात्रा से सौटा हूँ  
जिमम स्वत को निर्वासित समझता था  
मैं आईनों में देखता हूँ  
अरे यह मैं ही हूँ ?  
शायद मेरी आँखें अब  
नगर बसी हो गई हैं  
पर यह मैं ही हूँ  
मैं पुरातन आईनों के  
मकड़ी-जाल से पराजित हूँ

पारदर्शिता  
बिजली ईश्वर का दिये  
छुम्बन के अंधेरे में  
हब गई है  
पर उम्र अंधेरे में भी  
बहलियों का प्रसव सम्भव है

उस कोण के भीतर छुपा हूँ  
जहाँ मेरे अन्ध मुँह पा नहीं सकते  
उस भूमि को लात्ती हाथ  
गुप्त रूप से खूँता  
हमी को घसाटता हड्डियों से ढका  
पीछे नीचे मैं हूँ । •

## कितनी धीमी • इसैल रिचवरो

कितनी धीमा है यह उड़ान  
नगर से ऊपर उठा कदमों का  
रोशनी का उलट पक्ष मित्रन मंद गुरू है



जिन पर नया सपना के कीड़े पदा हो रहे हैं  
गहूँ की बालियों पर हवा कितनी धीमी है  
कितनी धीमी है गति हम नये विनाश की  
हम नये युद्ध की ।

मेरे छोठ इस युग की प्रशंसा करने को अभियस्त है  
धीमी ध्वनियाँ और संहारों का यह युग  
प्रशंसा करके मूल जाने को ।

जी नहीं

मैं इसमें कोई भाग नहीं लूँगा ।

इस नये हत्याकाण्ड से

मेरा नाम अनुपस्थित रहेगा ।

कितनी धीमी है बीज की यह प्रतिक्रिया ! ●

## अनंत चौपड़ • सेजार बलेनो

हे ईश्वर, मैं जा हू उसके लिए रो रहा हू  
तुमसे अपनी रोज की रांटी लेने के लिए मैं दुखी हूँ  
यह बचारा बिचारखीन मिट्टी तुम्हारी बगल में  
मूल मूलकर उसदली पपड़ी नहीं है—

हे ईश्वर, अगर तुम भ्राम्यी होते  
तो तुम जानते कि ईश्वर नैमा हो  
पर तुम जो हमेशा ईश्वर ही रहे,  
अपनी मृष्टि को कुछ समझ ही न सके  
आदमी धीरज से तुम्हें सहता है—ईश्वर वह है।

आज जब मेरी मंत्रमुग्ध आँखा में मोमवर्तियाँ  
सू जल रही हैं जैसे मैं दण्डित व्यक्ति होऊँ, तुम भी  
हे ईश्वर, अपना राशनियाँ जला लो और आओ  
हम चौपड़ का पुण्य खेल खेल 'पर राय' भी  
जुमारी, जब सारी दुनिया तुम्हारे सामने आ गिरेगी  
तब मौज की खानी आँखें मिट्टी के दो पाने बन  
उस आखिरी तौर पर जान लेंगी।

हे ईश्वर, इस झंझी और बहरी रात में  
तम खेल नहीं सकोगे बनाम पृथ्वी एक  
घिंती हुई चौपड़ है, जो लोट-पाट होने के कारण  
गोल हो गई है, और इसलिए कब के  
खोलने के अलावा यह बही ख नहीं सकती। ●

इन्वेडोर को एक कविता

## मिट्टी के घर • चॉन करेरा अन्नादे

मैं तारा की इमारत में रहता हूँ  
रेत के घर में हवा के महल में  
और हर मिनट दोबाले डहन के,  
विजली गिरने के इन्तजार में बिताता हूँ  
स्वर्ग से न जाने कब नोटिस आ जायें  
तनेय को उड़ान में मौत का धमके  
खुनी बाड़े-सा हुबन भाकर  
परिश्रमों की राख हवा में उड़ा दे ।

तब भेट मिट्टी का घर नहीं रहेगा  
और मैं खुलूँ को नये सिरे से नया पार्कण  
मछलियाँ और धमकते सितारे, अपने  
उलट चुके स्वर्ग में वापस लौटने सगँगे ।  
ओ ओ यह रग है पत्नी या माम है  
मिनबर मुनिबन्ध से एक रात हो सकये  
और सिफ़रो डेना और प्रेम के शरीर पर  
जा फलों और सपों का बना है  
मानिरी लीर पर निद्रा या छाया की तरद  
अदमरणीय झूल धा जायगा । •

सुरुगुले की एक कविता

## सुगणयो का रगमाच • जूलियो ठरेरा य रोसि१

लेण्डस्केप है बाइबिल के एक भबोध पृष्ठ-सा  
मृत्यो-मुख संघ्या एक पर्वत पर झुकती है और  
सूर्य की अन्तिम निरण इधर उधर बिलदे धरौंदो में  
एक बेहव महीन-सा घागा पिरो देती है—

एक भाप उठती है चुपचाप, गले के अनवरत  
भारीपन की, एक गहरी असंगति की  
गाँव के सामने रात धीमे से मुस्कराती है  
श्वेत चेतना लिये छुरानुमा मौस-सी

जैतूनी और हरे-नीले मदाना में भेड़ों के दख  
मेघाकार बुदहलिकामा से एकत्र होते हैं  
जैस सौ हचिर वर्ष एक एक कर झुल रहे हैं

एक टिड्डा गुलाब-गंधिन शान्ति को भग करता है  
बगल में खड़ा, चाँद का भालिगन करती, फैंकट्टी  
भूज की वस्तुमा में विगत का रोमांस भर रही है । •

भारत की एक कविता

## पूर्ण मृत्यु • मानुएल यादेरा

इस तरह मरना  
कि कोई निराश  
कोई छाया शेष न रहे  
छाया की स्मृति भी शेष न रहे—  
किमी मानव हृदय में  
मानव मस्तिष्क में  
मनुष्य की स्वभा में ।

ऐसा पूर्णता से मरना  
कि किसी दिन यदि कोई  
तुम्हारा नाम किसी पृष्ठ पर देखे  
तो पूछे 'यह कौन था ?

इससे भी ज्यादा पूर्णता से मरना  
कि यह नाम भी न रहे । •

## उपवन • जॉन लुई थोरनीज

शाम होते ही  
 उपवन के दो या तीन रंग बनने लगे ।  
 पूर्ण चन्द्र की मद्धा मिनता  
 पहले-सी हलचल नहीं पैदा करती ।  
 भाज भासमान तौछा है  
 शाम किसी परिते का मौन का संकेत दे ।  
 उपवन आकाश और पितृ स संचालित ।  
 उपवन वह चिन्ता है  
 जहाँ से ईश्वर आत्माओं को निरन्तर है ।  
 उपवन वह दास है  
 जिस पर सुकृष्ण स्वयं धरा में आता है ।  
 गम्भीर अनन्त  
 नितारों के चौराहे पर प्रनादा करता है ।  
 कुमा दृष्टा और पेड़-पतिया की दोस्ती में  
 जीवन बिताना किनना खूबमूरत है । •

## नहीं आयेगा • रिचार्ड ड० मोलीनारी

नहीं यह बापस नहीं आयेगा यह प्रकार  
 यह सबका न यह सुन्दर बसंत, जो खो गया है ।  
 अब य बापस नहीं आयेगा असम्भव, नष्ट  
 न जीवन न नारा न पवन न मानवी आकांक्षा ।  
 नहीं, क्या भाय ? कोई नहीं लौटता— व्यर्थ है सब—  
 न कुछ जिन पहले का मुलाव जो झूठ चुका है  
 न वह रगविरगा शाखा न वह जची हुई पत्ती  
 न वह चेहरा न वह नगी न जीवन का वह गवित समय ।

नही कभा नहीं, छोड़ मेरी मृत्यु-वितनी भयंकर !  
मुझे समृद्धि में रहने दो या दरिद्रता, अपमान,  
परम अन्याय और पूरा नाश में फेंक दो ।

मेरे लिए अभी और आनन्दपूर्ण  
कठोर, नीरव—शून्यता—शायद एक सहर  
प्रेम ही जो अप्रमाणित ही आ गया है । •

## निद्राहीन पैलीनरस • भिन्नीना ओडैम्पो

( मजेदारतः मान तुम एक अज्ञात तन पर पड़े रहोगे )

सहरें, समुद्री सेवार और डने,  
हूँ और पोषपूर्ण शब्द नमक  
और प्रायाडीन की बू दुष्ट सुफान  
अस्थिर डालफिन मछलियाँ और

घने हुए सामरन-वादका के दल भी  
उन शान्तिमय देशों की पूर्ति नहीं कर सकेंगे  
जहाँ तुम गहरे जहाजों को दूर रखने वाले  
स्थिर चरणों से घुमने फिरते थे ।

पैलीनरस तुम्हारा बंद समुद्री-मुख धेहरा  
स्वयं रात्रि को जाग्रत रखता है ।  
नग्न, यहाँ पड़े रहकर

तुम फिर सदा के लिए रेत पर मर जाओगे  
और परवर की सी जड़ असावधानता से तुम्हारे  
नाज़ और शाल सताया के साथ उगने लगे । •

बिती की दो कविताएँ

## स्थिर विन्दु • पाप्लो नरुदा

मैं कुछ नहीं जानूँ गा न कल्पना कहूँ गा  
कौन मेरी असत्ता को सिखायगा  
प्रयत्न के बिना सत्तावान होना ?

जस कैसे यह सहन कर सकता है ?  
पर्यारों ने किस आकार का स्वप्न देखा है ?

अबस जब तक वे प्रव्रजन  
दूरस्थ देश जाने को ठहरे  
अपने बाणों पर चढ़कर  
शीतल द्वीपों की ओर उड़ न बले ।

अपन गोपन जीवन में स्थिर  
भूमिगत नगर की मूर्ति  
जिन उतरते बन जाय  
पकड़ न आन वाली धीम की तरह  
कुछ नष्ट नहीं होगा न असफल होगा  
जब तक हम फिर जन्म महा सने  
जब तक आज जिन सुनी हुई भूमि  
फिर पुराने वसन्त से भर नहीं जाती—  
अनवरत रूप से निस्तार स्वत को  
असत्ता से बाहर निकालते हुए अभी भी  
फूला लगे बाल होने के लिए । ●

## स्त्री • विन्सेंते हुइदोब्रो

उसने दो काम आगे रखे  
फिर दा काम पीछे रखे  
पहले काम न कहा नमस्ते श्रीमानजी



दूमरे बटम ने कहा नमस्ते श्रीमतीजी  
 बाकी बटमा ने फुमफुसाकर पूछा बालबच्चे बीमे हैं  
 यह दिन बेहद खूबसूरत है मानो बबूतरा भरा आसमान

वह एक बटमती चोनी पहने थी  
 ममुद्र ने उसे झुमाकर सुलाया था  
 वह अपने सपने एक हवादार कमरे में गाड़ आई थी  
 वह अपने निगाह में टेंगे एक मृत्त व्यक्ति को साथ आई थी ।  
 जब वह यहाँ पहुँची उसका एक सुन्दर भग भगो भी मीलों दूर था  
 जब वह चली कुछ ठंडा और आसमान में पहुँचकर उसका इंतजार  
 करता रहा

उसकी दृष्टि बड़ी पीड़ित थी और पहाड़ी पर खून बरमाती रही  
 जब उसकी छातियाँ खुली जैसे उसकी उन्न को शाम बन्धित हो उठी  
 वह बबूतरा को घेरे आसमान की खूबसूरत थी  
 उसका मुख जैसे इम्पात का बना था  
 और मौत का झण्डा उसके धोठा पर सहारा रहा था  
 समुद्र की तरह वह हमती और उसके पेट में भर झंगारों का  
 अनुभव करती थी

ममुद्र की तरह जब वह अपने सब तलों की हत्या कर देता है  
 समुद्र को उफनता है और शूया में गिरता है

जब जिंदगी बहुत हलकी हो जाती है  
 जब सितारे हमारे सिरा पर गुनगुनाते हैं  
 उत्तरी पवन के झालें खोने से पहले  
 हड्डियों के लैण्डस्केप में वह बड़ी खूबसूरत बपती थी  
 उसकी जलती हुई झाल और गिरे हुए पेड़ की दृष्टि  
 उसे बबूतरा व घोड़े पर बड़ा आसमान । ●

# दस कनाडियन कवितारें

- घोष हाउनिंग** कनाडा के नये कवि कविताओं में दार्शनिक पुट, एक संग्रह प्रकाशित ।
- किसिस जेब** अगस्त १९५७, कोलम्बिया विश्वविद्यालय में प्रकाशित की प्राध्यापिका । कविताएँ शक्ति और नाबौन्य से पूर्ण । अनक वार पुरस्कार । प्रकाशित संग्रह—'द सी हूड भॉन्डो ए गाइड
- विल बिसेट** २३ वर्षीय कवि व चित्रकार । अपूर्व मौलिकता के धनी । माया की विविधता के कारण कविताओं का अनुवाद काफी कठिनाई से हो पाता है ।
- के० बी० हूड** नयी पीढ़ी व युवा कवि, 'बैटेक' के सहायक सम्पादक । 'माउन्टेन' नाम में टाइम्स पत्रिका निकालते हैं ।
- फ्रेड डिथी** : २३ वर्षों से वस्तुओं के भीतर की मनोवैज्ञानिकता खोजने में लगे हैं ।
- मार्टिना बिन्दरन** २३ वर्षीया कविनित्री एवं चित्रकर्त्री । कविताएँ 'पैशन' और कामनाओं से पूर्ण ।



दस कन्नाडियन कविताएँ

## सत्य • डॉब बाउनिंग

चारों तरफ शान्त स्थिर बर्फ  
का विस्तार

चिल्सा चिल्साकर यह सत्य  
घोषित कर रहा है  
—यह मग्न सत्य

कि शब्द कहने को  
कछ्छ भी शेष नहीं है । •

## टूटे हुए • फिलिस बघ

हमें पूछता हो, हम टूटे हुए हैं ।  
लेकिन यह पूछता किससे और क्या ?  
विनाशक तत्त्व घर तक आ पहुँचा है  
घरों का कार्य तरया से टकराकर टूट चुका है ।

सम्बन्धित देवता, खुद ही मूर्तिमजक,  
क्या हम सेनागर से सम्बन्धित हैं ?  
( कायल का पतन ही झटूट गीत है )  
क्रॉम बरती पर गिरकर टूट गया है,  
ईसा पेरिस में एक साम बिठाकर,  
मेट्रो में घूम फिरकर सेन में हूब चुक है ।  
हम अपने व्यर्थ देवता फिर स लड़े नहा करेंगे ।  
ईसा के घाव अभी तक हरे हैं अघातक ही से  
जिम-तिस आत्मी पर प्रगट हो जाते हैं ।  
पीना हो तो उसका कारण भी होता है ।

घोषीलिया हैमलेट घोषिलो नियर  
किट स्मार्न विनियम म्नेक वॉन क्नेयर  
वान गोग पिराबेलो का हेनरी धनुष

धराई हा नेवालि, एन्जोनिग घाटी ह—  
य सभी धन्यकार का मुहुट पहन है  
यहा ठीक भी है ।

धन धाक्रमण के प्रति युग्म जिम्मेदार  
हमें उनकी परम्परा और अपनी मृत्यु मिली है !  
ग्रीक सगमरमर, पश्चिम के इतिहास में दूता,  
श्वेत और श्वेततर होता जाता है ।  
यदि हम भी ऐसे ही श्वेत हो सकें—  
शक सम्पत्ता के प्रचार से खण्डित हो सकें—

बिनाश में एक न्याय होता है  
क्योंकि शायद वही ठीक हो ।  
पान्नों के लिए पागलखान बनाय जाते हैं  
और मरीजों के लिए अस्पताल  
युद्ध धाक्रमण का सिन्धु हस्ता है  
जिसका प्रताक है धावों मरा ईसा का शरीर ।  
हम पूर्ण या मुन्दर या धन्धे क्यों है ?  
क्या बिलकुल टूट-भूट जाने के लिए ? •

## नग्न कविता • फिलिस वेथ

बढ़ने हुए

हमारे धरों के बीच का  
मंत्र तापने को ।

लगता है

मैं तुम्हारा स्वागत करूँ ।

तुम्हारा मुख चारों ओर से

मेरी धन्यार्पना करता है ।

जगद् है ।

और

यहाँ

और यहाँ भी और

यहाँ भी

और तुम्हारे मुख के

चारों ओर सब ओर ।

आज रात

स्वप्नसा । मेरे मातर

और कमरे में ।

मैं पिरी हूँ

एक विचार से

कुछ सीधारों से ।

यह भाव !

फिर तुमने अपना

निगान छोड़ दिया ।

या हमने  
छोड़ा  
त्वचा कुपचाप  
मिहरता रही ।

यह ज्वाउड

मेरे कमरे में  
एक मज है एक लीप  
एक मक्खी घोर  
मात्माना मूर की दो किताबें ।  
मैंने अपना ज्वाउड  
नीचे ढाल दिया है ।

जब तुम नहीं आये थे  
तब मैं तुम्हें अपने मन में  
लिय थी । अन्धका मन है यह  
जो पूर्णता को समग्र रूप में  
ग्रहण करता है ।

तुम अग जाओ ।  
मैं पालना लगाये

जिस्तर पर बठी रही ।  
मैंने वहाँ  
आत्म-बरखा के लिए  
जगह नहा है ।  
मैं झूठ बानी ।

मुबह की मुनदरी  
रोगनी में  
तुमने बपडे पहिने ।  
मैंने अपना चेहरा  
बाबा से छिपा लिया ।  
जिस कमरे में तुम रहे  
वह यहीं रहगा ।

तुमने मुझे स्पष्टना दी ।  
कितने ही उपहार  
पढ़िनाये ।  
कविनाएँ नम  
सूरज की रोशनी में  
धरती पर नाच रही हैं । •

## हृदय में • बिल विमेट

लगाए हम घर को  
बेर हैं

एक महावस  
बवागोर की गीठा की तरह  
मेरे हृदय को

जकड़े है

बगाचे में बिन्की  
जिसे मॉरिस देखता है

जिसकी नाक पर हमेशा  
 एक तितली होती है  
 कल्पना की फुडिया की तरह  
 काल पचा वृक्ष के भीतर भूम रहे हैं  
 मॉरिस की नाक हिलती है  
 और वस्त्र काँपते हैं । ●

## कवि • जिल बिसेट

उसकी नीला कमीज  
 घुटनों तक छाठी थी ।  
 और ज़्यादा गम मत करो  
 उसके पादरो ने कहा ।

बच्ची  
 तुमने बहुत कुछ देख लिया ।  
 अब और गुब्बारे नहीं हैं,  
 बा है ?

खडिया रये चेहरे  
 पुराणा की कीमती मृग क्याओं पर रो रहे हैं  
 बच्चे ! तुम पीने सूर्य में  
 वापस जा सकते हो  
 घास की कुल झाठ पतिया ने  
 ही उत्तर दिया

घोनी मिट्टी के हाथ  
 सोने की अग्राध्या पहिने में संकोच करते रहे  
 हरियाली की एक सहर  
 और यह किरत है  
 बच्चे बने गये हैं । ●

## मृत मा का स्वप्न • के० धी० इज

मेने सपना देखा—

मेरी माँ मेरे भीतर घा गई है और  
प्रथ-पञ्च की तरह मेरे सिर में घातें कर रही है,  
मेरे बालों के पीछे उसके बोनते घोट  
मेरी बांहों के पीछे उसकी घूमली फिरती बाँहि  
मेरे काँपते पैरों के पीछे उसके पर  
मेरे शरीर में एक आत्मा उतर आई ।

मेरे सपने जम साये ह और  
मेरे आसमानों में कण्डों की तरह उड़ रहे हैं  
नये नये सपन मुझे आ रहे हैं पता नहीं  
उनका मत कहाँ होना है

पीड़ियाँ मेरे भीतर सदबदा रही हैं  
नए नए शिशु जन्म ले रहे हैं  
आत्माएँ मेरी शुष्कता में कम्पित हो रही हैं,  
मैं जो मौन और अन्धेरे का पिता हूँ—  
ऐसा अन्धेरा जो जगकर ठोस नहीं होना  
शुप बस हृदय में हो रहे इन अदृश्य आन्दोलनों  
पर विचार ही करता रह सकता हूँ । •

## पैगम्बर नहीं हो • के० धी० इज

तुम पैगम्बर नहीं हो—

तुम ऐसे देश के एक आदमी ही हो  
जहाँ के लोग भेड़े हैं  
वेनी पर मुस्ली मूखों सी ।

ये मेमन जिनकी खालें उतर चुकी हैं,  
शुपचाप अपने जसाये जाने का इन्तजार कर रहे हैं ।

उनके पात्र मेहों के उपहास व गौरव स भरपूर है  
जा मृत्यु क वसत की हारत म  
घोर भी तेजी स नाचने लगती है  
सान रग क उस गलीचे पर  
जा मन्दिर के वक्र तोरण से  
उजड़ते सूरज तक विद्ध है ।

पर दृष्ट न वनप्रति में बैठे  
सूरज को देखा

बढ़ती हुई कालिमा जसा  
पूलत प्राप्तमान में  
वह तुम्हारे नर्तन पर  
स्तुतिजा नहीं ग मका  
मेरुलोटुप तुम  
सांड से हिंसा प्रिय

सूय पर गुरानि  
घोर ज्याग कत्र लौन स पककर  
जब वह सांस लेने को रुका  
तब चित्रा की भाग में से  
झिन्गी की कामना प्रकट करता भड को  
पगम्बर ने उत्तर दना भी उचित नहा समन्ध ।

तुम पगम्बर नहीं  
एक भ्रातृमी ही हो ऐसे देश क  
जहाँ के लोग भेड़े हैं । सच्चा सत्र  
तुम्हारी तरह खवान  
नहा बला सज्जा । वह  
भन्दरे प्राप्तमान म भुए की एक नहर  
दज कर हा

भपन हथियार रख देगा  
घोर मृत सूर्य क शव के समीप  
भु भी सेट वापस । ●



# महादिवस • फ्रैंक दिव्यी

माज

पुरानी कविताएँ नष्ट करने का  
दिन है

नाशते से पहले ही उन्हें नष्ट कर दें

माठ

शराबी

महान् चित्रकार

दो घौरा के भी चियड़े

टोकरी में

रही हुए पड़े हैं ।

घौर घब ये रकाबियाँ

बची हुईं चाय घौर टोस्ट

जिन्हें

मैं फेंक सकता हूँ

उन बनावटी चेहरा पर

जो मुझे चारों तरफ से

बाधे हैं । •

## मैं और वे • रेमण्ड जे • प्र खर

बड़े बगला बाले और बड़ी कारा बाले

लोग मुझे नहीं जानते—

मेरे प्रश्नों मेरे वाद्यों के पार वे मुझे नहीं दस सकते;

शहर के वे सड़के भी मुझे नरा जानते

जो मैं

रू घूट स हा वृत्त हो जाते हैं—

वे दोस्त

। काशिया भी करते हैं

पर मेरी ।

हस्ती

यह बड़े सा

नरो म ही में जीवित हो पाता है  
 जब हम सब धुलकर एक हो जाते हैं—  
 परदसी बनकर मैं सुखी नहीं हो पाता  
 मे रोमास का अभिगम भले हो कर  
 पर यह भी उनका आसान नहीं है—  
 मैं लोगों की आवाजें सुनता रहता हूँ  
 यद्यपि वे कहते कुछ भी नहीं हैं  
 मैं कमरे के मध्य का धूरता रहता हूँ— •

## लघु कविताएँ • मार्टिना विल्स्टन

वह जायगा  
 ऐसे दिन जसा कि आज है  
 लोहे के  
 गडर पुन पर लगे  
 कठोर  
 हो उठे हैं और कान्तिमान  
 नगर वहीं है जहाँ मैं हूँ  
 पर भय ताले में बन्द ।

• • •  
 आज रात में लड़नी हूँ जवान  
 उठे हुए स्तन गिरा हुआ पेट  
 आज मैं रोहिंगार बकरो की सवारी करूंगी  
 भवेरी गुफाओं में माठ भगुर खाऊंगी  
 मेरे सपना को कोई नहीं जानता ।

• • •  
 मैं लड़नी हूँ नयीली भाँवा बानी  
 तुम्हारे लिए मैं एक गाना गाऊंगी  
 जो बीच में खेज है  
 रेतार मरा पिता, तुम्हारे लिए भक्ति करेगा  
 मेरे स्वस्थ शिशुमा का । •



# कैरेविया की कविताएँ

|                  |                                                                                                                             |
|------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ए जे सिमूर       | ब्रिटिश गायना के प्रमुख कवि, विक्-<br>मोर-मल के सम्पादक। एक एन्थॉनाजी<br>भी सम्पादित की। विदेश विभाग में<br>कार्य करते हैं। |
| फ्रैंक ए कीलीमोर | प्रमुख कवि, विम'न मासिक के सम्पादक।<br>चार संग्रह प्रकाशित।                                                                 |
| डरेक धालका       | कवि नाटककार। तीन संग्रह प्रकाशित।<br>ट्रेनिहाइ गाज़ियन के स्टाफ में हैं।                                                    |
| समुएल सेलवा      | कवि कथाकार। अंग्रेजी भाषा को एक<br>नया माड़ दिया है। लन्दन में रहते हैं।<br>बड़ी पुस्तकें प्रकाशित।                         |
| माटिन काटर       | ब्रिटिश गायना के युवक कवि भार<br>भाषीबक।                                                                                    |
| ड्राम कोम्स      | कार्लेडोस' के नवीनता प्रमी युवक कवि।<br>दो संग्रह प्रकाशित।                                                                 |
| एल्क ड प्रनेस    | भावुक कवि                                                                                                                   |

सात केरेवियन कविताएँ ।

## सूर्य सुडौल अग्नि है • ए जे सिमूर

सूर्य सुडौल अग्नि है अतस्त्रि में धूमती  
श्वेत भरनों से पोषित

घोर पृथ्वी है शक्तिहीन सूर्य ।

सूर्य आज मेरी हड्डियाँ म गहरा जा घुसा है ।  
सूर्य मेरे रक्त में है, मेरी त्वचा के नीचे रोशनी बह रही है  
सूर्य शक्ति का ध्वज है जो बुँधलाते सिंतारे पर  
बरस रहा है ।

वृद्ध घोर में परस्पर भाई हैं । वे ऊँचे वृद्ध  
जो खोजने आकारों में अपनी शाखाएँ उठाये  
पत्तियों के छोटे-छोटे हाथ ऊपर के देवता तक  
पहुँचा रहे हैं जो सूर्य का दूसरा नाम है  
घोर कभी कभी मेरा भी । हम भाई हैं ।

रोशनी की परत श्वेत शक्ति हवा में स गिल्ली मानी है  
—यहाँ की सब रोशनी ऊपर से नीचे ही कनी है—  
बह हरी पत्तियाँ स जादू प्यती है घोर फूलों को छूकर  
सुशबू में भर देती है ।

यह सम्मना  
सूरज ने अपनी लौह किरणों के बल  
नदी की कीचड़ में उत्पन्न की है ।  
सूर्य मेरे रक्त में है । •

## विद्रोही • प्रॉक ए कीनीमोर

विद्रोही सगु ही हुए हैं! पगमरा के  
विराघो कुछ शहीद हो जाते हैं  
कुछ बच निकलते हैं घबन व्यक्ति ही  
परिवर्तन करने में समर्थ होते हैं ।

नियमा का कनेक्शन पाकर प्रयोग  
 बचन तोड़ देता है, बीज धरती से बाहर  
 फूट पड़ता है। पगम्बर पादरी और राजा  
 सदा सीमाएँ खींचते रहे और वे टूटती रहीं।  
 विद्रोही सदा अपने राज्य की योजना करता है  
 कभी आसमान में तो कभी धरती पर  
 सर्वोत्कृष्ट राज्य मणि की तरह उज्ज्वल।  
 फिर जब विद्रोहिया की बनाई सड़कें पड़ी  
 हो जाती हैं और विद्रोह अधिकार में बदल जाता है।  
 साल भण्डे, साल-बीताशाही बन जाते हैं  
 तब फिर नये विद्रोही जन्म लेते हैं।  
 उनक लिए ईश्वर को धन्यवाद। वे सदा  
 होते ही रहेंगे।

## अग्निमृत नगर • डेरक वाल्कॉट

जब उस तप्त उपदेशक ने गिरजा-युग आकाश को खोड़कर  
 सब एकमात्र कर लिया तब मैं उसकी मज्जा से अग्निमृत  
 नगर की कहानी लिखने बैठा। आमुर्धा में धु धुमाती भोमवती  
 की झोल-तन्के विरवालों के भ्रम से कुछ ज्यादा ले मैंने यह कहा  
 तब भर मैं बाहर ध्वस्त ब्यालों के बीच घूमता रहा,  
 सड़क पर अभी भी प्रवचकों-सी खड़ी दीवारों पर चकित हाता  
 पड़ियों भर आसमान भूजता-सा बाल रुई के गहुरा से  
 सुनेरों द्वारा फटे हुए और सफे अग्नि के बावजूद  
 घुमा भरे आसमान से जहाँ ईसा खड़े थे, मैंने पूछा आत्मी  
 क्यों रोना पीटता है अपनी काठ की दुनिया टूट जाने पर ?  
 नगर में पत्त कागज थे और पहाड़ियाँ विरवालों के समूह  
 जैसे बालक तब भर घूमता रहा, हर हरी पत्ती उल्टी लिए एक साँस थी  
 और वह प्यार फिर उठने लगा जिस मैंने मृत मान लिया था  
 मैंने का आशीर्वाद धाग का उपनिष्ठा लेकर। •

## सूर्य • सैमुण्ड सेखवाँ

क्या हम कभी उधम पन्थि-च को पा सकेंगे ? सूर्य,  
 आकाश में रहकर तुम हमें आशान्ति के लाल लाल सपना से  
 मिगाने हो, तुम जलते हो पर हम नहीं जलेंगे । बेसी  
 आशान्ति से तुम इन हरे हरे द्वीपों में खपटें फैलाते हो  
 किम उद्देश्य से तुम हो आसमान पर, हम धरती पर,  
 नहीं जान पाते । हम तुम्हें तिरछी नज़रों से देखते हैं  
 गन्ने के खेतों में तुम्हारी जहर भरी मुट्ठी के नीचे मेहनत  
 करते तुम्हारी तपिश में पसीने से नहा नहा जाते, धीरे  
 जो बुद्धिमान हैं वे पुराने सवाल पूछा करते हैं, क्या  
 के लिए आसमान निहारते बने रहते हैं । सूर्य

मेरी पीठ पीछे छासों निपोरते मैंने तुम्हें कहीं से  
 जून में झुका लिया धन जगनों की भाड़ियों बीच  
 एक ओर जिन जगान के बापों से घोड़ा दते हुए,  
 मेरा मौन के लिए मेरे ही बच्चों को फुसलाते हुए  
 कि उनका जीवन ही संकट में पड़ जाय । मेरी धाँस में  
 आग की लपट, हवा में पानी रोशनी इन हरे द्वीपों पर  
 लहराती उत्तरी ध्रुवों को दूर आकृष्ट करने को, यह जानने  
 कि धरती को चलते बिजली बिड़बिड़ाहट से हम  
 पड़ोसिया से सीना जटाये रहने को कोमल शब्द कहते हैं  
 भन ही कण्टकों की घसाराता उनकें घुटने ताड़ तोड़ दे । ●

## आवाजें • मार्टिन धाटर

सारा आकाश इस हरे वृक्ष के पीछे भर रहा है  
 वर्षा में सूर्यास्त में पक्षियों के आवाज में ।  
 जल के विशाल गुण्ड सड़क पर यूँ पड़े हैं  
 मानो स्पृष्टिया के समुद्र रेत में धँसे जाते हों ।  
 सूर्य ने बड़ी जल्द हार मान ली है

उम सघप म जहाँ जय होनी है बर्षा—  
 हृदा क विद्याल गमले म रहे ओ प्राग के फूल  
 भाओ वापस भाओ इस घर-ससार में ।

सिन्दूरी पत्थर भृत्यु का रत्न है  
 जा सफ़ु मूछने पर रेत में मिलता है  
 और प्रकाश की बिन्दगी वहीं और ठहरेगी  
 बर्षा और मूरज के पास जब ये झकेले हा ।  
 लगन वाल ओ प्रथम पत्र और गिरने वाले अन्तिम फल  
 तुम्हारी जड़ें तुम्हारे हवा पाने स पहुँचे पड़ गई थीं ।  
 आसमान ससिए फला क्वाकि आभाओ सम्बा हाने लगा  
 जल का सठह स जहाँ परपर गिरते और डूब जाने हैं ।  
 और आकार की आत्मा में वह विलक्षण विलम्बन  
 एक भौंसे से जाना गया और शब्द स पाया गया  
 हवा क विद्याल गमले में रहे ओ प्राग के फूल  
 भाओ वापस भाओ, इस घर-ससार में । ●

## १ • ड्राम कौम्ब्स

एक अलिया मित्र  
 पीन पुष्पात के कम्बल पर  
 गुलाबी सफ़ेद और काने  
 निजसक बाण  
 आन्तरिक संगठियों स पूर्ण  
 काढ़ने आती है

सहानुभूति विरोध अनासक्ति

( १ )

मउ कुर्से, आनवर और दोस्त,  
 मुद्रित विचार,  
 अलित मन की सभी सुशियाँ हैं । ●



## दोस्त को खत • एल्मेड ग्रैगनेल

तुम घोर यौवन लौट आये थे  
घोर एक अजनबी देश में  
हम एक पहाड़ के  
ऊँचे घागलार ढलानों पर  
बैठ रहे थे ।

सहसा एक नुकीली कगार पर  
दो शीघ्रगृह घोर स्पष्ट दृश्य ।  
अस्यस्त व्यक्तिगत जीवन में  
हम ठण्डी हवा को पीते रहे  
( एक सुनहरे गोबर में खड़े खड़े )  
और नीचे दूर तक फली धाटियाँ ।

ज्या ही तुम कुछ कहने को मुझे  
सपना झोमल हो गया ।

मेरे दोस्त,  
तुम क्या कहना चाहते थे ? •

# न्यूजीलैण्ड की नौ कविताएँ

चार्ल्स ब्रश : जन्म १९०६ । प्रमुख कवि एवं 'लैण्डफाल'  
त्रमासिक का सम्पादक । 'न्यूजीलैण्ड' के  
साहित्य का गति देने में अग्रणी । कई संग्रह  
प्रकाशित ।

ब्रह्म हाउ सिमथ जन्म १९११ । कवि और पत्रकार । 'साम्प्र-  
नित्या' भी रहे । छंद संग्रह प्रकाशित ।

लोरी रिचर्ड्स नई पीढ़ी की कवियित्री । 'मेट' त्रमासिक  
एवं लिटिल जंगल ग्रुप से सम्बंधित ।

मौरिस डुगन प्रसिद्ध कवि एवं कथाकार । कई संग्रह  
प्रकाशित ।

क्लेम मॅक-कनी नई पीढ़ी के प्रतिभाशाली कवि । 'मेट'  
ग्रुप से सम्बंधित ।

पीटर ब्लैक इस दशक के प्रमुख कवि ।

हुबर्ट बिचरफोर्ड प्रमुख कवि ।

गोडन बलिस नई पीढ़ी का अग्रणी कवि ।

एच डलास जन्म १९१९ । सुप्रसिद्ध कवियित्री, कथाकार  
और पत्रकार । दो संग्रह प्रकाशित ।



पहाड़ियों पर बलनी हुई धूम्र शिखाएँ बनी हैं  
 जैन मशाल लिये तीर्थ-यात्रिमा का कोई दल हो ।  
 द्वार खुला छोड़ दो  
 अन्दर आ जाओ  
 रात ठंडा रही है,  
 दीप उजाला सा । •

## इमशान गृह • कौरी रिचर्ड्स

मशवून स्टील और कंकरीट की तासवी मजिन पर  
 हिरोशिमा के रक्त-सपपण बच्चा के साथ  
 उन्होंने उसे रिपिट कर  
 नाणामाकी के मराइदार स्टील में  
 उसने पार्श्व को बिछ कर लिया है ।  
 उसकी प्यास मानाभा की विसक्तियों से मुग्ध हो है,  
 न जाने कितना बार बिल्वा बिल्वाकर  
 ताने मार-मार कर  
 कहा है—तुम खुदा हो तो मेरे बम को कितना  
 लुदा खत्म करल पड़ये ?  
 उसके चेहरे पर उन्होंने मनुष्य का खून घूसा है  
 जब पृथ्वी पर नर्क फग और सारी जानि रोई  
 उन्होंने बहवहे लगाए ।  
 वह गंध बार लौट कर जन्म नहीं लगा । •

## एक निवेदन उन सबसे • मौरिस डुगन

जहाँ मरी बामना है निश्चय ही वहाँ मेरा प्रेम भी है ।  
 जहाँ अत्यधिक प्रेम है वहाँ अत्यधिक बामना भी है ।  
 जानना हूँ कि जहाँ प्रेम की मृत्तु होगी  
 वहाँ बामना की मृत्तु हो जाऊँगी है ।  
 और प्रतीत होगा है कि वहाँ प्रेम छत्रछना रहा है  
 हाम । वहाँ बामना उभर भाजी है ।

किन्तु कुछ न न जान किन  
 सरल माध्यमा स भर मन पर प्रतिकार कर  
 लिया है  
 वासना भर गई है,  
 प्रेम मदा के लिए प्रतिक्रिया हो गया है ।  
 तुम्हें यह कैसे समझाऊँ ?  
 और यह भी कि,  
 अब मैं प्रेम अपना वासना के लिए क्या करूँगा ? •

## गली की औरत • कैनेथ मेक केनी

काले धूप की किरणों से ठहर गया है  
 गली का आवृत्त करने वाला कवच  
 छाया की रेखाएँ और जालीदार त्रिकोणा  
 तथा मिह आकृतिवा स जैसे बुना गया हो ।  
 बनगोद अज्ञान के दर से  
 एक स्मृति घड़ा से छूटती है  
 विस्मृति के समुद्र से  
 चमकने हुए स्थान का तरह एक चपरा  
 झड़न जाता है ।

काँड़ हम वही पत्थर  
 एक रात वह खुशवास निरुक्त आह पी  
 और एक रंगान अनुरक्ति-पूर्ण बँट  
 में बाँधे रहा  
 नदरों की परिक्रमा का दवा का  
 मरा तब त्रिह्ला के समाप ।

सेजिन अब वहाँ  
 एक अम्बाहृति से  
 धँसेर के स्तन में अन्तराल हो गई है ।  
 समय उल भूल गया है,  
 जहाँ उसके बस स्मृति के अब कवन पान है ।

बचन मरा भ्रातों  
 समय क उम बुझाये को बिछ कर देवनी ह  
 कि गुनवहार का एक छोटा सा पौधा  
 घास पर सहजहाना है  
 मूय न फटा चटका दी है  
 छाया का रखाएँ और मिह भावितियाँ  
 सड़क गई हैं ।

वह ज़िम्मे मेरी मधु शत्रु को घाय किया था  
 वह न ता मुझे और न विना का मरुन लिया  
 बस खली गई,  
 मृत्यु तक । •

## एक कुत्ते की मौत • पीटर जे ड

शन मर गई है  
 श्वेत लिनी पुष्प का तरङ्ग बालक उम घेरे हैं ।  
 किता न अत्यन्त त्वरा म  
 उसकी रक्त जिह्वा को सन्ना के लिए मौन कर लिया है ।  
 प्रभा प्रभा जहाँ खिन्ना बर रहा थी  
 वहाँ अब मात्र फल विषया जमा बर्फ का ठण्डा ढेर है  
 जिन पर मरी पुत्री के मनगढ़ भावना युक्त हाथ हैं ।  
 उसकी दृष्टि म बन्द नहीं हुआ है, कोई हानि नहा हुई ।  
 वह बार-बार समाप्त जाना है  
 उसक लिए मृत्यु का परम नीरवशा का कोई भय नहीं है ।

सन्ना को भाँति वह उमुक्त घूम रहा है  
 शिशुभा सी हठ करता, अविरतस्त खड़ी है  
 अस्वाभाव है उम यह कि उसन समस्त साहसक कारों  
 का सामोना,  
 प्राण हाने पर — समय नाम में उलझा पड़ा है  
 उममे क

मात्र इतना हा  
 किन्तु वह न गई भार न चिलाई  
 क्युन मय जगह भा भग कर कह आई  
 यह जा नया उनन मुक्त जाना और सीमा ।  
 पद्मान का किया वनावन मगानुभूति न पारित है  
 दन उनक लिए उनना हा बहनार है  
 जितना कि हर मा रक्तिया ।  
 लेकिन उनन कही अधिक कामकाज उनक दुनियापर पनि  
 एक दिन का इच्छाया के साथ  
 अनिवायत बंधे  
 वसे पकड़न को भागत है  
 हम लका को प्रताप होता है कि हम सम्पूर्ण  
 अस्तित्व न  
 हम नहा मुता गया है  
 और भाटा किनिया लाकर बह लीन आई है ।  
 व फिर बछा स पिरा जगह भा गई है  
 जहां सब कुछ भी शय नहीं है ।

मात्र रात्रि का शय दफना लिया जायगा  
 और कल अवकाश होगा  
 कि जिसमें छोटा लहरी मुखा व माय  
 कन का घन्ना कष्टप्य कर सक  
 और दुनिया को मुना दे । •

## कैकटस • हवर्ट गियरफोर्ड

यह नारंगिया फल है,  
 अंगारदशी शाम और उत्तजित मृत्त पर ।  
 या धूप-धकड़ रत और पत्थरों में  
 इतनी कामन धमकीना सांसजता के लिए  
 यह मेरुण्ड है ।

जितन हम सजी सजाई पानुदपूर्ण मृष्टि रचना के लिए  
 कहा पादा द्रव-मुक्त प्रेम जगा लिया है ।

पुण्य और पाप की भाँति या से दृश्य  
 इसका जन्म महानाश के भान्तरिक अवशेषों में हुआ है  
 अपने अन्य और विस्तार के लिए  
 छोटा सा वायु-मण्डल बूँबा है  
 जिसके साथ मैं तो हमारी और न अन्य किसी की  
 कोई प्रतिद्वन्द्विता है ।  
 लेकिन युगों-युगों के उपरान्त  
 जब हब इन छोटी-छोटी उपस्थितियों का स्वागत करते हैं  
 तो हमारी शिराया में ताज़गी दौड़ जाती है  
 और जिह्वा रस स्निग्ध हो जाती है । ●

## समान रखे हुए ताप का मनुष्य रोडन चेलिस

सत्तार किसी भी छान खण्ड-खण्ड होकर गिर सकता है  
 भाव्य है कि ऐसा नहीं होगा  
 क्योंकि अभी तक ऐसा नहीं हुआ है ।  
 यह मान्य है कि दरारे दिखाई देती हैं  
 लेकिन ये दरारें नष्ट हुए समय का पूरा करने का उपक्रम हैं  
 जिनसे जन मिल सकें विस्तार कर सकें ।

लेकिन मैं जो अब तक एकलम सीधा बना हुआ चलता था  
 गह्रों की काना की तरह झुक गया हूँ ।  
 कैसे विश्वास करूँ कि मैं सहूँ मूँगा प्रचण्ड आनन्द  
 मूँग का साक्षात्कार कर लूँगा  
 अपनी रोगनी हुई परछाइयाँ नहीं देखूँगा  
 अनुभव करूँगा कि अशुद्धित हूँ

मैं अनन्त प्रकार की धातुओं का बना हूँ  
 मूँग के नीचे अमन्तुलित सवक-सावक बना हूँ  
 कोत्तार नहीं कर सकता कि कहीं एक बूँद धातु  
 किसी धातु का मस बनने में और दूसरा मठौर हा जाय  
 मैं होने के लिए मुक्तता हूँ ।

मेरा ध्यान भी समझ जान स धीरे-धीरे सुलगता है  
 एक दिन कश्चित् और भी अधिक मानवीय-संवेदना का  
 धनि स गर्म हा  
 एक हा धानु में सब धानु मिल जाय  
 और तब मैं अधिक साक्षाच्छा रह सकूँ  
 गिरन के लिए तैयार । ●

## समुद्र पर वादूल • रघु वैलाम

मैं विद्यालय मनुष्यों के बीच घतती छिटता हूँ  
 जिनके पलों में धमके के जून है, जिनके मुख मुखावा हैं,  
 मुझे वहीं कोई मित्र का पात्र लिये नहीं मिलता,  
 सब के पास रहन को बगह है ।

मेरे देश में

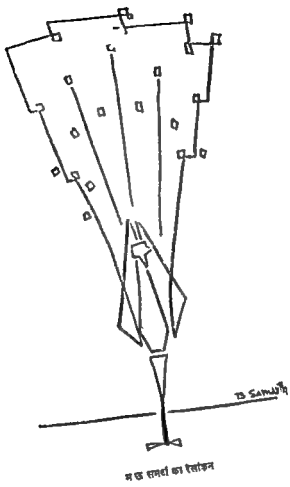
हर बच्चे का लिखना पढ़ना सिखाया जाता है  
 हर बच्चे के पास गरम बनके और बूत हाड ह  
 हर बच्चे को मुबह शाम खाना मिलता ही है  
 जिन्ना को दुबला हान का इजाजत नहीं हाजी  
 लटमल या दुर्ग वहीं जिजाइ नहीं दती,  
 उनका हाना ही एक धनूवा है ।

भरे ! हम भवनों की तरह रहन हैं  
 त्विच-स्वय पर संगीत बज उठता है,  
 मध्यरात्रि की भी राखनी रहती है,  
 घरों में जल जल भरनों का तरह छाता है—  
 गरम दा ठंडा जैसा भी पार चाहें,  
 भवन शरार के मुख के लिए,  
 भरे देश में ।

दुनियाई छोटे के किनार गई बनती स्वभा का  
 एक दुकान ।

[ 'म्यूजिक' की कविताओं के अनुवादक : मंद चर्चो ]





# नौ ओस्ट्रेलियन कवितारं

**सुटिथ राइड** जन्म १६१५ । प्रामाणिक बुद्धिमान  
काल का प्रमुख कवि । का  
सुप्रसिद्ध प्रकाशित । साहित्यिक एका  
सावा प्रोफेसर विन पॉस्टा का  
सम्मान ।

**ओरोपी हीन** जन्म १६७२ । कविता एवं कदा  
वार । मनक पुरस्कार प्राप्त । मनक  
समूह प्रकाशित ।

**बनम क्रिस्तनेस** जन्म १६१७ । मरण विद्वत्विद्यालय  
में सप्रज्ञा का सम्मान । विद्वत्विद्यालय  
वैमानिक का सम्मान । वह समूह  
प्रकाशित ।

**बनम कार्टे** नया पाठा का कवि । एक मरण  
प्रकाशित ।

**ओरोपी मास्टरसोना** नये पाठा का कवि । एक मरण  
प्रकाशित ।

**बन हारबुड** नया कविता में सम्मान । शान्ति  
और विन में निवार और बुद्धि ।

**बनम मास्टेन** कविता कवि एवं सत्यक । वह समूह  
प्रकाशित ।



## प्रेमियों का दल • जूझिय राइट

सारा दुनिया में अब हम मिलते घोर पुन हान है ।

हम भूल दुष्टों का दल

राता को एक साथ हाथों में हाथ सेता है,

अपनी सच्चिन्म प्रमत्तता में चुपचाप

विस्मृत हो जाता है ।

हम जिन्होंने अगणित वस्तुओं की चाह की

इस एक वस्तु के लिए बस एक ही के लिए

सब कुछ छोड़ छाड़ देते हैं ।

जानते हैं कि संवड़ी वस्त्र में सब

मरने ही रह जायेंगे ।

हमारे चारों ओर अब मृत्यु की सेनाएँ खड़ी हैं ।

उनके कर्म पास भाते जा रहे हैं ।

परधराते हृदय पर अपने गर्म हाथों का ताना डाल न

और कुछ देर मुक्त और निमग्न रह लेन दो ।

अंधेरे में हूँ कर मुक्त अपने स बाँव सो,

क्याकि नगाड़ा की काली मूर्मिकाएँ बजने लगी हैं

और हमारे चारों ओर सब प्रेमियों के चारों ओर,

मौत का बेरा जकड़ता आ रहा है । •

## नाविक की वापसी • डोरोथी हीवेड

हाथों में सपन सजाये मेरा प्यार घर लौट आया है

आ मुझे सुन इस अद्भुत देश में मेरा प्यार लौट आया है !

सूय-सी मौत लिये वह द्वार से फटा पड़ता है

उसकी मोनो में उसकी साथी अनगिनत निधियाँ हैं

यह मानो की सीपी ब्रूम से घाँट है, डाकिन से घाँट है बहानी

और यह प्रवाल यह मूँगा, और यह ह्रस्व का जबड़ा

मेरा रमाई समुद्र की सुगन्ध से भर भर उठी है  
मेरे प्यार का साई हरी मछलियाँ उछलती फिर रही है  
घरे डाकिन में ब्रूम तक अपनी निधियाँ फैलाते पत्तो  
झोर गस छाट से कमरे को अपनी महिमा से भर दो  
उसने सीन पर मुद्रा का मूरज जगमगा रखा है  
मरा प्यार उत्तर-पश्चिम के भी उत्तर से यहाँ आया है  
मगर हम अपनी शय्या पर सेट कर प्यार में डूब जायेंगे  
हम बुझना का बोझार में वर्षा को आवाज मुनव रहेंगे । ●

## कविता • क्लेम क्रिस्तेसेन

पक्षी के गीत मेरे घन्तर को मोड़त है  
तुम्हारी आवाज ! वहाँ कोई शान्ति नहीं है  
मुद्रा की कमकटार भासा में,  
न गम दुपहरी की चुप में, सान्ध में  
इन्धन पहाड़ियों के साथ ।  
सारिकाओं के गीतों का अनुकरण करता है एक  
बग

राखनी में ध्वनि में कल-बागाना तक  
अंगूर सत्राओं से आच्छादित दीवारों तक  
रिक्तता तक में प्रतिध्वनित होता है  
जहाँ सात पत्तियाँ गिरती हैं ।  
एक सम्प्रापक गोष्ठि वेला में  
अचानक अमकता है तारों के साथ । ●

[ 'कविता' के अनुवादक—विद्याभक्त विमल ]

## प्रेमियों का दल • जूदिय राइट

सारी दुनिया में अब हम मिलते घोर जुदा होते हैं ।

हम भूले हमों का दल

राता को अब साथ हमों में हाथ मेठा है,

अपनी सद्विच प्रसन्नता में चुपचाप

विमृष्ट हो जाता है ।

हम जिन्होंने अगणित वस्तुओं की चाह की,

इस एक वस्तु के लिए अब एक ही के लिए,

सब कुछ छोड़ छाड़ देते हैं ।

जानते हैं कि संकड़ी कब न सब

भरने ही रह जायेंगे ।

हमारे चारों ओर अब मृत्यु की सनाई खड़ी है ।

उनके कदम पास माते जा रहे हैं ।

घरपराते हृदय पर अपने गर्म हाथों का गाना बाल नो

और कुछ देर मुक्त और निमग्न रह लेने दो ।

अधरे न हूँ कर मुक्त अपने से बाँध लो,

क्योंकि नगाड़ों की काली भूमिकाएँ बजने लगी हैं

और हमारे चारों ओर, सब प्रेमियों के चारों ओर,

मौत का घेरा अकड़ता आ रहा है । •

## नाविक की वापसी • बोरोथी हीरेट

हाथों न सपने सजाये मेरा प्यार घर लौट आया है

आ मुँह, सुन इस अद्भुत देश में मेरा प्यार लौट आया है ।

सूख-सी आँख लिये वह द्वार न पटा बरता है

उसकी ओलों में उसकी सारी अनगिनत निधियाँ हैं

यह मोती की सीपी ब्रूम से धाई है, बार्बिन से धाई है कहानी

और यह प्रवास यह भूगा, और यह हल का जबड़ा

मरा रसाद समुद्र की सुलभ स भर भर उठी है  
 भर प्यार का भाई हरी मछलियाँ उछलती फिर रही है

भर शक्ति स बूम तक अपनी निधिवाँ फनाते बसो  
 मोर इस छाटे स कमरे का अपनी महिमा स भर दो

उसक साने पर सुबह का सूरज जगमगा रहा है  
 मरा प्यार उत्तर-पश्चिम क भी उत्तर स यहाँ आभा है

अब हम अपनी शय्या पर लेट कर प्यार में डूब जायेंगे  
 हम खुम्बना की धोठार में बर्षा की आवाज सुनत रहेंगे । ●

## कविता • फ्लेम क्रिस्तेसेन

पक्षी के गीत भर भन्तर का माइत ह  
 तुम्हारी आवाज ! वहाँ कोई शान्ति नहीं है  
 सुबह की चमकदार धाँसों में,  
 न गम दुपहरि की छुप में, सान में  
 इन्धन पहानियों क साथ ।  
 सारिकाओं के गीतों का अनुकरण करता है एक  
 बेग

राशनी में, ध्वनि में फल-बागानों तक  
 झगूर सताओं स आच्छादित दीवारों तक  
 रिक्तता तक में प्रतिध्वनित होता है  
 जहाँ लाल बत्तियाँ गिरती हैं ।  
 एक लम्बा पेड़ गाधुति बला में  
 अचानक बमकड़ा है तारों क साथ । ●

[ 'कविता' के अनुवाद—विश्वनाथ शर्मा ]

## प्रेमियों का दल • जूडिय राइट

सारे दुनिया में अब हम मिलते घोर जुदा होते हैं ।

हम भूल दुर्गों का दल

रामा को एक साथ हाथों में हाथ लेता है,

अपनी सत्पुत्र प्रसन्नता में चुपचाप

विस्मृत हो जाता है ।

हम जिन्होंने अगलित वस्तुधा की चाह की,

हम एक वस्तु के लिए सब एक ही के लिए

सब कुछ छोड़ छाड़ देते हैं ।

जानते हैं कि सकली कब में सब

अद्वय हो रह जायेंगे ।

हमारे चारों ओर अब मृत्यु की सेनाएँ खड़ी हैं ।

उनके कदम पास घाने जा रहे हैं ।

धरयरते हृदय पर अपने गर्म हाथों का ताया डाल ग

और कुछ देर मुक्त और निमग्न रह लेन दो ।

अधेरे में डूब कर मुझे अपने स चाँद से,

क्याकि नगाड़ा की काली भूमिकाएँ बजने लगी हैं

और हमारे चारों ओर सब प्रेमियों के चारों ओर,

मौत का घेरा जकड़ता आ रहा है । •

## नाविक की वापसी • नेरोथी हीवट

हाथों में सपन सजाये मेरा प्यार घर लौट आया है

औं मुँगे मुन इस अद्भुत देश में मेरा प्यार लौट आया है ।

सूप-सी घाँसें लिये वह द्वार से फटा पड़ता है

उसकी ओलो में उसकी लाली अनगिनत निधियाँ हैं

यह मोती की सीपी ब्रूम स आई है बाधिन से आई है वहानी

और यह प्रवास यह भूगा, और यह हल्ले का जबदा

मर रमार समुद्र की सुन्न स मर मर उठी है  
मर प्यार का साईं हरी मछलियाँ उछलती फिर रही है

मरे शायिन से बूम तक अपनी निधियाँ फँचाते चलो  
घोर हम छाने स कमर का अपना महिमा म मर दो

चुपक सात पर मुवह का मूरज जगमगा रहा है  
मर प्यार उत्तर-पश्चिम क भी उत्तर स यहाँ आना है

मर हन अपनी कच्चा पर सेट कर प्यार में डूब जायगे  
हम चुम्बनों की बोझार म सर्पा की आवाज सुनत रहेंगे । ●

## कविता • फ्लेम क्रिस्तेसेन

पक्षी क गात मर अन्तर को माडन है  
तुम्हारे आवाज ! वहाँ कोई शान्ति नहीं है  
मुवह को बनकदार पौधों में,  
म गम दुपहरी की चुप में, साँझ में  
इन्धम पगानियों के साथ ।  
सारिकाओं के गीतों का अनुकरण करता है एक  
बग

रागनी में ध्वनि में फल-बागानों तक  
अनूर सजाओं स आच्छादित दीवारों तक  
रिक्तता तक में प्रतिध्वनित होता है  
जहाँ सात पक्षियाँ गिरती ह ।  
एक लम्बा पद गाधुलि बना में  
अचानक कमकता है ठारों क साथ । ●

[ कविता • अनुवादक—रामचन्द्र मिश्र ]



## दुर्घटना      आर० ए० सिम्पसन

किसानों ने एक घमाऊ सुना  
घोर रोसनी लाई गई देखने के लिए  
वह वयामन जो शीशे घोर भाँस ने की  
सामान टूट कर बिखर गया था सड़क पर  
कितो भी जिद्दगी की तरह । फौला  
हो गया एक मध्य घोर व्यथ बिखरा रक्त ।

घोर शाय हूँ व दोनों घान्मी मर गये ।  
मैं लडा था ठण्डा घोर परेशान मडक के  
बिनारे

जिम मैंने अपराधनी पाया टकराई  
हुई वो मोटरगाडियाँ स घण्टे भर के लिए  
बन्द

गाडियाँ ऊपर की मुह चिये जिन्हें कोई  
ऊन हो हटा सकता था ।

मैंने सुना भीड़ को प्रकट करत  
मोडो गलियाँ घोर पहाडियाँ ने विश्वास—  
घात को,

घोर सब यह कहत कि क्या करेंगे व  
जब कि अपराधि दूर हो जाने की  
शिकायत करने लगी

घोर दया दीव रही थी एक भयकर  
दाग की तरह ।

मनवा हटा लिया गया होशियारी घोर  
धृष्टा व साथ । ●

## मृत्यु-लेख • जैम्स जॉर्ज

मरी पहूँच म  
तिन्तु स्पष्ट न परे तूम  
इस गूँजन हुए छन म  
बन्नी हो  
दरपि बिना जय न तुम्हें पक्या नश ३ ।

दरपि को जय नश निनाश  
मे बनना जकड़ का पगिर्नि करत हू  
तुम्हें टाक म पहरने क रिता  
और तुम्हारा नविज्य का ।

तुम नहीं जानाग मरा नाम  
क्योंकि यन् भवान है ।  
नम नहीं पहचानाग  
मेरा चहरा  
मरी झाड़नि युद्ध म मलिन है ।  
मेरी छिपी हड्डियाँ तक जहरानी ह ।

तुम नहीं समझने हो  
मेरे झजोब शब्द ?  
मेरा दुःखाल और मेरा युद्ध ?

तब सुनो,  
मुझमें कुछ कुराखता थी  
मपने उद्देश्य को स्पष्ट करने का ।  
मुझे समझाने दो ।

मैंने जापान म एन भगवत्थ बनाया  
पुराने साक्षर क भगवत्थ के समान ।  
बह एक रेगिस्तान था  
साथग शम्भु काल बड़ी हुई शास्त्र क बनाया ।

जहाँ सब सुम्हारा गेहूँ  
झूठ फलता है ।

मैंने हवा के लिफाफे को भर दिया  
भयंकर सन्देशों से,  
सटस्थ आकाश को  
मैंने छुप गोंद दिया  
जिससे से सुम्हारे माण-दर्शक  
जीवन को से जाने हैं शनिग्रह पर ।

सहराते हुए समुद्रों के नीचे  
जहाँ ममक के छेत ह  
मैंने एक शाक को जन्म दिया  
अपने ठेक, गर्म दाँतों से काट लेन को  
दूर दूर के भगर ।

मैंने गलियों को खून से जोत दिया ।  
मैंने समुद्र को आँसुओं से धो लिया ।  
मैंने इससे भी अधिक  
घोर बहुत कुछ किया ।

मेकिम तुम, जिसका हाथ मैंने पकड़ा है  
तुम, जो मेरे स्वप्न बनोगे  
अपनी इस पकड़ की विजय को शकन देन के लिए,  
तुम नहीं समझ सकत ।

तुम मेरी प्रताड़ित को देखते हो  
और देखते रह जाते हो ।  
तुम मेरी अजीब भाषा को हूँकते हो ।  
मेरे दुष्काल, और घर युद्ध को  
और कोई उत्तर नहीं पाले ।

तब धुपधाप मेरा स्वागत करो  
यह बहुत है कि हम मिलें

जहाँ हर आक शीतल करते हैं  
सुन्दार निभय शहर के  
नर्म पाँवों की ।

क्योंकि मैं आग चलता हूँ  
सुन्दारे राजसा भस्मारोदिया के ।

मैं समझता हूँ । मैं समझता हूँ । •

## विदा गीत • डोरोथी ओक्टरलोनी

सब वसा ही था जसा—जब मैं भीतर गई  
तसवीरें दाहिनी ओर ऊपर, बुसियाँ अपने स्थान पर  
फूल सचे सजे हुए मेण्डल-पीस पर,  
मैंने चौहल ली वह आवाज, पहचान लिया चेहरा ।  
बाहर वही आकाश उसी घरती को मजबूती से पकड़े था,  
हरे पत्ते चमक रहे थे, बुत्ते आकते थे वच्चे खेल रहे थे  
सन्निभ अचानक भीतर हवा ठण्डी हो गई  
साँस जाते हुए रुक गई, मैं मयभीत हो गई ।

बुसियाँ नाचने लगीं तसवीरें चीख उठीं,  
सड़ते हुए फूल बीमार गध दने लगे,  
सफ़ेद दीवारें आपस में टकरा उठीं शान्ति गुरगुर लगी,  
फरा मेरे पाँवों पर डड़ गया अंधिरे में ।

दरवाजा धक्के से बन्द हो जाता है, हवा मेरे बालों में है  
आकाश वसा गया है और उसके स्थान पर खड़ा  
है अचानक अजनबी,  
सूरज की सोलता हुआ

मैं मुड़ती हूँ और उल्टे, सधे हाथों से  
रास्ता ढूँढ़ती हूँ ।  
लेकिन जहाँ मैं मुड़ती हूँ, वह मेरे सामने

जडा है अब भी,

समय को समाप्त करता हुआ, स्पेस पर सवार  
न्यायन था यही है मेरी सड़की अजमी है  
धीरे धीरे छोटे लड्डू का चेहरा शून्य और भावति-हान ।

पहचान का कोई बिन्दु नहीं बचस पास—

बुद्ध भी मुझे धोवा देना है धन्त म—

घोड़ मधे हाया धाम की कठोरता को देवा ।

और उसक नीचे का ठण्डी जमान को अपने मित्र की तरह । ●

## पानी के किनारे • ग्वेन हारबुड

बिक्नी, सर्प की तरह ऊपर की उड़वो

एक समुन्ही चिड़िया भाग जाती है डम छटान से

मेरे फूटे हुए टुकड़ा को छोड़कर ।

और फिर बैठ जाती है भ्रम और हवा के उठान पर ।

जगला समुन्ही पास मेरी छाया म लाल हाकर रगता है ।

चिड़िया की उड़ान मेरे बंधा म दुबती है ।

उसम कोई परिवर्तन नहा होगा, वह परिवर्तन

हा नहीं सकती उस कोई पीड़ा हो नहीं सकती ।

मिट्टी से उत्पन्न भावितियाँ मिट्टी से ही

पोषित होना हैं, शरीर रक्त निष्पट ।

सत्य क्या है ? हृदय वृद्धता है और बनाया

जाता है

तुम भोगोगे और सत्तार व तथ्य को देसाग

जब तक नि पाइ को प्रतिध्याया भी उठनी हा

सत्य नहीं हो जानी, जिनकी स्वयं पीड़ा

तुम्हारी सारी शक्ति बिखर जायगी

निराशा व कण-कण होकर,

तुम ससार में बीबीम; जो कुछ तुम दोग  
 वह बुराई और अच्छाई के बीच टकराया  
 छान लिये जान या घृणा किन्हीं जान के लिए ।  
 तुम प्रकृति के मारे सौम्य को समाप्त धामाग  
 यद्यपि तब भी वह हृन्म का तरह  
 अनादित हुआ ।

‘मत्स्य क्या है ?’ चाखा है हृन्म  
 जबकि वह विविधा रूप हो बैठती है  
 यहाँ और वहाँ

और मैं अपने दुःख के अन्त में हूँ  
 साम्राज्य की ओर मुखा हूँ । ७

## मरते हुए ससार पर पुनर्विचार डेविड रोचस

जिन की राखनी अभी हा रहा है फिर ना समा राग  
 प्रतीक्षा कर रही है दर तक दकी हुई राँस का तरह  
 चुपचाप दं शिख जान बाव निस के लिए ।

मेरा खिड़का के बाहर बनास के पत्ते  
 शान्ति को फलन कर अलग कर रहे हैं  
 सार ससार का पाते हुए पाना की आवाज स  
 मजिन एक हवीं राँस आवाज का दवा है  
 हम ठहरे हुए जिन की टीक बीच स  
 और मूक आवाजों की मकानों के शिखर तक पहुँचा कर  
 धनी जाना है अचानक मर्क में गिरा हुई किना आमा की तरह ।

रक्त नहीं है । बहुत कुछ प्रतिबिम्बित रहा है ।  
 हम बहुत बानत है और देखने नहीं है उन बीड़ों का  
 जो हम हूँ चाहें- जिन्हें हम नहीं जानत ।  
 चाह मजिन मस अवाक अपराध में शम्मा पर आधो  
 जब व्यक्तित्व के उभास नवती चेहरे अलग हट गय ह ।

देवी, भालें—ओ मनुष्या की आँखें नहीं हैं  
 सेकिन धातु की चमकदार घुरी की तरह धूमती हैं  
 हाथ जो एक जीकिन हाथ को धाम नहीं सकते  
 फिर भी सावधान रहते हैं हिंसाव लगाने के लिए  
 फोला के हृदय गर्मी में तपे हुए  
 प्यार के लिए उपयुक्त गर्मी से बहुत अधिक  
 मस्तिष्क बनाए हुए प्रतिबन्धित, मनुष्य विनिर्मित ।

आमो प्रिय ! चुपचाप जब तक कि संसार  
 प्रतीक्षा कर रहा है अपने ही देख की  
 हमारे अविश्वासों के लबादा की पाठ देने के लिए ।  
 अविश्वास—हमारे अपने ही होने में, हम जो कुछ हो गये हैं उसमें  
 क्योंकि मैंने मुना है स्वप्न में घायल हृदय को धोखे  
 और देखा है, भूल भौंकते मनुष्या को गली में मार्च करते  
 अपने आप से घृणा की मदिरा घोटते  
 और अपने बच्चा को पानी और देश को देने  
 किसी तरह को मानवीय शिक्षा के लिए नहीं ।

मरी बिटकी से बाहर अपना के पत्त  
 शान्ति की आवाजें धनग फट रहे हैं ।  
 चुपचाप आमो प्रिय ! क्योंकि रात आ रही है  
 जब कोई काम नहीं करेगा  
 और ऊँची पहचान के ऊपर  
 शान्त चढ़ाना के शिखर हैं  
 जो निर्बाध सितारा के लिए शान्ति का गीत गाते हैं  
 जहाँ हम बैठ सकते हैं और अपना निरंतर धावनाओं में  
 भूत कर सकते हैं स्वर्ग के सबसे मूल्यवान् धरमन ज्ञान की  
 संसार अन्तहीन है धामीन ! •

## निर्वन्ध विचार • डेविड मार्टिन

कठिन है विचार को निबन्ध करना, क्योंकि यह प्रश्लिष्ट हो जायगा  
समाम सम्भावनाया क अज्ञान प्रदेश में, जहाँ पर भ्रमणकार  
शायद हो जानता है अपना उद्देश्य और कभी नहीं बताना  
कि उसने एक समुद्र देखा वहाँ, जहाँ पथत हान चाहिये ।  
अज्ञान में जा भयकर है वह यह कि वहाँ चित्तित कम है  
कोई अन्त नहीं है किसी भी ज़िन्दा में, इधर या उस तरफ ।

तब झूठा यात्री घोषित करता है पार तक पहुँच जाना ।

यह, वह लिखता है है वह जमीन जो गत वर्ष हमने खोजी थी ।

हमन नदिया को बूढ़ा; मिट्टी ऊपर है ओत जमे हुए हैं—

हम लौट हैं उस सड़क से । बहुत से सम्बन्ध साधिया को मोकर,

मैंने एक विरवासपाती को उड़ा दिया जो कहता था कि वह पसन्द करेगा

वही अज्ञानदिया के बीच रहना बस्य उन भाषाया और मुसोबतों को

मेहनत क

जो हमारा प्रतीक्षा कर रही है घर पर ।'

नविन अज्ञात, ज्ञान के अन्त करण पर सशय करता है ।

एक नया अभियान निश्चित होता है उसे नेता चुने जान हैं,

फिर सामा पार की जानो है और वह सूट पकड़ लिया जाता है ।

ज्या ज्या व जाने हैं भविष्य की ओर प्रत्येक एक बंकरा गिराना है

उस मंत्र पर, जहाँ विरवासपाती पट्टे पर सड़ा है ।

पथत अभिकृत होत हैं मिट्टा अच्छी पाई जानी है, नितियाँ

भरी हुई हैं मद्यतियों से । नोन जमान नगी हैं और

उस प्रश्न का उस व्यक्ति के नाम से पुकारा जाता है

मिसने पीछे मुड़ने से इन्कार कर लिया ।

यह वह व्यक्ति है, जो भूल जाता है स्वतन्त्रता के भय के कारण का

या बेचन या रखता है कि कोई बायना हमसे नहीं हुआ है—

भुरदा का पूण्डा का निश्चितता का; बेचन या है—

बैन से बैठ सक्न की निशान्त असमर्थता का । ●

[ 'दुष्प्रज्ञा से 'निर्वन्ध विचार' तक के अनु गान मारिष ]



देखो भाई—जो मनुष्या की भाँखें नहीं हैं  
 सेकिन चप की चमकदार धुरी की तरह घूमती है  
 हाथ जो एक जीविन हाथ को चाम नहीं सकते  
 फिर भी सावधान रहते हैं हिसाब लगाने के लिए,  
 फौलाद के हृदय गर्मों में तपे हुए  
 प्यार के लिए उपयुक्त गर्मों से बहुत अधिक  
 मस्तिष्क बनाय हुए प्रतिबिम्बित, मनुष्य विनिर्मित ।

आओ प्रिय ! चुपचाप जब तक कि ससार  
 प्रतीक्षा कर रहा है अपने ही दल्य की  
 हमारे अविरवासा के सबादों को फाट देने के लिए ।  
 अविरवाम—हमारे अपने ही होने में हम जो कुछ हो गये हैं उसमें  
 क्योंकि मैंने सुना है स्वप्न में घायल हृदय को चीखने  
 और देला है भूरे भोंकते मनुष्या को गली में मार्च करते  
 अपने आप से छूणा की मदिरा खिलते  
 और अपने बच्चा को पार्टी और देश को देने  
 किसी तरह की मानवीय शिक्षा के लिए नहीं ।

मरी खिड़की से बाहर कपाम के पत्ते  
 शान्ति का आवाजसे भलग फट रहे हैं ।  
 चुपचाप आओ प्रिय ! क्योंकि रात आ रही है  
 जब कोई काम नहीं करेगा  
 और ऊँची पहाड़िया के ऊपर  
 शान्त बटाना के शिखर हैं  
 जो निबन्ध सितारा के लिए शान्ति का गीत गाते हैं  
 जहाँ हम बैठ सकते हैं और अपनी निरंतर प्रायतार्था में  
 मूत्त कर सकते हैं स्वर्ग के सबसे मूल्यवान वरदान कास्ट की  
 ससार सन्तहीन है आमीन ! ●

## निर्वन्ध विचार • डेविड मार्टिन

कठिन है विचार को निबन्ध करना क्योंकि यह प्रबुद्ध हो जायगा  
तमाम सम्भावनाओं के अज्ञान प्रदेश में, जहाँ पर भ्रमणकारी  
शायद ही जानता है अपना उद्देश्य और कभी नहीं बताता  
कि उसने एक समुद्र देखा वहाँ, जहाँ पवन होने चाहिए ।  
अनजाने में जो भयंकर है वह यह कि वहाँ छित्तिज कम है  
कोई अन्त नहीं है किसी भी निशा में, इधर या उम सरफ ।

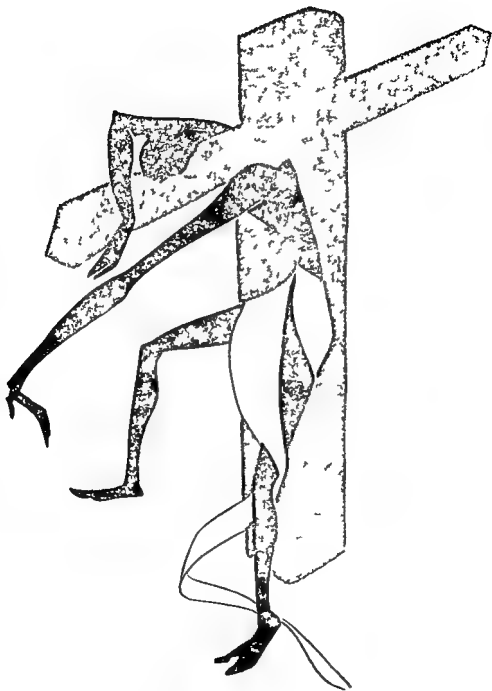
तब झूठा यात्री घोषित करता है पार तक पहुँच जाना ।  
'यह' वह लिखता है 'है वह अभीत जा गन वष हमने खोजी थी ।  
हमन नदिया की बूझा, मिट्टी कमर है खोज जम हुए हैं—  
हम लौटे हैं उस सड़क से । बहुत स मन्थ साधिया की खोकर,  
मैंने एक विश्वासघाती का उड़ा दिया जो कहता था कि वह पसन्द करता  
वही अज्ञानदिया के बीच रहना बजाय उस आशावादी और मुमोबर्से की  
केनने के

जा हमारी प्रतीक्षा कर रही है घर पर ।'

लेकिन अज्ञान, ज्ञान व अन्त करण पर सशय करता है ।  
एक नया अभिमान निश्चित होता है नय नेना चुन जान हैं,  
फिर भीमा पार की जानी है और वह झूठ पकड़ लिया जाता है ।  
जनों 'या' के जान है अभिजित की ओर प्रत्येक एक कंकरी गिराना है  
उस कदम पर जहाँ विश्वासघाती पहुँचे पर खड़ा है ।  
पवत अधिष्ठत हाव हैं मिट्टी अन्धरी पाई जानी है नदियाँ  
मरी हुई हैं मछलियों से । खोज जमते नगी हैं, और  
उस प्रश्न का उस व्यक्ति के नाम से पुकारा जाता है  
जिसेन पीछे मुड़ने से इन्कार कर लिया ।

यह वह व्यक्ति है जो मूल जाता है स्वतन्त्रता के भय व कारण का,  
जा भयन याग रखता है कि कोई सामान्य हमम नहीं हुआ है—  
सुरक्षा का पूर्णता का निश्चितता का; केवल याग है—  
चैन से बैठ सत्य की निराला अभिमर्शना का । ●

[ 'दुष्प्रज्ञता से 'निर्वन्ध विचार तक व अन्त जान मार्टिन ]



## अफ्रीकी कवितारं

आठ दक्षिण अफ्रीकी कविताएँ  
मूगाण्डा की तीन कविताएँ  
नाइजीरिया की चार कविताएँ  
मेडागास्कर की एक कविता  
घाना की एक कविता  
कांगो की एक कविता  
सनीगल की तीन कविताएँ



## दक्षिण अफ्रीका

- जॉस ब्रीग** जन्म १९१०। पेञ्जुन की 'एयो' सॉजी ऑफ़ अफ़ाकन पाइंटो के एक सम्पादक।
- जेक कोप** जन्म १९१३। कवि कहानीकार पत्रकार। सेप्टाउन से प्रकाशित मासिक 'क्यून्ट' के सम्पादक रहे। उपरांत एबॉलीजी के सम्पादकों में एक।
- सी एम वान डन होंबर** (१९२-१९५७) पुराने कविता में प्रमुख।
- गार्ड बटलर** जन्म १९१८। रोड्स विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक। कई संग्रह प्रकाशित।
- डब्ल्यू जाङ्गर** जन्म १९३३। नयी पीढ़ी की अत्यन्त सज्जीव कवियित्रा। एपापेंड के विरोधिया में अग्रणी।
- राम भक्ताब** जन्म १९२३। मन्दन स्मिथ वूलावास में कस्बेदार अन्ध। कई संग्रह प्रकाशित। दक्षिणी अफ्रीकी कविता की एक एबॉलीजी सम्पान्ति की है।
- रुथ मिस्तर** जन्म १९१९। एक संग्रह प्रकाशित।
- सानिया वान विल** जन्म १९१३। प्रथम कवि। दो संग्रह प्रकाशित।
- यूगाण्डा**
- जॉसिन राय** यूगाण्डा के सफल कवि। लोरबा में अनुवाद किया है।

छोटफ बो० मुटिया मकरर विश्वविद्यालय में पढ़ रहे  
हैं। कई प्रवर कविताएँ लिखीं।

धस्वट बो० भोगारो कन्नौ का। फिर अध्ययन। तजस्थी  
कवि।

### नाइजीरिया

अहम होगो प० नाइजीरिया में सेन्ट एन्ड्रूज़  
कॉलेज, ओयो में अग्रज के  
प्राध्यापक।

क्रिस ओबिगबो नय कविता में अग्रणी। रचन  
नियाम द्वारा सम्पादित 'ट्रिब्यूनल'  
में सहायक।

बाम सोयिनका कवि व नाटककार। रचनाओं में  
गहरी व्यापक और व्यंग्य।

### घाना

बवेसी बू घाना का नवोदय के प्रमुख कवि।

### सनीगल

'डविड डयाप सनीगल के प्रमुख कवि। कई  
रचनाओं का संग्रही में प्रकाशित।



## काले गिरिश्रृंग काली हवा • इस क्रीग

काले गिरिश्रृंग के ऊपर काली खाड़ी के पार  
स्याह रात में काली हवा बहती है ।

इशकाम चट्टानों की ओर श्वेत दाँत खान सागर  
किक्किचाता

रूपटता है

भाज भी बबला और लोट जाता है ।

मध्य निरा । तारा नहीं एक भी । अंधकार ।  
एक निजन सड़क खुलती है

बाद समुद्र धरों के पार्श्व में । और आसमान में  
गरजती

समुद्र पर चिल्लाती काली अंध हवा से आहत  
मनुष्य अपने ही मस्तिष्क के मवचल में  
घिसटता है ।

हृदय की बठोर सिना पर मथर जल की तरह  
प्रबहमान

प्रमद विच्छिन्न तम विपात और दुःख निराश्रय  
केवल काली हवा विध्वनता है—

बगों विश्वास और महाद्वीपों पर  
समुद्रों और जलपानों पर

जब कि अचानक सड़क का बगल से  
अधरा खीरता एक प्रकाश उध्वनता है

और दूर दूर विचरता मस्तिष्क

घाटी के ऊपर इस ठण्डी सड़क पर लौट आता है

जहाँ आँखा के भाग फुहार शीत पाँचा के

नपट्टी-सी लगती और झिल्ली की कमठार भावादा  
गरजती हवा में ला जाती है ।

किसी जजर जनस्तर से भाग फूटती है  
गिरता है फिर उध्वनती है ।

वही अथबने अज्ञान के भाग

फटे कोट में आवृत्त एक काला पुरुष  
 अपने हाथ सेकता नज़र आता है ।  
 चौकीदार सनसनाती हवा में  
 अमिवादन फकता है । आवाज़ लौट आती है  
 और वह हसता है श्वेत दातों की चमक  
 और चौड़ी काली हसी ।  
 यह अग्नि जिह्वा पुच्छन-तारे सी जलता है—  
 स्याह रात में मधुष ज्वाला ।  
 यह निजन उजाड़  
 सब लोगो से भर गये हैं  
 और तुम्हारे प्रकाश में—  
 मैं जलता हूँ । •

## यदि तुम लौट आओ • नैक कोष

यदि तुम लौट आओ  
 एकाकी आँखा से निकले, लौट आओ  
 धुआँ के दिसम्बर में  
 और बिगड़े आसमान के मलमली मोम से  
 चुने गये मद हीरक वण विचित्र  
 सम्मोहक नक्षत्रों को यदि  
 एक एक कर दुलका दो,  
 यदि सूर्य को जलते आँसु की तरह उठाव  
 या जाओ तो मैं क्या कहूँगा ?

यदि तुम पुनः बालक हो जाओ  
 लम्बे झील-गात्र बालक  
 घबल बुझूँ फूलों की तरह हिमानी स्वप्न  
 मेगनेशियम धातु-सा तुम्हारा शरीर प्राग भरा  
 यदि तुम गरजते सागर बन



पहाड़ी पर सजे सागरन यना और लघु लोपा की  
गणना बन्द कर दो—तब भी मैं क्या कहूँगा ?

यदि गिरे हुए शिलाखण्ड पिघल जाय  
और सरकते जहाजा की तिरछी बटाना पर  
कोई सागर सोता न रहे  
अतलातिक निश्वासो-सा रिक्त हो जाये  
गिरजाघर स्वप्नों और प्रापनामा स स्याय  
और तुम कुमारिया न रहस्या पर चरित होने  
पास आओ  
और रात के साये में नहरें जगती बजरियाँ  
नीली आँख उठाये दीक्ष पड़े,  
यदि तुम्हारा हृदय फिर से स्पन्नि हो—  
बह तिनी फूल का आभा सिन्धूरी और नीलाभ  
राजा को इन्द्र ली धनुआवे  
शारणीय सरिता पर जमी बर्फ स टकराने छगा  
को पहचाने और तुम  
बामु कुमुम—जड़हीन पुष्पा को  
गय सिंचे पास पोषा न खोजने आओ  
ता मैं क्या कहूँगा ?

रत के लहरीने टोने  
शोकाकुल हो धीवते हैं मेरे वनचिन्हों पर  
यदि मैं उन्नत लजानु बरना मेघो की तरह  
नृत्य करूँ  
तो क्या मैं अपने न जन-पुत्रा को नहीं  
बाँधूँ सूँगा ?  
पायाणी गुप्ताओं का रगिस्तान—चार फूला का  
ऊपर ।

यदि तुम फिर कभी लौंग की घड़ी से  
समय देखाओ  
पशुधिया पर महल और घान न रक्त होगा

शाप तुम सन्तान-मन्त म हृषणी भयावह  
 नानिमा फला दोगे;  
 शब्दा के कारण हो तो मैं मौन हूँ  
 क्योंकि कहीं दूर मेरे ही शब्दा के  
 बीज उभर रहे हैं। •

## आहत जुलु सरदार • सी एम गान डेन हीनर

हरित भूमि पर ताम्र श्याति तुम्हारा दह,  
 भास की चकसी बालियाँ सुवह की मोस  
 हुलकाती हैं महो,  
 जहाँ तुम निगाय हो—अपनी क्षितिज नीच ।  
 दूविया परा का तुम्हारा बसम काँप रहा है,  
 मानो अभी तक घुड़रत हो ।  
 जब कि तुम्हारे पार्श्व में एक सुनो रेतने ने  
 झूलि का साव लिया है ।  
 भाले के प्राणनका फन पर  
 तुम्हारा हाथ निर्जीव पड़ा है देवा और भूरा हाथ ।

मु शुनगु-मलोव् म राजा तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा  
 उसका हाथ मोवा पर स्थाप्य करने के लिए उठेगा, धीरे-धीरे  
 देखेगी दूर दूर तक नीलाई म  
 जिवर तुम गय थ—घुड़ में ।  
 वह धमधमान नन्मा और मिसटती दाम का प्रताप  
 करेगा । प्रताप करेगा मूल्य रत टांगा पर  
 स्वेन धमकती बीम-नू धा की ।  
 भयावह कमली टांग ।  
 पहाड़ी ऊँचाइयाँ मुझे पुरारेंगा,  
 छलती रात में आग के समीप बैंग  
 वह जुझू-लड़की भवेसी तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा  
 और उसकी झल्लें उगने हुए दिन का घुरगा ।  
 पहाड़ियों के साथ धमकता मूय

चखाहा का जगा देगा

उन्हे गीत सक्की पहाडियों में जाहरे क साथ

यन साथमे । और फिर से

सभी जीएगे हममे

जब कि तुम नहा होगे ।

और जब बहापुर लड़ाके लौट आयेंगे

सब पहाडियाँ गगनाने माधों

बटवटाती खरें बाला और सूर्य का भार अभिमुख

मलकने नुकीले आला से

जोबित हो जायेंगे ।

तुम साथ रहा, अपनी गहरी नींद में सोये रहो

तुम्हारे पंख धूप और पानी में

छिन्नत भय है

शरार जग साथ तबे-सा भब नहा रहा

और तुम ?

पास का उमगी धानियाँ भब भी गिरेंगे

पशु रमायेंगे, और जीवन पुस्तका

परन्तु तुम ?

जहाँ तुम सोय हो नींद भूमती रहणी । ●

## मैं • गाई घटलार

मध शिशिर प्रकाश में झूमता बन ।

दूर, बाहर के रामा से ढका भू गिया बटुला क पार

उड़ लिठ, भाटा सख उड़तु समु के पजे ।

धुभा उगमल बिनाबित नगर यहाँ सूर्य का

समनल आनोक पहल त्रिभरता है निष्कपट, धुनी विरए

घाँस और बहरे पर झुन आते है

मेरे शीतल खुने हाया को झूमती हैं ।

मैं अपनी पीठ को स्वीकारता हूँ क्योंकि

मैं अपूर्ण हूँ, स्वत को तौल नहीं सरता,

बना नहीं सकता, न संयाजित कर सकता है ।  
 आयतन नहीं घुमस साह की शिला-भी हड़ता नहीं,  
 एरु मरिचित उत्तरव व्यक्तित्व का अभाव है  
 मर मोनर ।

ओह यह परिक्रमिन धरित्री और मानव हृदय  
 मेरे लिए अभी तक आवृत्त है अपरिचित है,  
 तुम्हें पान के लिए  
 विनमित हो, मुक्त-इन्द्रिया से अभिमुख  
 स्वप्ना का ढककर शून्य के समस्त नगर से  
 बाहर निकल, निमृत्त हुमा हूँ ।

मैं बालक का भाँति जिनामु वन अथवा  
 क्षण पहुँचाने वाले प्रणयी के अनु रूप भूमता रहूँगा ।  
 मेर व-मुक्त प्रवाहा पर  
 मूरज सुल म या दुल म  
 आश्चर्य, क्रोध या सुम्बनो में ज्याति दे । •

## मैं नहीं चाहता • इमिड जोन्कर

मैं नहीं चाहता और अधिक मिलने वान  
 न चाय पर न कौफी पर, विशेषतः शान्दी के प्याला पर  
 बिलकुल हा नहा ।

सुनना नहीं चाहता कि किस कदर वे  
 हवाई पनों को प्रतीक्षा करते हैं  
 मैं यह भी सुनना नहा चाहता कि वे आँगिया की  
 कुहासा म जाग्रत लटे हैं  
 जब कि अन्य क्षितिज-से आश्रय होकर सुप्त-नी  
 सोय हैं ।  
 और मुझे क्या करना है उनकी छोटी पीढाओं को  
 जानकर

कि प्रमुख गर्भाशय हीन हैं तो प्रमुख को 'लुकेमिया'  
 हो गया  
 कि यह बालक बिना बाजे गानों के धाया और वह  
 बूढ़ा जिसे लोग भूल गये हैं बहरा है ।  
 हरे चक्रता म मृत्यु आरोहण की भाँति  
 व लोग जो समुद्र तट के पास रहते हैं जैसे कि  
 सहारा म  
 मुर्दा चेहरों स ईश्वर की तरह जीवित होते हैं ।  
 मैं केवल स्वतः हा भ्रमण करना चाहता हूँ  
 अपने एकान्त छलों के साथ,  
 हाथ को छड़ी की तरह  
 जिसम विश्वास कर सकू कि  
 मैं अभी भी विजित हूँ । •

## यूरोप और अफ्रीका • रॉय मेकनाथ

यूरोप प्राचीन मन्नाह था  
 प्रमय समुद्र से आश्वस्त  
 एशिया की भाँति ही अफ्रीका को भ्रष्ट करता रहा ।  
 दो प्रमरीकी और सभी इच्छात्र  
 एक पत्नी स सहवास करते रहे हैं पर  
 उसस कभी विवाह नहीं करते ।  
 अफ्रीका एक शान्त नीमो युवती  
 पूर्ण तराशे प्रगा म मिला  
 बेप के निशट टक्के पकड़ने के हेतु  
 समुद्र के लाट-व्यारा से उस प्रलोभित किया गया ।  
 यूरोप उसका प्रमी था किन्तु सूर्य के नीचे प्रम का  
 प्रभाव था ।  
 ऊपर हवा म एक बाल उठा  
 मिलावटी सन्याँ प्रारम्भ हुई थीं  
 समुद्र किनारे डिङ क्रॉस लगाता है

बन रावाक उसकी घातक बागड़े  
 और हम मल्लाह के किमी पुराने गुनाह के  
 पतन-हान भून स धामान्त हैं ।  
 पुराने यूराप न उन चहरे की तनाश का  
 जिस बचपन में महा-प न उस लिया था ।  
 उसने विश्वाम और रानि रिजाओं को साजन  
 का उम्मा-की  
 जस भया पर ज-म के चिह्न साज जाते हैं ।

उसने त्वचा क नाच कभी नहा देवा  
 न हटकर धारमा का शायना चाहा ।  
 कभी न जाना कि अनल तल में  
 कही भस्माका क हृदय का स्पन्दन है ।  
 नकाशी शिखलना भस्माका —मा भस्माका  
 जिसके लक्षण ही गनउ थे  
 भव भन्ना † सहित लिवावनी नगर  
 महानुभूति क गीता न भीग ह । •

## भटकाव • रूथ मिलर

वह जिन पाठ करो जब सागर लाल हो गया था  
 लहरों की लालिमा जस मूरज था  
 लहरें—स्वर्ण भाग—गुरन्त गिर पड़ी  
 हम दलत रह एक श्वेत टोन स  
 और धनित—कि परिवर्तित तत्व इतना बनल सकता है  
 गहरा—लाल बरु धनित लोहित किन्तु तू क इस धार  
 बिल्ला का धाँवों की तरह हय हवशा की तरह हरा ।  
 लहरों की तरता हुई उत्तजना स  
 एक बूद में भमस्य पाने गुनाव फिर जिन जछे हैं  
 एक में, दूर रक्तिम धन्वा में ।

† टन्दी की कभीस वर्ष ईगिस्तान में रहने पर ईजिप्ट दास दिया  
 गया भोजन ।

तट म दूध धारा लहरा पर हमने  
 धुने प्रतिरिक्त धुने हवा सहसा कण देखे  
 विराट समुद्र ने उठाया, हम लिया गोम म हाथों म  
 और हम खीचा ।  
 हम बहुत गहरे निया भगने के वाय भगला पार  
 बहुत हरा—विशद—एक कदम धीरे  
 भयशत्रुनी ज्वार हमस दूर मर गया ।  
 हमसे दूर—बमकदार दिन भी मरा  
 भलग बिल्कुल एक दूसरे से भलग, भजीब सागर को हमन  
 छोड़ा अपने ही भन्दर से । •

## मृत • तानिआ धान झिल

कभी कभी मृत देखने से मुझे आघात पहुँचता है  
 यद्यपि कई हैं जो जीवन से बचे हैं  
 अपने को रिक्तता स आवृत निय हुए । आश्चर्य होता है—  
 क्या वे दतने कम परे हैं और परे रहने म ही  
 वे एक रास्ते बाँध दत हैं जावन ।  
 केवल कुछ—वसात्मक निर्णया से तक से जानने हैं जीवन खालना  
 कम पवित्र चिह्न स भय भा गुम रखा जा सकता है ।  
 भनि-सी को हाया म बन कर देना, जब तक वह घोषा न दे  
 कई जिज्ञाने कुछ नहीं किया नहा दुराग्रह को दिया  
 अपितु पाया भलग बचन आ पर्वता को जानता था ।  
 उस दिन पीनी वज्रोभिया खूब खिली  
 पनू पाइन का पतियाँ जमीन म धसी  
 यहाँ हथियार न लिए पर्वत म कोई भूमि नहीं  
 बचन न त्रिए कोई जगह नहीं  
 फिर भी संसार धान-दमय है । •

[ 'मृकाय' और 'मृत' के अनुवादक : गणप्रसाद विमल उमय ६० अजीबी कवितार  
 ७१० इनाम परस्कार द्वारा अनुदित ]

## अफ्रीका • कोलिन रॉय

स्याह हा तुम मुबह को आम भागी घरती को जलाकर  
भूमध्यरेखी धूल बनाने वाला उज्ज्वलता के बाव में—

स्याह हा तुम तब नाली मूसलाधार वर्षा में  
प्रकाश का स्तम्भ सा गान्त हुए उस गवक सामन—  
स्याह हा तुम शीन्नी में अकेल्य वृक्ष के नाच  
मादल का तब पर नाचते हुए यौवन के बाव में—

स्याह हा आ भकका तुम स्याह हा—पहाँ  
जहाँ दर्जन नर धनाम मातामा के मृत  
बूनती है नाल नया—यहाँ  
जहाँ समय की तरह राशना  
अपना ही पाज़ बना हुई कृपा है कीन्ती है—

स्याह हा तुम शी स्याह हा  
तुम्हारी गर्तिन्य और तुम्हारा भूख—यत्र स्याह है  
एकाकार भास में मनहूस नींद के बूब  
या मकायक शीतल तूफानी पतावन में  
—वही मैं ? नहीं का ?—अपना गहनतम असंगतता में—

स्याह है कमर स्याह है भाँवें  
स्याह है बन्दर का खाम और छाल छोटे,  
भालों और मशाला के साथ आन्ध्र रस्मा गिवाह का  
धनाम स्प-मुगए—

स्याह है निन और स्याह है राग  
जहाँ पर अजनबी बनते हैं धकल पगहंश पर  
झोठा पद रस्ती के नमावालों-सा मुपकालें सजा कर—

मैं भी हूँ स्याह ओ अनीका  
स्याह हूँ तुम से भी अधिक—तुम्हारा मैं जानता हूँ  
तुम नहीं जानते हो इस तथ्य को  
और मैं डरता हूँ तुम्हारे राशना से । ●



## अफ्रीक रात को भोगो • जोशफ की मुटिया

अब रात है अभी, अघेरी

आकाश में बत्ती रोशनी कोई नग्न नग्न में

तुम पग बंधाओ सामन में अघेरी को उलत ।

तुम खर रहे हो दबते हो हर तरफ परछाईयां भाग

हर मोड़ पर भासूम आयाओ करानी है तुम्ह ।

लो आ गया चौला—या कोई नूब्वार हाऊ ?

एकाकी तुम सांझी घन बढ़ रहे हो किंतु एकाकी नहीं हो

भनभनात बाट बानान्न मचात खग तुम्ह हृत्प्रभ किय रहन

रूप की गालाहयां धानन स भरता तुम्हारा दृष्टि-पथ

कातास है भाऊ तुम्ह शीतल बनाता है,

तुम दबने हो, पर कुछ नहा पाकर टग स बकित रहने हो

तुमको न दखा था किसी न सिफ देखा स्तन पिमाने

किसा भाग जानवर न ।

तुम अकेल बढ़ चलते हो उधर चीते झोर कर चलते बने

अन्धकी भी हिरण पीतें धूमता है शम्भ-वन में

उधर शम्भ के बरा में छिपे मत्क टरटरान है ।

अन्धता तुमको न काई और न तम किसी को खते हा अनेसे ही हा

अपनी सगिना के साथ ता फिर तुम कहाँ हो तुम्हें क्या लग रहा है ?

निजी दुनिया में अकले—भया तुम क्या नहीं कर सकते ?

क्या रहे ऐसे समाजों में जो स्वयं का याचना दता है

तोच कर, तुम कर रहे हो क्या और कैसे कर रहे हो ?

अबो अब अघेरी में अलें और अपनी मुक्ति पाय ।

अब उभासा है गाल में बड़ी उज्ज्वल धाम है;

तम घत रहे सब धार है सुष-शान्तिमय परछायाँ,

तम अकले आरम्भचिन्तनज्ञान पवन विजना शान्त भी मधुर है ?

सौग सापरबाज में धूमने फिस्ले वन जान;

हवा है शान्त इनन मधुरतम अब कभी क्या य पूर ?

वायु है ताजी मगर फिर भी नील में नूनी हुई ।

भोगन दो स्वयं को संभालण का नाज

घाँ क पसी मँखे गा रहे हैं

मधुरतम संगीत सभातन हैं अब तो सभी महश्य

घोर लघु कोटागुमो के शोरगुल को तान, जो अब गा रहे हैं

मदका के धमगत स्वर म मिलाकर स्वर

नित्री तन्हे स जगत् म वहीं पर छिपकर,

भोगन दो स्वयं को मुख, उधर हानि रहित पीत

सङ्क पर करते परहे उस घोर मामूम से धरगोश

जौना पर कुत्तते धाम मोचते हैं सब निडर हाकर ।

क्या करो तम ? निपट एकाका बड़े जामा ।

या सगिना हा साथ जिसका कमर पर हो हाथ

या फिर बज्जर चुम्बन करो इस यदिनी-मे मधुर चुम्बन

घोर रातो को मधुर ताजी मुक्क राता का—

भाग डालो जब कि सारे लोग मध्याह्न घरा में ब

बठे ऊँघत हैं घू घुमाती धाम के मञ्जरी ।

मित्र अभीका यही है, जहाँ वर्षा या कि राता का

मय है कवल बमरा इसलिए तुम राज म निकलो

मुवन कर दो स्वयं को इन निवन दमपोद्द हवाया स

गाँव से निवलो कि अधा रात का लो चुम

चौकना बनाम राम तुमका मीगुरो-बमगाडा की जाति

तारे घोर जुगनू स्वयं राशन राह कर दये तुम्हारी । ●

## प्रत्युत्तर • अल्वर्ट वी। ओंगारे

कमर वहाँ स्वयं सव्यक्तिमान,

एक वृद्ध पर

पीड़ा और प्यार से परिपूछ

हमका मुक्ति मउ ।

महान—वे प्रश्न पूछते हैं ? ।

पहल अपनी हा रक्षा करो ।

यूरोपीय—व हमको दिखाते हैं गम्भार मुलमण्डल

भगवान् छुट्टे हमारे लिए माननाएँ सहता है ।  
 कहा जाता है यह सभी हमदर्दी में ।  
 वे छोटी-छोटी—वे मन में तिससिलाने हैं  
 जब तुम पूछते हो पानी के लिए  
 कितना स्वाभाविक है यह हँसी—मजाक,  
 मुमलमान—वे मुस्कुराते हैं  
 बस एक धीरे पगम्बर ।  
 हिन्दू—वे चर्चित होते हैं  
 मगर वे चिन्ता नहीं करते ।  
 कम्युनिस्ट—वे कहते हैं  
 उसका कोई अस्तित्व नहीं ।

सब कुछ हमारा है  
 पाप दरिद्रता पुण्य और सम्पत्ति ।  
 पूजन—वे प्रार्थन करते हैं  
 पत्थर नद—नदी और पेड़ों का  
 सिर्फ जीव हैं ।  
 क्या वे प्रकट नहीं करते हैं  
 समानता का कोई तत्व  
 पाप के सिवाय  
 जिसके लिए तुम वहीं लटके रहने हो ।  
 फिर मर जाते हो और वे  
 सभी कहा करते हैं  
 भलो हम कोई पाप करें ।  
 वे पाप करते हैं, करते करते जाते हैं ।  
 और सभी तेजी से कोई भाषा भाती है,  
 जो सुनायी नहीं देती फिर भी भा जाती है  
 मैं हूँ तेरी पुण्य भावना और  
 मैं कहती हूँ कि तुमने किया है पाप  
 अपने भगवान् के विरुद्ध ।  
 आज्ञा पानन के लिए  
 व सभा पुटनों के बस झुट जाते हैं,

ह भगवान, मेरा पाप उम्ह है  
 मेरा पाप मानवानित था हे भगवान ।'  
 और फिर अंत में  
 नहीं मैं तो मौत के समय पापघातप कर चुका  
 क्योंकि मुझे प्लुत पाप करना है ।'  
 इस तरह जावन को जीवित रखा जाता है ।  
 उधर कोई मरता है,  
 इधर कोई जन्मता है । ●  
 [ दुर्गाबा की कविताएं राजीव सनकेता द्वारा अनुदीप्त ]

## रीति-हिंसा • अइग हीगो

कोई जानवर जोखित न रहमा  
नर्पियाँ मूख जायगी  
भोनाकार मुगएँ टूट जायगी  
घोर सम्मुख भाषणो गिद्ध बाड़े    " " ।  
पवित्र वसन्त लीला कामनाओ स रक्त दूषित है ।

हमारे द्वारा पदा 'बीज-पीषा' चट्टाना पर परिपक्व,  
छाओ पत्तियाँ पीड़ा में ललित  
बाल बच्चा स प्राकृत कुमारी देखियाँ—यहाँ खाल शक्ति में,  
प्रशामित सनापा में, खुले छोड़ो शिकार खोमरी हुई  
मैं शमन करने वाले उनक 'बूझ' • नृत्य मुनता हूँ  
और उनक पिघलने हुए प्रसन्न करत हुए सति स तनाव को  
स पवित्रस्थल के पु सत्वहीन प्रक कों दु स चिन्ह निवाने  
घाय ह । •

## मूक वहनो का गीत • किम आकिग्ये

हम छोटे मुग्ध हैं  
हम छोटे मुग्ध हैं  
द्वारों में बाहर  
एक रिक्त प्राकृतिव हृष्य में

बिना स्मृति हम कहन कली है  
हम में स हर एक  
भपने ही देश की मिट्टी के पाय है  
परन्तु भ्रष्टाचार धून के नहीं ।

---

• 'बूझ'—नीपो सया अन्य सभीकी जातिया का एक  
रसम नृत्य ।

यहाँ बेबन नमक-मुह  
 पाली रेत-त्यों पर चमकती हैं स्मृतियों  
 हम कहन करता है  
 हमारे ससार में प्रवाहित  
 हमारे ससार में जा अमर फल बीत गया  
 यह गीत हमारा राजहंस गात है  
 यह गान हमारी साँसों का स्वयं प्रताप है ।  
 तुम्हारा कोई गान राजहंस गात नहीं  
 हर साँस का अपनी ध्वनि रहन दा ।  
 यह गात हमारा राजहंस गात है ।

यह गीत हमारा सबेरा का चुप है  
 तुम्हारा मौन यदि हवा में फल गया  
 उस गंध में बिखरने दो गाताओरा के सुरीले गीत  
 यह गीत हमारा राजहंस गात है ।

हर गीत तुम्हारी उत्तमता का साह है  
 अन्धो छपाए जैसा लम्बा अंगुलीनुमा  
 हवाएँ तुम्हारे सूत्रों से ताड़ रही हैं ---  
 यह गात—नमम—इस का सगात है । ●

[ नमम—इस की एक कविता, अमर फल, अमर फल, अमर फल ]

## टेलीफोन वार्ता • बोल सोचिनका

तिराया तो लग रहा था संगत और मिति  
 तिरयक थी । मायकन सौगमें था रहा था कि वह रखा है  
 उस बात से अलग । कुछ और नहीं रह गया था  
 केवल अपना राज कहना था । 'मदम मेने बताया,  
 'मैं सहन नहीं कर सकता कि यात्रा बरबाद हो—मैं हूँ एक धपकी ।'  
 एक मौन । अन्तर्गत की दबाव से बनी हुई शिष्टता का  
 मौन सधारण । और वह स्वर जब आया तो  
 लिपिस्तिक का पत्र पढ़ा सान से भड़े हुए लम्बे स  
 सिपरट होकर के पार्श्व से मुगजित । मैं पकड़ गया कुरी तल

‘कितने काने हैं ? मैंने गलत नहीं सुना था ‘आप हलके रंग के हैं या हैं बहुत काने ? बटन बी । बटन ए । सटी हुई बदनूतार किसी सावजनिक टेलीफोन-घर की सांसे ।

साल बूय । साल पिलर बॉक्स साल-साल दो मखिली बसा की कोनार पर खिन्ध पिन्ध । वह मच था यथार्थ । म्भप कर ग्रशिष्ट खामोशी मे भारत-समर्पण कर मबाक मे किवरा था फिर बात को स्पष्ट पूछन के लिए । और दको ता वह शब्दो पर जोर कुछ और ही बड़ा रही थी—

‘कदा आप काले हैं ? या बहुत हलके रंग के ? रहस्य प्रकट हो गया । आपका मतलब है—रंग शुद्ध चाकलेटा या हूपिमा चाकलेटी है ?’ उसकी स्वीकृति रोम-सन्नामक थी जो अपने प्रकाश से कुचनकर रक्त गयी निर्विकल्पितना को । शीघ्र ही स्वर का संचरण सम्मिल गया । मैंने कहा ‘पश्चिमी मक्कीकी सीपिया —और फिर जैसे यह था’ म खयाल भाया हो, ‘मेरे बालपात्रे म दई’ है । कल्पना की उड़ान के लिए एक खामोशी उस समय तक जब तक ईमानदारी ने उसका स्वर टेलीफोन के माउथपीस पर झनझनाया ‘यह क्या होता है ? और मान भी लिया मैं नहीं जानती यह क्या होता है ?’ ‘ब्रूनेटे की तरह ।

यह तो काला ही होता है क्यों, क्या नहीं ? नहीं, त्रि-कुल तो तहां चहरे से मैं ब्रूनेट हूँ मगर मैंहम आप मेरे बाकी शरीर को भी देख । मेरे हाथ की हथेली मेरे पैर के तले मुनहरे मूर रंग के हैं । और मेघकृष्ण से मडम मेरे बड़े रदन के कारण मेरा पृष्ठ भाग बहुत काला है । एक छल मुन तो मैंहम, मैंने अपने कान पर उसके रिस्तीकर की तुफानी गवना मुनकर मू कहा मडम मैंने विनय की क्या आप स्वयं नहीं देखना चाहेंगी मुम्बको ? [राजीव सन्निवत दाता अनुवृत्त ]

## रैत तट पर एक रात • मेयरिथल्ल धारा

सागर से घानी है दीप्ता हुई हवा  
सन्तर सपनों की तरङ्ग पटकती है फन

रेत भीर पुनः पुनः द्रित पूरवार उत्थान म  
 आतङ्गपूरा के पाँव धो रही हैं रेत पर कड़ा दबाव देना हुई,  
 भीम कड़ा रेतें हुए केचन हृदय दल सक्ते हैं  
 वे शीतल हुए प्रायित ह  
 आतङ्गपूरा का प्रायना म, छाट धरा के पीछे स बाहर आ रह  
 हैं वे  
 उच्चजीवन क प्रति धाव्य, श्रवण शक्ति स  
 भीर बार राशानया चरित करता ह जाड़ा को बाँहा में बाँह  
 लिये, पुन श- पीछ छोड़न हुए  
 भीर भाग क ठा विक्रतामा की तरह मोन भाव करते हुए ।

भीर लड़े ह मृत रेत पर  
 मैं अपन घुटन जीवित रेत पर महसूस करना हूँ  
 पर दौड़ता हुई हवा उगत हुए शब्द को मार देता है । ●  
 [ ग्यात्रसद्विम्ब द्वारा अनुगीत ]



मैकागास्कर की एक कविता

## हमारी प्रेयसि • ज्या—जोखफ रिचयस्विलो

बह

कि जिसके नयन निद्रा के झनूठे प्रिय  
जिसके अघर स्वप्न गरिमापूर्ण  
जिसके पाँव सागर पर टिके हैं मुदुड  
जिसके दीप्त हाथों में मुरासिमठ  
सीपियाँ उज्ज्वल नमक के खण्ड

बह

रहेगी उन्हें बुहरे मरी इन सादिया क किनारे पर  
बेव देगी सभी नये नाविका के हाथ  
जिनकी उस समय तक कट गयी हैं जवान  
जब तनक वर्षा नहीं आती

बह

तभी फिर से प्रकट होगी  
और हम सब देख पायेंगे  
क्या उसके पवन में बँने हुए बिल्ले हुए  
माना समुन्नी धाम में निनके  
और शायद पिये हमना नमक के नि स्वाद बग ! •

धाना की एक कविता

## याचना • क्वेसी म

तेरे मन्दिर में पूजा के लिए धाज हम माये हैं—

हम धरती के पुत्र ।

नगं गोपालक में माये हैं बापम

घर अपनी गौमो को बहुत नुर्रिखन,

भौंहों से कपा क जल को पौछ

खडे हुए लामोरा बाँधुरो सम्भावे ,

चिड़ियाँ झण्डे सेती हैं अपने कोटर में

अनगाये म्वर से करती हैं इतजार फिर नदी भार का

छामाओं की भाव सटा पर जमी हुई है

अपने छोटा को सागर की छती से विपकामे;

घर लौट हैं सब किसान अम की दुनिया में

बैठे हैं अमाव के पास,

कहानी कहते हैं प्राचीन युगों का ।

हम धरती के पुत्र की प्रार्थना भला भव

तेरे मन्दिर में अनमनी रहगी क्याकर

जब कि हमारे हृदय गात से मरे हुए हैं

घाँव कपिते हैं कातर से धपर हमारे ?

होड करते हैं नन्दे जुगनू तारा से

इस असाव की भाँव भूयँ से,

इस तूम्ब का जल सशक्त बान्छा धारा से ।

फिर भा हम माये हैं जर्जर दरिद्रता को छोड़े

अपन स्वामी के द्वार याचना करने । •

कांगो की एक कविता

## जन्त्र-मन्त्र के साथ नाचो

ची० एफ० डा० चिक्काया ऊ तामसी

यहाँ तो भाषो  
हमारे तुण बड़े स्वादिष्ट  
भाषो यहाँ पशु पक्षियों

भंगिमाएँ और ये भाषाएँ रोगी हाथ के  
कभी बल खाने कभी हर धारणा का गर्भ करते থাক  
यह—कौन है ?—जो हमारे माध्य का निर्माण करता है  
यहाँ तो भाषो अरा पशु-पक्षियों  
यहाँ हर भार भाती है नञ्जाकत से  
छून भाड़े है नकाबें  
इन्द्रधनुषी स्वप्न है—गदनों में फाँसियों की रस्सियाँ

यहाँ तो भाषो  
हमारे तुण बड़े स्वादिष्ट  
झपता भागमन पहला  
बना चक्कर पत्थरों का तीक्ष्णतर विस्फोट  
सैसा है मनेसापन  
भाषा करती हमारा माँ नबीन प्रकाश का । •

## तुम्हारा उपस्थिति • डेविड ह्याप

तुम्हारा उपस्थिति मैं मैंने फिर मैं अन्वेषित किया अपना नाम  
अपना नाम—यह सब जो दिया था जुलाई के दर्श में  
फिर मैं अन्वेषित की आँखें जिन पर अब नहीं है तापों का परदा  
तुम्हारी हसी ने परछाइयों को बघती हुई मशालों-सा  
उद्घाटित किया है अपनी को, वस व जम हुए हिम-मण्डल को बीर कर

दस वष प्रियतमे दस वष  
हर निमि मरौबिका और डर हुए विचारा का  
हर रात शराब के जामों से बचन  
और व यत्रगाते लगा है जिनमें आज बस व कटु स्वाद से  
रूपान्तरित करती हैं जो प्रेम का सामाहीन नगे मैं  
तुम्हारा उपस्थिति मैं मैंने फिर से अन्वेषित किया है अपनी रक्त-स्मृति का  
और हमी व मुक्ता हार गल मैं चमकते हैं हमारे दिनों के  
निम नय उत्सामा से प्रभायान । •

## नीलिमाएँ • लिओपोल्ड सेडार मॅघोर

बमन ने बुझा लिये है मरी हिम-जहित निया के धँचन  
नवोन्मि पीना सिंहर उठता है कोमल लवण पर पहने प्रेम-स्पर्शों से ।  
लजित दवा सा जुलाई के मध्य मैं ध्रुव-क्षेत्रीय शीत-सा हूँ धँचा ।  
मरे पक्ष नाल निलय की सीमा से टकराते हैं दूटते हैं  
मेरी कटुता व बहर लौह-द्वारा का चीर नहीं पाती है कोई किरण ।

खादू मैं कौनसा निशान ? कौनसा परण मैं बजाऊ ?  
भाला की फेंक कर कैसे मैं पा सकूँगा अपने धाराध्य का ?  
सुदूर दक्षिण के राजमो धाव्य ! तुम आभाय बटन दर मैं भनहूम मिनम्वर में ।  
तुम्हारी धनुषों का विकम्पित उत्साह किम पुष्पक मैं पाऊँगा ?  
जिस पुष्पक व पृष्ठा पर जिन असाध्य अधरा पर

पाक्या तुम्हारे मदमाते प्यार का मधुर स्वाद ?

मिलाजलि द रहा है भयोर प्रताप मुझरो ! आह पता की वर्षा को

मनहूस टप-टप

सेमे जाओ ए डूक अपनी निर्जनता का खेल यह सब सब

सो न जाऊ जब तक मैं मिसकते-बिसकते ! •

## मुझको बताओ ऐ अफ्रीका

डेविड ह्याप

अफ्रीका, मुझको बताओ ऐ अफ्रीका

मह जो कमर है झुकी हुई— वह क्या तुम्ही हो ?

वह जो सदा है कमर-तोड़ सपमानों का बोझ—वह क्या तुम्ही हो ?

वह जो पीठ पर टीसते हैं धारा न साल बिह

घोर कहते हैं— हाँ दोपहर को घूप न कोठे घोर मार लो

मह क्या तुम्ही हो ?

एक गम्भीर स्वर उत्तर देता है मुझको

अपीर पुत्र, वह सब सब पल्लवित और सशक्त

वहाँ वह बूझ ज्वेत भी मलीन भूख

झूना न बीच गौरवपूर्ण एकान्त का भोगी

वही है अफ्रीका—तुम्हारा प्रिय सप्रीका

जो बार-बार घेर्य सहिन उठ खड़ा होता है बलात्

जिसके फल प्राप्त कर लेते हैं

स्वतंत्रता का बटु फल ! •



अल्जीरिया

अबुल वहाब अल बघासी सुप्रसिद्ध कवि। राष्ट्रीय मान्दालन को  
जगाने में प्रमुख भाग लिया।

फिलिस्तीन

इब्राहिम तोकान भरव राष्ट्रवादी। मर्यादस्था में  
मृत्यु। कटूतर भरवी को सुप्रसिद्ध  
कविता है जिसका स्वर फड़फड़ा  
हट जैसी ध्वनि देता है।

इराक

मुहम्मद क़ासिम बग़दाद निवासी सुप्रसिद्ध कवि एवं  
विद्वान। प्राचीन काव्य शैली में  
नवान का उत्तम समावेश किया।  
अकरम फादिल नये कवियों में प्रणी। सुप्रसिद्ध  
कवि।

जापान

गिन क़का जन्म १९३४। जापानी कविता के  
प्रमुख धारोचरु तथा कवि का  
संग्रह प्रकाशित।

हिरोसो इवाना जन्म १९३२। भाषुनिक कविता के  
वानी दल के सदस्य। एक संग्रह  
प्रकाशित।

यू सुवा जन्म १९२६। दो संग्रह प्रकाशित।

मिनोरो मोनिओका जन्म १९१६। वानी स्त के  
सम्बन्ध। दो संग्रह प्रकाशित।

फिलिप्पाइन

ओ० दस बुनाओ कमण व सम्पादन। कविताओं में  
जापानी शैली व प्रयोग।

कोरिया

रिम नू युग जन्म १९२१। नये कविता में प्रयोग।

कोथानक जन्म १९२५। कवि और अनुवाक।  
कोथियाई कविताओं का संग्रहीत म  
अनुवाक किया है।

दण्डानगिया

अपरित अन्वर जन्म १९२२। २७ वर्ष का अन्वयु  
म मृत्यु। बड़ा छोटी और आधुनिक  
प्रभाव म पूर्ण कविताएँ लिखा है  
बल्कि यह कहना अधिक सगन है कि  
दण्डानगियन कविता को नया  
माड लिया है।

सितोर सितुमोरग २६ वर्षीय युवक कवि। अन्वर क  
शोध उत्तमचिराते। परन्तु कई  
नियाम म उत्तम भी भाग।

दण्डपू० एत० रेखा जन्म १९३२। लम्बा कविताए  
निबन्ध म लिखित। पुष्पनी श्या  
में मा नवानता का समतार उत्पन्न  
करते हैं।

विपत्तनाम

तो धुई यन कवि कहानाकार एव आलोचक।  
मात्र २५ वर्षीय।

लका

जात्र कट लका क विरवविश्वात चित्रकार  
एव कवि।

धर्मो गिरान्तु युवक कवि। आधुनिक चित्रकला म  
ना अगगा।



# अलजीरिया को • अब्दुल बहाय अल चयाती

मैं संपन्न म जाता हूँ  
 राष्ट्रपति और गोली लेकर ।  
 और सूरज जलाता है  
 ढलाना और खेता का  
 सगो ओ सूरज  
 उठो ओ बच्चो  
 क्योंकि अलजीरिया भा  
 मेरा देश है ।  
 मैं गीता को पीता हूँ  
 रोमो मत बच्चो ।  
 जगमगाओ ओ मूय !  
 शत्रु द्वार पर है ।  
 केवल एक शब्द—  
 सूरज रोक दिया गया है ।  
 गोली को एक भावाङ्ग मुनाई देती है  
 और शत्रु मर जाता है ।  
 अग्नि प्रवेश करता है  
 एक जल हुए घर के किनारे ।  
 "और उमक साथ मैं भी ।  
 मेरे लिए नहा है  
 रास्त स अलग हटना ।  
 लेकिन वीन धीखता है क्या ?  
 अलजीरिया के बच्चे !  
 बापम सोल जाओ  
 किन्हीं सेनिका !  
 धर्म की एक मूर्ख  
 और शत्रु मरता है  
 मैं भा घायल होजा हूँ  
 १३२ विश्व-कविता

लेकिन मैं बनता हूँ ।  
 और घायल सूर्य  
 जीवन को अग्निकुण्ड-सा जलाता है  
 मैं मोच से घुट जाता हूँ  
 और मूर्च्छा म बढबढाना हूँ ।  
 'एक घूँट पानी चाहिए मुझे  
 साथी मुझे दो  
 ताकि दद मिट जाय  
 भाग को बुझाओ ।  
 रोमो मत ओ माँ !  
 मैं सचमुच मरा नहीं हूँ  
 मृत्यु मेरे लिए प्रतिवधित है  
 अभी, इस समय !  
 अज से सपट उठ रही है  
 बिन्दुमयी  
 मेर दश के एक रक्त ने आरक्त  
 कमकठी हुई  
 मांस का सिपाही  
 मेरे जान में बिस्ताता है  
 गदे अलजीरियन  
 मैं मुझे मार डालूँ गा  
 अगर तु नहीं कहेगा—  
 'अलजीरिया मांस का है !  
 लेकिन मैं कहता हूँ  
 अलजीरिया नी जय हा ।  
 विजय हो—अलजीरिया के मेर माद्यों की  
 स्वतंत्रता प्रायेगी  
 और हमारा व लिए शान्ति भी ।

रोमो मन ओ माँ  
मूय हवता है  
घोर पीडा समाप्त होती है  
मर हृदय की ।

घोर मुक्त खुले कण्ठ स  
मैं दुःखाना हूँ  
मलजारिया की भूमि  
हम कभी नहीं छोड़ेंगे ! •

## वसन्त और वच्चे • अद्भुत बहादुर अल-शयाती

मृतकों की माँवा क समान  
बगदाद के रास्त पर  
बच्चों की माँवें माँवू बरसाती है ।  
वसन्त  
हमारे देश म लौट आया है  
और हमारे खेत म,  
गुलाब और निसनिया म बिहोन ।  
और हमारे देश म मदिरा बनाई जाती है  
मृतकों के माँमुषों स  
बच्चा के रफिर स,  
और बंद दरवाजों में  
मरे नगर के माँगन में  
सूर्य को सूती पर चढ़ा लिया जाता है ।  
मेरा नगर बगदाद,  
गीतों स बिहोन उरसवों से रहित  
बच्चों की माँवों में निर घिर आया है ।  
वह हमारे खेतों में लौट आया है  
हमारे मृतकों को दफनाने, बिना गुलाब के  
बिना तितलियों के,  
माँवें न रक्त को सुखाने के लिए  
और हमारे बच्चा के  
और माँवों के रग म आकाश की मलमला देने के लिए  
सपनों के रग से  
और वेना से । •  
अतजोदिसा की और वसन्त और बच्चे कल्प माँवू दारा  
अद्भुत ।

# अलजोरिया को • अब्दुल ग़हाय अज़ ग़याती

मैं संप्रभु म जाता हूँ  
राज्य और मोती लेकर ।

घोर सूरज जलता है  
बलाना और खेता को

जगो ओ सूरज

उठो ओ बख़्त

क्याकि अलजोरिया भा

मेरा देश है ।

मैं गीता को पीता हूँ—

रोमो मत बख़्त ।

जगमगाओ ओ भूय ।

शत्रु द्वार पर है ।

कवल एक शत्रु—

सूरज रात दिया गया है ।

गानी को एक आवाज़ सुनाई देती है

और शत्रु मर जाता है ।

आत्म प्रवेश करता है

एक जल हुए घर के किनारे ।

“और उमर साथ में भी ।

मेरे लिए नहीं है

राम्न से अलग हटना ।

सक्ति कौन बीखता है वहाँ ?

अलजोरिया के कच्चे ।

बापम लौट आया

विदेशी सैनिकों ।

‘घाय की एक ग़ुल

और शत्रु मरता है

मैं भा घायब होता हूँ

१३२ विरह-कविता

लेकिन मैं बनता हूँ ।

और चावल सूर्य

जीवन को अग्निकुण्ड का जलाता है

मैं क्रोध से घुट जाता हूँ

और भूख्खा म बहबहाता हूँ ।

एक बूँद पानी चाहिए मुझ

साथी मुझे दा

ताकि दू मिट जाय

भाग को बुझादो ।

रोमो मत ओ भाँ !

मैं सचमुच मरा नहा हूँ

मृत्यु मेरे लिए प्रतिवधित है

अभी, इस समय !

अज से सपटे उठ रही हूँ

विनोदमया

मेरे देश के एक रक्त से प्रारक्त

बमरती हुई

फाँस का सिपाहा

मेरे बान म चिन्ताता है

गदे अलजोरियन

मैं तुझे मार शत्रु गा

अगर तू नहीं बहेगा—

‘अलजोरिया फास का है !

लेकिन मैं कहता हूँ

अलजोरिया को जय हा !

विजय हो—अलजोरिया के मेरे भाइया की

स्वतन्त्रता प्रायेगी

और हमारा क लिए शान्ति भी ।

रोमो मत धो माँ  
मूय ह्वता है  
घोर पीडा समाप्त होनी है  
मर हृदय की ।

घोर मुक्त क्षुत कण्ठ स  
में दुःखता है  
मलजीरिया की भूमि  
हम कभी नहीं छोएंगे ।

वसन्त और वच्चे • अञ्जुल वहान अल-वयाती

मृत्कों का माँकों क समान  
बगना क रास्त पर  
बच्चों का माँके माँनू बरसाता है ।  
वसन्त  
हमार दय म मोनू भाया है  
घोर हमारे खतों म,  
गुनाव और निवतिया से विगन ।  
घोर हमार दय में मरिा बनाई जानी है  
मृत्कों व माँमुषों व  
बच्चा व रगिर स,  
घोर बर दरवाजों म  
मरे नगर व माँगन में  
सूर्य का मूषी पर चढ़ा न्वा जाना है ।  
मय नगर बगना,  
गौता स विहान उमबों स रहित  
बच्चों की माँओं में नि पिर भाया है ।  
वह हमारे खतों में मोनू भाया है  
हमार मृत्कों को दफ्तान, बिना गुनाव क  
बिना निवतियों क  
माँके क रक्त को मुवन क लिए  
घोर हमार बच्चों क  
घोर माँनों क रग न भाकाय का न्जन्ता देने के लिए  
नयनों क रग म  
घोर बन्ता म । ●  
[कलजीरिया की घोर रक्त की बहने जन मरिा हता  
कलजीरिया]

## जो इतिहास बन गये • मलेक इब्नाद

वे इतिहास बन चुके हैं—

इतिहास जिसकी बाँहा में सब समा जाते हैं  
वे जिन्हें मैं जानता था जो बहस करते थे  
संतति उत्पन्न करते थे सकट भखते थे  
रात गहराने पर जिनकी सफे मुस्थाने बमकने लगती थी ।

मलबार खरीन्ते मैं उनसे फिर मिलता हूँ ।  
मेरे दोस्त जो अब बेवज्र शब्द हैं सय्याह नाम हैं ।  
मपनी जिन्दगी न दस सान और हजार दिन

हमन साय खाना खाया

मिगरेट उघार की

पक्षी न साय खेस ।

मैंने उन्हें मपनी कविताएँ पढ़ाई ।

मेरी माँ ने उनकी देखभाल की,

वे मेरे हमसफ़र थे ।

हमन बाते की

पर अब वे इतिहास बन चुके हैं—

इतिहास जिसकी बाँहा में सब समा जाते हैं  
वे बन चुके हैं

एक मात्मा एक देश । •

## मैं जानता हूँ • मलेक इब्नाद

मैं जानता हूँ मैदिह के बाँधू भगो सूखे नहीं हूँ  
उसका सहू भगो भी सहूना की नालिया म बढ़ता है

गुरु पात्र है धनोबिन न करीब  
शहीनों की सूचा टेंगी है

मैं जानता हूँ सिधुन क्या भा क्या है  
समका धोखे नष्ट है

विपत्तनामा धान के खेत लाशा से आबाद हैं  
मेरे काना में मझगास्कर की कराहा का संगीत गूँज रहा है

बाज हममें से हर किसी को  
भय का एकाधिकार प्राप्त है

रोज मैं अपने दास्ता की सख्या गिनता हूँ  
मेरे दोस्त जितनी जल्दी मरत जाते हैं

सख्या खत्म होने पर मैं गिनना बन्द कर देता हूँ  
नामा के सख्या में बढाने पर मैं गिनना बन्द कर देता हूँ ।

# पोट सईद का गीत • उमर-अयू रिशेह

इज्जत स ज़्यादा बचाने की चीज़ कोई भी नहीं है  
ऐ सागर की रानी, उसके लिए सटना भी पड़ सकता है  
भरे सौन्दर्य के गव म तुम तट पर झुकी हो  
गम्भीर निरासक्त

सौन्दर्य बरदान कब हुआ है ?  
ये सुटेरे—हर सहर पर—प्रतीक्षा में हैं—  
बित्तन बेराम कस गा रहे हैं, चित्ला रहे हैं  
—पर तुम्हारे जान इन्द्रिया बन्द है !  
पर नहीं ! देखो देखो—

वे माने हैं—वासना और घृणा से भरे भाते ह !  
फिर भी तुम खड़ी हो—स्विर निरस्ताहित !  
यह मुद्रा—शोभा का तीर्थ !  
तट लाल हो गया है

और वहाँ तुम पड़ी हो,  
वे बार पर बार कर रहे हैं  
पर तुम भाह भी नहीं भरती,  
तुम्हारी दृढ़ता बाल बन गई है  
न तुम समर्पण करती हो  
न मट्ठी ही हो !

शम और मफ़रत से वे पीछे हटते हैं  
तुम मुकती हा वे कह रहे हैं  
‘दस्तरे हृदय नहीं है’ ‘नहीं है—  
‘मह ज़द है’

तुम मुस्कुराती हा  
और उस तिनारे पर भदेखा  
प्रभात अवतरित होता है ! ,

## प्रश्न • वमर अबू रिजेह

ओ पहाड़ और आसमान  
सुम मेरे आनिगन से  
दूर क्या भागत है ?  
मैं तुम्हारे कर्मा के पाम  
हर दफा क्यों लडखड़ाता हू ?

खो गय रास्ता के सामन  
मुझे अक्ला छोड़ देने को  
क्या पत्थर उग आय हैं ?  
मेरे खेल व मैदान खरम होन जान हैं  
यह सब परिवर्तन क्या हुआ ?

और यह शराब भा  
—जा दबो पेय है—  
भव मुझे क्यों नहीं जसाता  
क्या नहीं उस स्वर्ग तक पहुँचाती  
जहाँ कामना समाप्त हो जाती है ? ●

## दो प्रेमी • अनवर नफ ह

बल के दो प्रेमी  
भाव उबरा धरती में तो रह ह  
उनके चारों पर सब के बयाच म गड़े हैं  
गमिया म गाँव के पछा उन सेवा को खाते हैं  
और उनकी शाख आसमान के मलानिया को साया दती हैं  
उनके हाथ जगसी बबूतग व खलन को खुले ह  
और उनकी आवाज और साँस समुद्र म मिन गई है  
प्यार के सब प्रकार और मनाहुराएँ



कन्न म या नय पानने म खा गई है  
 उनका यौवन वसन्त के साथ भिन गया है  
 और आँसुआ के यन्त्र पतझर की नीली आँखों म खो गये हैं  
 और शिशिर की नाला अगुलियों क समस्त वफ़ा की चमक  
 और प्यास से मुक्त दो पशुद्विया का पून  
 सदा के लिए फव्वारे म नुचा पड़ा है  
 प्यार कं सब प्रकार और कोमलताएँ  
 कन्न म या नये पालन म खो गई हैं  
 मिठा उनकी प्यारी आँखा के जो अंधेरे म भा चमकती हैं  
 बार मोमरत्तियाँ आँसुआ से नष्ट हो चुकी हैं । ●

विनाश की एक कविता

## कवूतर • इम्राहिम तोखान

मफे कवूतरा के लिए सहा है कहना कि व धार म कुसकुमान है  
शानि और मौह्रा क प्रनोक मृष्टि के धारधम मे  
शान्ताभा व साथ वे मूक जान हैं जब हवा उनक जगना का छूती है  
जब दापहर का गर्मी जलाता है, व उठ जाते है अपना मीन

का धार

और फिर बक्कर खाकर गिरत है प्ररणा का तरह जा तुम्ह सहमा  
अकड़ सता है, प्रमान हो

दो दुकदियां दो विनारा पर, सम्भवम्बित लही हुई, जहाँ व गिरा था  
प्रत्येक अपनी तस्वीर को खूबना है पाना जब वह पाना है  
जब वे अपने सिर हिलान हैं वू दे उनक गन पर मरक जाता है,

मोनिया का तरह ।

इस तरह शीजन हाकर व फिर उठ जात है शाशया पर अपने पानना पर  
उनके पत्तो की परफुद्दाहट प्रकट करता है उनका मन्ताप

और जब उनकी मौन धाता है, मत्र उन्हें बमि का

ममन्त हा

सम्पूर्ण भावून होकर, मित्र अपना पाना म धिराय व सान हैं । ●

हरफ की दो कविताएँ

## बास्केट बॉल का खिलाड़ी

मुहम्मद अज़िसम

खूबमूरत राता म जवान रात के साथी  
आपमा के मित्र ! जब मैं बरखा होता हूँ,  
जिन, जो समाप्त होता है हमारे मिलन क बग र  
उम विकास देता हूँ मैं अपनी जिन्गी से ।  
गनी म जिसम मैं तुम्ह नहीं देखना  
मेरा आँख मेरे परो से ज़िद बन लेनी हूँ,  
सुबह जिसम तुम मेरे मूर्खोन्प नहा होते  
मेरे लिए अपनी हा भबेरी होता है जितनी कि रात ।

बास्केट-बॉल को मन छुओ मेरा हृदय  
एक गन् है तुम्हारी जङ्ग म ।  
दौड़त म सावधान रनो तुम्हारे पाँव स  
मेरी आरमा लिपटा है ।  
जबके बजाय, प्यार के सगल म डूब जाओ ।  
तुम्हो वह धुन हा जिसम मेरे शब्द गुम्फित हैं ।  
मेरे शिष्य मैं तुम्हारी शिक्षाएन करूँगा तुम्हो स,  
क्यों नम साहम करोम मूलन का कि मैं कौन हूँ !

मैं कभी बच्चा मे नहीं जाना  
सबिन कम्पन मेरे रक्त का जमा देना है ।  
मेरा वाक प्रवाह तुम्हारा दृष्टि म व्याकुल हो जाना है  
मैं वह नहीं पाना हूँ ये प्राने, जा मुझे वहनी चाहिए ।  
इस तरह अपने भ्रम म मैं मूक हा जाना हूँ  
घोर अपने दर्द मे साधन ।  
क्या मैं प्यार को दिया मचना हूँ ? मेरे धोनें पर वह बोचना है  
शब्द मेरी आँखा म रक्त है ।

अपना जीवन मैंने बिता दिया है भस्म में, व्यर्थ,  
 विद्वत्ता स कहीं अच्छा है  
 उसके साथ बैठना, जिस तुम प्यार करते हो,  
 मन्त्रि सभर रात्रि के एक प्रहर भर ।  
 रहन दो विद्वत्ता को ! मनुष्य के किस काम की है वह ?  
 जीवन से निवोड ला मुख जो शेष हो ।  
 और यदि ससार एक स्वप्न है, उसे बन्ल दो  
 कि वह मुख्यमय हो दु समय नहा ।

भयकारा भा गया है । क्या तुम सोचने हो  
 मस्तिष्क और चनना विध्राम लेंगे ?  
 तुम्हारा चेहरा एक उद्यान है । क्या मैं  
 गुडार दू यह धाप्प इसके गुलाबा की गंध पीकर ?  
 अगर भ्रम ल मैं मैं गर्मी की शिकायत करू  
 तो भगस्त कैसा होगा ?  
 वियाग की लपट मुझे अभी जलाती है,  
 क्या होगा मेरा, जब शीघ्र मुझे जलाएगा ?

मेरा रहस्य छाना ने जान लिया है,  
 प्यार कब छिपकर रह पाया है ?  
 उनकी फुमफुमात् से एक शान्त धावाज आती है  
 उनकी आवा म निर्लंग बड़े जा गहते ह ।  
 जवान लड़क व्यग्य म हमने ह ।  
 और बड़े बुदा कहन ह ।  
 मेरी गुड मॉनिग का वे उत्तर देने हैं  
 'गुड मॉनिग हमारे अध्यापक को और प्यार को भी । •

कहाँ चुनूँगा मैं फूल !  
 अफरम फादिल

ओ सुन्दर !  
 यहाँ है प्यार  
 जिसे हम खोजते हैं और जिसे हम मरीन्ते हैं,

हम उनके बन्ने हैं  
 और बन्नी को हक नहीं पुनाव का  
 गुनाह के बगीचे में जाने का  
 बनी बठन और प्रतीक्षा करने का ।

सुन्दर आँखों की रोशनी में  
 तमाम भय निवास करता है  
 मुझ भय है और फिर भी  
 मुझे किसी व्यक्ति का भय नहीं है  
 जब मैं तुम्हें घालिगन में बाँध सूँ छिप कर,  
 जहाँ कोई मुझे देख न सके ।  
 यहाँ बहाँ छुन्नूँ गा मैं फूँ ?  
 तुम्हारे मुसुराते हुए चेहरे पर ?  
 या मिन्दूरी गाना पर ?  
 या इन दोनों पर ?  
 कितन सुन्दर है वे ॥

बपों का अकाल  
 हमेशा के लिए उचटी हुई नील हा गया है,  
 जीवन कड़वा और उदासी से भरा ।  
 मुझ में पुरस्कार देने हैं तुम्हारे कामल शव पर  
 और मेरे मुरझाये हुए पत्र फिर जीवित हो उठने हैं—  
 और मेरे वृक्ष हरिया जाते हैं । ●  
 (फिलिस्तीन में इराक़ी कविताएँ ज्ञान भारिगल द्वारा अनुदित)

टर्कों की दो कविताएँ

## नग्न सुप्ता • फातिल हुस्तु सगलारका

रात की स्मृतियाँ

न दा

प्यार न मुझे—हाथो पाँवों तक बसा है

न बुलाओ—कदापि नहीं

मृत, सुपुत जाग जायेंगे

व—जागेंगे और चले धायेंगे हमारी शया तक

अपन छोटे-से पंख में

जब

हमार ऊपर नचन धूम रहे हंगे

व—चले धायेंगे

क्या—मैंने कहा कि ऊपर कुछ सरक रहा है

सम्भव मैं सुप्त होऊँ—सम्भव यह सब कुछ

तुम इतने पास आओ कि उन्हें सुनाई न दे

मुझ रात की याद न दो—दन अवसरा पर

न बुलाओ । •

## मृत्योपरान्त • सी० टरान्सी

मृत्यु के सम्भाव्य को चाहने हुए—हम मर गये

बड़े निश्चिन्त म मनकहा रहे गया चमत्कार ।

अब कैसे न गीत याद करें—आसमान का टुकड़े बूझा

की टहनियाँ और बिडिया के पत्र

सब जिय हमने—उसमें अभ्यस्त रहे ।

और अब उस संसार का कोई सम्भव सूत्र नहीं

हमारे बाप—हम पूछन को रहे ही क्या गया—

हमारी गहरी अनन्त रात का कौनसा अन्त अर्थ है ?

और हमारे पास भ्रमने का—सूत्र भी नहीं

अब—उस टूटन का कोई प्रत्यावर्तन नहीं

जिस दलें हम

। •

[ टर्कों की कविताओं के अनुवाद—गंगासाह विमल ]

## मैं वही हूँ • इतिजिब मैगर

तुमने कहा कि मैं शरद हूँ । ताँबा मैं बना हूँ ।  
परिष्कृत मुखण चीनल और यम्मार रजन बैंगना और लाज—  
मैं वह सब वृक्ष हूँ जिसकी शाम दीवार पर झुकी है ।  
मैं बन सल का मिट्टा हूँ जो कूड़े में ओ गया है । कूड़ से उम ।

तुमने कहा कि मैं बियावान जंगल हूँ । तो देखो मैं वही हूँ ।  
बड़नी धलून कौपनी सतारें, लाल और पानी पत्तियाँ ।  
मैं खरगोश का बच्चा हूँ उसकी मृत्यु का भय हूँ ।  
मैं मोन की बाली हूँ जो कौटा में गिर गई है । कूड़ से उम ।

मैं गाँव की सड़का सड़क हूँ गाँव हूँ जंगल का सैलानी गुमाव हूँ ।  
मैं हरियाला बगीचा हूँ नीला साया हूँ पुरातन कुटिया हूँ ।  
मैं संसार की हर वस्तु हूँ और उसका आरिजन करता हूँ ।

आ भी जो भी तुमने कहा, मैं वही हो गया—  
बक म बन्ती गोरवा, धनाम म गहर घुमा मीगुर ।  
मदक स भरे तालाब म मान की मछली गिर पड़ी है । कूड़ से उम ।

## शांति वम • घनाड कॉप्स

मुझे एक वम चाहिए एक अतिगत वम, मेरा शांति वम ।  
सबसे मैं उसकी परीक्षा करूँगा जब मेरा बेटा जायेगा  
मगदोन्या केना नील की छुछकू से तरीनाला । वूम । वूम ।।  
आमो वन कमरे में मय हावर नाचो ।  
मैं सड़क पर वम की परीक्षा करूँगा जिससे पड़ोसा जब जाय  
सामन रहनवाले राक-मकदूर विद्यार्थी और देशपाए अंग जायें ।

मुझे एक वम जरूर चाहिए और तब मैं विड़नियाँ लोन दूँगा  
और वमदे में चाय तरफ दूँगा फिर्मा

मेरी बाबी अपना झूठा गान म मेरे साथ नाचना  
और मेरे चारों तरफ दबदबा उड़ते हैं।

मुझे एक सुखी पारिवारिक बम चाहिए जिस में खुद हा बला सब  
में छत पर बंद जाऊंगा और दापहर की उस दाग दूंगा  
सारी दुनिया चौक उठेगा और सब हम अपना सब सगे।

मेरे अपनी बीबा की छवि में हँसा स फाड़ दना चाहता हूँ। पिंग ! पोंग !!  
दापहर बाप जब बच्चे स्कूल स घर सौटते हैं; तब मैं उसे बसाऊंगा।  
मुझे एक हँसी का बम चाहिए, जिसमें चॉकलेट चुम्बन, मास्समोम  
गुल्वादे, फ्लाउमेटेनपेन पटाख और गैन् मरा हा।  
मेरे वह बम चाहता हूँ जो दुनिया की गुलाब स डक दे।

मुझे हमेशा मृग रहो और शांति स मरो का बम चाहिए,  
मुझे धाराम स अपना बिम्बों पर सामो का बम चाहिए  
मुझ्ह फिर मिलने का बम चाहिए  
मणि पद्म हम् का बम चाहिए ओम् ओम् बम चाहिए  
मेरा अपना बम व्यक्तिगत बम शानि का बम— ९



# कर्नल और वम • शिन ऊका

कर्नल कर्नल कर्नल  
मैं तुम्हें प्यार करता हूँ  
इस उदास मुँह का तुम कहाँ जा रहे हो  
मिलिट्री स्कूल  
जहाँ ५० मूलियाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं

कर्नल कर्नल कर्नल  
मैं वम का प्यार करता हूँ  
कमीलिए तुम्हें प्यार करता हूँ  
मैं उन अनन्त सम्भावनाओं का प्यार करता हूँ  
जो वम के घोड़े के पीछे छिपी हैं  
मैं एक लाख हिस्म वान वम के  
त्रि टक करत भूकम्पाय मौन्दप को प्यार करता हूँ  
मैं तुम्हें प्यार करता हूँ  
क्याकि तुम इसमें खाली कुछ नहीं हो

ओ कर्नल कर्नल कर्नल  
वम से खाली तुम कुछ नग हो  
घुएँ व बीन किन खूबमूरत लगन ह  
क्या हो दन्ताक खूबमूरती  
भूकम्पाय मापक का हिचकिचाँ लने और बेहारा हान दो  
साया का त्रिचकिचाँ लन और बेहारा हान दो  
पदिषा का हिचकिचाँ लन और बेहारा हान दो

कर्नल कर्नल कर्नल  
मुझे मुग्ध नक्शा पसन्द है  
व देशान में खाली स्पष्ट हान है  
घन मैं नगिन में उनका निग्न मू गा  
और बीगह पर मबता बाँट गा

मैं उन्हें तबि पर सुनवाकर बना पर चढ़ा दूँगा  
 या सस्रुत में उनका अनुवाद कर लूँगा  
 और वह भक्तिगत म बाँधकर नीवूँ तने मर जाऊँगा  
 मैं ये सब उस आत्मी को पढ़कर सुनाऊँगा  
 जिसने धमरिवा की खोज की  
 कोलम्बस से पहल

पर कल कल कल  
 बम बम बनाये जाते हैं ?  
 पी पी पी पी  
 क्या तुम इतना सरल सत्य भी नहीं समझ पाते ?  
 हम बम बनाते हैं  
 क्योंकि हम बमों का नाश करना चाहते हैं  
 शांति के लिए नाश  
 इसलिए हम बम बनाने हैं  
 और बम कभी पूरे नहीं पड़ते  
 क्योंकि शांति ज्यादा जिन नहीं बनती  
 बम बनाओ बम बनाओ  
 पी पी पी पी

या कल कल कल  
 देना मैं तुम्हें प्यार करता हूँ  
 क्योंकि तुम एक पुराने बाहियान बम मे  
 ज्यादा कुछ नहीं हो  
 मैं तुम्हें त्याग दूँगा  
 यह पवित्र भाजा है  
 जो सस्रुत की कविताओं में लिखी है  
 और मेरी भी •

# विल्ली और चिड़िया • हिरोसी इवाता

समुद्र द्वीप को घेरे है  
तन पर एक बेकहा मरा पत्ता है  
एक दो तीन तिन गुजर जाने हैं  
मद बेकहे की जगह रेत ही रेत है ।  
छुट्टियाँ घोसे की तरह बिताकर  
एन मादमी अपनी केकड़ी वापस जा रहा है  
जो मसूचे शहर को घेर है ।  
विविध पशुपरा स बना यह बैंक  
सिर्फ चार भान्मिया की हित रक्षा करता है ।  
पहला विस्तर पर उमटा सैटा है  
दूसरा मातवित सा इधर उधर ताक रहा है  
उसके हाथ और उगनियाँ बाँप रही हैं  
अध बिसकी बारी मरन की है ?  
तामरा पुपचाप फोन मिला रहा है  
चीया तेजी स उम पह्राड़ी पर बढ़ रहा है  
जा उनके शान्तर घर के ऊपर लड़ी है ।  
भगर बाई गुनाब का पीया लगाये  
ता क्या दूसरा को भा गुनाब हा लगाना चाहिए ?  
जो तिमका जी चाहूँ, करे ।  
अबाक भ्राड़ी स निकतर एक बिम्बा  
घारे घारे भाग बढ़ रही है  
उमकी पान पर एन छोटी चिड़िया है  
बिम्बा भा बची है चिड़िया भी बची है  
बन्ध बन्धा न ताल हाने हो हैं ।  
पर एन तिन तिमनी जानर बन जानी है  
चिड़िया पर उमका तिन मचल उल्ला है  
और वन उस लान लगनी है  
स्वान माटा है चरपरा भा है  
बिम्बो व गये म यह नीचे जाना है

पेट उस अपने में भर लेता है  
 मोह ! माह ! बम बस ! धन्यवा !  
 न काँद रोता है न हसता है  
 ओ ईसप साहब !  
 भर ओ ईसप साहब ! •

## शरद का पुरुष • यू स्या

गाँव के पास

उनाम रास्ते पर

एक रा पादचर-सी दाढ़ी रहे  
 एक व्यक्ति मेरी तरफ धूँटा है  
 मैं उस सताम करता हूँ  
 शायद के प्रभावों शब्दों से उसकी अभ्ययना करता हूँ  
 पर वह सिध हँस देता है

प्रस जसी हसी

शरद की मय चाय और फनी है

और यह पूछा

शरद का ही है

ओ तारा दृष्टि से

मुझे तक रहा है •

## विगत • मिनोरु योसिओका

एक क्षणमा अपनी पत्नी गहन ऐन से दृष्टा है  
 उसका कोई विगत नहीं, कोई इच्छा नहीं है  
 वह अपने साज है, हाथ में तेज चाकू लिए  
 चाटियों की श्रृंखला उसकी छाँव की कन्या से गुजर जाता है  
 भरता का घुन मोहों की छाया से परेशान होता है  
 एक रफावा है

मिलिप्याइन्स की दो कविताएँ

रात्रि का दृश्य  
दो श्वेत हस्त तुम्हारी  
प्रतीक्षा में किनारे पर काली  
बिन्ती बूंदती हुई •

•  
अनुभूति बहने को  
तुम्हारी माँस का स्पर्श  
अगुली की कोमल हँसी  
मुझे मासमान तक चढ़ाती •

• जी • बस बुनाओ

## मि० तान मूसेज • ई तियाग होंग

मैं हमेशा पाछे बना रह जाता हूँ ?  
 मेरे सब मित्रा न भाग पाया है  
 देरा की समृद्धि में जावन के  
 बढ़े हुए स्तर में  
 मेरा भाव्य ज्यों का त्यों ही है  
 पसा नहीं रोपों के लिए—  
 कपास दिन घोर रबर के—  
 न छोटे उद्योग के लिए ।  
 नार्गरियाँ मैं छू नहीं सकता  
 कितनी ही दफ्तर एक हा नम्बर स  
 इनाम हार चुका हूँ ।

क्यों मेरे सभी दोस्त  
 नयी नयी वस्तियों में  
 बर्निया हवादार घर मरीद मते हैं ?  
 मैं मरकाटी क्वाटरों में रहता हूँ ।  
 कम जग साबने पर,  
 यह एसा बुरा भी नहीं किया है कम है,  
 भीरा की दरा तो मुक्त मे भी सदा है,  
 वे दान वस्तिया, मीजों भोंडूमिओं  
 और गौछालाओं में रहत हूँ ।  
 और कौन जानता है  
 जल्दी ही मेरा प्रमाण हो जाय  
 विरोध बैठन मिलन सगे ?  
 कम से कम एक तरफती तो मिल हा सकती है ।  
 मान जा अपरिचित है कम नेता बन सकता है,  
 मेरे बनासक्त ना मि० सी की तरह जा घब  
 बडा भ्रामा है मुक्त त्रिगुना बैठन पाता है!!!

इनलिए मैं सोचना हू  
 कि रिटायर होन पर  
 मैं राजनाति में हिस्सा लू गा  
 या कोई व्यापार कर लू गा ।

क्याकि मरकाटी मौकर  
 सभी जन्मे समीर नहीं हो सकते।

कोरिया की तीन कविताएँ

## वर्फ • किस सू यु ग

बर्फ जीवित है  
यह गिरी हुई बर्फ जीवित है  
जमीन पर गिरी हुई यह बर्फ जीवित है

आमो छवि  
युवक कवि, आमो भव खाँसें  
इस बर्फ के सामने खड़े होकर छाँस  
निश्चिन्त होकर यह करें  
जिससे कि बर्फ खुल देख मरे

बर्फ जागृत है  
उस आत्मा और शरीर के लिए  
जा मृत्यु को भूल गया  
आमो खाँस  
सबरा गले तक यह बर्फ जीवित रहणी

आमो खाँसे  
युवक कवि आमो भव खाँस  
बर्फ का तरफ़ दमन हुआ  
और उमक सामन ही बसगुम गिरा दे  
ओ सारा रान हृदय में भरना रहा । ●

## भूमध्यसागर पार करते हुए

ओ यौन

●

मैं समुद्र की थुल न खुदुरी का  
मूय निश्चिन्त फँसे जब मैं  
अग्निमा बिखरता हूँ रहा है—  
मूय नीचे उतर जाता

चितिज पर जहाँ भूमध्यसागराय सम्यता की  
विविध बोलियाँ गूँज रही हैं  
बाग धोर बिधाम की घोपणा करती सो,  
वहाँ घास की नपट फनती जाती हैं ।

आज रात समुद्र के गर्भ में मूँव टकराता फिरगा  
फकाल की हाथों में उठाए  
उसकी रोशनी में बढोरे मोतियों की तरह

और इसके बाँध शीघ्र हो जब बाग धोर उठती सहर  
बाँध की चमकती रोशनी में वह तिमन हाँ उठगा  
और तुम समुद्र ! पूरे यौवन में हाये,  
तब एव और ज्वार उत्पन्न करना । •

## कार्नेलिया जो अमेरिका में मिली

मिन चाइ गिफ

•

कार्नेलिया एक दिन आई—मौसम इतना अच्छा था  
कि हमले सभी बाहर दहलाव पर रहे थे ।  
दुनिया की कौन-सी चीज हम था नहीं सकते थे ?

तुम्हारी नानी मौल भूमध्यसागर की तरह हैं  
त्वरित झल्लियों के निकट मार्ग से हमन लम्बी रात गुजार दा,  
क्याकि मो का मय निरन्तर मलिनक में बन रहा था ।

बचपन से मैं बहुतों का सिर खाता रहा हूँ क्योंकि  
माँ ने मुझे यही सिखाया है,  
मैं भी साझी उसन बना क्योंकि मेरे पास अपना सिर नहा है ।  
पर तुम्हारे बाल वो मुनहरे हैं, क्या वे किसी गाय के हैं ?

राजधानी का सबके मेरे पास  
फोटोमैक में मैं अपना यह तथ्य देखता हूँ—  
पर मेरा दूर दाय सान मय में है ।



मरी जन्मतिथि २६ फरवरी है  
इसलिए इस साल वह नहीं आयीगी ।  
तो तुम सिर्फ सात साल के हो ?  
मैं तुम्हें बहुत बहुत चाहता हूँ ।

प्रभात के चुम्बन, शय्या पर गरम गरम !  
तुम रोनी हो रहीं घोर मैं घर लौट आया ।  
प्रभात के चुम्बन ताले घोर मुलायम !  
मैं कठोर पर कोमल मूख कोरियन  
अपने साथ अलार्म घड़ी ही लेकर आ गया । ●

इन्दीने-ऊँदा क बात कविगर्भ

## मेरा घर • चयरिल अनार

मेरा घर कविता के भम्बारा का बना है  
उसमें झाड़ने जड़े हैं जिनमें सब साफ लिखा है देता है  
छोटे भाँगना वाली विशाल नगर स मैं भाग भागा  
मैं अपना रास्ता भूल गया हूँ और उसे ढूँढ नहीं पाता  
धूमिल राशनी में मैंने एक तम्बू लटका दिया  
पर सबेरे तक वह न जाने कहाँ उड़ गया  
मेरा घर कविता के भम्बारा का बना है  
यहाँ मैंने शान्ति की और सन्तानें उत्पन्न की  
लगता है बहुत इन्तजार करना है पर वह चल पड़ा है  
सब में प्रकाशमान दिन तक पहुँच नहीं पाता  
यदि सुना शान्ति का एकत्र करने आया  
तो उनके मधु को पिपलत देता •

## एक कमरा • चयरिल अनार

एक लिङ्गी इस कमरे को  
दुनिया में भजनी है । भीतर घुसकर चमकता  
चमका बुद्ध और भी जानना चाहता है  
'यहाँ पाँच बक्क रहन ह  
मैं भी जिनमें से एक हूँ ।  
मरी माँ रोती हुई माँ गई है,  
जन का मतारजन एकाकी ही होता है,  
मरे परेष्ठान पिता भी सटे हुए  
पत्थर में सगे माँ पर सड़े घाँसी को देखते रहन हैं ।

सारी दुनिया आत्महत्या किये से रही है ।  
 मैं अपने माँ और पिता से, जिनकी गणना हो नहीं होती  
 एक और छोटा भाई चाहता हूँ  
 तब और चार गज जाने इस टाइम कमरे में  
 मनुष्या के भीतर जीवन नहीं फूँका जा सकता । •

## जागरण • सितोर सितुमोरंग

उमकी रात्रि वरषाघा के लिए  
 उसका जिन प्रवेलेपन को भोगने के लिए ।  
 जहर उमके शरीर में फैलता जाता है  
 वह निकामत नहीं करता ।

वह बिडकी तक आता है  
 रोड की तरफ बाहर उगते सवेरे को देखता रहता है ।  
 वेड फल फूल से सजे जा रहे हैं  
 दुनिया पहने से क्या लग्न मूर्ख होती जाती है ।

वह दबकर वह और भी उलाम हा जाता है ।  
 कामना उस डकने लगती है ।

तब किसी स्त्री की छातियाँ पर पकटकर  
 वह एक नय स्वर्ग के सपन देखने लगता है । •

## अभागा कोजन • डब्ल्यू एस रेन्दा

जगम आग से भर उठा है  
 जल हुए सक्कड़ आसमान को  
 जो दुनिया भर में फना है,  
 थाप दे रहे हैं ।

ऊपर चंद्रमा सह से पमनता  
 घाँसों से मारती घाँसू बरसा रहा है ।

कोजन ! कोजन !

बामार मरक

तुम्हें क्या । तबनाफ़ है ?

क्या अपने धंधेरे धोंसने स वह खूबट बुझिया  
अपने जाल और फँसे लिय सौट भाइ है ?  
(नाल यगती में स वस्तू निकलता है  
और कुहर क गन पर सवार  
बुझिया धाजी है ।)

कोजन ! काजन !

बामार मरक

तुममें कौन सी नफ़रत है ?

(वह कोजन का उगस निच चुप सेजी है  
उनका धांधों क फूल खूब तजा है,  
वह बचाप कुछ कह भी नहीं पाता ।)

काजन ! कोजन !

ऊपर चंद्रमा लहू स बमकना

धांजों स नारंग धाँसू बरला रहा है

और धर में जान गया

बुझिया का धांजों में तुम ही पड़े हा । •

## वापसी • तो थुई येन

मैं और तुम परस्पर परिचित, ध्वस्त बचपन  
की गतह पर सपना के कुहरे में खेनजे रहे  
और मुदूर दीवाल की तरह जीवन  
हमारी हँसी और रोज़ बापम लौगाता रहा

हमने नहीं जाना कि पुन के नीचे कितना जल बह गया  
पीछे मुड़कर देखने हा हम अचानक डर गये  
हमने देखा कटि हमारे चारो ओर घिर आये हैं  
( ईश्वर ने ईडन से ख्याल जानने वालों को निकाल दिया था )

फिर मैं एडवेंचर करने चला और तुमको भूल गया  
अपने बचपन पग्लार और मित्रा को भूल गया सब भूल गया  
मैं दुनिया को बदलना और नयी मानवाकृति गढ़ना चाहता था  
अपनी जवानी के हथियार बनाता मैं धूमता रहा

कुछ सागा न तालियाँ बजाइ कुछ नाराज हुए—  
अपने चहरे की गर्ज देव पान पान पीते हा हात हैं  
अन मैं हर शाम घिर आये बाग्ला में रोन सगा  
हथियारा को पेड पर टाँग मैं मितारो को समझने चला

इन्जिन घागे बढ़ता गया, सभी स्टेशनों पर ठहरता—  
मानवता की यात्रा का आश्रम पहले से नियत है  
बस मैं लौट पड़ा मेरे हाथ उल्हाह से भी रिक्त हो उठे  
मैं उन्मीलता की चट्टान पर आ बठा और स्तब्धता में  
बाला को सपेन होता आत्मा का केश में धाता देखता रहा

कि एक शाम अचानक ही तुम में फिर भट हो गई  
मैं इतना बस गया था कि तुम पहचान ही न सकी  
पर तुम्हारा आवाज में अभी भी हमारा विगत  
और तुम्हारे शरीर के आतिथ्य में आथ्य पान का निमंत्रण गूँजता था । •

## पवतों पर वसन्त आता है • यान दाई

मैं एक बार रही हूँ फा साग म, एक एकान्त 'मोघो' गाँव म  
ऊँचे एक पर्वत पर, बहुत से शिवरों के ऊपर  
बानू बट्टाना पर झुका हुआ मेरा यकान बाल्ता म लिपटा जाता था  
एक स्वच्छ पहाड़ी ऊपरना मुनगुनाना था उसके पार्श्वों म ।

मेरा जीवन दिनकुन शान्त था कि एक अमावस दिन  
कठोर मृत्यु न आकर मुझमें मूँ निया मरे प्रिय पति को ।  
मर रिता न प्राचीन जीए रिवाज के अनुसार मुझे बाध्य किया  
एक बाबा स विवाह करने को उस ठण्डी उदास सीत-श्वेतु म ।

बहु पचास न था और अफीम पाता था तमाम दिन और रात  
मैं दिनकुन अकेली रह जानी थी यद्यपि बहु हमेशा वहाँ होता था ।  
जब मैं अपने छोटे म देखती थी नाराजों उलट कर मुझे धुरती थी  
आँसू अकिराम बहने लगते थे मेरा हृदय निराशा स भर जाता था ।

समार म और अपनी अफीम म मेरा पति बला गया,  
उनके स्थान पर मुझे से लिया दूसरा एक बाबा न,  
बतात दुःख हुआ है मैं फिर एक बार विवाहित हुई ।

बबल बीम की उसमें तान बार विवाहित  
तीन बार जीवन न मुझे विषवा पाया ।  
एक बार शान्ति उस गाँव तक आई,  
और उस आशा स दूरे गिरे सब जमीरों और उगामी ।

मैंने पहाड़ का छोड़ दिया अपनी मानसूमि के लिए काम करने को  
जब मैं बबल बीम का हा थी, उस अवरोधों क मौसम में  
एक दिन एक बाबूक जाने नौजवान को मैंने देखा,  
उनका धार्मिक प्यार का अमिमय संदेश मुझे दे रही थीं  
जिसने मेरे हृदय में उत्तर देता हुई चौक उठा दी ।

पत्नी बार मैंने पाया अपने हृदय की धड़कते हुए गहराई स  
पूरा अर्पित सुखानुसार थे, हवा चलता था बहुत मधुर

झरना बेहूँ बुरा होकर बहा जगल प्रत्यक्षिक धमकने लगा  
कौन गा रहा था वहाँ ? मेरा धड़कता नित झरना या कि पत्ती ?

प्राज जब हम साथ साथ झरनों में खेनने हैं  
वह उदास भीषो लडकी अब एक नयी जिन्दगी ओती है  
सुनवर में झरने न देखती हूँ और देखती हूँ उसके घाईने में  
मेरा हृदय अब मुक्त है तमाम कठिनाइयों और मुसीबतों से । ●  
( अनु० ज्ञान मारिष्ठ )

## रात्रि में मय • जॉर्ज केट

भारभर्य करता झूठा जाता उसके प्यार की रात्रि में  
 उसके निर्वसन जीवन के अनन्त चक्रव्यूह में  
 यात्रा करता धीरे-धीरे मार्गों पर गर्म रक्त पर  
 घघकार में बहते मुख जल पर गर्म रक्त पर  
 मैं कभी कभी धीरे-धीरे मैं संशयपूर्वक महसूस करता हूँ  
 एक वस्ती, जैसे मर्दानिया की  
 कभी कभी सदैव प्यार  
 रिक्तता की धीली धुलियाँ, धुल्य का चकड़ता पड़ा,  
 उसके प्यार के प्रवाह में बहती प्यार । •

## दरवाजा • धर्मो शिखरामू

छाया छाई मैं गहरी हो रही है  
 कुछ भी सोने दिना,  
 एक स्वचालित द्वार खुल जाता है ।  
 पनपता लौ के भीतर  
 द्वार झूठा है और टूटकर गिर पड़ता है ।  
 इस कठार अग्नि में  
 अब यह कौन घुस आया है—  
 भीतर से दीवाला को धटकाता ?  
 सपट अपनी पल्लविकाँ लौलकर  
 भीतरी छाई को प्रकट करती है •



## हिंदी

- शुंवर नारायण** जन्म १९२७, दो सप्ताह प्रकाशित ।  
तीसरा सप्ताह के कवि । कल्पितों  
एक मानोचनाएँ भी मिलते हैं ।  
सखनऊ में मोटर का रोजगार करते  
हैं ताकि साहित्य का रोजगार  
न करना पड़े ।
- कलाश बाजपेयी** (डॉ०) जन्म १९३४, ११ नवम्बर ।  
माधुनिक हिंदी कविता में शिक्षण  
पर डाक्टरेट । शिवाजी कॉलेज  
दिल्ली में हिन्दी विभागाध्यक्ष ।
- गिरिजाशुमार साधु** दूसरा सप्ताह के कवि । दो कविता  
सप्ताह और दो ध्वनि नाटक प्रकाशित ।  
आकाशवाणी जयपुर के संचालक ।
- जगदीश गुप्त** (डॉ०) जन्म १९२५ गुजराती तथा  
ब्रज भाषा के कृष्ण काव्य के  
मुसनासिक अध्ययन पर शोध ।  
नया कविता के सम्पादक । तीन  
सप्ताह प्रकाशित । चित्रकार भी हैं ।  
'माखीय कला के पञ्च बिन्दु' चित्र  
कला सम्बन्धी प्रकाशन ।
- जगदीश चतुर्वेदी** जन्म १३ जनवरी १९३३, केंद्रीय  
हिन्दी निदेशालय में अनुसन्धान सहायक ।  
युवक कवि, कहानीकार । कुछ भाषों  
बनाएँ भी लिखे हैं । 'प्रारम्भ' काव्य  
संस्करण के सम्पादक । भाषा वैज्ञानिक  
के सम्पादकीय विभाग से सम्बद्ध ।
- ठाकुरप्रसादसिंह** जन्म १ दिसम्बर १९२४ प्रगतिशील  
मान्यता से सम्बन्धित । सधामी  
गीता के प्रभाव से कविता में प्रयोग

किये। कवि कहानीकार एवं उपन्यास  
कार। हिन्दी समिति—उ० प्र० के  
सचिव। कविता संग्रह वशी और  
मादल। महा मानव' प्रबन्ध काव्य।  
उपन्यास कुंआ मुन्दरी। कहानी  
संग्रह चौथी पीढ़ी।

नेमिचन्द्र ज्ञान जन्म अगस्त १९१८ 'तार सतक  
के कवि। कविता के अतिरिक्त  
उपन्यास, नाटक संगीत नृत्य  
सौत्र-संस्कृति आदि पर हिन्दी और  
अंग्रेजी में अनेक बहुत-सा आलो  
चनात्मक लेखन। तीन पुस्तकें शीघ्र  
ही प्रकाशित हो जान की आशा।  
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली में  
नाट्य साहित्य के अध्यापक।

बालकृष्ण राय जन्म २७ दिसम्बर १९११। १९३७  
में आई सी एस प्रतियोगिता में  
भारत में प्रथम स्थान। १९५४ में  
आकरावाणी के महानिदेशक पद से  
त्याग पत्र। सम्प्रति केन्द्रीय हिन्दी  
शिक्षण-मण्डल, आगरा तथा  
हिन्दुस्तानी अकादमी उ० प्र०  
प्रयाग के अध्यक्ष। पाँच कविता संग्रह  
एवं अनेक अनुवाद प्रकाशित।

भवानीप्रसाद मिश्र जन्म २९ मार्च १९१३ संस्कृत  
मराठी बंगला गुजराती और थोड़ी  
सी फारसी के ज्ञाता। कहानी  
एकानी व आलोचना भी निम्नी  
विन्तु कविता लिखने में शायद इतना  
मुख्य मिलता है कि मान लेंगे हैं

विश्व-कविता १६५

घोर कुछ नहीं लिखा । कविता  
संग्रह 'गीत करोश' ।  
माखनसास घतुव बी एक सच्चे राष्ट्रीय कवि धारम्भ म  
एक भारतीय आत्मा के नाम से  
लिखते रहे । ७५ वर्षों के जीवन म  
माने माने अधिकांश पत्रकार को भी  
वसन्त का तरह जिया । लगभग ६०  
वर्षों से लिखते रहने पर भी जिनके  
सृजन म बामापन नहीं आया । मधुर  
शृंगारिक कविताएँ भी खूब लिखीं ।  
रामहरण मिश्र (डॉ०) नाटक के प्रस्ताव सभी कुछ  
लिखते हैं विन्तु मूलतः कवि । दो  
कविता संग्रह तीन प्रालोचना पुस्तक  
और एक उपन्यास प्रकाशित ।

सम्भुतार्थसिंह (डॉ०) जन्म—१७ जून १९१७  
संस्कृत विश्व विद्यालय, बाराणसी में  
हिन्दी विभागाध्यक्ष । छ' कविता-संग्रह  
दो कहानी-संग्रह एक नाटक एक  
निबन्ध और दो प्रालोचना की पुस्तकें  
प्रकाशित । गीत काव्य और नयी  
कविता म समान रूप से प्रतिष्ठित ।

शमशेर बहादुरसिंह जन्म १९११ सरल व्यक्ति—किल्ट  
कवि । दो कविता-संग्रह एक निबन्ध  
संग्रह एक कहानी व स्केच संग्रह तथा  
कुछ अनुवाद प्रकाशित ।

श्रीकांत वर्मा जन्म—१८ सितम्बर १९३१, नयी  
पौड़ी के कवि एवं कथाकार के रूप  
म समान रूप से प्रतिष्ठित । सुप्रसिद्ध  
परिभा कृति के सम्पादक । स्वतन्त्र  
सेवन-जागी । एक कविता संग्रह  
प्रकाशित । एक कहानी संग्रह और  
दो कविता संग्रह शीघ्र प्रकाश्य ।

## मा निशाद प्रतिष्ठा • कुँवरनारायण

शास्त्रीय नियम जो अनुकूल नहीं  
सामाजिक नियम जो आजीवन शाश्वतीय न होंगे—  
हम जिनकी कटिहार चशमवादी के भीतर  
पूना के हाथिय उगाने रहे  
बहारों का बुलाते रह—  
क्या वे दहदायी पहरेदार  
कभी संवेत्तीय होंगे ?

काश, य दीमक के टीले वात्स्योक्ति होने—  
शास्त्र-दृष्टी क्रीच-वधिक  
अध-सत्य धविक ठाक होते—  
कि मयुन पाप नहीं,  
पाप भी वह घातक बाया  
और जब हृदयहीन किसी आश्वेत्क ने  
जीवन पर साधा ।

पशु तट्टा छल भर ही  
तन्निन उस पाडा का महामर्म जानी न जाना—  
जीवन का सधुनम इकाई की हत्या में  
असम्मान जावन का ।  
पहला सौन्दर्य-बोध—  
बादराग ऋषि ने भी  
जब समस्त जीवन संवेत्तीय माना  
उस नमस्य पशु तक के दर्श की प्रतिष्ठा दी । •

## समझदार लोगो की कविता • कैलाश बाजपेयी

तुम्हारी परिस्थिति के ठाक विपरीत है  
हम मुक्तो नहीं  
यंत्रणा मुझे नहीं  
संक्रान्त में नहीं

में वस्तुस्थिति के ठीक विपरीत हूँ !  
 तुम्हारी खुशी किसी सजे ड्रॉइंग रूम में बन्द है  
 ड्रॉइंग रूम—जिसमें  
 सोफा है—परदे हैं !  
 ट्रांजिस्टर—रिक्वाइजयेर  
 बैकस—एण्टीक हैं ।

न समझ आनी—सी पेंटिंग—मनीप्लाण्ट  
 शायो में तरत कुछ जलजन्तु और  
 ( एक बहुत सुन्दर—मौ पत्नी भी )  
 तुम्हारी खुशियाँ इसमें बन्द हैं ।

यह सपाट ड्रॉइंग रूम  
 इस पूरी दुनिया में हर जगह एक है ।

तुम्हारी यत्रणा—  
 इस सजे ड्रॉइंग रूम में  
 ना घुस पाने की तीन्नी छप्पटाहट है  
 यह छप्पटाहट भी  
 इस सपाट दुनिया में हर जगह एक है ।  
 तुम्हारी समस्या—

यह सोड़ी है  
 जिसका मत दस है  
 जिसका मय एक है ।

लेकिन मेरे लिए—

न कही दस है  
 न नही एक है ।

सभी जगह दस है  
 सभी जगह एक है ।

ओ तमाम समझदार लोगो—  
 मैं तुम्हारी मन स्थिति के ठीक विपरीत हूँ !  
 मुझे माफ़ करो । •

## अवस्तू करुणा • गिरिनाकुमार माथुर

जब मेरी घाँसो म  
वादल मूनी बेमानी शामा की  
स्वप्नताएँ मेंडराती —

जब मेरी वाणी म  
बिन कूमी पीड़ा से असहाय  
बच्चा के नेत्रमूर चेहरे उठरते हैं—

जब मेरी बातों म  
मनचाही विवशताएँ  
अपटूटी नींद में धबराती हैं—

जब मेरे मौन में भी  
अछूती आरामा के पारखी की  
गुहार रहती है—

तब तुम  
जान बूझकर इस सबको  
मनमाना कर दते हैं

तुम्हें मेरे मन की समस्त करुणा समर्पित है  
जिससे वह थुक जाये  
और मैं अधिक निस्तग हो जाऊँ । •

## उम्र का माथा • जगदीश गुप्त

लौट आया हूँ  
पके-दारे अहेरी सा  
गहन वन म मटक कर;  
सुनहली हिरनी सदुस हर बार  
तन-मलक स  
मुझे धनती रही—पड़ती धूप ।

गहल वन से  
 लौट आया हूँ  
 उस मनाहारा वन से  
 मुक्ति भी कुछ पा चुका हूँ  
 किन्तु मेरी उम्र का माया—  
 दोपते प्रत्यक हिम छादित शिखर की  
 छाह में बहती  
 प्रणव सोनस्विनी के  
 बीच सिंचित  
 इन्द्रधनुषी कूल पर  
 —मव भी टिका है । ●

## चार छोटी कविताएँ • जगदीश चतुर्वेदी

एक अनुभूति  
 फल सुबह एक नन्ही सी चिड़िया मर गई  
 मुझे उसकी डबडबाई प्राण प्रजीव सी लगी  
 मुझे ऐसा लगा  
 कि दूर देश में  
 मरी बखी बीमार है  
 और मैं उस दाय नदी पारूँगा । ●

बर्र का बुल  
 साते साते बौंर जाता हूँ  
 और बिम्बर की परता को दूँ गिरे  
 सपना मना हूँ

मय का प्रस  
 मुझ एराजी को साथ जाता है  
 दर्न का नहा-या पोषा  
 वृक्ष बनकर शरीर में छापा जाता है । ●

दाम्पत्य जीवन (?)

सुराही से निकलती आवाज़  
पलग का चरमराहट  
दूध के गिलासा की खनक

कितना व्यवस्थित दाम्पत्य जीवन है  
पढ़ासी का । ●

गिरु का जन्म

कल रात मुझमें उग भाप दा पड़—  
कन्ध और गुलाब

दो छोटे छोटे हाथ  
दरवाज़ा खपखपाते रह । ●

लोकान्तरण • ठाकुरप्रसाद सिंह

यह राजपथ

इस पर मेरा माना-जाना बढ़ गया है  
यह एक भलग रास्ता है

माथ कुछ दूर तक घसी पर,

फिर आकाश पर,

फिर वही नहीं ।

इस छायाम रास्ते पर दोनों ओर  
गहरे शङ हैं—

सब मेरी कन्ध गॉन्क कोर्ट, कोठियाँ ।

बीच में सरती बरें, नायलन टेरेविन

बावड हेमर, हमी का टेस्वर—

छायामा के ठाने म बाने सी

बार-बार कुनी जाऊँ सबीरें—

सब मिलकर एक विशाल जग्न बुनजा जा रहा है  
बाल-लचकीला—

मिटका दन पर शुरी से फैनजा

बूनन पर बाँध लेता-गहन भातिगन में ।



मैं पदातिक,  
 इस जास में मक्खी सा  
 चलता गया हूँ !  
 इतना प्रकाश, इतनी भाग-दौड़  
 इतना ड्रेस रिहर्सल ?  
 सब है पर उसे निष्वासित  
 बिये जाने की गध में डूबा ।  
 धाखिर क्या है जो  
 निष्वासित है ?  
 मौन है ?

रात बाएह बजे  
 इस रास्ते से पैर घसीटता भौटना हूँ—  
 सभी बच्चे गले की,  
 दूध-सी गीत गध का भौंका  
 मुझे जिला जाता है ।  
 बुचले फन-सा घाहल  
 एक स्वप्न जगता है,  
 लड़ा होता है झूमता है ।  
 धाखों में भजन-सा  
 भगकार  
 नयी धाख देता है ।  
 सड़क से नीचे  
 गहरे गाने में पुल की छाया में—  
 एक पुरानी मंज़ार पर न्यिे जनते हैं ।  
 भीड़ है, बीच में बच्चा शिशु-कण्ठ  
 धीरे नये पल-सा बिजनाया गीत ।  
 पुन भगेश, वाली भाकृतियों  
 ये चहरों पर विषम कर बहती  
 रीतास्त रीसनी—  
 इतने सारे लोग कहीं से धा गये ?  
 क्या धाखियों से रोंग कर निरने ?

मैं सहम जाता हूँ  
 पर दवा कर रलिंग तक  
 जाता हूँ, देखता हूँ ।  
 डरते डरते भाँकता हूँ—  
 डरता हूँ कि कहीं मेरे  
 भाने से ये चीखन्ने न हो जायँ ।  
 बेरा बन्ल कर मुझे मुक्त करने के लिए भाये  
 ये बनजारे कहीं वसे ही न लौट जायँ  
 मुझ बिना मुक्ति न्यि ही ।  
 रलिंग पर झुके एक सन्दा घेर लेती है  
 स्वप्नाविष्ट-सा मैं जैसे सो जाता हूँ  
 सड़क पर लड़े-लड़े ही  
 नीचे उतर जाता हूँ  
 घौर ऐसे ही  
 लोकान्तरित हो जाता हूँ । ●

## दो कविताएँ • नेमिचन्द्र जै

हम कही हूँ जो हम नहा हैं ।  
 भाव जो कभी मूल न हुए  
 शब्द जो कभी कहे नहीं गये  
 जीने को क्या मैं दूँ हूँ स्वर  
 जो ध्वनित नहीं हो पाय  
 राग नहीं बने ।  
 जीवन के अचीन्हे सीमान्त के  
 बरम क्षण  
 होने न-होने के,  
 अपनी अनन्तता में टूटते रहे  
 निरन्तर अपनी अतीन्द्रिय सम्पूर्णता में  
 बीते रहे  
 पर बीते नहीं भोगे नहीं गये ।

आकार-रूप-हीन आघात  
 जो बस सहे ही गये  
 मनजान मनसाहे ।  
 भाँखों का कोरा भ  
 उगडे हुए भाँसू-से मनसाहे  
 बटके ही रहे करे नहीं ।  
 नहीं हैं हम  
 जो नहीं हैं । ●

आगो  
 अब कोई भय नहीं  
 असमरुत नहीं ।  
 दीपमाला सगी तयार है  
 आरतों का घाल सज चुका  
 है बड़ी धूमधाम अब  
 तुम्हारे प्रतीक्षित आगमन की ।  
 अब तो  
 तुम्हारी भजनी सुन्दरता ही  
 हमारी आकांक्षा के प्याला में  
 भरी है धनाद्यत  
 तुम्हारी अपरिचित यावनता  
 बदनवारा ली बघी है हमारे द्वार-द्वार  
 तुम्हारी अपरिमित उन्नता की  
 सगी है गली-गली हाट जगमगाती हुई ।

विश्राम करो  
 हमने सारा विवेक  
 कसब्य-अकसब्य का ज्ञान  
 नई सान मिट्टी-सा  
 तुम्हारे पय में बिछाया है,  
 रगविरंगी अण्डियाँ सटवान को  
 सपने एँठ कर रस्मियाँ बट ली है,

करणा के घटों को बँट कर  
हमने उन पर  
मारियल ढक न्यि है  
तुम्हारे भाग में  
मगल बिन्दा व रूप में रखने के लिए ।

हमने पहचान लिया है  
आस्थाएँ मुन्छ हैं,  
इसलिए हमने अपने ही पैरों से  
उनकी धायामा के बचस्पल  
बुचन कर  
अपने अदम्य उत्साह के आघात  
उन पर अवित कर न्यि है

अब और कोई कमा नहीं  
विश्वास करा  
और कोई सहाय नहीं  
कोई डर नहीं  
किसी दुविधा का द्वन्द्व का ।

आधो  
हम आज अपने अस्तित्व को मिटाकर  
सबका विमजित कर  
तुम्हारे हा एकांत स्वागत में  
पूरी तरह प्रस्तुत हैं  
तत्पर हैं । ●

**मध्याह्न • मालकृष्ण राव**

माँवें ज्योंही खुसीं, पढ गयी  
अनायास ही टूटि, रुड गयी  
पूर्व विज्ञित स बड़ने, प्रतिपन्न बड़ने  
ज्योतिविदु पर ।

मुला न पाऊंगा वह मोर  
 लिखा जा रहा था मन बेवस  
 प्रभामयी प्राचा की ओर—  
 रुक न सका मैं,  
 चला अनुसरण करता मन का  
 पकड़े एक मुनहली डोर ।

चलता सहज धम था उस पल  
 प्राणवान का,  
 सनकर सीधे लड़े वृक्ष भी  
 दीख रहे थे  
 गड़े हुए थे—  
 स्थावरता की आरम्भानि में ।

रुका न पलंगर  
 चलता रहा अथक अविराम—  
 मनजाने ही भाग रहा था  
 अपनी अनुगामिनि छाया से ।

भागे सीधी सुगम राह थी,  
 प्रतिपल बढ़ती हुई चाह थी  
 मनजे को मनजाने को अपनी को  
 कुछ लोहर भी कुछ पान की,  
 जो अपने म समा म पाया  
 उसमें स्वयं समा जाने की ।

चलता रहा प्रकाशित पथ पर  
 ज्योति-शाल की सत्य मान कर—  
 धानों म थी गुंज रही जीवंत रागिनी  
 गति की  
 अविरत गति की,  
 मुखर हा उठी प्रतिष्ठिया म मन की,  
 गति की  
 मैं मन्मथ-सा अपना रहा ।

बढ़ता गया मार्ग पर मैं निर्मय निःश्वस,  
अपना ही गतिमयता का भातक

—और आकर्षण

मेरा सम्बल था ।

पन-पल बढ़ता जाता था दिन का प्रकाश  
पग-पग घटता जाती थी  
अनुगामिनि स्मृतियाँ की छाया—  
ज्या ज्यो भागे बढ़ता रहा  
निकटतम पाता रहा सिमटती छाया अपना ।

अब वह दिन का मध्यविंदु है  
खड़ा हुआ हूँ मैं प्रकाश का धन तानकर—  
छाया मेरी  
वह अवशिष्ट अंश मेरी अनुभूत निशा का  
बोली गयी वह ?  
—कहीं ला गया है प्रकाश की  
एक किरण बन  
या विनाश हो गयी लघरे अवशज्जन म ?  
गड़ा हुआ स्मृतियों का तम में  
मैं प्रकाश का धन तानकर खड़ा हुआ हूँ ! •

फटिक प्रश्न • मयानीप्रसाद मिश्र

होय मुश्किल चीज है  
वह इन विना  
मुश्किल से टिकता है ।  
मैं अभी बेहोश हूँ !  
दिन खड़े हैं गो  
मुझे उठान हुए धन,  
आ बरसना मूल कर  
आपाङ्ग नर उड़ते रहे हैं ।

हाथ थाप लो दिया है  
 इस घनों ने,  
 क्योंकि घन भापाड़ के  
 बे-होश हो तो  
 सरसते हैं,  
 और हिन्दुस्तान के  
 बन बाग—सब कुछ  
 सरसते हैं ।

घन नहीं बरसे  
 न सरस बाग बन !  
 हाथ रे, बेहोश जब  
 बेहोश घन !

होश, मुश्किन चीख है  
 बे-होशियों का बीच से  
 कैसे बिचेगा,  
 और हिन्दुस्तान का  
 बन बाग—सब कुछ  
 किस तरह फिर से बिचेगा ?

किन्तु यह तो  
 प्रश्न भर है,  
 कोई यह मन मान लेना  
 मुझे उत्तर चाहिए  
 इस प्रश्न का !  
 मुझे उत्तर की नहीं उम्मीद है।  
 कुछ भर लेना हूँ मैं तो  
 हवा से जैसे बि मन म  
 जब कभी कुछ प्रश्न उठे हैं ।

सुबह होती है  
 सुपारी उठता है घर के छप्पों से

गाँव में,  
 और जुम्बिश एक  
 घर से निकल पड़ने के लिए  
 धाकर समा जाता है  
 मेरे पाँव में !  
 पाँव मेरे जिस निशा में  
 गति सहरते हैं  
 — वह दिया उत्तर नहीं  
 होती कभी  
 वह प्रश्न होती है !  
 प्रश्न की आदत मुझे  
 हो गई है  
 पूछा उत्तर की  
 अभी छो गई है !

झिलगी मेरे समुचा  
 प्रश्न है ।  
 प्रश्न मेरा सीधेतर  
 होता चले  
 बेहाशियों के बीच में  
 यह सालसा है ।  
 लोग मुनकर प्रश्न मेरा  
 कहें यह क्या बाल-सा है ?  
 प्रश्न मेरे प्रश्न भर  
 पदा करें !—  
 अभी उत्तर की नहीं है  
 सालसा ।  
 होश मुझिल बौद्ध है  
 प्रश्न हों बार-बार से जब,  
 निरन्तर,  
 हवा पूछेगी पवन पूछेगा  
 पूछेंगे उजड़ते खेत,



जब नदी पूछेगी  
 पूछेगी पहाड़ी  
 और पूछेगी उठाकर सिर  
 गगन तक  
 निपट फली रेत ।  
 सब समेटेंगे बिखरते होश  
 ये आषाढ घन,  
 और सब सरसंगे  
 मेरे देश के  
 उजड़े हुए हर बाग, बन !

प्रश्न चारों ओर से आसों  
 उठो बेचन मरे प्रश्न  
 चारा ओर से आसों  
 कि यह क्या हो रहा है ?  
 उठो, जैसे कि कोई यदि उठता है गगन में,  
 उठो जैसे कि कोई गान उठता है पवन में  
 उठो, जैसे कोई बीमार उठता है,  
 उठो, जैसे सहर कर ज्वार उठता है  
 उठो, जैसे कुतूहल की धड़ी में  
 धूँ पट उठे हा,  
 उठो जैसे आग लगने पर  
 लवालब पट उठे हा  
 उठो जैसे पट उठे हा '   
 देलकर पानी,  
 उठो, जैसे हो उठी  
 भयभीत की बाणी,  
 उठो जैसे उठे प्रभु का हाथ !

उठो मेरे प्रश्न मुल के साथ ।  
 आँ म  
 बीमार में  
 धूँ पट म  
 पट म  
 आग म  
 पानी में

ज्ञाना में  
 सपन में  
 उठा मेरे प्रश्न  
 धारों धोर स  
 उठा ह, उठकर पुकारो जोर से  
 क्या हो रहा है ?  
 कौन है जो सो रहा है  
 नींद सुन का,  
 भाग जब घर में लगी है ?  
 कौन है जा बुझने बढ़ता  
 नहीं है ?  
 कौन है जो धीरे  
 भडकाना जरूरी समझता है  
 भाग को ?  
 कौन है जा एक  
 मुविता समझता है  
 जब रह उस बाग को ?  
 कौन है, जा सावता है  
 रात्रियाँ सकने  
 भड़क भाग;  
 कौन है वह कौन है  
 वह कौन है  
 भाग प्रश्न मेरे जाग ।

जागा प्रश्न मेरे,  
 देरा को धरे रहा बनकर  
 कवच ।  
 तुम फिटो जसे कि जैत  
 फिर रहा हो स्फुरित-पाषर-म्यन्त्र  
 गालन से निकपकर  
 दूर जायें मु ह  
 सतत उत्तर न निकले ! ●

जब नदी पूछेगी  
 पूछेगी पहाड़ी  
 और पूछेगी उठाकर सिर  
 गगन तक  
 निपट फनी रेत ।  
 सब समेटेगे बिखरते होश  
 ये आपाढ़ घन,  
 और सब सरसगे  
 मेरे देश के  
 उजड़े हुए हर बाग, वन !

प्रश्न चारों ओर से आओ,  
 उठा बैचैन मेरे प्रश्न  
 चारा ओर से गाओ  
 कि यह क्या हो रहा है ?  
 उठा, जैसे कि कोई बाद उठता है गगन में  
 उठो, जैसे कि कोई गान उठता है पवन में  
 उठो, जम कोई बीमार उठता है,  
 उठा जैसे लहर कर ज्वार उठता है  
 उठो, जैसे गुल्लक की घड़ी में  
 घू घट उठे हा,  
 उठो जैसे भाग लगने पर  
 सवालब घट उठे हों;  
 उठो जैसे पट उठे हा ।  
 देखकर पानी  
 उठो जैसे हो उठी  
 भयभीत की बाणी;  
 उठो जैसे उठे प्रभु का हाथ !

उठो मेरे प्रश्न मुख के साथ ।  
 भाँद में  
 बीमार में  
 घू घट में  
 घट में  
 भाग में  
 पानी में

ज्वाला में  
 सपट में  
 उठो मेरे प्रश्न  
 चारों ओर से  
 उठो हे, उठकर पुकारो खोर से  
 क्या हा रहा है ?  
 कौन है जो सो रहा है  
 नोंद मुख का,  
 भाग जब घर में लगी है ?  
 कौन है जो बुझने बढ़ता  
 नहीं है ?  
 कौन है जो और  
 भड़काना जरूरी समझता है  
 भाग को ?  
 कौन है जो एक  
 सुविधा समझता है  
 जल रहे इस भाग को ?  
 कौन है, जो सोचता है  
 रोटियां सक्के  
 भड़के भाग,  
 कौन है वह कौन है  
 वह कौन है  
 भय प्रश्न भरे जाग ।

जागा प्रश्न मेरे,  
 देग को घेरे रहा बनकर  
 कवच ।  
 तुम फिटो जैसे कि जैते  
 फिक रहा हो स्फटिक-परपर-स्वच्छ  
 गोफन से निकलकर  
 हट जायें मु ह  
 यस्त उतर न निकले । ●

## गीत

### माखनलाल चतुर्वेदी

यह समर्पण यह तुम्हारे नेह का वरदान  
 भूमि से विद्रोह कर बदरा उठे तहराज  
 चाँद ने रस बाधु ने आनन्द श्री का राज  
 भूय न दे रूप सुन्दर का सजाया साज  
 फूल धाये, फल उठे, उमस होकर धाज ।  
 देख इनका रूप रस धरमा गया अभिमान  
 यह समर्पण यह तुम्हारे नेह का वरदान ॥  
 फूल ने गिर, मातृ भू पर कर लिया अभियुद्ध  
 और फल ने प्राण देकर निज निभाई टेक  
 ममता लल रूप से समुच्चा अनंत विवेक  
 शीघ्र उठो, तुम घरा के गर्व एक, अनेक ।  
 धाज में विद्रोह का समझी सखे प्रतिमान ॥  
 यह समर्पण, यह तुम्हारे नेह का वरदान ॥  
 यह उठे ने शीघ्र यह कसिया भरा अभिसार  
 मनय की गुस्ताखियाँ, तिस पर घरा का प्यार  
 फूल का गिरना पलों का स्वागत रस का रूप  
 यह वरम विद्रोह यह बलि-यपिया का भूप  
 इस प्रलय-यय म प्रलय घुल या उठे बलिदान ॥  
 यह समर्पण यह तुम्हारे नेह का वरदान ॥ ●

# शहर एक जादूघर •

रामदरश मिश्र

सड़का पर सफे सफे कफन उतराये हैं  
जिनके नीचे  
घलती फिरती साय गाँधी का नाम जप रही हैं  
घोर हर नाम के साथ  
गले के नीचे उतार लेती हैं एक टुकड़ा  
जीवित आत्मा का  
अंधेरे में घृणा से धूक देती हैं  
सत्य की प्रतिमा पर

यह लोहे का एक विशाल पुतला है  
आश्रम के मुख-द्वार पर खड़ा किया गया  
इसके डीले सफे वस्त्र के नाचे  
छाया में एक छेद है  
वहाँ कुंजी ढेंढ देन से  
यह हाथ उठा उठा कर  
तरह तरह की आश्रमी बोलियाँ धोने लगा है  
घोर रात को इसकी खोखली पाठ में  
आश्रम के रद्दी कागज, बोतल के टुकड़े  
भर कर छाला मार दिया जाता है

सण्डहर में बैठा यह मरा हुआ पहरेदार  
रागवाली कर रहा है सण्डित मूर्तियों की  
इसके छोटा पर निराला का नाम  
रह रह कर फड़क उठता है  
घोर एकाएक उठ कर  
हाथ में पड़ी काठ की तलवार माँजने लगा है  
जब कोई निराला निकलता है  
नय विचार में ।

बड़ी-बड़ी दीवारों के लसाट पर  
 रंगीन पोस्टरों के चेहरे मुक्करा रहे हैं  
 फटे हुए चेहरों पर चेहरे और चेहरे  
 इन हसते हुए चेहरों पर  
 मौख घसाये राहें गुजरती हैं  
 और रुक जाती हैं  
 दीवारों के पीछे से एक मनसेशियन कृता  
 गुर्ता रहा है ।

ये मोनारा-मो उठी उठी चोटियाँ  
 हवा का रुख पाहे किसी ओर हो  
 इनसे निवृत्तता हुआ घुमा  
 मोंपड़ियों की ओर हा जाता है  
 और प्रवाश बड़े बड़े मकानों की ओर ।  
 चाँदनी से लिपटा हुआ ताल....  
 नीले जल में धरपरानी हुई गुम्म परछाईयाँ  
 झालुर ह मिसने की  
 हवा में तरती हुई मुराबूमों की मनजान पुरारें  
 सबका नाम मकर बुला रही हैं  
 उम्मी पास के बिडियापर म बन्दी  
 जगली जानवर दहाडन मगते हैं  
 और रोन लगती हैं जल की भतल-  
 गहराई में सैकड़ा भावाराँ । •

## यात्रा के बाद • शम्भुनाथसिंह

रोज रात्र के यात्राए मही होली  
 जिनसे सोटने के बाप  
 शक्नें बन्म जाती है  
 मन्ने बटुत सम्बी हो जाती है  
 हलनी सम्बी कि तिर  
 भावाय में नहीं खा जाता है

घोर घरती

नद-च व पावों में

बसा रह जाता है ।

झिर

तडा म धूनत त्रिचक्र में

मधु अस धुन हुए रग

हर वहीं त्रिचक्र जात है

शरार पूजा की गज म धुन जाता है ।

घोर घरती पावों स धुन जाता है

रूपों धातुओं स हान

कान व उत अनन्त विस्तार में

गज क रघों स धा स्वर उत है

ध मभाग्य हाते हैं

मूय उन्हें वमन-जान का तरह

लण्ड-लण्ड कर दता है

त्रिचक्र बीच व ठार घटाय हात है ।

बबाह बलराशि म हूवी

घरती का तरह

धधेर म सत्र भार स धन धान

उन छण्डित स्वरो का देवता ता है,

उन्ह मुन नहीं सजता,

घोर धा उन्हें मुनता है

या मुन सजता है

उस धधेरे का म धान

दश नहा पाता । ●



# सारनाथ की एक शाम

(कवि त्रिलोचन के लिए)

इस किनारे तो  
य भाषास व सरगम  
सनिज रग है  
बहुमूल्य अतीत है  
या शायद भविष्य

तू किस  
गहरे सागर क नीचे  
के गहरे सागर  
के नीचे का  
गहरा सागर होकर

भिन्न गया है  
अगाह शिला स केवल  
अनिष्ट अवश्य मञ्जुलिया व विद्युत्  
सुम्न जनन है  
अपन मुन के लिए  
(मुन ता व्यर्थ म ही है  
और वहाँ

युग दर्शन

मिन

धन का अपना ही

धन है

सर्वोपरि मधुर मुक्त

और जितना एम्प्ट वर

जैम

मया कीन अविक

क्याकि व्यभिचर हो आधुनिकतम

काज बना है यात्र

घोर आलाचना के डाक्टर  
उम भनाति भा कहत है )

शब्द का परिवार

स्वयं जिशा है

यही मेरा आत्मा हो

आधी दूर तक

तब भी

तू बहुत दूर है बहुत आगे  
मिलाचन

एक कोलाहल जो कापना म भरा हुआ है  
सुनकर

तू बिचुन हो हा उछा

क्या उपनिषद् का शोर

उस दबा पाता

बस्ती के किनारे एक चक्रमूर्ति है

शायद वहीं विश्व का केन्द्र है

वहीं कही

मुना तो है

माधुनिकता

हूब रही है

जिसे कापल के

मोठ पे उमरी

मास के

महासागर म

ता फिर छीम गया

१ न शताब्दिया

संनित से मुत्तयन्त सनकर

संस्कृत वृत्ता म उन्हें बाँधा सहज ही नाभग

२ म य आवाज बधा हुआ है धन

सरगम के घट्टहास म

जो शक्ति के माध्यम सम्पन्न धर्म के साजक  
 गुरु धरती को दोनों धर्म से  
 धामे हुए और  
 मान्य मीचे हुए ऐसे ही गुरु धरती है उसे  
 धर्म धर्म से

तुम बेबन में जानता है  
क्याकि

मैं बही  
जसी घली म लाट रहा हूँ उसकी  
शुभा की पन्ना सा बिछा हुआ मैं  
उसकी छाया म  
मूलग रहा हूँ अपनी गहरी  
शान्ति के लिए

एक बासती साम झुनक जो मेरे  
 झंझ से छीन कर चांद सुका लता है  
 लीप ले जाती है प्राण मेरा  
 जिस रात सी  
 उस पर भा है तरी दृष्टि

मान्तरिक तरान्त  
बगगा के किनारे का वह पथ  
मौन उन्मा । ●

● शमगेर बहादुरसिंह

# बुखार में कविता •

श्रीकान्त धर्मा

मेरे जीवन में ऐसा वक्त आ गया है जब  
मोने को  
कुद भी नहीं है  
मर पास—

दिन हाथी खयाल रात्रि  
गपराप, पास  
और स्त्री हालांकि वह  
बटा हुई है मर पास  
कई सान स ।

सनायायी हूँ मैं जान स  
मैं जिसने सामन निहत्या हूँ  
अपग हूँ—

मुझ न किमा न  
प्रस्ताविता किया है  
न पण ।

मच पर लड़े हातर  
कुछ बचकूफ चीख रह ह  
बकि म आया बगता है  
सारा दया ।

मूर्खों ! दया को खानर हो  
मैंने प्राप्त व था यह कविता  
आ किता का आ  
हो सकता है  
जिसने जीवन में वक्त आ गया हो  
जब कुद भी नया हो  
उसके पास  
साने का  
आ न उम्मीद करता हो

न अपने से छन  
 जो न करता हो प्रश्न  
 न बूझता हो हल ।  
 हल बूझने का काम कवियों ने उन्न कर  
 सौंप लिया है  
 गणितज्ञ पर  
 और उसने राजनीति पर ।

कहीं है तुम्हारा घर ? अपना देश लेकर  
 कई देश साँप  
 पहाड़ से उतरती हुई  
 चिड़ियों का झुंड  
 यह पूछता हुआ ऊपर ऊपर  
 गुजर जाता है  
 कहीं है तुम्हारा घर ?  
 दफ्तर में ? होटल में ? समाचार पत्र में ?  
 सिनेमा में ? स्त्री के साथ  
 एक खाट में ?

नाव  
 कई यात्रिया को उतारकर  
 बरगामों की तरह धकी पड़ी है  
 धार में ।

मुझे दुख नहीं मैं किसी का नहीं हुमा ।  
 दुख है कि मेने सारा समय  
 हरकत का होने की  
 काशिरा की प्रेम किया  
 प्रेम करते हुए स्त्री के बहने पर  
 भविष्य की खोज की  
 और एक दिन  
 सब कुछ पा लेने की तरह पर  
 निता एव द्वार एक

हाइय स्म ।

नविष्य वज्रमान के साठन की तरह  
वहीं जाकर  
शुल जाता है ।

रुको

कोई माता है ।

मुनाई पणता है किसी के  
परा की चार

कोई मेरे जूना का माप  
मेन था रहा है ।

मरे तनुए पिस गये हैं  
और पीनों का वायुक

हिला-हिला

मैंने घास-गम की

भीड़ को

संग लिया है

भगा लिया है ।

औरा के साथ

लगा करती है

छा,

मेरे साथ मैंने दगा किया है ।

पदगावा नहीं ।

यह एक वातून था जिसमें स हाकर

मुझे घाना था ।

मसुन में यह एक बगाना था

एक नि

भयोप्या स

जान का ।

मैं दपन कारमान का

एक मडदूर भी

हा सकता था ।

में अपना अफसोस

बो खतता था

बाजार में खान का ।

बेचने हा सकता था

कविता सुनाने को

फिर म एक बार इस

घोर उम और उस

पाने को ।

लेकिन एक बार उठ जाने के बाद इच्छाएँ

भौट कर नहीं पाऊँ

किसी और जगह पर

घामने बनानी हैं ।

बिगड़ाए बुझबुझाती हूँ

रहापे पर

तरम छाती हैं

बुझापे पर ।

नीजवान खिया

गली म

ताक झोंक करती हैं ।

बेचक और हेरो से

मरती हैं बस्तियाँ

कैन्सर से हस्तियाँ

बकाल रक्तवाप स

कोई नहीं मरता

अपन पाप से ।

धुमाँ उठ रहा है कई माह से ।

दिन बसा जाया है

मार कर धुआँ

एक धरणीय-सा ।

बन जाने वाली दुबाना से

खिल में रह जाऊ है बुझ-बुझ

अफसोस-सा । ●

## अन्य भारतीय कविताएँ

•  
बंगला, उर्दू,  
मराठी, गुजराती,  
पंजाबी, अंग्रेजी  
मलयालम, तमिल,  
कन्नड तेलुगू,  
उड़िया, राजस्थानी कविताएँ  
•



में अपना धफ्फोस

हां सरसा था

बाजार में जाने को ।

बेचन हो सकता था

बिना मुनाने को

फिर से एक बार हम

घोर उमे घोर उसे

पाने को ।

लेकिन एक बार उड़ जाने के बाद हज्जाएँ

छोड़ कर नहीं भातीं

किसी घोर जगह पर

घासले बनानों हैं ।

बिरवारें बुदबुहाती हैं

रहाने पर

तरस जाती हैं

बुझाये पर ।

नीजवान झियाँ

गली में

ताक-भाँक करती हैं ।

बेचक घोर हैशे से

मरती हैं वस्त्रियाँ

कैन्सर से हस्त्रियाँ

बक्रील रक्तवाप से

कोई नहीं मरता

अपने पाप से ।

धूम्र उठ रहा है कई माह से ।

निन धसा जाना है

मार कर छलाँग

एक घरगोश सा ।

बंद होने वाली दुकाना के

निन में रद्द जाता है बुध-बुध

अपमोम-सा । ●

## अन्य भारतीय कवितारं

बंगला चंद्र,  
मराठी, गुजराती  
पंजाबी, असम  
मलयालम, तमिल,  
कन्नड, तेलुगु,  
उडिया, राजस्थानी कवितारं

में अपना अपना मोस

को सफ़ता था

बाज़ार में खाने को ।

बेचैन हो सकता था

कविता सुनाने को

फिर स एक बार इस

घौर उसे घौर उसे

पाने को ।

लेकिन एक बार उड़ जाने के बाद इच्छाएँ

सौट कर नहीं आती

किसी घौर जगह पर

घामले बनाने हैं ।

वियवाए बुढ़बुढ़ानी ह

रुकाए पर

तरस जाती हैं

बुढ़ापे पर ।

नौजवान स्त्रियाँ

बली म

ताक-झोंक करती हैं ।

बेवफ़ा घौर हैरो ने

भरती ह बस्त्रियाँ

कँसट से हस्त्रियाँ

बकील रफ़्तबाप से

कोई नहीं मरता

अपने पाप से ।

धुआँ उठ रहा है कई माह से ।

दिन बसा जाता है

मार कर छत्रांग

एक घरगोश सा ।

बाज़ होने वाली दुकानों के

दिन में रह जाता है कुछ-कुछ

अपमान-सा । ●

## अन्य भारतीय कविताएँ

बगना, उर्दू,  
मराठी, गुजराती,  
पंजाबी अंग्रेजी,  
मलयालम, तमिल,  
कन्नड तेलुगु,  
उड़िया राजस्थानी कविताएँ

## पहली कविता

विनय मजुमदार

घघेरे में खाने दो —समी की यही इच्छा है  
 पता क्या है, फन है या मिठाई या शराब—  
 बसका मुग्धा या प्रीति सिद्ध-यौवना  
 किन्तु हाथ मेरी रमना  
 प्रणय प्रमग न पहल ही हो गयो रूप  
 गन्ध रस स मूर्च्छित जड़ । समी मुझे लगा था,  
 कि हीरे की जकमनी हुई आला स  
 स्वयं की प्रतिबिम्बित दल रहा हूँ—प्रद,  
 जागृत वासना की स्थिति म भी  
 नहा देल पाता हूँ विवस हुए कस हुए फूल ।  
 क्या देखू ? मानसी बनाया क्या ?  
 मगता है, जानी नहीं है घघेरा मुह राग है  
 प्रीत, चारा मोर कानी दरारें तिलतिला रही हैं  
 मोर में एक मवोष शिशु  
 बिनी बुद्धा की गोम म छिता सुन रहा हूँ  
 प्रता की कहानियाँ । •

## गुप्तचर

शक्तिन चट्टापाध्याय

जैग निश्चिन्ता टूट जायगी, इतनी तेजी से  
 मुझे अपने धामिगन में भरकर  
 गम मनाओं में दागकर मेरी छाती, बार-बार  
 बना गया समय । और अब प्रति छग  
 बंधे हुए पावन घड़े की तरङ्ग पन्नाप  
 हर निम्ना न नीच पर्यर पर बजनी रहती है ।

गुप्तचर अपना पारचर दा,  
मोन ताठा किसान एक फूल का नाम कह जाओ,  
कह जाओ महा ता देखत हा यह छुरी  
तुम्हारा कानि क गुन्दारे म छन कर बासू गा ।

मेने उस चूम कर दया है । नहा है मय,  
मय नहा, सम्मान भी नहीं केवल  
गम सनानों का चिरस्वादा धानिगन—  
घोर, बड़ी हुई उगास बरसादा क प्रति  
एकान्त माह—मुन्म ।  
सावता या क्षमार् निक देत है, मन नहीं ।  
सावता या, शब्दाओं का मन्दिर  
घोर जगल यहा है मन नहीं ।  
जो भी हो इसा निडरों क पास सदा रह जाऊगा  
साथ नि सारी रात या ही बिताऊगा । ●

## नारी-नगरी

सुनील गगापाध्याय

उने बुनाओ घोर कहा इतनी गहरा रात क दाव  
नहीं निवास धरती खुली छत्रियाँ नीली राखनी  
घोर सड़कें-गलियाँ अब तक क्यों जगी हैं ?  
मह शहर सोना नहीं जानता है फिर,  
तबल घोर पानना क पास पहा रेंगता क्यों है ?  
मह कनकता-शहर ।  
म क साथ छान घोर माना पकाने क निवा  
सारे नाम भीखें जानती हैं मगर,  
मार काम रगत जानती हैं, इस शहर के दुनेव  
घोर हार्दिक की तरह—दूर उनका  
छत्रियों में धम जाता है, धधर में  
मदन में इस मान क पास घात से डर जाती है ।

छुप हो जाती है मरी हुई तिल्ली ।  
 यह शहर सारे काम जानता है येश्यामा की तरह  
 कुलित नालियों पर गुलाब के पीछे जमाना—  
 भी एक बड़ा काम है ।  
 ठण्डी धीर नयी देह पर अनगिनत मर्द सोय है  
 राम-कृष्ण का नाम जपती रहो  
 उसी को बुलाओ और पूछो और जब तक  
 इसी तरह सोय रहना होगा इसा तरह—  
 भीमडल्ले में, असेम्बली में जासूसी किताबा में  
 फनी हुई जेब में जब तक जेबकतरा का हाथ  
 जाता रहगा ? •

## अनुभव

मानस रायचौधुरी

तुम्हारा शरीर अकनुष ही रह गया । सिर्फ मेरी य  
 उ गलियाँ, झरे हुए पत्ता का तरह सूख गयी  
 और कुछ नहीं हो सका गर्म अवेरे में । और कुछ  
 नहीं हो सका । बुरा नया हुआ  
 बालबाँध की देखनी पिछनिया में ॥ गयी रोशनी,  
 सड़कों पर हज़ार-हज़ार पाँवा की घुल  
 क्या तुम्हारी बहिं मवाल बन गयी थी ? क्या ?  
 दूसरा का जीम का स्वाद हम नहीं बनें  
 नहीं बनें दूसरों की बालकलित ।  
 बुरा नहीं हुआ अगर वह कुछ नहीं हुआ,  
 जो उ गलियाँ नहीं होता है । •

उद्ध कविताए

कल

रपन सरोश

कल क्या होगा ?

दुनिया एटम बम का सुबमा बन जाएगी

यानि समग्र एटम बम के जहर का

अपने जाम में भरकर पी जाएंगे

कल क्या होगा ?

यह तुम सोचो

तुम बेफिक्र

फुसत में हो

मैं तो एक एमा पछी हूँ

जिसकी निस्मन

गुलशन गुलशन

सहरा सहरा

उठना है और दाने छुगना

भाज की खातिर ! ●

तुम्हारे खत

निदा फाजला

कल तुम्हारे खत  
निष्पन्तरण रईस भजमरी

बन मन जो तुमने निरो से कमा कमा मुक्तवा

मैं भाज साब रहा हूँ उन्ह जला डायू !

बुन्ध बुन्ध-सा बला धा रखा हूँ शॉस्त्रिम से

निमाग गम है जलन हुए तब का तरह

नईक हाया स फिर फ्रांलों के गारों में

उदास तिन का हिमाला गिरा के धाया हूँ

मृगमता धाग-सा मूरज धरा के धाया हूँ !

बन निद्रास हूँ उम नौजवाँ मिपानी-मा

कई महानों स औरत मिनी न हा जिमको

गुनाह जिस्म की जानग मिनी न हा जिमको



वह गीतकार निग फाड़ली जिस तुमने  
 कभी नशिस्ता में देखा था गुनगुनात हुए  
 सयानो—क्रिक की बीसो बुरह खिसाने हुए  
 हवा-ए-बकल ने एक धुलबुला-सा फूट गया  
 गम हवात के पत्थर पे कौंच टूट गया  
 बड़े बदन की फ़ातत चारपाई भाना ह  
 बजाय याद के भर मुम्मे की नाद आती है । ●

## इलतजा

### बाहरपार

वहाँ हो वहाँ हो  
 नई बुवह की मिहरवां नम किरनो  
 मेरा त्रिस्म मुम्मे बगावन पे भामादा है  
 बापना ह मेरा रुह  
 भामो बचाओ  
 मुम्मे शत्र के गिन्नी से बाहर निकालो  
 मैं दिन क समुन्दर की गहराइयाँ नापना चाहता हूँ । ●

## नींद

### जावेद कमास

नाद भाँगा म है कम-कम मुम्मे आवाज न दो ।  
 जाग जायगा बाईं गम मुम्मे आवाज न दो ।  
 नीम बामाश है मारो रये जाँ बा हर तार  
 तार हा जायेंगे बरहम मुम्मे आवाज न दो ।  
 बाँ मुद्दत के शरा तिल को करार बाया है ।  
 जाने क्या तिल का हो बालम मुम्मे आवाज न दो ।  
 यू भी रफ्तारे तिले जार है मदम मदम  
 धीर हो जायेगी मदम मुम्मे आवाज न दो । ●

---

१ इन्पुन २ पत्ती ३ कस ४ सिपाही ५ धपूरे

# गजल

राही मासूम रजा

जिन्दगी के नाम पर मरना पड़ा  
फिर भी यह सोदा बहुत सस्ता पड़ा ।

गर खुश है दाम्त भी मारे गए  
हर निशाना आपका चलटा पड़ा ।

लोग यह समझे हम उनसे डर गए  
हमका छुप रहना बहुत महंगा पड़ा ।

तिगनगी<sup>१</sup> बढ़ती गई बढ़ती गई  
राह में शवत्तम मिली<sup>२</sup> जरिया पड़ा ।

छुप में रहकर भी गाये जिनके गीत  
हम पे कब उस जुम्न का साया पड़ा ।

क्या सुनायें साहिन-ए<sup>३</sup> जरिया-ए<sup>३</sup> शौक  
रान्त में प्याम का सहरा<sup>३</sup> पड़ा । ●

इस्लामा नईद गजल  
( निप्यन्तारन : कु बरपलसिह )

---

१ प्यास २ प्यार का सागर ३ जगल

# लघ्वाराण्यकोपनिषद्

दुख का हिम

प्रभावकर माचवे की तीन कविताएँ निष्पण्ण

कोरे कागज

निता-त नीचे

वाणी गद्गद

पेडा के पिञ्जर

चित्त धेखवर

सहस्रो शाखा भुजाए

सत्य वध । •

टेरती आकाश को

हिम को धरसने दे—

## परोपजीवी

प्रस्तुत हैं हम सब

भेलगे सह लगे ।

साथें बँलिकोनिया का मरना

पिय ताराकद की बादका

घर की इस राटी का

दुवकारा फँका ।

लेकिन यह प्रबुर

बोली तो करें क्या ?

यह प्रकृत लडा है

पता का छपर

उसने न देखा है ।

आत्मप्रकाश बरजें

माँवा पर स्वय ही बांध

इस्यानी शीशा

भोर लडलडाते दोड़ें

मृगजल न पीछे । •

आत्मा के प्रबुर को

दुख का हिम या नही । •

## अभंग\*

वा० भ० वोरकर

राठ किनारे बठा कोई मूरणग गाता है

निया-निया म जल म कना भगवा राग

प्रकाश की गति स पन भर में

आसमान—मा हो जाता है उसका मरस अभंग ।

भीग रहा है एतारा आँसू की भर सागी

जहाँ का तहाँ जल ननिया का जमकर रह जाता है

\* एत विद्येन अविच्छिन्न ।

जल्दी जल्दी जाने वाला राहुगीर वह कोई  
 बीच राह में बकस होकर खोकर रुक जाता है ।  
 जान मिथारी पात्र दया का छोट्टा सिक्का  
 बाल दिया है उस पर दया लिखाकर  
 और कान पर दकन बोलि भाग रहा वह भागे  
 गायन को मन में धारे बिन अभंग को दुनकारे । ●

—धनु अनिलकुमार

## किसी एक बरसात में

गिरिधर प

●  
 किसी एक बरसात में  
 लिखे गये मे घनगिनत प्रथम पत्र  
 प्रणय वर्षा से भोग हुए  
 मे अनंत क्षण  
 कभी समाप्त न होने वाला य आदवासन  
 और टूटते हुए मन को  
 दी गई सान्त्वनाएँ  
 पानी में भरपूर मलाई हुई  
 यह धिरह का सम्झी रात  
 और यह परायापन  
 आकाश में फैले हुए  
 बाल बादल जैसा,  
 भोगे अधियार में एक दूसरे को  
 टेरने वाली हँसी भरी आवाजें  
 कण कण भोगी हुई माटी की तरह  
 पके हुए धंग सारे  
 सदैव हवा की तरह बहकर आती हुई  
 बचन भर दन वाली याद  
 हम अधमपन में  
 मन प्राण में भर जाने वाली

अभिसार क्षणा की यह सुगंध  
 और  
 धोमे धोम भरती हुई  
 आभक्ति की यह  
 सज धार । ●

## देर से आई बरसात

आ० रा० देशपाण्डे अनिल

●  
 देर से आई हुई बरसात को  
 हुपेलिया पर भेजें,  
 पलक पर होल सहेजें  
 माथे के पसीने में मिलाएँ  
 सिर में सीचें और उसकी आदरता  
 पीठ पर धीरे धीरे गलने दें ।  
 झूठे पडे हुए झोठ खोलकर  
 उस ऊपर ही ऊपर घूमें पी लें ।  
 देर से आई हुई बरसात को  
 उपासम्म न दें और झूठें उसका शोष  
 मसलन उसका बहक जाना झूठे वादे करना  
 बहान बनाना नियत समय पर बूझ जाना  
 और न ही बतायें उसे अपनी ठिकायतें,  
 जैसे राह देखना अधीर हो उठना  
 मन में भाँति भाँति की दाँवा-बुझकाए करना,  
 पहराना मुद से ही बुझाना  
 उस से  
 निजि की यह पगार कर  
 दुनार प्यार में छाती में लिपटाएँ  
 और रंगीन पत्र बिछाकर  
 उसके साथ  
 गाटियों का मजेदार गलत गर्ने । ●  
 धनु निनकर सोनवसर

## यहाँ भी

थोसफ मेक्वान

भयकार का मुलायम कम्बल छोड़  
 सोया यह श्रान्त पंथ  
 मा बि कितन ही पदचापा की  
 कया लिखा कोई पंथ ।  
 दोना घोर वृत्ता की यह माल  
 माना पत्ता को भर्त्सर के रूप में  
 कोई भास्वर बाँव रहा है ।

यहाँ  
 बीच म किसी बँनास-सा  
 बाहुना क घोर को ब्वास म समोना  
 खडा पैदाल पंथ ?  
 नीलरंगी-बाँव की दावार पर  
 सो रहा प्रकाश  
 पास क पास्तर म तजी स दीड़ रही है बार ।

Happy Motoring

अन्तर ध्यान देता हूँ  
 पत्ता धूम रहा है—उस जरा भी धीन नहीं  
 बँसण्डर में  
 तारीख के पन्ना की  
 हल्की सी सिहरन  
 मैं दृष्टि स अनुभवना हूँ  
 यह हल्का सा सिहरन प्रतिस्पर्द्धि होती है  
 यहाँ—मो—साहर म । ●

## अश्वत्थामा

भब्बुन करीम शेख

स्टेज के विद्यवाह

यहाँ ग्रीनरूम म मैं मात्र मित्रा से मिसता हूँ ।  
 तुम्हारा थाड करने निकसा मैं—

मृत्यु—

मुझ उसकी अत्यधिक भाव्यवक्ता है  
 लाभो ।

मृत्यु का घुराने  
 मैं रात-दिन नकाब ओढ़ भटकता हूँ  
 फिर भी वह कहीं मिसती नहीं ।

मित्रा स विद्युदा खण्ड खण्ड  
 मैंन मजे की शिन्गी बिताई है  
 तुमस तुम्हारे घर पर मिसते जुलते ।

जब तुम घया पर सेटो तब  
 दा शण बादसा को धकिया कर  
 दत्तक मूर्य की वीक्षण सनह स छूँ  
 बाण की तरह  
 तुम्हें वसत शर ।

जब तुम दीया पर सटो

तब

मुँदे द्वार म जो करत हो  
 मुँद नेत्रा स जो दसते हो  
 मुँदे छोटा स जो बोलते हो,  
 वह सब समझ चुबा मैं  
 सब समाप्त हाथ ही  
 ग्रीन रूम म जाकर नकाब उतार देता हूँ ।  
 अपनी दहन्ती बाँसा स मैं धार्दना

निरसता है

और धमाकस की रात म  
 बाँसा को धासी उतार कर

जैसे नमन तापे समझते हैं  
 वैसे ही दाह्य मुख स बाहर धान हैं  
 और दाह्यो का कवच पहन कर  
 किसी बिल म जा घुमने है -- --

मानो मैं क्षण प्रति क्षण  
 चलो म खाल उतारता हूँ ।  
 धीमे जाना जा सुनते हो  
 वर घासों जो दबते हो

मृत्यु—  
 यहाँ वसत लिए पर्याप्त धन है ।  
 विपैल विनाशिता से  
 अकुरित कोमल बीज  
 सामा  
 मुझे उनकी जन्त है  
 यहाँ  
 इस प्रोनरूप म मैं मात्र मृत्यु से भेंटता हूँ । ●

## असहाय कवि

हमन्त देसाई

कविता की लोलामयी वाणी म  
 और हो ता  
 नीनपरों की हिलोलामयी लय म

अभिध्वस्त हाने को  
 कितनी ही अनकही बातें  
 बद हृमुन में बुझाती गय सी  
 मर मन म डवार मर रही हैं ।

समान म  
 शोषही क इत गिर्द अटकत  
 कुरा की तासगा क ।

यमवनी के होले होले पड़ते मदमा की  
 लुकी छिपी पीढा का  
 आत्मघात करने जा रहे पोलित ध्यक्ति के  
 मन में चल रहे कानिल सपनों का  
 अभिव्यक्ति दे सकू तो कँसा ?  
 आयुष्य को धार पर बठ  
 वृद्ध की निस्तत्र भाँसों म चमकते  
 शीतल क स्वप्न  
 सपने की टाँकरी म विवग वर  
 विपन्न और रोप विहीन  
 सप-सी जवान मन की लगन  
 वालसीसा करत वृष्टि की  
 वेडगी आवृति की तरह  
 हृदबढाय सिगुषा क वण्डस्य होने को  
 बँधेन हैं ।

एस कितने ही नय नये  
 कविता-मग्न  
 मुनिबद्ध होन को  
 मुझे रात दिन सताते हैं ।

और फिर भी  
 मरे घर की दीवार पर  
 सिर पटक पटक कर दात विसज होजी  
 विनाशाय सध्या की भोरी किरणों की  
 ध्या का मैं अननुमा कर दना हूँ  
 तथाकथित मग्न प्रमाता की मुदकियाँ  
 मुनकर छुपचाप बैठा रहता हूँ ।  
 मर रहे पूल का मनने में जाया नहीं—  
 भेल कर कर क्या ?

सम्भव है इस सबका अभिव्यक्ति देकर  
 मैं वृत्तकृप हा जाऊँ  
 किन्तु यहाँ ता एसा

बहुत कुछ होता रहता है  
होता रहा है और अभी होगा—  
न जाने क्या तक ?

यूं तो यहाँ दुःख है मृत्यु है  
और मृत्यु तुल्य जीवन है  
किन्तु इस संघर्ष का मार  
पृथ्वी की तरह धारण कर पाने को  
शक्ति कहाँ है ?

और सभी कुछ वह पाने योग्य  
ध्वनि भी कहाँ है ?

यहाँ वह सत्य (अः) का जोर स जकड़ा  
मुल म दम्भ का दूषा मरे मूक बना)  
मस्तक विहीन किसी घड़ की आत्मा-सा  
रात दिन मृत्ति के लिए तड़पता है ।  
इसके लिए मैं कुछ कर नहीं सकता ?

कुछ नहीं कर सकता ।  
अन्ततः तो मैं भी मीर की तरह  
नाचते हुए

अपने इन महँ वीरो को देख देख कर  
आँसू छुनवाता हूँ  
शब्द शब्द शब्द

व्यर्थ मेरे शब्द व्यर्थ मेरी वाणी  
यदि मेरे आँसू कभी शब्द बन उड़ जाए

**धन्वा**

दिलाप जखरा

पोली दीवारों में रिस कर  
बर्षा के पानी ने दीवारा पर धब्बे

बना लिये हैं ।

मैं तुम्हारी ओर देखता हूँ—  
तुम्हारी मुरी घाँसों से बिछी कनायूनो जैसी  
निरर्तन पूर रही थी

विषय कविता । २०४

तुम्हारी अंगुलियों के बेबड़-से बटीले  
किनारों को देखते हुए  
तुम्हारे वक्ष के दो पत्थरों के स्थान पर  
या तुम्हारे पेट में—

जहाँ भविष्य में कई छिम्ब कुलकुलाएंगे  
काल की बँधुस से निकलते क्षण की  
एक एक झल्लो जिसके मस्तिष्क को कुतर  
कर पोला करेगी  
और जिसकी दृष्टि की दीवारा को

बर्षा भिगोयेगी—

सभी कुछ मुझे धम्बों सा दीखता है !  
यहाँ शीघ्र मैं अपने आपको देखता हूँ  
वहाँ भी एक बड़ा धम्बा है ।  
और सूर्योदय से पूर्व ही रात होने  
वाली है । ●

पञ्चमी कविताएँ

**गदा खयाल**

कृष्ण अर्धात

● कुछ दिनों से एक गदा खयाल  
खर्जल कुरी-सा  
मेरे विचारों की भट्टी में धाकर  
बैठ गया है ।

सोचता हूँ—

य पतिव्रत की प्रतीक मेरी पत्नी  
चाँद जैसे शब्दा सहित  
यदि किसी दिन बनायास मृत्यु की  
शोभा में सा जाय

तो  
वह लक्ष्मी मेरे जीवन में  
फिर से आ जायगी—शायद ! ●

# निमंत्रण

तारासिंह

मुँडेर पर लटकता हुआ

मेरी पहुँच से दूर है !

यदि

न छोड़ा गया था तो भायेगी

पर इसका

रूप कुझा जाएगी ।

मैं क्यों न जगा लूँ

उम्र की रात

बहु विराण

निल की मुँडेर पर रख कर ! •

## होटल एक मजिल

सुखवीर

होटल में बैठा हूँ

चाय की चुस्किया में

अनुभव कर रहा हूँ उम्र ।

बयरे तल्ल भावाज क बोध

उनीदे साथ हुए

बयरे कसँती गध उबताहट !

कुछ एक मजों पर चाय क बप है

और कुनकुने पानी के गिलास

मजों क इन्-गि

मँती चाय जैसे बेहरे

कुनकुने पानी जैसे भाखें

यह होल

सड़क क किनारे का एक पड़ाव

गहर की भाग-जोड में खड़ा ।

भटकता हुआ कोई राही हो

यहाँ भाता है

तल्लो पीनर

तल्लो बढ़ा कर

बसा जाता है ।

कुछ भाने वाला के लिए

यह होल एक मजिल है

कुछ चहरे यहाँ रोज नजर आते हैं

मेरे लिए

यह होल एक सम्बा सकर है

जिसे मैं रोज थय करता हूँ ! •

## युग्म

स्वर्ण

एक क्षण

जब बनायास यम गर् हो

ब्रह्मांड की गति ।

जैव रुक गई हा समय की घड़क ।

तुम्हारे कपोला पर

हमार मिलन क ताबे निमान

मेरे अधरों पर तुम्हारे ध्यार की सातिमा

साँस की गुथी हुई भावाज

और बानुसों की कोमल जजोर

सुगंध का रंग धितर कर, चारा सरफ फैल

गया है !

आकाश की सतरंगी आभा

एक पत्ती अपने कोमल पलों को खोन रहा है

आह य क्षण—

समय के कोमल परा स

उतार कर भाँप लूँ

समय का पत्ती तो हाथ से निकल ही

जाएगा ! •

विन्द कविता । २०५



## एक रङ्ग-चित्र

पौ० लाल

घोसों दर्द में भीर एक झलाऊँ ।  
एक मुक्कराहट राह पर घाती हुई  
( लबिन बँस झल्लाज ! वह न्ये गये  
बँसे झल्लाज ! )

फिर भी मुहब्बत का एक दिन होता है  
अपना एक निमिष ।

बतायो किस तरह देख पाएँ य मँघल लेंछ  
नहीं साधो का सुख सोख रंग नहीं  
— बीते महारों को तरह सिक्का हुआ,  
सोया हुआ दूध ।

किस तरह दूध पाएँ के झल्लाज, जो  
तुमने कहे  
जो मैं कहूँ ।

बहतर है, कि यह असासतन कायम  
है हमारा

कि स्थाया है बतमान में बीता हुआ ।  
महमूद करो कि बँस इसके रंग  
पिछल धँवर को उजागर करते रहते हैं  
भीर मुझे पता है (भगर तुम जानना चाहो)  
बहुता है अब भा भरा प्यार  
सिनें वह एक दम ।

भामें नहीं यह भी सही सुसंगते होट नहीं  
उरिया सीना नहीं नहीं स्थाट नृतियाँ  
सिनें वह एक दम । •

विन्ध कविया । २ ६

## पशुपतिनाथ-टेम्पुल

पद्मनाथ शमशेर

भीख माँगना सबसे बेहतर गुनाह है  
सबसे खूबमूरत

मैंने यह अपने आप सीख लिया ।  
मन्दिर में बहियाल बजें ता निगर  
सम्मान कर दोही  
टोपी सीधी कर लो तिरछी कर लो  
छाटा पर जाय पर लो—  
वह सबसे आखिर में

तुम्हारे पास आयेगा ।  
मेरा बहुत पागल हो गयी है' मरा जाय  
सदन के भित्तिदारी कँप से खत नहीं  
भेजता'

मेरी माँ अष्टीय मेरी माँ —'  
निकर सम्मान कर खड रहा एक रहो  
वह तुम्हारे पास आयेगा । •

## मैनहटन-स्ट्रीट

वी० वी० पनिकूर

मरा बीमरा लो गया था मेरे दोस्त की  
मैंच-दुख ।

फिर भा हम खमूस के साथ खल रहूँ ये  
उस नाइट-क्लब तक ।  
गालिया के छूँ ने की आवाज हुई ।

भीख दूँ गई  
पुसिंग उठा ल गयी गलब ल

आखिर की बुझी सोनियाँ  
दा गोरी सड़कियाँ पेन्गेकाट उतार कर  
माचनें सगी । मरा बीमरा लो गया था  
मेरे दोस्त की मैंच-दुख ! •

## रिफ्लेक्शन

सुनीता वनजी

पिपलती हुई काली आँखों की गहराई में  
अभिव्यक्ति । गुल्मरता  
जो अपना नाजूकों से सुरक्षित है दर्श ।  
एकमे किउनी दूरी से भागता है  
हवा पर किसी पक्ष का लक्ष्योत्सा डाल  
पर नहीं,

कि पल मिलें ।

पहचाने हुए का हो फिर स जानने को  
वक्रार मुसकत—  
अनजान भव भी उठना ही अज्ञानी  
उठना ही दूर ! धीरे  
घर घोर स पड़ता हुआ घोर दू में  
अभिव्यक्ति नहीं कबल बीत हुए को  
परछाईयाँ । •

## ४२ वीं कविता

प्रजनी माहन्ती

इस उम्र में आत्मी बूझा नहीं होता  
क्याकि

घर भा कुछ चुन हुए गए  
दीवार पक्षी के बीचों में भर हुए  
गिरगिट बनकर  
चिपक जात रहते हैं बल बलक !  
आत्मी इन क्षणों का क्रम में जीवना है  
कभीक  
भर हुए गिरगिट रंग नहीं बदलते  
कविता को उम्र बीत जान क का भा नहीं !  
बल के साथ घोर आत्मी जाने क्रम में  
बल से मन प्रलय दका रह जाता है । •

## परिवर्तन का एक चक्र

नारायण चिन्तामणि महाशय

हे प्यार

क्या इस नम परिवर्तन का ही ऐसा है दबाव  
कि हमें बहुत कुछ चलना पड़ रहा है ?  
बहुत सारा भूलों को करना पड़ रहा माफ़ ?  
पहल तो कभी हमारे मन में नहीं  
आए, ऐसे खयाल ?

तो क्या वह दुनिया जिसमें रहत थे हम  
काई दूसरी दुनिया थी ?  
जिसन तक निया या समूह आवास की ?  
तब वासनाओं का भव जिनका मुख  
होता था

हजार अरुणित क्षण पर  
नहा उठती या काई जामुना घाँस  
और एक पल के लिए भा  
नहीं होती वो अनुभूति अकल्पन की  
पर भव ता नहरा से बिटुला हुआ तट  
ही हमारा आश्रयता है

जिस पर हम रत के अपने मनबाहे  
धरी बनात है

उता नहीं किन्तु शक्ति न हमें कर दिया  
एसा सम्म

कि हमारे सनन भी टिड्कार बढ हो गये ?  
परिवर्तन का एक बल पूरा हो गया है धार  
या धार समन की मनाहृतिमें स स  
दिना एक था ही यह परिणति ?

कौन जानता ?

बिन्द कविता । २०१

फिर भी

बाध के लटकने की दरार

दिखाई देने लगती है साफ साफ

तब हमें बहुत कुछ भूलना पड़ता है

सभी जगह, सभी स्थितियों में ।

( अनु० दिनकर सोनवलकर )

## देवमाल-१

राम महावली

यम अपनी बड़ी बहन से कहता है—नहीं

अब और नहीं जंगल-कानून ।

हम गोस्त भून कर खाएँ कमर के

गिर्द पत्ती बधि,

गुफा के अन्दर रखें पत्थर के हृदियार !

यम अपनी बड़ी बहन से कहता है—नहीं

अब और नहीं जंगल-कानून ।

मैं नीले चेहरे वालों के गिरोह से

छीन लाऊँगा

दिवार के दोस्त कुत्ते

और ऐसे पक्ष, जो कभी सुखसे नहीं

सङ्गते मही

और तुमसे भी चौड़ी जाँघों वाली औरत

जो मेरे साथ बर्फ काटकर

नीचे की ललहटियों में जागो

बसो जाएगी ।

यम अपनी बड़ी बहन से कहता है—और

बड़ी बहन की सौपनाच हँसी के दद से जंगल

हँसने लगता है । बर्फ पिघलनी है

बर्फ पिघलती रहती है

और नदी मन जानी है सलहटिया में धाकर

—बड़ी बहन । ●

विश्व कविता । २०८

## दीवार

नयनतारा सहगल

सफेद दीवार से अपमानक दो

धाती धामें निरसती हूँ

और पग पर गिरकर जलने लगती है ।

जैसे किसी भीरो लहरी की तंगी देह

कनास-बाहर में या जोहन्सबाग में ।

दीवार पर लकिन सहूँ का

एक चट्टा भी नहीं

## अब कोई मकसद नहीं

मोनिका वर्मा

मैं कभी नेता की छुप और जंगल की भाग में

हिरनों की तरह भागती रहती थी ।

अब सितारों की धंधी हुई थाल में मटकती हूँ

बस का अब कोई मतलब नहीं अब

कोई मकसद नहीं रह गया है ।

अकलमन्दों की जमात भीड़ का चारा

खाती है ।

लेकिन, मेरा घर मेरा दिमाग, मेरा दिल

और मेरे हाथ—एक ठुके हुए गुनाह की

सामोनी का इजहार करते हैं । ●

(अनु० राजकमल चौधरी)

## सम्बन्ध

निसिम इजिबिएल

मैं कभी समझ नहीं पाता हूँ

क्या है सम्बन्ध

धार करने

आग प्यार हाँ में

एक गार्हिक सम्बन्ध

घोर जननदि

यद्यपि एकात्मता

मौन क क्षाण क तर्कों में देखी जाती है।

क्या यह दृढ़ मन क आनन्द से अधिक

कुछ नहीं है ?

क्या यह सच्चमुच आनन्द है ?

या कि यह मात्र आध्यात्मिक अनुभूति है।

और इसलिये सब है ?

गाम्भीर्य का आयु स अन्तोंस कत

हजायें बाद,

विवाह में

और उसक अलावा

यह प्रश्न जागा है।

एक बार फिर, आज रात

में उस दुहराता है

औरत मरी बात पर मुस्कराती है

और अपने कपड़ों क साथ

पर रख देती है।

छाया वह औरत जानती है।

क्या बाइबिल में भी

यह नहीं कहा गया है

कि इस प्रकार

औरत चीन्ही जाती है।

प्यार करन वाला क बाध ज्ञान का

आदान प्रदान होता है।

हाला यह बात समयानुरूप नहीं है।

या उने बाद मिलन म समाप्त कर देन का

क्या अर्थ हो सकता है ?

जब कि रात इतनी सन्धी है ? ●

## रोटी और स्वातन्त्र्य

अनुसूया भार० शानोय

●

उन्होंने कहा

एक रोने सा

और उत्सव मनायो।

चिन्ताओं को हवा म उड़ा दो।

निराशाओं और मूलों पर

पड़तामा नहीं

यह तो एक मन-स्पर्श है जो

गुजर जाएगी।

क्या हुआ यदि एक पल-कटा

रक्त-स्त्रावित हृदय

जुपचाप वहीं झकल म बुझ जाय ?

क्या आदश कोई ईश्वर हाना है ?

क्या हुआ यदि जेल की छतों के

पीछे गुं गलाया मस्तिष्क

धारे धीरे गल जाय ?

स्वतन्त्रता — यह तो एक

साधला पद है

हवा भर गुम्बार-सा

एक निरहृदय आवाज

अपनी रोनी छाओ

काम करो

और सजोय करो

उन्होंने उत्तर दिया

रात क सफ़र

रागी की बात नहीं सोचते।

किन्तु मानव का जन्मदिन अपिष्टार है

एक मूस क गान सदात हाँ हाँ

दूधरा मूस जाग उठती है

अर्थ्य करन और रस्तान का।

यदि स्वतन्त्रता हो रोने की बीमन है

तो उससे भन्दा है  
एक बचन मुक्त हाथ में  
भीख का प्याला स सिया जाय !  
हमार भागामी कल का सवारने की  
बनान या बिगारने की इच्छा  
सिंहामनित दासत्व स भली है ।  
ताकि मानव की न बुचसो नियम आत्मा  
घोषणा कर सके  
मैं अपनी मूर्ख का भा स्वामी हूँ ।' ●

(अनु मनमोहिनी)

मन्मथलाल कविताये

## ये मशाल

बलोप्लस्ती श्रीधर मेनन

●  
य मंगल धामो  
है रत्तिम नवल भुजाभा !  
य मंगल है सदिया स  
गुरला न मंगलमय पथ की ।  
जब चलने थे वन म  
टकराकर पगुमा स  
यह बह्नि गिला आई थी  
सहू भरी तलवार-खा ।  
अधकार भागा  
कौनत पैरा म  
मपटा का हँसो म  
स्वग न शाग नुआमा ।  
मौवन म भरे  
उने गूर-बीर हृदया म  
हजारों जिन्दाई पसारती  
बढ़ रहा थी यह मंगल  
काय न सञ्च पथ मे,  
टकराकर बाधाभा का ।

विन्ध कविता । २१०

जंगल जलाकर था  
धान को खाद दिया  
सोहे को पानी बना कर  
सिरजे में धोजार  
ज्ञान की ज्योति जलाई  
दिये कलाभा को प्राण  
तटपत्ती आत्मा को  
दगान के नय पल्ल दिये  
प्रगति के झंडा का  
नम म था पहराया,  
सम्बी सम्बी राता म  
नव अदण्डिमा भरी । ●  
(अनु० जी० गापीनाथन)

## नन्हा मुँह

बलोप्लस्ती श्रीधर मेनन

●  
पौ कनी नहीं  
उठ हम दौड पहुँचे उस पवन म  
जिसका हम करते पालन  
गल सुध्या म देखी  
वह कुसुम-कसो  
कथा खिल गई धब तक ?  
हौ नहा न तकौ म  
हम धुधल प्रकाश म  
देख रह थे तब  
'ते जीत गया हूँ बाला मैं—  
देख के यूँ पर मुस्करा रहा है  
माना हिशोस म जिनु है ।'  
तूने लिया उसको  
मदु हँसो न साथ  
बोली प्यार भरी बातों म—  
'तू घाया इतना जल्दी म ।  
शरण म बिन्ताकुल नयना म  
भार भर मौन रही तू

फिर लोटे हय हय उस मूने  
 अपने घर में जहाँ  
 न था बच्चा और पालना ही ।

( अनु० एन० चन्द्रशेखर नायर )

## बढ़ जा मुन्ने । आगे

बालामणि अम्मा

माँ की प्यारी गान् ठे  
 सो उसका लाइला उल्ला नीचे ।  
 हगमगाकर बड़ा दीवार के सहारे  
 साँघ कर देहरी पहुँचा बालान में  
 छुट्टी कुतूहल परेशानी

झपाप चहुरा पर बड़ा के ।

‘मुन्ना माँ का झींचल छोड़  
 खड़ा रहा अब हो निर्मय ।

चला अक्का अपने भाप  
 काँपते पैरों खिलते मुँह ।’

कठार दीवारों से टकरा कर  
 लाल की बोट न लग पाय  
 जलते अगलित दीपा के  
 उस घाँच न लग पाय ।

बहुत पुराने इस घर के हैं  
 सालों कमरे सहखान ।

कितना उत्सव होगा सबमे  
 मुन्ना रमता अब बढ़ पाय ।’

‘सोदी मँडिल लय करने को  
 नव यात्रा का रस लन को  
 साबेगा यह मुन्ना धीरज  
 निश्चिन अब चल दिनों में ।’

बढ़ जा मुन्ने ! आगे अब तो  
 कितना रंग है । कितनी सोमा !  
 तेरा स्वागत करने कितन —

नव-नव भाव खड़ हैं घर तो !

तेरे नेत्रों में चमक रहा है

भादक मधुमय नव जीवन ।

अपन पैंना बसने वाले

वेगव निर्मय घुमने वाले

सारे घर जय के सत्वा को

हस्तामलक-ले जानने वाले

नलनों के दीपा को भी—

ज्योतिष और कुमान की

जिन हाथा में अब तापन है

अपन के सब देख रहे हैं ।

तेरी रखवाली के करते,

तेरे पथ से विघ्न हटाए

तेरे मनजाने हो तुमको

के सम्बल पहुँचाते हैं ।

बढ़ जा मुन भाग माँ भी

जो घर मासोयें देती है ॥

( अनु० के० सी० सुकुमारन नायर )

## निशा-कुसुम

श्रीमती सुगतकुमारी

गाता हूँ घात बरसों से

एक तभी बाला

अपना तम्बूरा बजा बजा कर

हाय ! तेरे ही बीत

चलते फिरते नित ।

और नहीं धीरे नदी

इस रास्ते का कहो

अगर रुक जाऊ

गला कुत्र मर साऊँ

तो सरे पक्षियों को

गोता कर दू ?

दीखती है भाई शाम  
 पक्षी जोटे हैं छोड़ भासमान  
 वृक्षों की डाली के झूला पर  
 फटो जाती है मोने की चादर  
 मुझे बितानी है रात कहीं  
 नोरख तम मे राह खा गई  
 दूर कहीं कहीं दीखता है  
 दीपाकुर एक ।  
 क्षीयित हो खड़ा रहा तनिक  
 झिला गगन सरावर मे तब  
 चाँद का कमल  
 कमलिनी को तारिका भी निकट  
 पाछ दिव्य अपन भाँसू  
 फेर सत्रिया पर  
 उगलियाँ मान जगा  
 ला मैं हूँ तारे ही  
 करण के आलोक मे  
 स्वर से ही आर्जुन  
 बल भूप मे कुम्हलाय  
 मे मेरे गु ये फूल  
 बिजल हो जाए चाहे  
 पर अपन प्राणी मे  
 इन गीतों को भर कर  
 खाऊँगा मैं विरही पयिक  
 है स्वामी तेरे ही घरण ।

(अनु० एन० बन्धुसखरत नायर)

रचित ब्रिगाद

**भागो मत ।**

पुटुम पित्तम्

मा दुनिदावासी ।

भागो मत ।

अमरता का घर पाया

विन्धु ब्रिगाद । २१२

बीणापाखी का विनयी विधेय  
 मधुरवाक् कवि कोकिल  
 मैं नहीं हूँ  
 भागो मत ।  
 गगन के शोभन सपना को  
 सजसजकर, गढ़ रचकर  
 सुनाने वाला सत्यवादी कविपूर  
 मैं नहीं हूँ ।  
 सब कहता हूँ कसम खाकर  
 रसना पर मेरी  
 सरस सरस्वती भवार का  
 सोमाप्य नहीं चमत्कार नहीं ।  
 तुम-जैसा ही यह मैं भी  
 अदना सा आदमी हूँ दम्ब लो ।  
 मानना हूँ तुम-सा मैं भी  
 उस्ताह उर्मग उद्वेग व उद्योग स  
 झूठो-सच्ची गढ़ लता हूँ  
 गप्पों-गढ़ ता क बल पर  
 तुम्ह फुसलाकर ठठाकर  
 —हाँ अगर भाले तुम ठग आघोगे  
 तो पैसा बैबाक उपाहूँ लूँगा ।  
 बस्ती क पच्छिम मे  
 धनघट के निकट जो दीख पड़ी  
 उसे असुलभा भरम्मे (रम्भा अम्परा) कह  
 फिर उस सपना साबित कर  
 शब्दयुक्त कविता काय्य बना दूँगा  
 —धमर धनूपम ।  
 बस मुझे दान के लाने न पडन दा  
 अगर तुम कहोगे कि—  
 अनिन्द्य रमणी की नहीं चाहिए  
 मुन्दर सरस प्रेम बंधा  
 चाहिए तो यही प्रेम मुझे—  
 —तो, मैं मुरन्त या निवेदन करूँगा  
 “ओह ! जो हूँ जो जाना ।  
 यह दासवर लीपार है ।

पत्थर को प्राणवान् बनाकर  
 कराने काल-सा प्राणुनवा कराकर  
 जोती जात ला ! क उद्घाप सहित  
 दोस्ती-दम्भी के नार अनगिन  
 कहो चाहिए कितने ?—  
 सभी सिरजकर अर्पित कर दू  
 तुम्हारे अमल घरण-कमला में !  
 अजी ! ठहरो  
 सधो हातत कह दू  
 आज पसा कुछ बचा है ।  
 पर अविष्य में मुझे समय ध्यान पाकर  
 कृपया न द्विष जाओ दोष अपनकर  
 भागो मन !  
 तुम्हारे प्राण न पसार गा हाथ—  
 अजी जरा ठहरो न !  
 इस सब के ऊपर  
 मैं हूँ विनती है  
 मेरे अतिम-अपुनर्भव अंतर्धान के बाद  
 मेरे हित यस का का डंका बजाकर  
 गला गली घर घर दर-दर बसकर  
 चला बसूत न करो, तब न करें लोगो को ।  
 मेरी स्मृति की सीमा बाँध कर  
 पायाखण्ड की भव्य मूर्ति बनाकर  
 मुझ लडा न कर लो  
 न पूजो न काओ न बनाओ हो !  
 यह भी न कहा फिर मत राधा—  
 स्वर्ग का धमर देवधर  
 इधर आया—अबतरा ।  
 पर हाथ ! कैन सधू ?  
 अममय में अति मोघ हो  
 स्वयाम लीन भसा—स्वर्गीय दुषा !  
 यह सब मुझे न चाहिए ।  
 इनकी कृपा करो ता इतदुष्य हो जाऊँगा ।  
 मुझ अभाग को छोड़ लो छोड़ लो !  
 पाओ मृग मिगने

अलसाय दिल को बहुलाने  
 जीर्ण जजर कथा या याथा,  
 पौराणिक कृतान्त य अद्यतित धन्या को  
 बुद्धिभ्रष्टावश  
 यदि कोई कहता—लिखता  
 तो वह सब-ही,—मादग है मरूठे !  
 स्वर्गीय कल्पनाएँ हैं !  
 वे सब जगतीतल के उद्धारक  
 तारक मंत्र हैं पावन-पुरातन !  
 अजी वे तो मोम-कपाट खोलनेवाले  
 धनुषम सत्स साहित्य हैं !  
 वह सब तुम सागो की  
 प्रभा प्रतिभा प्रवेतना की  
 सब तवधन निधिर्मा हैं विभूतिर्मा हैं  
 खैर अब काम की बात हो  
 वाणी की मन्त्र कैन ?  
 दोष कथा मीगने प्राय हा ?  
 तो यह लो जोड़ी दो रुपये ।  
 माह्व प्रम कहानो रगोरी  
 यदि चाव से पान पाये हो  
 तां कहे देता हूँ अभी साफ-साफ  
 अक्का-त्रासो रकम ऐसी है हाथ भर !  
 यदि आचार विचार की ।  
 मतानुपतिरता या पथ-भन धम-दीन की  
 गाथा चाहते हो महिष दीसो वासो  
 तो दर है स्थिति-गति-व्यति के अनुसार  
 हाँ अभी कहे देता हूँ—  
 दर न धरेंगी कम न कर गा  
 बात पफो है अन्तर्गत नहीं ।  
 बहुलाकर कृमिवाहर हूँ  
 चक्रमा देना कभी न होगा ।  
 पैसा रखो समय हमार  
 फिर साकार सत्य का प्रेम सा —  
 लो यही यह  
 वास्तव-वस्तुतः कभी न होगा,



दोस्तों है आई वाम  
 पदों लोटे हैं छोड़ आसमान  
 वृथा की डाली क झूला पर  
 पटो जाती है सोने की जालर  
 मुझे वितानी है रात वहीं  
 नीरव तम म राह खा गई  
 दूर कही कही दोस्तता है  
 दीपांकुर एक ।  
 शीतल हो खड़ा रहा तनिक  
 खिला गगन सरोवर म तब  
 चीन का कमल  
 कमलिनो को तारिका भी निकट  
 पाछ न्यि अपन आँसू  
 फेर तन्त्रियों पर  
 उगलियाँ गाने लगा  
 सो मैं दूबा तर ही  
 बहणा क आसोव म  
 रबर ल हो आँकड़ा  
 बल भूप म कुम्हलाय  
 म मेर गु ये पूल  
 बिबल हो जाए चाहे  
 पर अपने प्राणा म  
 इन गीता को भर कर  
 खाइ गा मैं विरहो पयिक  
 है स्वामी तर ही चरण ! ●

(शत्रु एन० चन्द्रावरत नायर)

ललित कविता

## भागो मत !

पुदुम पित्तन्

●  
मा दुनियावालो !

भागो मत !

अमरता का घर पाया

विनय कविता । २१२

घोणापाणी का विनयी विधेय  
 मधुरवाक् कवि कोकिल  
 मैं नहीं हूँ  
 भागो मत !  
 गगन के शामन सपना को  
 सजधजकर गढ़ रचकर  
 सुनान वाला सत्यवाणी' कविदूर  
 मैं नहीं हूँ ।  
 सच कहता हूँ बसम खाकर  
 रसना पर भरो  
 सरस सरम्बती भवार का  
 सोभाग्य नहीं चमत्कार नहीं !  
 तुम-जसा हो यह मैं भी  
 बदना सा आदमी हूँ दख ला ।  
 मानता हूँ तुम-सा मैं भी  
 उम्साह उमंग उद्वेग व उद्याग स  
 झूठो-सच्ची गढ़ लता हूँ  
 गणों-गढ़ों क बल पर  
 तुम्ह फुसलाकर ठठकर  
 —हाँ अगर माते तुम ठग जाओगे  
 ता पैसा बेबाइ उगाह लूँ गा ।  
 बस्ती के पच्छिम म  
 पनपन क निकट जो दीस पड़ी  
 उसे धमसमा 'अग्नि' (रम्मा अम्मरा) कह  
 फिर उस सपना साबित कर  
 शब्दवद्ध कविता काव्य बना दूँ गा  
 —अमर धनुषम !  
 बस मुझे जाने के सान न पढ़न दा  
 अगर तुम कहोग कि —  
 अनिच्छा रमणी को नहीं चाहिए  
 मुन्तर सरस प्रेम क्या  
 चाहिए तो यही प्रय मुझे —  
 —तो, मैं सुरन्त या निवेदन करूँ गा  
 मोह ! जो हूँ जो माना ।  
 यह दागवर तैयार है ।

पत्थर को प्राणवान् बनाकर  
 करात काल सा प्राणलया कराकर  
 'जोतो जात लो ! क उद्योय सहित  
 दासो अभी क नार अनगिन  
 बहो चाहिए कितने ?—  
 अभी सिरजकर धपित कर दू  
 तुम्हारे धमल चरण-कमला म !  
 भजो ! ठहरो  
 सधो हानत नह दू  
 आज पसा कुछ बचा है ।  
 पर भविष्य मे मुझे समस्त धान पाकर  
 कृपया न दिप जाया दोह भपटकर,  
 भागा मत !  
 तुम्हारे प्राण न पसारूंगा हाथ—  
 भजो जरा ठहरा न !  
 इस सब क ऊपर  
 मेरी हक बिनती है  
 मेरे अतिम प्रपुनर्भव अंतर्धान क बात  
 मेरे हित धरा का का बंधा बजाकर  
 गली गली घर घर दर-दर चलकर  
 क्या वसूल न करें, तग न करें सोणा को ।  
 मरी स्मृति की सीमा बांध कर  
 पापाएलस की मध्य भूति बनाकर  
 मुझे लहा न करे  
 न पूजा न कासो न मनाया ही !  
 यह भी न कहा फिर मत राधा—  
 स्वर्ग का धर्म देववर  
 इधर आया—धवनरा ।  
 पर हाय ! कैय सहू ?  
 अक्षय म अति दीप्त हो  
 स्वधाम लौ आया—अर्थात् दुःख !  
 यह सब मुझे न चाहिए ।  
 इनकी कृपा करो ता कृतक हो जाऊंगा ।  
 मुझ धमाग को छोड़ दो छोड़ दो !  
 पारी मूख मित्रान

भलसाये दिल को बहसाने  
 जोख जजर क्या या गाथा,  
 पौराणिक कृतान्त व भ्रष्टि घटना को  
 बुद्धि धवश  
 यदि कोई कहता—लिखता  
 तो वह सब-ही—आदर्श हैं धनूटे !  
 स्वर्गीय कल्पनाएँ हैं !  
 वे सब जगतीतल क उदारक  
 सारक मत है पावन-पुरातन !  
 भजो वे तो मोक्ष-कपाट खोलनेवाले  
 असुलभ सरस साहित्य हैं !  
 वह सब तुम लोगों की  
 प्रभा प्रतिभा प्रचलना की  
 सब सबधक निधियाँ हैं विभूतिधा है  
 खैर अब काम की बात हो  
 बाणी की मनी कैसे ?  
 दोर क्या माँगने आय हो ?  
 तो यह लो जोही दो रूप्य ।  
 मोहक प्रेम कहानी रंगली  
 यदि चाब से पान आय हो  
 ता बहे देना हूँ धमा साफ-साफ  
 अच्छी-गुली रकम देनी है हाय न !  
 यदि आचार-विचार की ।  
 मतानुगतिकता या पय-मत-पन-न क  
 गाथा चाहत हो मोहक गयो क्या,  
 तो दर है स्थिति-अति-अच्छि क मन्त्र,  
 हाँ अभी बहे क्या हूँ—  
 दर न पगो कम न करे  
 बात पफी है अनादमा न ।  
 बहसाकर पुण्याकर हर्म  
 अकमा देना कभी न होना ।  
 पैसा रगो समस्त हमा  
 फिर साधार मन का न  
 सा यहा दर  
 कात-कवलित क्या न

युग प्रवर्तन से उपलब्ध-गुण से  
उपेक्षित नहीं होगा ।  
प्रजो भागते क्यों हों ?  
सुनो भाई ।

मैं भी तुम्हारे सरीखा हूँ  
घ ना सा आदमी हूँ दस सा ।  
विश्वास पात्र हूँ मनसा-वाचा-वर्मणा भी  
सुनो जो मेरी बात  
श्रुत । भागो मन ! ●

## फरियाद

कम्बुदासन

●  
बली बमली की मैं रही  
बहु समीर बसंत का आया  
स्पर्श दिया पुलकित दिया सुख पाया ।  
प्रमत्ताप रसीन महक उठे  
छाँदा जब मेरी दूटी बिहस उठी ।  
मैं रही मयमाता बिसरी बिछुड़ी  
बहु आ मिला बिछुत बिनोनी  
फँताही माहव मुस्मान सूट लिया ।  
आवेगा का जब घमन हुआ  
अनुरूप मुग पया  
श्रीनिव स्यामल काया मेरी गल गयी  
पानी ही पानी हा बली  
भर भर बरस गयी ।

बलगानी बहनी मैं दरिया की धनमोहिनी,  
उमगी बरतने फिर उठी मेरी छानी पर  
सामग्य से हलल सब  
मुग-शैतका मगार रक्षा  
जीवनपारा मायब रई  
बिर गु र मुग स्वप्न हुए,

विद्वत्-विराज । २१४

धन विरहिणी हो बहती जाती हूँ धनृति मे  
उस छलिया के संग को हूँ डनी फिरती हूँ ! ●  
( धनु० २० नीरिराजन )

## कर्मफल

कम्बुदासन

●  
विधाता ने मृजन किया पारावार का  
मीन मकर के निगु किसकार करें मलें पलें  
फिर निरुद्ध स्वधाम से तरंगाबुल सागर को—  
हाय ! कैसे निरागा ! विफल हुई रचना ।  
बिछा रक्सा मछुए ने जाल  
मधुमक्खी क छतरे-सा  
मृजन-मुमना को फसाया  
बटोरा-बर लिया डेर ।  
हाट सज गयी स्रय विप्रय की—  
उत्तरमरी बाल की  
सय विधाता का हाल  
दिल पक्का दहक उठे नैन छटपटाप प्राप  
फिर—  
द्विप गये धंयकारम गहनतर काज की नीली  
बादर से ! ●

## तिमिर

भारती दासन

●  
दीड़ भाग कर लह भगद कर  
बमा-बटोरकर ला-बाबर,  
घोर पक्कर—  
जब चलमान लगता है जीव जगत्  
उस भरकर स्वप्न म

नीलमणी से विजुल ब्रंवन में  
धिया उते हो ममता से !

हे स्नह क उन्धोष

हम आभारा हैं तेरे ।

भू से स्वर्ग तक व्यापा है

तेरा तन घना कजरा

तू बदल सता है बारम्बार भपना वसन

दिन का का परिधान है मुनहरी आदर

धुबल रात का वसन है धवल दूकूल

उस पर रंग बिरंग बूटे सुन्दर ।

एक दिन पुछा निमकर स

‘जात कहाँ हो यही त्वरा से ?’

उत्तर धाया तिमिर को भगान ।

‘माई जल्दी चलो । भरा प्रारसाहन था ।

भारकर भूमकर भाग बढा

सतुन टुप्पा तमिल को हटा दिया

पर तू रहा सबव्यापी ।

तुम्हारे तम पटल में वह भौरा-सा हो गया ।

‘लघोत’ का नाम सार्यक भी टुप्पा ।

तरा भवसार हुआ आकाश के साथ

तेरे रूप प्रतिरूप जल-धूल-गगन में

नील-नील फँस है

तू माया बनकर

[प्रति वस्तु के साथ] लगा रहता है

तू घट घट वाली है सबव्यापी !

उठी नासिका क धिद्रा म

संजन नयना की आद कोरों म

कमनीय कणपुटा क गड्ढा म

तेरी सहचरी धाया सोहती है मुहानी

मुन्निरिया का सौन्दर्य बढ़ना है

तेरे धाया स्वरूप स !

हे भवसार ! तेरा वैभव  
चतुर चित्रर खी-हूँ-यहवानत !

विज विदुषा का उद्घाप है—

ज्ञान का प्रतीक है प्रकाश

हाँ जी हाँ !

तम है भगान का बहिरूप

हाँ जी हाँ !

पर एक बात भूलते—

भगान गान का बोध कराता

जिनासा जगाता उडार करता

ज्ञान कभी भगान सिखाता ?

सीख कोई मिल सकती ज्ञान से ?

कभी नहा ।

भज्ञान सहज है सबव्यापी

सीख बोध का पथदर्शक

तू ही नहीं तेरा प्रतीक भी थपठ है

ह तिमिर ! तू प्रकाश स बढ़कर है ! ●

(प्रनु० दक्षिणापंथी)

# हमारा देश

महाकवि मुद्रहृण्य भारती

धमक रहा उत्तम हिमालय यह नगरज हमारा ही है ।  
 मू पर जिसका जोह नहीं है वह नगरज हमारा ही है ।  
 नदी हमारी ही है गंगा प्लावित करती मधुरस घारा ।  
 समता इसकी नहीं घरा पर कहीं बही है पावन घारा ?  
 घेष्ठ घय जो जगती क है छार नहीं जिनकी महिमा का  
 अमर अथ वे सभी हमारे उपनिषदों का देग यही है ।  
 हम स बंदकर कौन घरा पर यह है भारत देग हमारा ।  
 सब मिल सब यज्ञगान करते यह है स्वर्णिम देग हमारा ।  
 यह है देग हमारा भारत वार महारथी भरे जहाँ वे  
 यह है देग मही का स्वर्णिम मुनिमण करत वास जहाँ वे  
 यह है देग हमारा, जिसम पूजे गान मधुर मारद क  
 यह है देग हमारा भारत सर्वोत्तम सब वस्तु जहाँ क  
 यह है देग हमारा भारत पूर्ण ज्ञान का पुत्र निकतन,  
 अति महान् श्री भव्य पुरातन यह है भारत देग हमारा  
 नहीं हमारे सम है कोई श्रुजिगा यह गान हमारा ।  
 विष्णों का दल चढ़ आय तो उह देग भयभीत न हगि  
 भव न बभी हम दोन-दलिन हो हीन दगा न पडे रहेंगे  
 नीच स्वाय की सिद्धि हेतु सब कमी न गहिन बर्म करेंगे  
 पुष्पभूमि यह भारत माता जग से सब हम भीष न लेंगे  
 हम सदा ही देती है यह मिलारी मधु फल सारे रसमय  
 बदली चाबल अन्न सभी श्री देतो हमको क्षीर सुधामय  
 भायें देश यह उन्नत मू पर श्रुजिगा यह गान हमारा  
 कौन करगा समता इसकी महिमामय है देग हमारा ।

अनु० 'भारतीभक्त

# समुद्र मोहिनी

अरविद नाटककर्णी

समुद्र हसता था दुग्ध सम फल हास में  
 चारों ओर की दाखों व चोबा की ध्वनि  
 बिड़िया की सहक ध धरु-नाच गधन गीत  
 पेड़ पेड़ पर पड़नेवाली पुहुप-धर्पा की

एक तान

रंग विरंग पुष्प गुच्छा से प्रस्फुटित पिचकारी  
 जल की मंजुल ध्वनि

सब मिलकर एकरस हुआ था समुद्र  
 हास में ।

वह जगह कौनसी ? देखा क्या ग्वाल ?  
 दो वृक्षा स जनमी कुबेर सतान की जगह ।  
 भजगर कछुआ के चमक साल उठ नरेणों  
 की जगह ।

चट्टान से उठी तेजवती की जगह  
 इसक जानकार उस मेरु-गिरी से पूछ  
 बरस बरसा से देखते सड़े हुए उस  
 महान् महिमा पुद्गल से पूछ,  
 और धपन ग्वाल जिस का समाधान  
 कर ले ।

धरे तेस । यह मृत्यु समारोह हर कही ।  
 उस मागर व सलिल में लहर लहर भूम  
 उठ उठ मार रही है कर्त्तमा दूर दिव्यत तथा  
 विष की नचाने वाला यह मंजीवनी उस  
 यह रहा है हर जगह निष्करिणी की तरह  
 समुद्र के चर स उदलकर ।

प्राह समुद्र !  
 विषव्यापी समुद्र-नहर !  
 मैं बुद्ध मटने में प्राण गायकर

खा रहा था होटल का भाइस्क्रोम  
 नून रहा था मज सिनेमा की प्रम-नसरत  
 का

भामने हसता था दुग्ध सम फेनिल हास में  
 धुन दम न प्राणा की प्राणवायुनायक  
 पयोमय दान्त सन्नात !  
 पाँच तले फलाये मछुए क जाला की  
 लाप कर

पहुँचा समीप जल प्रदेश के  
 त्ता महा यज्ञ करने वाले राजा की भाँति  
 सिर हिलाते नय विजयोरसाह से बोला  
 अब मैं हूँ जोने योग्य इस मृत्युलोक में ।  
 ओ मेरे भाई वहनो  
 स्तमित ताल-नूप के जल में तरना चाहने  
 वाली

आधो इस तौर पर  
 हर जगह सोन सोन बन नदी नदी बन  
 प्रबहित

इस समुद्र जल में तैरने आधो  
 उसके जलविदु स्पर्श के लिए भूल आधो  
 रेत पर फल मछुए क जाला की । ●

## कारिन्दा

पुण्यपति रहु

मज पर चमक रही है सपे बागन की  
 तप्तरी  
 समये बाज जोड़ रहा है  
 पूर सन्ना-तेस का धंदा ।

बाहर भेत-समिहानों में  
 पूर-सो धूप मुनहमी पूर

तरलता पाँति को चूम रही है !  
यही भीतर भ्रमे में नागरिक  
सरवर मे  
पाताल तक खींच रहा है मुझे—

कोई याद !

इस क्षाणित गज का वधन  
तोड़ने

भेजो ओ हरि !

—सपना वह सुदर्शन  
चद्र ! •

## चालीस के करीब

पी० वैकटरमण आचार्य

मेरे सामने

दो साल पूर्व से ही

झाँसें फाड़कर देख रहा था चालीस  
क्यों रे इतनी देर क्यों ?

गरजा उस घोर की भाँति जो

उस गरीब अपने दिफार सरगोण पर  
गरजा था !

ऊपर घटारी पर रङ्गिया

चिह्ना रहा है भग गमित मुह पत्तितम्

सामन वाली घटारी से क्या मूर्ख

ताने की बात धामु विफसित धामु  
विफसित

मेर धागाबारी धाईन में

कीन है यह नया बँने ?

इरु मुह के रास्ते पर कविहीन कारों  
की पाँति

पी पी पी !

जहाँ पेट्रोल समाप्त यहाँ घड़ोम् !

धुको तो रास्ते के बगल में निशाना

भारनवाल बतार बंद सोल्जर

झाँस मू द दबाओ एक्सिलेटर !

क्या प्यारी दूर सरक बठ गई ?

लग गई क्या तुम्हें भी भज गोविंद की

काष्ठ-व्यथा ?

नही चाहिये तेरी स्टियरिंग बिता

एक्सिलेटर पर पाँव डीसा न पड़े ऐसा

इन दस बरसों में साधा है मैं एक योग—

वह है प्रेम संयोग । •

## टन् टन् टन्

सिद्धण मसली

टन् टन् टन्

घड़ी में बज रहा है घाठ

उसका मेरा नाता राज रोज

देह में है सुस्ती

मन में है उदामी

झाँसा में भूम रही है भपकी भमी

गह्री चाहता मन

उड़ना छोट बिछावन

बिचारा ! पड़ोसी का घर-रा रहा है बालक

तंग कर करक

उठ, बिछाने लपेट

आङ्गू लगाकर

धाईने क आगे खड़ा हो सिर क बाल में

उंगली उसझाकर—

अपने आपकी देख

मुम्कान को माधुरी बख ठहर गया  
 हृदयाकाश में  
 मान्न जानत से टकराकर गपन हो क  
 बहने की भाँति  
 बमकी बिजली की रेखा  
 यकायक  
 ठौर भज बुझी टिपाय सेल्फ  
 ठहाके मृत्यु !  
 सन-बदन का नृत्य !  
 धिरेरे कमरे में  
 पूर हा किसी का ऊपर से गिरना  
 चील खाने के पूर्व लगा कार्ड नहीं है  
 मन को घेरा भ्रम  
 क्या मजाक क्या हँसो !  
 धूम कर जेला फिर कमरे भर में  
 बागों और घूम गया नयन बिम्ब  
 हैंगर पर लटक रहे हैं कोय-पेट  
 इधर एक-दो घट  
 मेक सेल्फ प्रलमारा भर पुस्तक की राशि  
 बड़ी है मेरे मोभाग्य की जीवनकाली !  
 भरे सर्वस्व के लिए यही है जायगा  
 और फिर में है प्रसन भी अधिक !  
 क्या है इस हृदय सम  
 बाकी सब धुप हिम !  
 बुला रहा है कर्तव्य हाथ उठा कर  
 रस पर दम भयनी बाद निताकर  
 रातने भर मित्र बूझ ही भूम  
 बस भाई कि मागे बगद गद भरे !  
 टूटूँ...टूटूँ...टूटूँ...  
 सिपाही न दिया मर्त्य  
 हर रोज की तरह  
 यही देता है मृत्यु  
 मैं हूँ मास्टर

घंटे घंटे पर देते हैं घंटा  
 उनकी भी घायद गहा है फुरसत !  
 औरों क साथ में  
 कोन्डू के बँस की जोड़ी  
 नलास के बाद नलास में जाना है !  
 बहु विषय मह विषय कोई विषय क्या  
 न हा जानत हो या न हो सिखाना हागा !  
 बिना सिखाय कैसे चल काम ?  
 सिर के उठ जाने की भाँति जोब मौन  
 यकी नाबियाँ सबमुख ही मृत्यु  
 स्टाफ कम में कप-साँसर का मान  
 ब्रुसने हैं मास्टर बाय का मधु !  
 हवा की तरंग तरंग में सिगरेट धूम  
 इन उनका नियम !  
 इधर उधर यहाँ बठ बहाँ  
 कीने कीने में

मुलक-मुष्की सचाइयों क माध सिगरेट के दुकाने  
 जल मुँह की निखाने पक हुए हैं  
 सम्मान खाने वालों क मुँह से साम  
 सार की

पिचकारियों न दो है दावत मस्तिषों का !  
 जो कुछ शक्ति है उगे पकड़ कर रोक दो  
 लडका के साथ भितकर फिर मिलाओ  
 'खाना बाहिये जितना परोसे  
 खाना बाहिये बिजना खाने  
 यही है इस गुजरो जिनगी की रीत  
 गंगा निगाह !

सिपाही न दिया र अंतिम घंटा  
 परमात्मा की भाँति !  
 टूटूँ...टूटूँ...टूटूँ...!

(मृत्यु- शुष्नाप जोनी)

विश्व कविता । २१६



# वसु धरा

रामचन्द्र शर्मा

तुम्हारा त्याग व्यथ कहे सिद्धार्थ ?

जीव-उपाति हो घाई रात को सरकाने

उस दिन

हमलिए फूली मैं इसलिए गवित हुई मैं !

क्या हुआ बेटा ?

जंगली कोयल का गान तुम्हारा सदबोध ?

इतने अवतारों के बाद ऐसे घर के

सोया को

क्या मोटा है बेटा ?

देव की श्रौति श्रौत की श्रौति

उसी का गामामयी कहा ध्यान ने !

भणु बने हुए तुम उस दिन बढ़ बढ़ विभु

बन गये

प्रभु प्रणु के रूप में रक्षा करने आय

सुन्दर बालक !

गीत में पीछे घाई उमस हँसी एक !

खिलखिलाकर नाच नाचकर भरना बनी

बढ़ बढ़

नदी बनी, जगस प्रवेश पहाड़ी प्रदेश का

समुद्र बनी

प्रलय जल बनी प्रेत की

ओ ओ ओ मैं सुन नहीं सकता मैं सह

नहीं सकता !

सरस बीणा ध्वनि के मदु मधुर स्वर से

सुर मिलाकर गाया मंदिर में भाज बाँ

नगी से नदी के मिसन की भाँति स्वर-स्वर

मिलकर बहकर आया मेरे हृदय के पास

एक सुरगान ! •

# भाड़े का मकान

विनोद चन्द्र नायक

परित्यक्त गृहस्थली है यह एक मशान  
या एक समय तक मुसलित यह द्वार व सन  
कहाँ वह सध नीलपट  
सर्वस ह्रासों का बामेज  
है सारा मुनसान ।

मन्हे पोरों के नाप का एक जोड़ा कनवास का कूता,  
भाप गज भरून रंग का तैल-म्लान बबरी का फीता  
थोड़ उसमे बास त्रिप्रग सम घुष राते  
कई टुकड़े रंग बिरंगी चुड़िया रु  
देर लगा है कूड़ा करकट

दीवार की भासमारी मे  
खाली विटामिन बी० काप्सुलस दीधिया  
सिनेमा गर्वोन्मिता युवतिया की

एक-भाप तस्वीर  
उच्छ्वसित लावण्य का मय धूँय मुसलित  
जीवन अध्याय के य भग्नांग

बिसरे पड़े हैं इयर-उधर  
बठ यहाँ जोड़ता भाग्य का भग्नवेतु  
रागिचक्र गृहस्पति तथा चन्द्रवेतु  
जीवन में हो प्रवाहित ऐ मेरे जीवन की इरावती  
तिमिर पंक का स्रोत

महेतुकी मृग्य आत्मरति में  
उठो मेरे स्वान के मुनहरे हँस  
रीढ़ उत्थाप में बन चतुर व प्रखर ॥

तो भी दूटे पसस्तर बरामदे की ओर खिच धावा मन  
फिर धाकपित बड़ी बूढ़-बरकट देर की ओर  
सम्भासखी ससार एक मुन्दी  
अपने भ्रष्टों के विविध भ्रंशनों में दे निगान । ●

धनु० शारदी मास मन्त्र

# मोरी

ग्रहोत्री महाति

वह हम अपना लेती  
 बन निर्विकार सदा स्तानि को  
 मंचय है नहीं उसका धर्म  
 सजने मे है उसका कृतिस्थ,  
 भात है जब कुछ नये-नये  
 नव रूप और आकारा म  
 उन सभी का देती धनका  
 रहन न देती उनका अपनापन ।  
 हम सब करते प्रयत्न  
 विवृत बनाने उसे  
 कलंक के प्रावत्य से उसे  
 करने बीमरस-कृतिस्त  
 है तो वह क्षण के सिये  
 पर करती ध्वस हमारा दर्प  
 वह निभाती हमें  
 दाग पहले का अपना रूप ।  
 हम खूब नाक भी सिबोइते  
 तो भी उनकी आत्मीयता पर  
 हमन्तिय हम बेहद शरमाने  
 कभी नहीं मज्जा देती हमें वह  
 न उसका है साम का प्रत्यय  
 न संपर्प है मयोग से  
 अन्त में वह बनानी हमें लड  
 पर बन जातो महत्तर स्वधर्म से ।  
 मैं करती जो वस्त्रना उनकी  
 वह है अपनी येनना की,  
 व्यक्त मूय प्रमात का  
 नया सना सम्मान प्रगति का ७०

धनु गारयोबरण महापात्र

# एक अनेक

मायाधर मानसिंह

विविध घम विविध गाम्त्र विविध दशन,  
 कर अध्ययन किया भाराजान्त अपना मन  
 कस्तूरी मृग सम भ्रान्त धवेपण  
 कर लौट आया अन्त में तुम्हारे यहाँ ।  
 मानी पद्धतों की भांति है मैं तकों में लोन,  
 तुम हो या नहीं दखो या नहीं  
 हमारे दुःख दैनन्दिन न जाना कुछ  
 जाना पर तुम एक और अनेक ।  
 हे महेकय ! तुम स्वयं किये हो प्रकाश  
 अस्तस्य अनेकों में धरती से नम तक  
 विविध बीसियां, विविध रूपा में है  
 तुम्हारा नित्य रास  
 मुख दुःख की तन्त्रियों में बजती है  
 तुम्हारी बीणा ।  
 हां मोहित प्रकृति-काव्य करते हम अध्ययन,  
 त्याग चुका कई दिनो स तस्य-व्याकरण । •

तद्गुण कवित्व

मैं !

धनुकुधरम

•

मैं हूँ वा-मोकि  
 विन्ध का घानि कवि !  
 अल बिरानों क सीमे बाणों से  
 आहत हन भागा का —  
 दूय दिगंभलों को माध्रु मयना स  
 काबनेबास निर्वागितों का

## अञ्जलि

करुण धी

•

नवजात शिशु के लिये  
धन-वर्तन का तू दूध स भरता है  
चन्द्र किरणों से भरे आदर अञ्जलिमें से  
सनाधों में तू पत्तिर्या गढ़ता है  
फूला क घासा में भोरा क लिये  
तू कल क भाजन को व्यवस्था करता है  
मुह-अपेरे कतियों में पुष्कर  
उत्तम तरह तरह क रंग चढ़ाता है  
इस विश्व-परिवार क पासन पापण में  
हे देवाधिपत्य तू बहुत थक गया है—  
मेरे इस गाण हृदय को कुत्ता का  
द्वार खुला है,

इसमें क्षण भर आराम ला कर ले ।  
तुझे बिठान के लिए कुर्सी नहीं है  
प्रणय से भरा भरा झक तैयार है !  
पाछ के लिये गुलाब पानी की व्यवस्था नहीं है  
अपन प्रीतिपा स तर पाँव धोने बीठा है !  
पूजा के लिए फूला का भभाव है  
प्रेम की धर्मसो तुझे समर्पित होगी !  
नैवेद्य चढ़ान के लिए नारियल भी नहीं है  
अपना हृदय तेरे चरणों चढ़ाने खाता है !  
जहाँ तक हो कोई कमी न होगी  
प्यार हृदय-सिंहासन पर आ बैठ ।  
तर पञ्चिहो पर अमृत की अग्नियाँ  
टपकती हैं

जिनमें से परमपिता कोटि कोटि शिष्य  
साव उगते हैं ।  
भोका क अर्पण मीटान तू गगन पर रवि  
आदर दीप पकड़ता है

विन्द कविता । २२३

भोकाकुल मूकजना का  
काटि कोटि दोन मानवा का  
साक्षात्कार नित होता है  
करुणासिञ्चन इस मन मंदिर में  
प्रभावित मम अंतरातर में ।  
मैं हूँ बाल्मीकि कवि—  
भानिपानेति मम शासनवाणी  
स्पष्ट है सदा इस मन में ।  
उदय मरी स वाणी में  
दुष्ट मानवता का मिटाने की  
अभ्य अमरता की अगान की  
शिव्य शक्ति निहित है ।  
मैं हूँ कवि बाल्मीकि  
महाप्राण रावण की परंपरा के  
स्वाधों दुरहकारी कुटिल निर्दुःख  
लोक-विरोधी दज्जल की  
कुत्सित मानवता का—  
उदय मानवता का अंत करन की  
समर्थ है बड़ बंका है  
मरी यह सत्तिनि ।  
मैं हूँ बाल्मीकि  
विश्व का आदि कवि ।  
अमृत निर्व्योदिनी दिव्य कविता का  
प्रवक्तृ हूँ मैं शक्ति सनातन !  
मधुर शक्ति मधुर  
अक्षर समुच्चय का  
आदि सम-व्यवहार हूँ ।  
निरतन विश्व का  
अनन्त वास की  
अम-अन्मांतर की मानवता के  
बिगटे विष्ट गुण का  
मैं फिर व्याख्याकार हूँ—  
मैं बाल्मीकि हूँ । •

सागर की सहरी को जो धरती पर बढ  
 माती है तू यथास्थान ढकेलता है  
 रोज बेकार धनगिनत प्राणि कोटि के  
 हृदय-घड़ियों में हवा भरता है  
 साक मुघरे नीले आसमान के खूबतरे पर  
 तारों की रंगवह्नियाँ पूरता है  
 इन सब कामा में तुझे बितनी मेहनत  
 करनी पड़ती है !  
 मेरे सौभाग्य से तू इस घौगन में  
 मूल से आ पड़ा है !  
 अपना हृदय निकाल कर तुझे भेंट चढ़ाऊँगा  
 हे नाथ, ये पुष्प अजलियाँ ले ले न ! •

कपातर ५० नवसिंहावायु

## ऐ सौदामिनी

स्फूर्ति श्री

ऐ सौदामिनी  
 रसोन्मादिनी  
 मनोन्मादिनी  
 मधुवादिनी  
 शमक कर कथि-सापस्वी के मनोमुवन में  
 साक्षात् बन आती हो काति-प्रतिमा सा  
 जलदों के परदों की तुम्हें क्या खरूरत  
 काति की जसा न क्यों दो मशाल ?  
 धीर तम को जो छिपाता अपना दिल  
 पूर पड़ते हो आस के बण-से  
 हाथ भर का यह धवसोकन यह प्रणय क्यों ?  
 बीणा पर नचा दो मेरे इस जीवन को ।  
 मन के घौगन में बरसा दिए जमेसी-मूस  
 भाँसा पर छिड़क दो बनक-बीतियाँ  
 अब मलक दिससा क्यों यह सुका-छिपी  
 सवा में गड़ेगा रत, न टलूंगा इस प्रण से । •

अनु० कृष्ण

